तरह शिक्षाका लेक्चर झाड़ता है तो उससे कुछ लाभ नहीं होता। अगर कोरी शिक्षा ही रही तो फिर मनुस्मृति और उपन्यासमे अन्तर ही क्या रहा?

उपन्यास-लेखककी शक्ति चरित्र-चित्रण और भाव-चित्रणमे ही देखी जाती है। ये ही दोनों बातें, उपन्यासका सर्वस्व हैं, उपन्यासका Art हैं। चरित्र-चित्रण दो प्रकारका होता है एक आदर्श, दूसरा स्वाभाविक। आदर्श-चरित्र वह है जिसमे कहींपर किसी प्रकारकी कमजोरी न दिखलाई जाय, और स्वाभाविक वह है जिसमें मानव हृदयकी स्वाभाविक कमजोरियाँ न छिपाई जायँ। यदि आदर्श-चरित्र, एक अच्छे कारीगरके हाथों, साँचेमे ढली हुई पुतली है तो स्वाभाविक चरित्र स्वयं आदर्श (दर्पण) है। आदि-कविकी रामायण संसारके सारे महाकाव्योंमे श्रेष्ठ क्यों गिनी गई? मेरी समझमें तो यही आता है कि उनको एक ऐसा चरित्र-नायक मिला था जिसके चरित्र-चित्रणमे वह उसकी, अर्थात् मानव-हृदयकी, स्वाभाविकता भी अच्छी तरह दिखला सके। केवल चरित्र-नायकके ही क्यो—वाल्मीकिजीने, अपने सारे पात्रोंके चरित्र-चित्रणमे, एक एक आदर्श निश्चित करके भी, कहीं अस्वाभाविकता नहीं आने दी। यही कारण है कि वाल्मीकीय रामायणमे, जितनी लोक-शिक्षा है उतना ही, लोक-रंजन भी है। वाल्मीकिजीका स्वाभाविक चरित्र-चित्रण यों तो रामायण-भरमे ही पड़ा है तथापि, मैं अपने पाठकोंसे रामायणका वह अंश पढ़नेके लिए अवश्य अनुरोध करूँगा, जहाँ श्रीरामचन्द्रजीको राज्याभिषेकके समय वनवासकी आज्ञा मिली है। वह स्थल स्वाभाविक चित्रोंकी एक मनोहर चित्र-शाला है—मानव-प्रकृति-सुलभ भिन्न भिन्न भावोंका एक उत्तम संग्रह है।

स्वाभाविक चरित्र-चित्रणमे मानव-हृदयकी स्वाभाविक दुर्बलताका अंश, जो आदर्श चरित्रमे कुछ भिन्न होता है, दिखलाकर भी, उसे आदर्श-सीमाके बाहर न जाने देना साधारण लेखक या कविका काम नहीं है। इसके लिए सूक्ष्म दृष्टि, यथेष्ट अनुभव सर्वतोगामिनी प्रतिभा और परिमार्जित कल्पना-शक्तिकी आवश्यकता होती है। हार्दिक हल-चलके समय अन्तःकरणकी प्रवृत्तियाँ क्षुद्र लहरियोंकी तरह उठा ही करती हैं, उनका उठना कोई रोक नहीं सकता। आदर्श हृदय और साधारण हृदयमे अन्तर केवल इतना ही है कि आदर्श एक समुद्र है जिसकी लहरियाँ एक सीमाके बाहर नहीं जा सकतीं, और साधारण हृदय बरसाती नदी है जो अपनी छोटी छोटी भाव-लहरियोंको रोक नहीं सकती। प्रवृत्तियोंको आत्म-बलसे अपनी सीमाके भीतर रोक रखना आदर्श हृदयका काम है, किन्तु प्रवृत्तियोंका उठना ही बंद हो जाय, ऐसा करना योगियोंहीका काम है जो कि सारे संसारके आदर्श नहीं हो सकते।

[illegible] दुर्बलता-प्रदर्शिनी क्षुद्र प्रवृत्तियों या वासनाओंको आत्म-

बलसे रोकना—यही आदर्श हृदयका कार्य है और जहाँपर इसका स्पष्ट चित्र है वही आदर्श चरित्र प्रशंसनीय और असर डालनेवाला होता है। कोरा आदर्श, जिसमें हार्दिक उत्थान-पतन नहीं—मानवी क्षुद्र प्रवृत्तियोंका घात-प्रतिघात नहीं, केवल कल्पना ही कल्पना है। मेरा तो विश्वास है कि आत्मबलके द्वारा ऐसी हार्दिक दुर्बलताओंपर नायकके विजय पानेका उल्लेख ही ठीक आदर्श चरित्र-चित्रण है। किसी मनुष्यकी जीवनी एक साँचेमें ढली हुई दिखला देना केवल कल्पना-प्रसूत कहानी ही जान पड़ती है। आजकलके लेखक आदर्श-चरित्र चित्रणमें प्राय ऐसा ही करते हैं, क्योंकि ऐसा करना बहुत ही सहज होता है। इसमें कल्पना, अनुभव और अधिक अध्यवसायकी जरूरत नहीं पड़ती।

पहले ही कहा जा चुका है कि आदर्श चरित्रका प्रधान उद्देश्य शिक्षा है। उस शिक्षाको स्वाभाविकताके साथ देते हुए चरित्र-चित्रण करना उन लोगोंका काम नहीं है जिनकी बुद्धिकी पूँजी बहुत ही परिमित है। ऐसे चरित्र चित्रणमें भाव-चित्रणद्वारा मित्रकी तरह—आत्माकी तरह—अव्यक्तरूपसे शिक्षा देना सिद्धहस्त लेखकका ही काम है। स्वतः हृदयको गुदगुदाकर—परिणामोंको दिखाकर—अच्छे विचारोंको विजय दिलानेवाली शिक्षा ही चिरस्थायिनी होती है, क्योंकि उसे ग्रहण करनेके लिए लेखक किसी तरहका आग्रह या अनुरोध नहीं करता। जो लोग शास्त्रकारोंकी तरह आज्ञा देने लगते हैं उनकी शिक्षा बहुत देरतक नहीं ठहरती, पाठकगण उसे प्रेमपूर्वक नहीं स्वीकार करते। जो बात प्राय. देखनेमें आती है, जो असम्भव नहीं जान पड़ती, वही अपना प्रभाव डालती है। वह स्वाभाविक होनेके कारण मनुष्य-स्वभावमें जम जाती है।

स्वाभाविक चरित्र-चित्रण अगर चित्रका रेखा-चित्र है, तो छोटे छोटे भावोंका चित्रण उसमें तरह-तरहके उन रंगोंका भरना है जिनसे वह चित्र प्रस्फुटित हो उठता है। ऐसा चित्र बनाना चतुर चित्रकारहीका काम है। स्वाभाविक चरित्र-चित्रणमें पात्रोंकी प्रवृत्तियोंद्वारा प्रेरित कार्योंके परिणाम ही शिक्षा देनेवाले होते हैं। चरित्र-चित्रण बड़े महत्त्वका कार्य है। भावोंका उत्थान-पतन और उनकी विकास-शैली वर्षामें पहाड़ोंपरसे गिरते हुए झरनोंकी तरह बहुत ही मनोहारिणी होती है। हृदयके स्वाभाविक उद्गार, छोटी छोटी घटनाओंका बड़ी बड़ी घटनाओंके बीच होकर जाना और फिर उनके चकित कर देनेवाले आश्चर्य परिणाम, बड़े ही स्पृहणीय होते हैं। घटनाओंके सुन्दर स्रोतको कोटिक्रमरूपी पारिजात-काननकी सुगन्धित छायाके नीचेसे बहानेमें मानव-हृदयके प्रकृत परिचयकी पूर्ण आवश्यकता है। संगीतके साथ सुरीली शिक्षाकी तान स्वाभाविक चरित्र-चित्रणमें ही सुनाई देती है, वह तान लेखकके कण्ठकी नहीं जान पड़ती—विश्व ब्रह्माण्डसे निकली हुई जान पड़ती है।

ऐसे उपन्यास, जिनमें लोक-रंजनके साथ परिणामगामिनी शिक्षाका समावेश स्वाभाविक चरित्र-चित्रणद्वारा किया गया हो, बहुत ही ऊँचे दर्जेके होते हैं। ऐसे उपन्यासोंका लेखक यह नहीं देखता कि पात्रके हृदयकी किसी स्वाभाविक दुर्बलताको प्रकट कर देनेमें वह आदर्शकी सीमासे गिर जायगा। इतना ही नहीं, वह उस दुर्बलताको ऐसे रूपमें प्रकट करके दिखलाता है जिससे वह आदर्श पात्र ही नहीं बना रहता है, बल्कि उस दुर्बलताको आत्म-बलद्वारा दमन करनेके कारण उसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

मुझे जहाँ तक मालूम है, हिन्दीमें ऐसा कोई उपन्यास नहीं है जिसमें सुन्दर आख्यायिका, घटनाओंका मनोहर कोटि-क्रम और स्वाभाविक चरित्रोंका स्पष्ट चित्र हो। इसी लिए आज मैं जगत्प्रसिद्ध साहित्यसेवी और एशियाके कवि-शिरोमणि, यूरोपके प्रधान व्यक्तियों और कवियोंद्वारा सम्मानित, भारतके सपूत श्रीयुत रवीन्द्र-नाथ ठाकुरके 'चोखेर बालि' नामक उपन्यासका यह हिन्दी भाषान्तर (आँखकी किरकिरी) लेकर हिन्दी पाठकोंकी सेवामें उपस्थित हुआ हूँ।

इस उपन्यासमें केवल छः पात्र हैं। दो पुरुष पात्र और चार स्त्री पात्र। पुरुष-पात्र दोनों नोजवान हैं। स्त्री-पात्रोंमें दो प्रौढा, एक नवयुवती और एक नवयुवती होनेपर भी प्रगल्भा है। पुरुषोंके नाम कुंजविहारी और बिहारी हैं। प्रौढा स्त्रियोंके नाम लक्ष्मी और गौरी हैं। नवयुवतीका नाम करुणा है और प्रगल्भ प्रकृतिकी युवतीका नाम माया है। इन्हीं छः पात्रोंके चरित्रोंको इस उपन्यासमें लेखकने प्रस्फुटित किया है। साथ ही इसकी एक खूबी यह है कि एक पात्रका चरित्र दूसरे पात्रके चरित्रद्वारा स्पष्ट किया गया है। यद्यपि विस्तृत रूपसे हरएक पात्रकी—उसके चरित्रकी—आलोचना करनेके लिए न तो मुझमें शक्ति है और न इस छोटीसी भूमिकामें स्थान ही है, तथापि पाठकोंसे परिचित करानेके लिए मैं यहाँपर हरएक पात्रके चरित्र-चित्रपर थोड़ासा प्रकाश डालनेकी चेष्टा करता हूँ।

कुंजविहारी प्रकटमें प्रधान नायक है, करुणा उसकी स्त्री है, लक्ष्मी उसकी मा है। बिहारी कुंजका सच्चा मित्र, बाल्य-बन्धु है। गौरी उसकी चाची अर्थात् लक्ष्मीकी देवरानी है और माया वह स्त्री है जिसका व्याह पहले कुंजसे ठीक हुआ फिर, कुंजके एकाएक इनकार कर जानेपर, लक्ष्मीने अपने एक भतीजेके साथ कर दिया। पहलेके तीनों पात्रोंको जाहिरमें प्रधानता मिलनेपर भी लेखकने अव्यक्त-रूपमें शेष तीन पात्रोंको ही प्रधानता दी है। अन्ततक पढ़नेपर यही मालूम होता है कि बिहारी, माया और गौरीका चित्र स्पष्ट करनेहीके लिए इन तीनों पात्रोंकी अवतारणा की गई है। जैसे अन्धकारके आगे प्रकाश होता है वैसे ही आदर्श-चरित्र उदार-हृदय सहनशील बिहारीका चरित्र, बाल-प्रकृति

अस्थिर-चित्त असयत कुजबिहारीके चरित्रके साथ, स्पष्ट हो उठा है। ऐसे
ही ससारकी कूट-प्रकृतिसे अनभिज्ञ सरला करुणाके चरित्रके सामने काम-काजमे
निपुण तीक्ष्ण बुद्धिवाली तेजस्विनी मायाका चित्र उज्ज्वल हो उठा है। और
अन्तको बिहारीके ससर्ग या ध्यानसे मायाके चरित्रकी कलुषता या मानसिक कम-
जोरीको धोकर, दूर कर, लेखकने उसके चित्रको आगमें तपे हुए निर्मल सोनेकी
तरह मनोहर और बहुमूल्य बना दिया है। इसी प्रकार प्रौढा होनेपर भी पुत्र-
प्रेममे अन्ध होनेके कारण स्त्री-स्वभाव-सुलभ अधीरता और आवेशसे पूर्ण लक्ष्मीका
चित्र खींचकर, लेखकने उदार-हृदया परोपकार-परायणा स्त्रीके सम्पूर्ण दया स्नेह
आदि गुणोंसे परिपूर्ण, गौरीके चित्रको सुस्पष्ट कर दिखाया है।

कुजके स्वभावका पता पाठकोंको ग्रन्थकारके इन शब्दोंसे ही लग जायगा कि
'लड़कपनसे ही कुजने देवता और मनुष्योंके निकट सब तरहका सहारा पाया है।
इसीसे उसकी इच्छाका वेग उच्छृखल है। दूसरेकी इच्छाका दबाव वह सह नहीं
सकता।' कुजके मातृ-प्रेम और लड़कपनका परिचय इतनेहीसे पाठकोंको हो
जायगा कि माताके विशेष हठ और अनुरोध करनेपर ही वह व्याहके लिए राजी
होता है मगर फिर समयपर 'नहीं' कर बैठता है। मातासे कहता है कि 'मै
अगर मा होता तो कभी अपने लड़केका व्याह न करता लोकनिन्दाको भले ही
सह लेता, क्योंकि वहू आनेपर लड़का दूसरेका हो जाता है।' तात्पर्य यह कि
उसे लेखकने अव्यवस्थित-चित्त और अदूरदर्शी दिखलाया है।

इसके विरुद्ध उसका मित्र बिहारी शान्त, गम्भीर, उदार और भावुक-हृदयका
व्यक्ति है। कुजके शब्दोंमें वह 'अपना काम छोड़कर ससारभरका काम करनेवाला
जीव' है। बिहारी कितना बड़ा मिलनसार था, इसका परिचय ग्रन्थकारके शब्दोंमें
ही यों है। 'बिहारी कुछ ही दिनोंमें उस गाँवका मुखिया बन बैठा। कोई उसके
पास दवा पूछने आता है, कोई मुकद्दमेकी सलाह लेने आता है, कोई अपने
लड़केको किसी बड़े आफिसमें नौकर रखा देनेके लिए प्रार्थना करता है और
कोई उससे अर्जी लिखानेके लिए आता है। बड़े बूढे लोग जहाँ बैठकर ताश-
चौसर खेलते थे वहाँ भी, और जहाँ नीच जातिके लोग बैठकर ताड़ी पीते थे
वहाँ भी, बिहारी अपनी सकौतुक स्वाभाविक सहृदयता लेकर आता-जाता था।
कोई उसे गैर न समझता था, सभी उसका आदर करते थे।'

बिहारीके दूरदर्शी होनेका परिचय भी लीजिए। मायाके समान रहस्यमयी
नारीको एक बार देखकर ही बिहारी समझ लेता है कि 'यह स्त्री जगलमें पड़ी
रहनेके लायक नहीं है।' परन्तु साथ ही उसे यह भी खटका है कि 'कुजके घरमें
उसका रहना कभी अनर्थ भी कर सकता है। क्योंकि जो दीपक घरमें प्रकाश
फैलाता है, वही आग लगाकर उसे भस्म भी कर सकता है।'

बिहारीकी मित्रता निबाहनेकी और सहनशीलताकी प्रशंसा कहाँतक की जाए। अव्यवस्थित-चित्त कुंजने जब बिहारीसे बिना पूछे ही चाचीसे कह दिया कि बिहारी ब्याह करनेके लिए राजी है, तब यह खबर पाकर बिहारीने मित्रताके अनुरोधसे उसे स्वीकार कर लिया। पीछेसे जब कन्याको देखकर कुंज उसके लिए मचल गया तब बिहारीने, स्वयं उस कन्यापर मुग्ध होनेपर भी, उस कन्याको छोड़कर अपने हृदयके महत्त्वका—आत्म-त्यागका परिचय दिया। कहाँतक कहें, बिहारी आदर्श-चरित्र है। उसके द्वारा कुंजका सर्वनाश नहीं होने पाया। उसने जहरीली मायाके विषके दाँत उखाड़कर उसे आदर्श नारी बना दिया। इस उपन्यासका सर्वस्व ही बिहारी है।

पाठकगण, मै कुंज और बिहारीके चरित्रका अधिक विश्लेषण न करके आप लोगोंसे अनुरोध करता हूँ कि आप स्वयं इन दोनो परस्पर प्रतिकूल प्रवृत्तिवाले युवकोंके चित्रोंको एक साथ अपनी आँखोंके आगे रखकर मिलान करें। पहला अस्थिर-प्रकृति, उच्छृंखल, विधवा माका दुलारा, एम० ए० पास होनेपर भी बाल-प्रकृति है और दूसरा बिल्कुल इसके विरुद्ध सहनशील, गभीर, उदार, सरल और परोपकारी है।

स्त्रियोंमें लक्ष्मी—कुंजकी मा, पुत्रस्नेहगर्विता और इसी कारण अन्य स्त्रियोंके प्रति रूखा व्यवहार करनेवाली अथ च, सीधी किन्तु अपरिणामदर्शिनी माता है। इसके विपरीत गौरी, लक्ष्मीके तिरस्कार करनेपर भी रोकर चुप रह जानेवाली साधु-स्वभावा सुशीला स्त्री है। इन दोनों परस्पर प्रतिकूल चित्रोंके अंकित करनेमे भी लेखकने अपने प्रकृति-परिचयका परिचय बहुत ही खूबीके साथ दिया है।

करुणा, पति-प्रेममें अन्ध-अनुरक्ता, संसारके जोड़-तोड़को बिल्कुल न जानने-वाली, सरला कुल-वधू है। हम इसी उपन्यासके एक अंश नीचे उद्धृत किये देते हैं, उतनेहीसे पाठकोंको इसका पता लग जायगा कि वह कैसी भोली-भाली बालिका है—

"उसे यह धारणा ही नहीं थी कि गिरिस्तीके काम सीखनेके लिए नित्य अभ्यासकी जरूरत होती है। वह समझे हुए थी कि मैं स्वभावत. अक्षम और मूढ हूँ, इसी कारण कोई काम ठीक तरहसे नहीं कर पाती। कुंज जब कभी आत्म-विस्तृत सा होकर मायाकी बड़ाई करता हुआ करुणाको धिक्कार देता था, तब वह सरला बालिका चुपचाप विनम्रतासे उसे स्वीकार कर लेती थी।

करुणा बार बार अपनी मौसी सासके कमरेके आसपास घूमती है—बार बार लज्जित-भावसे दर्वाजेके पास आकर खड़ी होती है। वह अपनेको संसारके

मतलबकी चीज बनाना चाहती है। वह काम दिखाना चाहती है, किन्तु कोई उसके कामको नहीं चाहता। उसे यह भी नहीं मालूम कि किस तरह काममें घुसा जाता है—कैसे ससारमें जगह कर लेनी होती है। वह अपनी अयोग्यताके सकोचसे बाहर-ही-बाहर फिरती है। चित्तपर चोट पहुँचानेवाली कोई पीड़ा उसके हृदयमें नित्य बढ़ती ही जाती है, लेकिन वह उस अस्पष्ट पीड़ाको—उस अस्पष्ट आशकाको—स्पष्टरूपसे समझ नहीं सकती। उसको जान पड़ता है कि वह अपना सब सुख-सर्वस्व नष्ट कर रही है। लेकिन उसको वह सुख कैसे प्राप्त हुआ था, अब किस तरह नष्ट हो रहा है, और क्या करनेसे वह बना रहेगा, सो कुछ भी नहीं जानती। उसे रह रहकर केवल जोरसे रोकर कहनेकी इच्छा होती है कि मैं बिलकुल नालायक हूँ, अत्यत असमर्थ हूँ, मेरे बराबर रद्दी आदमी ससारमें कहीं कोई न होगा।"

वह कुजके कहनेपर हिन्दी-शिक्षावली लेकर बैठती है, और मायाके बहकानेपर उसीके वाक्योंमें प्रगल्भाकी तरह अपने पतिको पत्र भी लिखने लगती है।

मायाका चित्र बिलकुल इसके प्रतिकूल खींचा गया है। माया घरके काम-काजमें निपुण, बुद्धिमती, गुणवती, सुचतुरा, दूरदर्शिनी स्त्री है।—" माया कामकी कमान-सी मिली हुई भौंहें और तीक्ष्ण—किन्तु मनको मोह लेनेवाली दृष्टि, भोला चेहरा और सुडौल जवानी लेकर आगे आई, तो भी करुणाने अग्रसर होकर उससे उसके बारेमें कुछ पूछनेका साहस न किया। करुणाने देखा कि मेरी सासकी साँसत मायाको नहीं भोगनी पड़ती, माया उससे सकोच नहीं करती। सास भी जैसे विशेष रूपसे उसे दिखा-दिखाकर मायाका आदर करती है—प्रायः उसे विशेषरूपसे सुना सुनाकर जोशके साथ मायाकी बड़ाई करती है। करुणाने देखा, माया घरके सब कामोंमें चतुर है, हुकूमत करना उसके लिए बहुत ही सहज और स्वाभाविक है। नौकर चाकरोंको उनके काममें लगाने, डाँटने और आज्ञा देनेमे वह रत्तीभर नहीं हिचकती। यह सब देखकर करुणाने मायाके आगे अपनेको बहुत ही साधारण समझा।"

सच तो यह है कि चतुर ग्रन्थकारने मायाका चित्र बहुत ही विलक्षण तथापि सम्पूर्ण स्वाभाविक खींचा है। लक्ष्मी उसे अपनी बहू होनेलायक समझती है। कहती है कि "बेटी, तू मेरे घरकी बहू क्यों न हुई? मैं तुझे कलेजेसे लगाकर रखती।" सूक्ष्मदर्शी बिहारी उसे देखकर—सूक्ष्म दृष्टिसे उसके निगूढ हृदयका परिचय पाकर सोचता है कि "वह बाहरसे एक विलासिनी युवती है, किन्तु उसके भीतर एक पूजा-रता स्त्री बिना अन्न-जलके तपस्या कर रही है।" कुज उसकी कार्य-कुशलता, गृहस्थीकी चतुराई तथा परिहासकी प्रौढतामें मुग्ध है। वह

उसे प्रेम-मकरन्दसे भरी हुई एक कोमल कली समझकर उसके रहस्यमय हृदय-संपुटको खोलनेमे तन्मय हो जाता है। खिली हुई जुही करुणा, जिसमें कुटिल कटाक्ष या तीक्ष्ण गन्ध कुछ भी नहीं है, मायाके आगे कुंजसे केवल तिरस्कार पाती है।

कुंजने पहले, मायासे ब्याह ठीक हो जानेपर भी, ठीक समयपर 'नाहीं' कर दी थी। उसी कुंजने करुणाको जबरदस्ती विहारीके हाथसे छीनकर ब्याह लिया। इसी कारण मायाका करुणासे ईर्षा करना, उसके सुखको—पतिसे अपरिमित आदर पानेके आनन्दको, न देख सकना स्वाभाविक ही था। इस विषयको चतुर लेखकने बहुत ही सुन्दर रूपसे अंकित किया है। ग्रन्थकार स्वयं एक जगहपर इस भावको यों व्यक्त करता है—"माया एकके बाद एक करके कामका ऐसा सिलसिला रखती थी कि उससे निकल जाना करुणाके लिए बहुत ही कठिन हो जाता था। माया, यह कल्पना करके कि करुणाके स्वामी छतके ऊपर सूने कमरेके कोनेमे पड़े कुढ-कुढकर छटपटा रहे हैं, भीतर ही भीतर तीव्र और कठिन हँसी हँसती थी। करुणा व्यग्र होकर कहती थी 'अब मुझे जाने दो, नहीं तो वे खफा होंगे।' माया जल्दीमे कहती थी 'ठहरो, यह काम करके जाना, बहुत देर न होगी।' थोडी देरके बाद करुणा बहुत व्याकुल होकर कहने लगती थी 'बस अब नहीं, सचमुच वे खफा हो जायँगे, मुझको जाने दो।' माया कहती थी 'अजी ठहरो भी जरा, आज रूठ ही जायँगे तो क्या होगा? देखो, जैसे तरकारीमें मिर्चकी जरूरत होती है, वैसे ही प्रेम-मिलनमें मान-लीलाका होना भी बहुत जरूरी होता है।' लेकिन उस मिर्चका मजा माया ही समझती थी, करुणाको उसमें कोई स्वाद न मिलता था। और मायाके पास वह तरकारी नहीं थी, जिसके साथ मिर्चका मजा था। यह सोचते ही मायाकी नस-नसमें मानो आग जलने लगती थी और जिधर देखती थी उधर ही मानों उसकी आँखोसे अंगारे बरसने लगते थे। वह अपने मन-ही-मन कहती 'ऐसे सुखकी गिरिस्ती, ऐसा प्यार करनेवाला पति मै इस घरको राजाका राज्य और पतिको अपना गुलाम बनाकर रख सकती थी। तब क्या घरकी यही दशा रहती? आज मेरी जगहपर यह नासमझ दुधमुँही लड़की खेलनेकी पुतली है!'—"

कुंजपर मायाका क्या भाव था वह भी ग्रंथकारके शब्दोमे ही सुन लीजिए—"कुंजको रोज वह अपने गुणोंके जालमे जकड़ती और नयन-बाणोंसे बेधती थी। इसमें उसे न-जाने क्या सुख मिलता था। कुंज करुणाको प्यार और आदर करता था, इससे मायाका प्रणय-वंचित चित्त सर्वदा चंचल रहा करता था—पीड़ा या एक प्रकारकी उग्र उत्तेजनासे उसकी विरहिणी कल्पना सजग बनी रहती थी।

जिस कुंजने उसके जीवनको निरर्थक बना दिया, जिस कुजने, उस-ऐसे स्त्री-रत्नका अनादर कर, करुणा ऐसी बुद्धिहीन बालिकाको स्वीकार किया, उस कुजको माया प्यार करती है या शत्रु समझती है—उसको हृदय अर्पण करेगी या कठिन दण्ड देगी, सो माया नहीं समझ सकती। कुजने मायाके हृदयमे एक आग लगा दी है, वह आग प्रेमकी है या डाहकी है, या दोनोंसे पैदा हुई है, सो माया स्वय नहीं समझ सकती। माया अपने मनमे विकट हँसी हँसकर कहती है कि 'परमेश्वर न करे कि किसी स्त्रीकी मेरी ऐसी दशा हो। मैं मरना चाहती हूँ या मारना चाहती हूँ, सो आप ही नहीं समझ सकती'।"

माया केवल नारी-स्वभाव-सुलभ ईर्षाके वशीभूत होकर अपने हृदयकी उच्छृखल क्रीड़ासे कुज और करुणाके सुख-ससारको छार-खार किया चाहती है, और विहारी जितना ही धैर्य और दूरदर्शिताके साथ उसके नवीन आविष्काररूपी अत्याचारोंको सहता हुआ कुज और करुणाकी भलाईमें लगा रहता है उतना ही माया नये नये कूट-चक्र रचती है, लेकिन एक ही दिन सज्जन विहारीके साथ जी खोलकर बातचीत करनेसे माया उसके अनुकूल होने लगती है, और अन्तको विहारी उसपर विजय पाता है। इस विजयको माया खुद अपनी एक चिट्ठीमे, जो उसने अपने गाँवसे विहारीको लिखी, यों स्वीकार करती है—

".. तुम मेरे विचारक हो, मैं तुमको प्रणाम करती हूँ। मैंने जो पाप किया है तुमने उसका कठिन दण्ड दिया है और तुम्हारे मुँहसे निकलते ही मैंने उस दण्डको सादर स्वीकार कर लिया है। दुःख यही है कि तुम यह न देख सके कि दण्ड कितना कड़ा है! किन्तु प्रभो, जेलखानेका कैदी क्या भोजन भी नहीं पाता? अच्छा, उत्तम भोजन नहीं,—जितना और जैसा आहार न पानेसे प्राण नहीं बच सकते, वह भी तो नहीं मिलता। तुम्हारी दो लाइनकी चिट्ठी ही मेरे इस देश-निकालेके दण्डमें आहारके बराबर है, वह भी अगर न मिले तो नाथ, यह देश-निकालेका दड प्राण-दडसे भी बढकर है। मेरी इतनी अधिक परीक्षा न लेना दण्डदाता!

"मेरे इस पापी मनके अहकारकी हद न थी। कभी स्वप्नमें भी मैंने यह कल्पना न की थी कि किसीके आगे मुझे यों सिर झुकाना पड़ेगा। प्रभो, तुम्हारी जय हुई, मैं अब विद्रोह न करूँगी।"

मायाके कुतूहलमय रहस्यमय चरित्रका विश्लेषण करनेके लिए अधिक अवकाश नहीं है। पाठक महाशय जितना ही अनुशीलन करेंगे, उतनी ही खूबियाँ पावेंगे। उनको मालूम होगा कि कुहुकिनी माया सिद्धहस्त चतुर चित्रकारका खींचा हुआ

एक विचित्र चित्र है जो कि अपने ढगका एक ही है। इसमे उनको स्थान स्थानपर स्त्री-सुलभ स्वाभाविकतामय वेगपूर्ण उच्छ्वासोंका एक अपूर्व सकलन दृष्टिगोचर होगा।

मुझे पूर्ण आशा है कि विज्ञ पाठकगण, इस उपन्यासको आदिसे अन्त तक पढकर, अवश्य ही प्रसन्न होंगे। इसमे घटनाओंका कोटि-क्रम, हृदयोंका स्वाभाविक चित्र, परिणामके द्वारा आदर्शकी शिक्षा देनेवाले परिच्छेदोंका सुन्दर सग्रह, वास्तवमे हिन्दी ससारके लिए एक नई चीज है।

इस उपन्याससे शिक्षा क्या मिलती है, सो मैं स्पष्ट करके लिखना उचित नहीं समझता। हमारे विज्ञ पाठक स्वय अध्ययन और अनुशीलनके द्वारा उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करें।

अन्तको मैं इण्डियन प्रेस प्रयागके मालिक बाबू चिन्तामणि घोषको हार्दिक धन्यवाद देना नहीं भूल सकता, जिन्होंने इस पुस्तकका अनुवाद करनेके लिए अनुमति देकर मुझे चिर-कृतज्ञ बना लिया है।

रानीकटरा, लखनऊ
आश्विन कृष्ण ११, शुक्रवार
१९७० वि०

—रूपनारायण पाण्डेय

आँखकी किरकिरी

"चोखेरबाली"

पहला परिच्छेद

माँयाकी मा किशोरी एक दिन कुजविहारीकी मा लक्ष्मीके यहाँ धन्ना देकर जा बैठी। दोनों एक ही गाँवकी लड़कियाँ हैं और लड़कपनमें एक ही साथ खेली हैं।

लक्ष्मीने दूसरे दिन कुजविहारीसे कहा—बेटा कुज, किसी तरह गरीबकी इज्जत बचानी होगी। सुना है, लड़की बहुत सुन्दर है और मेमसे लिखना पढना भी सीख चुकी है। आजकल तुम लोगोंकी जैसी रुचि है, वैसी ही लड़की मिल गई है।

कुंज—मा, आजकलके लड़के तो मेरे सिवा और भी बहुतसे हैं।

लक्ष्मी—कुंज, यही तो तुझमें बड़ा भारी दोष है, तेरे आगे ब्याहकी बात करना ही कठिन है।

कुंज—मा, वह बात छोड़ देनेपर भी तो संसारमें बातोंकी कमी नहीं है। इसलिए यह कोई ऐसा दोष नहीं है।

कुजविहारीके पिता बचपनमें ही मर चुके थे, केवल माता थी। मासे कुजविहारीका बर्ताव साधारण लड़कोंका ऐसा न था। कुंजकी अवस्था लगभग बाईस वर्षकी होगी। एम० ए० पास करके अब उसने डाक्टरी पढना शुरू किया है, परन्तु अब भी उसका बचपनकी तरह मासे रूठना, मच-

लना, जिद करना, नहीं गया। कङ्गारूके बच्चेकी तरह माताके गर्भसे बाहर आकर भी माताके बहिर्गर्भके (गोदके) भीतर आवृत्त होकर रहनेका ही उसे अभ्यास हो गया है। माकी सहायताके बिना पुत्रका खाना-पीना सोना उठना-बैठना कुछ भी नहीं होता।

मा जब मायाके साथ ब्याह करनेके लिए कुजके बहुत ही पीछे पड़ गई, तब कुंजने कहा—अच्छा, कन्याको एक बार देख आऊँ।

जिस दिन देखनेके लिए जाना ठीक किया था, उस दिन कुजने कहा—देखकर क्या होगा? जब मैं तुमको खुश करनेके लिए ब्याह करता हूँ, तब भले-बुरेका विचार करना ही व्यर्थ है।

इस कथनमे कुछ क्रोधकी मात्रा होनेपर भी माताने सोचा—यदि कुज लड़कीको देखेगा, तो जरूर ही वह उसे पसद कर लेगा, और तब उसका कड़ा स्वर अवश्य कोमल हो जायगा।

लक्ष्मीने निश्चिन्त होकर निश्चित रूपसे ब्याहके लिए हामी भर ली, ब्याहका दिन भी ठीक हो गया। ब्याहका दिन जितना ही निकट आने लगा, कुजका मन उतना ही उत्कण्ठा और कुतूहलसे विचित्र भाव धारण करने लगा। अन्तको ब्याहके दो-चार दिन पहले ही उसने मासे कह दिया—नहीं मा, मैं किसी तरह ब्याह न करूँगा।

लड़कपनसे ही कुजने देवताओं ओर मनुष्योंके निकट सब तरहका सहारा पाया है, इसी लिए उसकी इच्छाका वेग उच्छृङ्खल है—किसी बाधा या विघ्नको नहीं मानता। दूसरेका दबाव उसे असह्य है। उसने देखा कि मुझपर मेरी स्वीकृतिका और दूसरेके अनुरोधका दबाव मेरी इच्छाके विरुद्ध पड़ रहा है, इसीसे ब्याहके प्रस्तावपर उसे अकारण अरुचि हो गई, ओर वह अरुचि इतनी बढ गई कि अन्तको वह एकदम 'नाहीं' कर बैठा।

कुजका एक बहुत ही प्यारा मित्र था, उसका नाम था बिहारी। वह कुजको दादा और कुजकी माको 'मा' कहता था। मा उसको 'स्टीम-बोट' के पीछे बँधे हुए 'गधा-बोट' की तरह, कुजका एक आवश्यक बोझा ढोनेवाला सामान समझती थी और उतनी ही ममता भी उसपर करती थी। लक्ष्मीने बिहारीसे कहा—बेटा, तो यह काम अब तुम्हें करना होगा, नहीं तो उस गरीबिनकी लड़की—

बिहारीने हाथ जोड़कर कहा—मा, यह काम मुझसे न हो सकेगा। जिस मिठाईको तुम्हारा कुज, अच्छी न लगनेके कारण, छोड़ देता है, तुम्हारे अनुरोधसे उसे तो मै कई बार खा चुका हूँ, किन्तु अब कन्याके विषयमें वह बात न होगी। यह नहीं होगा कि जिस कन्याको वह छोड़ दे उसे भी मैं ग्रहण कर लूँ।

लक्ष्मीने भी मनमें सोचा—विहारी व्याह करनेवाला थोडे ही है। वह तो केवल कुज दादाको जानता है। व्याह करने और बहू लानेकी बातको तो वह कभी मनमें ही नहीं लाता।

यह सोचकर बिहारीके ऊपर लक्ष्मीकी कृपापूर्ण ममता कुछ और बढ गई।

मायाके बाप कुछ धनी नहीं थे, तो भी उन्होंने अपनी इकलौती लड़कीको, एक मिशनरी मेम रखकर, बड़े यत्नसे लिखना पढना और दस्तकारीका काम करना सिखलाया था। कन्याकी अवस्था दिन दिन बढती जाती थी, तो भी उन्हें कुछ होश न था। अन्तको वे मर गये और उनकी विधवा स्त्रीको सुपात्र लड़केकी चिन्ता हुई। एक तो रुपया-पैसा नहीं, और फिर लडकी भी सयानी है।

लक्ष्मीने जब देखा कि कुज भी व्याह नहीं करता और बिहारी भी राजी नहीं होता, तब अन्तमे उसने कह-सुनकर अपने चचेरे भाईके लड़केके साथ मायाका व्याह करा दिया।

कुछ ही दिनोंमें मायाका पति मर गया, वह विधवा हो गई। कुजने हँसकर अपनी मासे कहा—अच्छा हुआ जो मैंने व्याह न किया, नहीं तो स्त्रीके विधवा होनेपर मैं एक घड़ी भी ससारमें न रह सकता!

इस बातको तीन बरस बीत गये। एक दिन मा-बेटोंमें इस तरह बात-चीत होने लगी—

मा—बेटा, लोग मेरी ही निन्दा करते हैं!

बेटा—क्यों मा, तुमने किसीका क्या बिगाड़ा है?

मा—लोग कहते हैं कि मैं इस डरसे तेरा व्याह नहीं करती कि बहूके आनेपर लडका पराया हो जायगा।

बेटा—अगर तुम्हें यह डर है तो ठीक ही है। मैं अगर मा होता, तो अपने जीते-जी कभी लडकेका व्याह न करता, लोगोंकी बातें भले ही सुन लेता।

माने हँसकर कहा—सुनो, जरा लड़केकी बातें सुनो!

कुजने कहा—बहू तो आकर लड़केको अपना बना ही लेगी—तब इतने कष्ट उठानेवाली, इतना स्नेह करनेवाली मा गैर हो जायगी। मा-बेटेके बीचमें और एक अपरिचित आदमी आकर अन्तर डाल देगा। शायद यह तुमको अच्छा लगे, मुझे तो अच्छा नहीं लगता।

लक्ष्मीने मन-ही-मन गद्गद होकर देवरानीसे कहा—सुनो बहू, कुज क्या कहता है? बहू आकर माको छुड़ा न दे, इसी डरसे यह व्याह नहीं करना चाहता! ऐसी विचित्र बात तुमने कभी सुनी है?

कुजकी चाचीने कहा—बेटा, यह तुम्हारी नासमझी है। जिस समयकी जो बात है, उसी समय वह अच्छी मालूम पड़ती है। अब माकी गोद छोड़कर बहूके

साथ घर-गिरिस्ती देखनेका समय आ गया है। इस समय तुम्हारा छोटे बच्चों-सरीखा व्यवहार देखनेसे लज्जा मालूम होती है।

यह बात लक्ष्मीको अच्छी नहीं लगी और जो कुछ उसकी देवरानीने कहा, वह सरल भले ही हो, मगर मधुर न था। लक्ष्मीने कहा—मेरा लड़का अगर मुझे औरोंके लड़कोंसे अधिक चाहता है, तो बहू, तुमको क्यों लज्जा मालूम होनी है? अगर तुम्हारे लड़का होता, तो तुम्हें इसका मर्म समझ पड़ता।

लक्ष्मीने समझा कि देवरानीके लड़का नहीं है और मेरे है, इसीसे वह डाह करती है।

देवरानीका नाम गौरी था। उसने कहा—तुमने ब्याहकी बात उठाई तो मैंने भी इतना कहा, नहीं तो मुझे इस बारेमें कुछ कहनेका अधिकार ही क्या है?

लक्ष्मीने कहा—मेरा लड़का अगर ब्याह नहीं करता, तो तुम्हारी छाती क्यों फटी जाती है? जैसे आज तक मैंने लड़केकी देख-रेख की है, वैसे ही आगे भी कर लूँगी इसके लिए मुझे और किसीकी जरूरत नहीं।

गौरी आँसू बहाती हुई चुपचाप वहाँसे चली गई। इससे कुंजको मन-ही-मन बड़ा कष्ट हुआ। कुंज उस दिन कालेजसे जल्दी लौट आया और सीधे अपनी चाचीके कमरेमें गया।

कुंज खूब जानता था कि चाचीने जो कुछ कहा था वह स्नेह और ममतासे कहा था। उसे यह भी मालूम था कि चाचीकी बहिनके एक लड़की है, वह बे-मा-बापकी है। चाचीकी बड़ी लालसा है कि उस लड़कीके साथ कुंजका ब्याह हो जाय और वह उस लड़कीको अपने पास सुखसे रख सके। यद्यपि कुंजको ब्याह करनेकी बिलकुल इच्छा न थी, तो भी चाचीकी वह लालसा उसे अत्यन्त स्वाभाविक और करुणाजनक जान पड़ी।

कुंज जब चाचीके कमरेमें गया, उस समय शाम होनेमें कुछ ही कसर थी। कुंजने देखा कि चाची पलंगके पायेपर सिर रक्खे जमीनपर सूखा और उदास मुँह लिये बैठी है। चौकेमें रसोई जैसीकी तैसी पड़ी है, उसने भोजनको छुआ भी नहीं है।

साधारण कारणसे भी कुंजकी आँखोंमें आँसू भर आते थे। चाचीको देखकर उसकी आँखें भर आईं। उसने पास आकर आदर और स्नेहके स्वरमें कहा—चाची!

गौरीने जबर्दस्ती हँसनेकी चेष्टा करके कहा—आओ बेटा, बैठो।

कुंजने कहा—बड़ी भूख लगी है, प्रसाद खानेकी इच्छा है।

गौरी कुंजका मतलब समझ गई। उसने उमड़ते हुए आँसुओंको बड़े कष्टसे रोककर आप भोजन किया और कुंजको भी कराया।

उस समय कुंजका हृदय करुणा और सहानुभूतिके भावसे भरा हुआ था। चाचीको धीरज देनेके लिए भोजनके उपरान्त वह एकाएक जोशमें आकर कह बैठा—चाची, तुमने उस दिन अपनी बहिनकी लड़कीकी बात कही थी, उसे मुझे भी तो एक दिन दिखलाओ।

बात तो कह डाली, लेकिन पीछेसे कुंजको बड़ा भय मालूम हुआ।

गौरीने हँसकर कहा—अब व्याहकी ओर मन चला है क्या?

कुंज जल्दीसे बोल उठा—मैं अपने लिये नहीं कहता चाची, मैंने बिहारीको राजी किया है। बस, अब तुम कन्याको देखनेके लिए दिन ठीक कर दो।

गौरीने कहा—अहा, उसके ऐसे भाग्य कहाँ! क्या उसे बिहारी सरीखा वर नसीब हो सकता है?

चाचीके कमरेसे बाहर निकलते ही दर्वाजेपर मा और बेटेकी भेंट हो गई। लक्ष्मीने पूछा—क्यों कुंज, अभी तुम लोगोंकी क्या सलाह हो रही थी?

कुंजने कहा—सलाह तो कुछ भी नहीं, पान लेने आया था।

लक्ष्मी—तेरे पान तो मेरे कमरेमें लगे हुए रक्खे हैं।

कुंज कुछ जवाब न देकर चुपचाप चला गया। लक्ष्मीने गौरीके कमरेमें जाकर बाहरहीसे झाँका। रोनेसे फूली हुई गौरीकी आँखें देखकर लक्ष्मीने अनेक बातोंकी कल्पना कर ली। वह चट कह उठी—क्यों जी, जान पड़ता है तुम लड़केसे कुछ लगा बुझा रही थीं। लक्ष्मी इतना कहकर उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही वहाँसे चली गई।

❦ ❦ ❦ ❦

दूसरा परिच्छेद

लड़की देखनेकी बात कुंज तो भूल गया, लेकिन गौरी नहीं भूली। उसने लड़कीके प्रतिपालक अपनी बहिनके जेठको एक चिट्ठी लिखकर भेज दी और उसमें लड़कीको देखनेके लिए आनेका दिन भी लिख दिया। कुंजका निवास कलकत्तेमें था और लड़की भी वहीं बड़े बाजारमें थी।

लड़कीको देखने जानेका दिन भी ठीक हो गया, यह सुनकर कुंजने कहा—चाची, तुमने इतनी जल्दी क्यों की? मैंने तो अभी बिहारीसे इस बारेमें कुछ भी नहीं कहा।

गौरीने कहा—यह क्या कुंज? तूने ही तो कहा था कि बिहारी राजी है। अब अगर तुम लोग देखने न जाओगे, तो वे लोग क्या कहेंगे?

कुंजने बिहारीको बुलाकर उससे सब हाल कहा। कहा—चलो तो, यदि लड़की पसंद न होगी, तो जबर्दस्ती तो कोई तुम्हारे गले मढ़ ही न देगा।

साथ घर-गिरिस्ती देखनेका समय आ गया है। इस समय तुम्हारा छोटे बच्चों-सरीखा व्यवहार देखनेसे लज्जा मालूम होती है।

यह बात लक्ष्मीको अच्छी नहीं लगी और जो कुछ उसकी देवरानीने कहा, वह सरल भले ही हो, मगर मधुर न था। लक्ष्मीने कहा—मेरा लड़का अगर मुझे औरोंके लड़कोंसे अधिक चाहता है, तो बहू, तुमको क्यों लज्जा मालूम होती है? अगर तुम्हारे लड़का होता, तो तुम्हें इसका मर्म समझ पड़ता।

लक्ष्मीने समझा कि देवरानीके लड़का नहीं है और मेरे है, इसीसे वह डाह करती है।

देवरानीका नाम गौरी था। उसने कहा—तुमने ब्याहकी बात उठाई तो मैंने भी इतना कहा, नहीं तो मुझे इस बारेमें कुछ कहनेका अधिकार ही क्या है?

लक्ष्मीने कहा—मेरा लड़का अगर ब्याह नहीं करता, तो तुम्हारी छाती क्यों फटी जाती है! जैसे आज तक मैंने लड़केकी देख-रेख की है, वैसे ही आगे भी कर लूँगी, इसके लिए मुझे और किसीकी जरूरत नहीं।

गौरी आँसू बहाती हुई चुपचाप वहाँसे चली गई। इससे कुंजको मन-ही-मन बड़ा कष्ट हुआ। कुंज उस दिन कालेजसे जल्दी लौट आया और सीधे अपनी चाचीके कमरेमें गया।

कुंज खूब जानता था कि चाचीने जो कुछ कहा था वह स्नेह और ममतासे कहा था। उसे यह भी मालूम था कि चाचीकी बहिनके एक लड़की है, वह बे-मा-बापकी है। चाचीकी बड़ी लालसा है कि उस लड़कीके साथ कुंजका ब्याह हो जाय और वह उस लड़कीको अपने पास सुखसे रख सके। यद्यपि कुंजको ब्याह करनेकी बिलकुल इच्छा न थी, तो भी चाचीकी वह लालसा उसे अत्यन्त स्वाभाविक और करुणाजनक जान पड़ी।

कुंज जब चाचीके कमरेमें गया, उस समय शाम होनेमें कुछ ही कसर थी। कुंजने देखा कि चाची पलंगके पायेपर सिर रक्खे जमीनपर सूखा और उदास मुँह लिये बैठी है। चौकेमें रसोई जैसीकी तैसी पड़ी है, उसने भोजनको छुआ भी नहीं है।

साधारण कारणसे भी कुंजकी आँखोंमें आँसू भर आते थे। चाचीको देखकर उसकी आँखें भर आईं। उसने पास आकर आदर और स्नेहके स्वरमें कहा—चाची!

गौरीने जबर्दस्ती हँसनेकी चेष्टा करके कहा—आओ बेटा, बैठो।

कुंजने कहा—बड़ी भूख लगी है, प्रसाद खानेकी इच्छा है।

गौरी कुंजका मतलब समझ गई। उसने उमड़े हुए आँसुओंको बड़े कष्टसे रोककर आप भोजन किया और कुंजको भी कराया।

उस समय कुंजका हृदय करुणा और सहानुभूतिके भावसे भरा हुआ था। चाचीको धीरज देनेके लिए भोजनके उपरान्त वह एकाएक जोशमें आकर कह बैठा—चाची, तुमने उस दिन अपनी बहिनकी लड़कीकी बात कही थी, उसे मुझे भी तो एक दिन दिखलाओ।

बात तो कह डाली, लेकिन पीछेसे कुंजको बड़ा भय मालूम हुआ।

गौरीने हँसकर कहा—अब ब्याहकी ओर मन चला है क्या?

कुंज जल्दीसे बोल उठा—मैं अपने लिये नहीं कहता चाची, मैंने विहारीको राजी किया है। बस, अब तुम कन्याको देखनेके लिए दिन ठीक कर दो।

गौरीने कहा—अहा, उसके ऐसे भाग्य कहाँ! क्या उसे विहारी सरीखा वर नसीब हो सकता है?

चाचीके कमरेसे बाहर निकलते ही दर्वाजेपर मा और बेटेकी भेंट हो गई। लक्ष्मीने पूछा—क्यों कुंज, अभी तुम लोगोंकी क्या सलाह हो रही थी?

कुंजने कहा—सलाह तो कुछ भी नहीं, पान लेने आया था।

लक्ष्मी—तेरे पान तो मेरे कमरेमें लगे हुए रक्खे हैं।

कुंज कुछ जवाब न देकर चुपचाप चला गया। लक्ष्मीने गौरीके कमरेमें जाकर बाहरहीसे झाँका। रोनेसे फूली हुई गौरीकी आँखें देखकर लक्ष्मीने अनेक बातोंकी कल्पना कर ली। वह चट कह उठी—क्यों जी, जान पड़ता है तुम लड़केसे कुछ लगा बुझा रही थीं। लक्ष्मी इतना कहकर उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही वहाँसे चली गई।

❧ ❧ ❧ ❧

दूसरा परिच्छेद

लड़की देखनेकी बात कुंज तो भूल गया, लेकिन गौरी नहीं भूली। उसने लड़कीके प्रतिपालक अपनी बहिनके जेठको एक चिट्ठी लिखकर भेज दी और उसमें लड़कीको देखनेके लिए आनेका दिन भी लिख दिया। कुंजका निवास कलकत्तेमें था और लड़की भी वहीं बड़े बाजारमें थी।

लड़कीको देखने जानेका दिन भी ठीक हो गया, यह सुनकर कुंजने कहा—चाची, तुमने इतनी जल्दी क्यों की? मैंने तो अभी विहारीसे इस बारेमें कुछ भी नहीं कहा।

गौरीने कहा—यह क्या कुंज? तूने ही तो कहा था कि विहारी राजी है। अब अगर तुम लोग देखने न जाओगे, तो वे लोग क्या कहेंगे?

कुंजने विहारीको बुलाकर उससे सब हाल कहा। कहा—चलो तो, यदि लड़की पसंद न होगी, तो जबर्दस्ती तो कोई तुम्हारे गले मढ ही न देगा।

बिहारी—सो मुझसे न होगा। चाचीकी बहिनकी लड़कीको देखकर यह बात मेरे मुखसे नहीं निकल सकती कि पसंद नहीं है।

कुंज०—यह तो और भी अच्छी बात है।

बिहारी—किन्तु कुंज दादा, तुमने यह बड़ा अन्याय किया। अपनेको हल्का रखकर दूसरेके ऊपर ऐसा बोझा रख देना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। अब इनकार करके चाचीको कष्ट देना मेरे लिए बहुत ही कठिन होगा।

कुंजने कुछ लज्जित और रुष्ट होकर कहा—तो क्या करना चाहते हो?

बिहारी—जब तुमने मेरी ओरसे उनको आशा दे दी है, तो मैं अवश्य व्याह करूँगा। देखनेके लिए जानेकी कोई जरूरत नहीं।

बिहारी गौरीको देवीके समान मानता और भक्ति करता था।

अन्तको गौरीने खुद बिहारीको बुलाकर कहा—बेटा, ऐसा नहीं हो सकता। पहले तुम लोग लड़कीको अच्छी तरहसे देख सुन लो। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अगर लड़की पसंद न होगी, तो मैं व्याह न करने दूँगी।

जिस दिन जाना निश्चित हुआ था, उस दिन कुंजने कालेजसे आकर मासे कहा—मेरा वह रेशमी कोट और ढाकेवाला धोतीका जोड़ा तो निकाल दो।

मा—क्यों, कहाँ जायगा?

कुंज०—एक जगह जाना है, इस समय जल्दी है, लौटकर बता दूँगा। कुंजसे कुछ सज-धज किये बिना न रहा गया। दूसरेके लिए होनेपर भी जब कन्या देखनेके लिए जानेका प्रसंग आ पड़ा, तब जवानीके अनुरोधसे कुंजको जरा बाल सँवारना और दुपट्टेमें एक शीशी एसेंस छिड़कना उचित ही जान पड़ा।

दोनों बन्धु कन्या देखनेको चल पड़े।

कन्याके चाचा विश्वनाथप्रसाद खाने पीनेसे खुश थे। उन्होंने अपने हाथसे अच्छी रकम पैदा करके एक तिमंजिला मकान और उससे मिला हुआ एक बाग भी बना लिया था। अपने आसपासके मकानोंके बीचमें वह मकान उनके गौरवके समान ही सिर उठाये खड़ा था।

विश्वनाथने अपने गरीब भाईके मर जानेपर भतीजीको अपने घर लाकर रख लिया था। लड़कीकी मौसी गौरी उसे अपने पास रखना चाहती थी, किन्तु वैसा करनेमें व्यय लाघव होनेंं पर भी गौरव-लाघवके भयसे विश्वनाथ राजी न हुए। अपनी मान-मर्यादाके सम्बन्धमें विश्वनाथ इतने कड़े थे कि लड़कीको कभी भेंट-मुलाकात करनेके लिए भी मौसीके घर नहीं भेजते थे।

जब कन्याकी अवस्था व्याह करनेके लायक हुई, तब विश्वनाथको उसके व्याहकी चिन्ता हुई। लेकिन आजकलके दिनोंमें 'यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी' की सफलता बहुत कम देखी जाती है। भावनाके साथ खर्च करनेको भी चाहिए। किन्तु व्याहके खर्च या वर-पक्षको धन देनेके बारेमें

विश्वनाथ कहते थे कि—" मेरे भी आगे एक लड़की है, मैं अकेले क्या क्या कर सकता हूँ।" इसी झझटमें भतीजीका व्याह कुछ दिनों तक, इच्छा रहते भी, रुका रहा। इसी समय कुजने खूब सज-धजके साथ अपने मित्रके सहित रंग-भूमिमें प्रवेश किया।

चैतके महीनेका सायंकाल है, सूर्य अस्त हो चले हैं। विश्वनाथके मकानमें दूसरे मजिलपर दक्षिणकी ओरके बरामदेमें सफेद पत्थरकी एक गोल चौकीपर चॉदीकी दो थालियोंमें अभ्यागतोंके लिए फल और मिठाई रक्खी है। पास ही दो चॉदीके गिलासोंमें बरफका पानी रक्खा है और बरफकी ठडकसे निकले हुए मोतियोंके समान हिम-कण उन पात्रोंकी शोभा बढा रहे हैं। कुज और बिहारी दोनों सकोचके साथ जल-पान करनेके लिए बैठे हैं। नीचे बागमें माली फुहारा लिये हुए वृक्षोंमें पानी डाल रहा है। वहाँ पानी पडनेसे मिट्टीकी जो सौंधी सुगध उठ रही है, उसे लेकर चैत्रका दक्षिण पवन कुजकी चुनी हुई सुगधित चादरके ऑचलको उड़ा-उड़ाकर क्रीड़ा कर रहा है। आसपासकी खिड़कियोंमेंसे कभी कभी थोड़ी बहुत दबी हुई हँसी, धीरे धीरे बातचीत करनेका अस्पष्ट शब्द और एक-आध गहनेकी हल्की-सी खनक सुनाई पड़ जाती है।

जल-पान हो चुकनेपर विश्वनाथने भीतरकी ओर देखकर कहा—चुन्नी, पान तो ले आ।

कुछ देरके बाद पीछेका दर्वाजा धीरेसे खुला और एक लड़की न जाने कहॉसे सारे अगोंमें ससार-भरकी लज्जा लपेटकर पान-दान हाथमें लिये हुए विश्वनाथके पास आकर खडी हो गई। विश्वनाथने कहा—बेटी, शरमाती क्यों है? जाकर उन लोगोंके सामने पान रख दे।

बालिकाने झुककर कॉपते हुए हाथसे वह पान-दान मेहमानोंके समीप रख दिया। बरामदेके पश्चिम ओरसे डूबते हुए सूर्यकी सुनहली आभा बालिकाके सकोच-भरे मुख-मण्डलपर प्रकाश डाल गई। उसी समय कुजने उस सकोच-भरी बालिकाके मुखकी करुण छविको अच्छी तरह देख लिया।

बालिका पान रखकर जब भीतर जाने लगी, तब विश्वनाथने कहा—" चुन्नी, जरा ठहर जा न, बिहारी बाबू, यह मेरे छोटे भाई उमाशकरकी लड़की है। वे तो चले गये, अब मेरे सिवा इसके और कोई नहीं।" इतना कहकर उन्होंने एक लबी सॉस ले ली।

कुजके हृदयमें दयाका स्रोत खुल गया। उसने उस बे-मा-बापकी बालिकाको एक बार फिर करुणापूर्ण दृष्टिसे देखा।

कोई उस बालिकाकी अवस्था ठीक ठीक न बतलाता था। कुटुम्बके लोग कहते थे कि यही बारह-तेरह होगी—अर्थात् वह चौदह पन्द्रहसे कम न होगी।

विहारी—सो मुझसे न होगा। चाचीकी बहिनकी लड़कीको देखकर यह बात मेरे मुखसे नहीं निकल सकती कि पसंद नहीं है।

कुंज०—यह तो और भी अच्छी बात है।

विहारी—किन्तु कुंज दादा, तुमने यह बड़ा अन्याय किया। अपनेको हल्का रखकर दूसरेके ऊपर ऐसा बोझा रख देना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। अब इनकार करके चाचीको कष्ट देना मेरे लिए बहुत ही कठिन होगा।

कुंजने कुछ लज्जित और रुष्ट होकर कहा—तो क्या करना चाहते हो?

विहारी—जब तुमने मेरी ओरसे उनको आशा दे दी है, तो मैं अवश्य ब्याह करूँगा। देखनेके लिए जानेकी कोई जरूरत नहीं।

विहारी गौरीको देवीके समान मानता और भक्ति करता था।

अन्तको गौरीने खुद विहारीको बुलाकर कहा—बेटा, ऐसा नहीं हो सकता। पहले तुम लोग लड़कीको अच्छी तरहसे देख सुन लो। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अगर लड़की पसंद न होगी, तो मैं ब्याह न करने दूँगी।

जिस दिन जाना निश्चित हुआ था, उस दिन कुंजने कालेजसे आकर मासे कहा—मेरा वह रेशमी कोट और ढाकेवाला धोतीका जोड़ा तो निकाल दो।

मा—क्यों, कहाँ जायगा?

कुंज०—एक जगह जाना है, इस समय जल्दी है, लौटकर बता दूँगा। कुंजसे कुछ सज-धज किये विना न रहा गया। दूसरेके लिए होनेपर भी जब कन्या देखनेके लिए जानेका प्रसंग आ पड़ा, तब जवानीके अनुरोधसे कुंजको जरा बाल सँवारना और दुपट्टेमें एक शीशी एसेंस छिड़कना उचित ही जान पड़ा।

दोनों बन्धु कन्या देखनेको चल पड़े।

कन्याके चाचा विश्वनाथप्रसाद खाने पीनेसे खुश थे। उन्होंने अपने हाथसे अच्छी रकम पैदा करके एक तिमंजिला मकान और उससे मिला हुआ एक बाग भी बना लिया था। अपने आसपासके मकानोंके बीचमें वह मकान उनके गौरवके समान ही सिर उठाये खड़ा था।

विश्वनाथने अपने गरीब भाईके मर जानेपर भतीजीको अपने घर लाकर रख लिया था। लड़कीकी मौसी गौरी उसे अपने पास रखना चाहती थी, किन्तु वैसा करनेमें व्यय लाघव होनें पर भी गौरव-लाघवके भयसे विश्वनाथ राजी न हुए। अपनी मान-मर्यादाके सम्बन्धमें विश्वनाथ इतने कड़े थे कि लड़कीको कभी भेंट-मुलाकात करनेके लिए भी मौसीके घर नहीं भेजते थे।

जब कन्याकी अवस्था ब्याह करनेके लायक हुई, तब विश्वनाथको उसके ब्याहकी चिन्ता हुई। लेकिन आजकलके दिनोंमें 'यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी' की सफलता बहुत कम देखी जाती है। भावनाके साथ खर्च करनेको भी चाहिए। किन्तु ब्याहके खर्चे या वर-पक्षको धन देनेके बारेमें

विश्वनाथ कहते थे कि—" मेरे भी आगे एक लड़की है, मैं अकेले क्या क्या कर सकता हूँ। " इसी झझटमें भतीजीका व्याह कुछ दिनों तक, इच्छा रहते भी, रुका रहा। इसी समय कुजने खूब सज-धजके साथ अपने मित्रके सहित रग-भूमिमे प्रवेश किया।

चैतके महीनेका सायंकाल है, सूर्य अस्त हो चले हैं। विश्वनाथके मकानमें दूसरे मजिलपर दक्षिणकी ओरके बरामदेमें सफेद पत्थरकी एक गोल चौकीपर चॉदीकी दो थालियोंमें अभ्यागतोंके लिए फल और मिठाई रक्खी है। पास ही दो चॉदीके गिलासोंमें बरफका पानी रक्खा है और बरफकी ठडकसे निकले हुए मोतियोंके समान हिम-कण उन पात्रोंकी शोभा बढा रहे हैं। कुज और विहारी दोनों सकोचके साथ जल-पान करनेके लिए बैठे हैं। नीचे बागमे माली फुहारा लिये हुए वृक्षोंमें पानी डाल रहा है। वहाँ पानी पड़नेसे मिट्टीकी जो सोंधी सुगंध उठ रही है, उसे लेकर चैत्रका दक्षिण पवन कुजकी चुनी हुई सुगधित चादरके आँचलको उड़ा-उड़ाकर क्रीड़ा कर रहा है। आसपासकी खिड़कियोंमेंसे कभी कभी थोड़ी बहुत दबी हुई हँसी, धीरे धीरे बातचीत करनेका अस्पष्ट शब्द और एक-आध गहनेकी हल्की-सी खनक सुनाई पड़ जाती है।

जल-पान हो चुकनेपर विश्वनाथने भीतरकी ओर देखकर कहा—चुन्नी, पान तो ले आ।

कुछ देरके बाद पीछेका दर्वाजा धीरेसे खुला और एक लड़की न जाने कहाँसे सारे अगोंमें ससार-भरकी लज्जा लपेटकर पान-दान हाथमें लिये हुए विश्वनाथके पास आकर खड़ी हो गई। विश्वनाथने कहा—बेटी, शरमाती क्यों है? जाकर उन लोगोंके सामने पान रख दे।

बालिकाने झुककर कॉपते हुए हाथसे वह पान-दान मेहमानोंके समीप रख दिया। बरामदेके पश्चिम ओरसे डूबते हुए सूर्यकी सुनहली आभा बालिकाके सकोच-भरे मुख-मण्डलपर प्रकाश डाल गई। उसी समय कुजने उस सकोच-भरी बालिकाके मुखकी करुण छविको अच्छी तरह देख लिया।

बालिका पान रखकर जब भीतर जाने लगी, तब विश्वनाथने कहा—" चुन्नी, जरा ठहर जा न, विहारी बाबू, यह मेरे छोटे भाई उमाशकरकी लड़की है। वे तो चले गये, अब मेरे सिवा इसके और कोई नहीं। " इतना कहकर उन्होंने एक लबी सॉस ले ली।

कुजके हृदयमें दयाका स्रोत खुल गया। उसने उस बे-मा-बापकी बालिकाको एक बार फिर करुणापूर्ण दृष्टिसे देखा।

कोई उस बालिकाकी अवस्था ठीक ठीक न बतलाता था। कुटुम्बके लोग कहते थे कि यही बारह-तेरह होगी—अर्थात् वह चौदह पन्द्रहसे कम न होगी।

किन्तु बेचारी दूसरेके घरमें अनुग्रहसे पली थी, इस कारण एक प्रकारके कुण्ठित और भीरु भावने उसके नवीन यौवनके उभारको ढँक रक्खा था।

दयार्द्र-हृदय कुजने कहा—तुम्हारा नाम क्या है?

साथ ही विश्वनाथ बाबूने भी उत्साह देते हुए कहा—बताओ बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?

बालिकाको आज्ञा-पालनका अभ्यास था। उसने सिर नीचा करके कहा—करुणामयी।

'करुणा!' कुजको यह नाम बहुत ही करुण और कण्ठस्वर अत्यन्त कोमल जान पड़ा। उसके हृदयमें न जाने किसने कहा—अनाथा करुणा!

दोनों बंधु बाहर आकर गाड़ीपर बैठे, गाड़ी चल दी। कुजने कहा—बिहारी, तुम इस बालिकाको हाथसे न जाने देना।

बिहारीने इस बातका कुछ स्पष्ट उत्तर न देकर कहा—लड़की देखनेमें बिल्कुल अपनी मौसीके अनुरूप है। जान पड़ता है, वैसी गुण परिपूर्ण भी होगी।

कुंजने कहा— तुम्हारे सिरपर मैंने जो बोझा रक्खा था, वह तो जान पड़ता है कि अब तुमको वैसा भारी नहीं मालम पड़ता!

बिहारीने कहा—नहीं, जान पड़ता है कि मैं उसे उठा सकूँगा।

कुजने कहा—मगर उतना कष्ट उठानेका काम ही क्या है? तुम कहो तो यह बोझा तुम्हारे ऊपर न रखकर मैं अपने ही ऊपर ले लूँ। क्या कहते हो? ,

विहारीने गभीर भावसे कुंजकी तरफ देखा और कहा—कुज दादा, क्या सच कहते हो? अब भी ठीक ठीक कह दो। तुम अगर ब्याह करोगे, तो चाची बहुत खुश होंगीं और ऐसा होनेसे वह लड़कीको हमेशा अपने पास भी रख सकेंगीं।

कुंजने कहा—तुम पागल हुए हो! यदि ऐसा होता, तो बहुत दिन पहले ही हो जाता।

बिहारी इसपर कुछ अधिक आग्रह न कर घर चला गया। कुज भी गाड़ीसे उतरकर सीधी गली छोड़कर सड़क ही सड़क घूमता हुआ बहुत देरमें घर पहुँचा।

कुजकी मा उस समय पूरी-तरकारी बनानेमें लगी हुई थी और चाची उस समय तक विश्वनाथ बाबूके घरसे लौटकर न आई थी।

कुज एक निराली छतके ऊपर जाकर आराम-कुर्सीपर लेट रहा। कलकत्तेकी ऊँची ऊँची इमारतोंकी चोटियोंपर शुक्ल पक्षकी सप्तमीका अर्ध चद्र अपने मोहन मन्त्रको चुपचाप पढ रहा था। माने जाकर जब कुजसे खानेको चलनेके लिए कहा, तब उसने आलस-भरे स्वरमें कहा—इस समय उठनेको जी नहीं चाहता।

माने कहा—तो यहीं ले आऊँ?

कुंजने कहा—नहीं, आज मुझे खाना नहीं है, मै भोजन कर आया हूँ।

मानेे पूछा—कहाँ भोजन करने गया था?

कुंजने कहा—फिर बतलाऊँगा, इस समय तबियत ठीक नहीं है।

पुत्रके ऐसे अपूर्व व्यवहारसे अभिमानिनी माताको बुरा मालूम हुआ, वह और कुछ न कहकर जाने लगी।

इतनेहीमें कुंज सँभल गया। उसने अपने व्यवहारसे लज्जित होकर कहा—मा, भोजन यहीं ले आ।

माने कहा—भूख न हो, तो जरूरत ही क्या है?

इस बातको लेकर मा और बेटेमें कुछ देरतक मान-अभिमानकी बातचीत होती रही। आखिर कुंजको भोजन करनेके लिए बैठना पड़ा।

तीसरा परिच्छेद

रातको कुंजको अच्छी तरह नींद नहीं आई। तड़के ही वह बिहारीके यहाँ गया। जाकर कहा कि भाई, मैंने कल रातको बिचारा तो मुझे यह मालूम हुआ कि अगर मैं चाचीकी बहिनकी लड़कीसे ब्याह न करूँगा, तो उनको बहुत बुरा लगेगा। उनकी आन्तरिक अभिलाषा है कि मैं अपनी बहिनकी लड़कीको अपने हो पास रक्खूँ।

बिहारीने कहा—इसके लिए तो इस तरह एकाएक नये तौरसे विचार करनेकी कोई जरूरत न थी। इसमें नई बात क्या हुई? इस तरह तो वे कई बार कई प्रकारसे अपनी इच्छा तुम्हारे आगे प्रकट कर चुकी हैं।

कुंजने कहा—वही तो कहता हूँ। करुणासे मैं ब्याह न करूँगा, तो यह बात चाचीके हृदयमें जीवनभर काँटेकी तरह खटकेगी।

बिहारीने दूसरी ओर देखते देखते कहा—हो सकता है!

कुंजने फिर कहा—मेरी समझमें अगर मैं करुणासे ब्याह न करूँगा, तो अच्छा न होगा—अन्याय होगा।

बिहारीने एक प्रकारसे अस्वाभाविक उत्साहके साथ कहा—अच्छी बात है, यह तो अच्छा ही है। तुम अगर राजी हो, तब तो कोई बात ही नहीं है। मगर यह कर्तव्य-बुद्धि अगर कल ही तुम्हें सूझती, तो अच्छा होता।

कुंजने कहा—अगर एक दिन पीछे ही सूझी, तो उससे ऐसी कौन-सी हानि हो गई?

इधर कुंजने ब्याहकी ओर मनकी लगाम ढीली की और उधर इसमें विलम्ब होना उसे असह्य हो उठा। वह सोचने लगा कि और अधिक बातचीत न होकर काम जल्दी ही हो जाय तो अच्छा हो।

किन्तु वेचारी दूसरेके घरमे अनुग्रहसे पली थी, इस कारण एक प्रकारके कुण्ठित और भीरु भावने उसके नवीन यौवनके उभारको ढँक रक्खा था।

दयार्द्र-हृदय कुजने कहा—तुम्हारा नाम क्या है ?

साथ ही विश्वनाथ बाबूने भी उत्साह देते हुए कहा—बताओ बेटी, तुम्हारा नाम क्या है ?

बालिकाको आज्ञा-पालनका अभ्यास था। उसने सिर नीचा करके कहा—करुणामयी।

'करुणा!' कुजको यह नाम बहुत ही करुण और कण्ठस्वर अत्यन्त कोमल जान पड़ा। उसके हृदयमें न जाने किसने कहा—अनाथा करुणा!

दोनों बधु बाहर आकर गाड़ीपर बैठे, गाड़ी चल दी। कुंजने कहा—बिहारी, तुम इस बालिकाको हाथसे न जाने देना।

बिहारीने इस बातका कुछ स्पष्ट उत्तर न देकर कहा—लड़की देखनेमें बिल्कुल अपनी मौसीके अनुरूप है। जान पड़ता है, वैसी गुण परिपूर्ण भी होगी।

कुंजने कहा— तुम्हारे सिरपर मैंने जो बोझा रक्खा था, वह तो जान पड़ता है कि अब तुमको वैसा भारी नहीं मालूम पडता!

बिहारीने कहा—नहीं, जान पड़ता है कि मैं उसे उठा सकूँगा।

कुजने कहा—मगर उतना कष्ट उठानेका काम ही क्या है? तुम कहो तो यह बोझा तुम्हारे ऊपर न रखकर मैं अपने ही ऊपर ले लूँ। क्या कहते हो?,

बिहारीने गभीर भावसे कुंजकी तरफ देखा और कहा—कुज दादा, क्या सच कहते हो? अब भी ठीक ठीक कह दो। तुम अगर ब्याह करोगे, तो चाची बहुत खुश होंगीं और ऐसा होनेसे वह लड़कीको हमेशा अपने पास भी रख सकेंगीं।

कुंजने कहा—तुम पागल हुए हो! यदि ऐसा होता, तो बहुत दिन पहले ही हो जाता।

बिहारी इसपर कुछ अधिक आग्रह न कर घर चला गया। कुंज भी गाड़ीसे उतरकर सीधी गली छोड़कर सड़क ही सड़क घूमता हुआ बहुत देरमें घर पहुँचा।

कुंजकी मा उस समय पूरी-तरकारी बनानेमें लगी हुई थी और चाची उस समय तक विश्वनाथ बाबूके घरसे लौटकर न आई थी।

कुज एक निराली छतके ऊपर जाकर आराम-कुर्सीपर लेट रहा। कलकत्तेकी ऊँची ऊँची इमारतोंकी चोटियोंपर शुक्ल पक्षकी सप्तमीका अर्ध चंद्र अपने मोहन मन्त्रको चुपचाप पढ रहा था। माने जाकर जब कुजसे खानेको चलनेके लिए कहा, तब उसने आलस-भरे स्वरमें कहा—इस समय उठनेको जी नहीं चाहता।

माने कहा—तो यहीं ले आऊँ?

कुजने कहा—नहीं, आज मुझे खाना नहीं है, मै भोजन कर आया हूँ।

मा ने पूछा—कहाँ भोजन करने गया था ?

कुंजने कहा—फिर बतलाऊँगा, इस समय तबियत ठीक नहीं है।

पुत्रके ऐसे अपूर्व व्यवहारसे अभिमानिनी माताको बुरा मालूम हुआ, वह और कुछ न कहकर जाने लगी।

इतनेहीमें कुंज सँभल गया। उसने अपने व्यवहारसे लज्जित होकर कहा—मा, भोजन यहीं ले आ।

माने कहा—भूख न हो, तो जरूरत ही क्या है ?

इस बातको लेकर मा और बेटेमें कुछ देरतक मान-अभिमानकी बातचीत होती रही। आखिर कुंजको भोजन करनेके लिए बैठना पड़ा।

तीसरा परिच्छेद

रातको कुंजको अच्छी तरह नींद नहीं आई। तड़के ही वह बिहारीके यहाँ गया। जाकर कहा कि भाई, मैंने कल रातको बिचारा तो मुझे यह मालूम हुआ कि अगर मैं चाचीकी बहिनकी लड़कीसे ब्याह न करूँगा, तो उनको बहुत बुरा लगेगा। उनकी आन्तरिक अभिलाषा है कि मैं अपनी बहिनकी लड़कीको अपने ही पास रक्खूँ।

बिहारीने कहा—इसके लिए तो इस तरह एकाएक नये तौरसे विचार करनेकी कोई जरूरत न थी। इसमें नई बात क्या हुई ? इस तरह तो वे कई बार कई प्रकारसे अपनी इच्छा तुम्हारे आगे प्रकट कर चुकी हैं।

कुंजने कहा—वही तो कहता हूँ। करुणासे मैं ब्याह न करूँगा, तो यह बात चाचीके हृदयमें जीवनभर काँटेकी तरह खटकेगी।

बिहारीने दूसरी ओर देखते देखते कहा—हो सकता है !

कुंजने फिर कहा—मेरी समझमें अगर मैं करुणासे ब्याह न करूँगा, तो अच्छा न होगा—अन्याय होगा।

बिहारीने एक प्रकारसे अस्वाभाविक उत्साहके साथ कहा—अच्छी बात है, यह तो अच्छा ही है। तुम अगर राजी हो, तब तो कोई बात ही नहीं है। मगर यह कर्तव्य-बुद्धि अगर कल ही तुम्हें सूझती, तो अच्छा होता।

कुंजने कहा—अगर एक दिन पीछे ही सूझी, तो उससे ऐसी कौन-सी हानि हो गई ?

इधर कुंजने ब्याहकी ओर मनकी लगाम ढीली की और उधर इसमें विलम्ब होना उसे असह्य हो उठा। वह सोचने लगा कि और अधिक बातचीत न होकर काम जल्दी ही हो जाय तो अच्छा हो।

कुंजने मासे जाकर कहा—अच्छा मा, तुम्हारा कहना न टालूँगा। मैं व्याह करनेके लिए राजी हूँ।

माने यह सुनकर मन-ही-मन कहा—अब समझी कि उस दिन बहूजी अपनी बहिनकी लड़कीको देखने क्यों गई थीं और कुंज भी सज-धजकर क्यों बाहर गया था।

उसका बारबारका आग्रह पुत्रने टाल दिया और गौरीका चक्र उसपर चल गया, यह लक्ष्मीको अच्छा नहीं लगा। उसने गौरीकी इच्छाको पूर्ण न होने देनेकी दृढ प्रतिज्ञा करके कहा—अच्छी बात है, मैं एक अच्छी लड़की खोजे देती हूँ।

कुंजने करुणाका उल्लेख करके कहा—कन्या खोजनेकी क्या जरूरत है?

माने कहा—बेटा, वह लड़की ठीक नहीं है। मैं कहे देती हूँ, उसके साथ मैं तेरा व्याह न करूँगी।

कुजने भरसक सयत भाषामें कहा—क्यों मा, लड़की तो बुरी नहीं है?

लक्ष्मीने खीझकर कहा—उसके तीनों कुलमें कोई नहीं है। उसके साथ व्याह करनेसे मुझे कुटुम्बका क्या सुख होगा?

कुजने कहा—कुटुम्बका सुख न होनेपर भी मुझे दु.ख न होगा। इसके सिवा मा, मुझे वह लड़की बहुत पसन्द है।

लड़केकी जिद देखकर लक्ष्मीका हृदय इस सम्बन्धमें और भी कड़ा हो गया। उसने गौरीसे जाकर कहा—एक बे-मा-बापकी कुलक्षणा लड़कीके साथ मेरे अकेले लड़केका व्याह कराकर तुम उसे मुझसे अलग करना चाहती हो? इतनी बड़ी शैतानी?

गौरीने रोकर कहा—कुंजके साथ व्याह करनेकी तो कोई बात नहीं हुई। मुझे यह भी मालूम नहीं कि उसने अपनी इच्छासे तुमसे क्या कहा है।

किन्तु लक्ष्मीको इसपर बिल्कुल विश्वास न हुआ। तब गौरीने बिहारीको बुलवाया और आँखोंमें आँसू-भरकर कहा—तुम्हारे ही साथ तो सब ठीक हुआ था, फिर यह गड़बड़ क्यों मचा दी? तुमको ही उस लड़कीके साथ व्याह करना होगा। तुम न उबारोगे, तो मुझे लज्जा होगी। लड़की बड़ी अच्छी है। तुम्हारे लायक है।

बिहारीने कहा—चाची, तुम मुझसे ऐसा क्यों कहती हो? जब वह तुम्हारी बहिनकी लड़की है, तब मैं उसके साथ व्याह करनेसे तो इनकार कर ही नहीं सकता। मैं तो अब भी तैयार हूँ लेकिन कुञ्ज—

गौरीने बीचहीमें बात काटकर कहा—बेटा, कुजके साथ उसका किसी तरह व्याह नहीं हो सकता। मैं तुमसे सच कहती हूँ कि तुम्हारे साथ व्याह होनेसे ही मैं सबसे अधिक निश्चिन्त होऊँगी। मै बिल्कुल नहीं चाहती कि उसका व्याह कुजसे हो।

बिहारीने कहा—चाची, जब तुम्हारी ऐसी इच्छा है, तब तो फिर कोई बात ही नहीं है।

इसके बाद विहारीने लक्ष्मीसे जाकर कहा—मा, चाचीकी बहिनकी लड़कीके साथ मेरा व्याह पक्का हो गया है। घरमें कोई आत्मीय स्त्री न होनेके कारण मुझे लज्जा छोड़ आप ही तुमसे कहना पड़ा, इस ढिठाईके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

लक्ष्मीने आश्चर्यके भावसे कहा—कहता क्या है विहारी! मुझे सुनकर बड़ी खुशी हुई। लड़की साक्षात् लक्ष्मीका रूप है, तेरे लायक है। इस लड़कीको किसी तरह हाथसे न जाने देना।

विहारीने कहा—हाथसे कैसे जाने दूँगा? कुज दादाने खुद देखकर उसके साथ मेरा सम्बन्ध ठीक कर दिया है।

इस प्रकारके बाधा-विघ्नोंको देखकर कुज और भी उत्तेजित हो उठा। वह अपनी मा और चाचीसे बिगड़कर एक दीन-हीन छात्राश्रममें (मेसमे) जाकर रहने लगा।

लक्ष्मी रोती हुई गौरीके पास पहुँची, बोली—बहू, मालूम होता है, लड़का उदास होकर घरसे चला गया है। उसे अब तुम ही मना सकती हो।

गौरीने कहा—तनिक धीरज धरो, दो-चार दिनमे उसका क्रोध कम हो जायगा।

लक्ष्मीने कहा—तुम उसको नहीं जानतीं। वह जिसे चाहता है उस चीजके न मिलनेपर जो चाहे सो कर सकता है। तुम्हारी बहिनकी लड़कीके साथ जिस तरह हो उस तरह उसका—

गौरीने कहा—भला यह कैसे हो सकता है? विहारीके साथ व्याह होनेकी बात एक तरहसे पक्की हो गई है।

लक्ष्मीने कहा—पक्की बातको कच्ची करनेमें कितनी देर लगेगी? तुम सब कर सकती हो।

लक्ष्मीने उसी समय विहारीको बुलाकर कहा—बेटा, तुम्हारे लिए मै और अच्छी लड़की देख दूँगी। यह लड़की तुम्हारे लायक नहीं है। इसे छोड़ दो।

विहारीने कहा—नहीं मा, यह न होगा, सब ठीक-ठाक हो चुका है।

तब लक्ष्मीने गौरीसे कहा—बहू, तुम्हें मेरे सिरकी कसम, तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, तुम विहारीसे कह दोगी, तो सब ठीक हो जायगा।

गौरीने लाचार होकर विहारीसे एकान्तमें कहा—विहारी, तुमसे कौन मुँह लेकर मैं कहूँ कि तुम इस लड़कीसे व्याह न करो, मगर अब तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ? करुणाका व्याह तुमसे होता तो मुझे बड़ा सन्तोष होता, किन्तु तुम तो सब जानते ही हो—

विहारीने कहा—मैं समझ गया। चाची, तुम जैसा कहोगी, वही होगा। मगर साथ ही मेरी यह भी प्रार्थना कि है अब फिर कभी तुम मुझसे व्याह करनेके लिए न कहना।

इतना कहकर विहारी चला गया। गौरीकी आँखोंमें आँसू भर आये, परन्तु कुजके अनिष्टकी आशकासे उसने उन्हें उसी समय पोंछ डाला। उसने यह समझकर सन्तोष करनेकी चेष्टा की कि जो हुआ अच्छा ही हुआ।

इसी तरह लक्ष्मी, गौरी और कुजके बीच चुपचाप निष्ठुर घात-प्रतिघात होते होते व्याहका दिन आ गया। खूब रोशनी हुई, मधुर शहनाइयाँ बजने लगीं, ज्योंनारोंके मिष्टान्नमें मिठाईकी जरा भी कमी न रहने पाई।

करुणाने सज्जित सुन्दर देह और सकोच-भरा मुग्ध मुख लेकर अपने नये घरमें प्रथम पदार्पण किया। उसके इस बागमें कहीं कोई कण्टक भी है, इस बातका अनुभव उसके कम्पित कोमल हृदयको जरा भी नहीं हुआ, बल्कि अपनी एकमात्र सगी स्नेह करनेवाली मौसीके पास रहनेके आनन्द और आश्वासनमें उसके सारे भय और संशय भाग गये।

व्याहके बाद लक्ष्मीने कुंजको बुलाकर कहा—मैं कहती हूँ कि अब बहू कुछ दिनके लिए अपने चाचाके यहाँ भेज दी जाय।

कुजने कहा—क्यों? किस लिए?

माने कहा—अभी तुम्हारी परीक्षाके दिन हैं, पढने-लिखनेमें विघ्न पड़ेगा।

कुंजने कहा—मैं क्या बच्चा हूँ? क्या मैं अपनी भलाई-बुराईका खयाल नहीं कर सकता?

माने दबी जबानसे कहा—दिन ही कितने हैं, बस, एक ही साल तो है।

कुंजने कुछ दृढ होकर कहा—बहूके अगर कोई मा-बाप होता तो उसके पास भेजनेमें मुझे कोई आपत्ति न थी, किन्तु मैं उसे उसके चाचाके यहाँ नहीं रखना चाहता।

लक्ष्मीने मन-ही-मन कहा—वाह! अभीसे यह हाल! आप ही सब कुछ है, मैं कोई भी नहीं! कल व्याह हुआ और आज ही उसके लिए इतना दर्द होने लगा! मेरा भी तो एक दिन व्याह हुआ था, मगर तब तो ऐसी ढिठाई और बेहयाई नहीं थी!

कुंजने खूब जोर देकर कहा—मा, तुम चिन्ता न करो, परीक्षामें कुछ बाधा न पड़ेगी।

चौथा परिच्छेद

तब लक्ष्मीने एकाएक बड़े उत्साहके साथ बहूको घर-गिरिस्तीका काम-काज सिखाना शुरू किया। करुणाको दिन-भर भण्डारमें, रसोईघर और ठाकुरजीके स्थानमें ही बीत जाता था। इसके सिवा रातको लक्ष्मी उसे अपने पास ही सुला लेती थी और उसके आत्मीय-वियोगका घाटा पूरा कर देती थी।

गौरीने खूब सोच-विचारकर करुणासे दूर रहना ही अच्छा समझा।

जैसे कोई जबर्दस्त पिता ऊखके रसको खूब चूस-चूसकर पिये और उसका लालची बच्चा अपना मन मारनेसे व्याकुल हो उठे, ठीक यही दशा कुंजकी थी। उसकी आँखोंके आगे ही नौजवान नई बहूका सारा रस घरके काम-काजकी चक्कीमें पिस-पिसकर मिट्टीमें मिला जा रहा है, भला कुजसे यह कैसे सहा जा सकता था?

कुजने गौरीसे जाकर कहा—चाची, मा जिस तरह बहूसे काम कराती हैं, उससे तो मुझे जान पड़ता है कि उसका स्वास्थ्य बहुत जल्दी खराब हो जायगा। मुझसे तो यह नहीं देखा जाता।

गौरी जानती थी कि लक्ष्मी बहुत ज़ियादती कर रही है, तो भी उसने कहा—क्यों कुंज, बहूको घरका काम-काज सिखाया जाता है, तो क्या बुराई है? काम-काज करनेसे कहीं तबियत खराब होती है? आज-कलकी बहुओंकी तरह केवल उपन्यास पढना, कार्पेट बुनना और मेमसाहब बनकर रहना क्या अच्छी बात है?

कुजने उत्तेजित होकर कहा—अबकी लड़कियाँ तो अबकी-ही-ऐसी होंगी, चाहे वे अच्छी हों चाहे बुरीं। मेरी स्त्री अगर मेरी ही तरह उपन्यास पढकर उसका रस ले सके, तो इसमें मुझे तो हँसी या रजकी बात कुछ नहीं देख पड़ती।

गौरीके कमरेमें पुत्रकी आवाज सुनकर लक्ष्मी सब काम-काज छोड़कर दौड़ी आई।

आते ही उसने कड़ी आवाजमें पूछा—तुम दोनोंकी क्या सलाह हो रही है?

कुजने भी उत्तेजित भावसे कहा—सलाह और कुछ नहीं है। मैं घरके काममें बहूको दासीकी तरह लगाये रखना नहीं चाहता।

माने अपनी बढती हुई ज्वालाको शान्त कर अत्यन्त धीर भावसे कहा—तो फिर वह क्या करेगी?

कुजने कहा—मैं उसे लिखना-पढना सिखाऊँगा।

लक्ष्मी कुछ जवाब न देकर जल्दीसे चली गई और घड़ी-भर बाद बहूका हाथ धरकर कुजके पास ले आई और बोली—यह लो, अपनी बहूको लिखना-पढना सिखाओ!

इतना कहकर वह गौरीके पास आई और हाथ जोड़कर बोली—बहू, मुझे माफ करो। मैंने तुम्हारी लड़कीकी इज्जत नहीं समझी थी, मैंने उसके कोमल हाथोंमें जो हल्दीका दाग लगा दिया है, उसे अब तुम धो-पोंछकर साफ कर दो और बीबी साहबा बनाकर कुंजको सौंप दो। वह पैरपर पैर रखकर लिखना-पढना सिखाता रहे, दासी-वृत्ति मैं करूँगी।

इसके बाद लक्ष्मीने अपने घरमें जाकर जोरसे किवाड़ बन्द कर लिये।

गौरी मारे सोच और क्षोभके धरतीपर बैठ गई। करुणा इस आकस्मिक गृह-

विप्लवका मतलब कुछ भी न समझ सकी। वह लज्जा, भय और दुःखसे उदास हो गई। कुजने चिढकर मन-ही-मन कहा—बस, अब मैं अपनी स्त्रीकी देख-रेख खुद ही करूँगा, नहीं तो अन्याय होगा।

जहाँ इच्छाके साथ कर्तव्य-बुद्धि मिली कि हवा और आगका संयोग हो गया। कालेज, परीक्षा, मित्रता, सामाजिक लिहाज, दबाव, आदि सब बातें न जाने कहाँ चली गईं। स्त्रीकी उन्नति करना ही कुंजका लक्ष्य हो गया। काम-काज और लोक-लाजसे उसने आँख फेर ली।

अभिमानिनी लक्ष्मीने मनमें कहा—कुज अगर अपनी बहूको लेकर मेरे दर्वाजेपर धन्ना देगा, तो भी मैं उसकी तरफ न देखूँगी। देखूँ, वह अपनी माको छोड़कर स्त्रीके साथ कैसे रहता है?

दिन बीत गया, रात बीत गई, दूसरा दिन आया, मगर लक्ष्मीको किसी क्षमा-प्रार्थीके पैरोंकी आहट न सुन पड़ी।

लक्ष्मीने निश्चय किया—अगर आज क्षमा माँगने आवेगा, तो क्षमा कर दूँगी, नहीं तो बहुत तंग करूँगी।

बारह बज गये, मगर कमरेमें कोई न आया। तब लक्ष्मीने सोचा—मैं आप उसके कमरेमें जाकर क्षमा कर आऊँगी। अगर लड़का रूठ गया है, तो क्या माको भी रूठे रहना चाहिए?

दुमजिलेकी छतपर एक कोनेमे एक छोटीसी कोठरी है। उसीमें कुजके पढने और सोनेकी जगह है। इधर कई दिनसे माने न लड़केके कपड़े झाड़कर तहकर कायदेसे रक्खे थे, न बिछौने ठीक जगहपर रक्खे थे, न सफाई ही अच्छी तरह की थी। लक्ष्मीको इन कामोंके न करनेसे उसका हृदय दूध-भरे स्तनकी तरह भीतर ही भीतर दुखने लगा। लक्ष्मीने दोपहरको सोचा कि इस समय कुज कालेज गया होगा, चलूँ, उसके रहनेका कमरा ठीक कर आऊँ—कालेजसे लौटकर आते ही वह समझ जायगा कि आज माने दया दिखलाई है।

लक्ष्मी सीढी चढकर ऊपर गई। कुजके कमरेके एक दर्वाजेका पट खुला हुआ था। उसके सामने जाते ही लक्ष्मी इस तरह चौंककर खडी हो गई, जैसे पैरमे काँटा गड़ गया हो। उसने देखा कि फर्शपर कुज सो रहा है और दर्वाजेकी तरफ पीठ किये बहू धीरे धीरे उसके तलवे सहला रही है। दोपहरके प्रखर प्रकाशमें खुले दर्वाजेसे यौवन-लीलाका यह अभिनय देखकर लज्जा और धिक्कारसे वह दब गई और चुपचाप नीचे उतर आई।

पाँचवाँ परिच्छेद

कुछ दिन पानी न मिलनेसे जो धानकी पत्तियाँ सूखकर पीली पड़ने लगती हैं, वे पानी पाते ही पनप उठती हैं और एकदम बढ़कर बहुत दिनोंकी दुर्बलताको दूर कर देती हैं। दुर्बलता और झुकावको छोड़कर वे खेतमे बिना सकोचके बेखटके अपने अधिकारको उन्नत और उज्ज्वल कर लेती हैं। करुणाका भी यही हाल हुआ। जहाँ उसके रक्तका घनिष्ठ सम्बन्ध था वहाँ तो उसे कभी किसीने हृदयसे अपनाया नहीं, आज दूसरे घरमें आकर जब उसे बे-माँगे एक अतिशय निकट सम्बन्ध और निःसन्दिग्ध अधिकार मिला—जब स्वामीने उस लापर्वाहीसे पली हुई अनाथ बालिकाके मस्तकपर अपने हाथसे सौभाग्यका मुकुट पहना दिया—तब उसने भी अपना गौरव पद ग्रहण करनेमें कुछ भी विलम्ब न किया, वह नई बहूके योग्य लज्जा और भय सब दूर करके सौभाग्यवती स्त्रीकी महिमासे मण्डित हो गई। उसने दमभरमें पतिके पैरोंके पास बिना किसी सकोचके अपना आसन जमा लिया।

लक्ष्मी उस दिन दोपहरके समय उसी सौभाग्य-सिंहासनपर नई आई हुई दूसरेकी लड़कीको, इस तरह, जैसे बहुत दिनोंका अभ्यास हो, स्पर्धाके साथ बैठे देखकर असह्य आश्चर्यके साथ नीचे उतर गई। अपनी जलनसे गौरीको भी जलानेके लिए उसकी कोठरीमें जाकर लक्ष्मीने कहा—बहूजी, जाकर देखो तुम्हारी नवाबजादी नवाबके घरसे क्या सीखकर आई है! घरके बड़े लोग होते, तो आज—

गौरीने कातर होकर कहा—जीजी, यह तुम मुझसे क्यों कहती हो? तुम्हारी बहू है, तुम उसे चाहे जो सिखाओ और चाहे जो ताड़ना दो, तुमको अधिकार है।

लक्ष्मीने गरजकर कहा—मेरी बहू! तुम ऐसे मन्त्री (सलाहकार) के रहते वह मेरी क्यों सुनने चली!

तब गौरी अपने पैरोंकी आहटसे पति-पत्नीको सजग सचेत करती हुई ऊपरके कमरेमें गई। जाकर करुणासे कहा—क्यों री, तू क्या इसी तरह मेरा सिर नीचा करावेगी? न लाज है, न शरम, न समयका खयाल है और न असमयका, बूढ़ी सासके ऊपर घरका सब काम-काज छोड़कर दिन-दोपहरको इस तरह यहाँ आराम कर रही है! इसीलिए मैंने तुझे यहाँ लाकर रक्खा है? मेरे भाग्यमें यही लिखा था! यह कहते कहते गौरीकी आँखोंसे आँसू बह चले। करुणा भी उठकर सिर झुकाए चुपचाप दुपट्टेका आँचल सँभालते सँभालते रोने लगी।

कुंजने कहा—चाची, तुम बहूपर वृथा क्यों बक-झक रही हो? मैंने ही तो उसे यहाँ रोक रक्खा है।

गौरीने—सो यह क्या तुमने कोई अच्छा काम किया है? यह तो बेचारी

बे-मा-बापकी और बालिका ठहरी, मासे कुछ सीखने-समझनेका इसे मौका नहीं मिला। यह भला-बुरा क्या जाने! तुम इसे यह क्या सिखलाते हो?

कुजने कहा—यह देखो, मैं इसके लिए स्लेट, कापी और पहली किताब मोल लाया हूँ। मैं इसे लिखना-पढना जरूर सिखाऊँगा। इसके लिए चाहे कोई निन्दा करे और चाहे तुम लोग बुरा मानो।

गौरीने कहा—तो क्या दिनभर पढाया जाता है? शामके बाद घंटे-दो घटे पढना-लिखना सिखाना बहुत है।

कुजने कहा—पढना-लिखना इतना सहज नहीं होता चाची, उसके लिए बहुत-सा समय चाहिए।

गौरी खीझकर कमरेसे निकल आई। करुणा भी धीरे धीरे उसके पीछे जाने लगी। कुंज दोनों हाथोंसे राह रोककर खड़ा हो गया, करुणाकी आँसूभरी आँखोंकी प्रार्थनापर उसने ध्यान न दिया। कहा—ठहरो, सोनेमें बहुत-सा समय नष्ट हो गया है, अब पढाकर उसकी हानि पूरी करूँगा।

हमारे बहुतसे पाठक समझते होंगे कि कुजने सोकर पढानेका बहुमूल्य समय सचमुच व्यर्थ बिताया। ऐसे पाठकोंके जाननेके लिए यह कह देना जरूरी है कि कुजकी देख-रेखमें पढनेका काम जिस तरह चलता है, उसका अनुमोदन कोई भी स्कूल-इन्स्पेक्टर नहीं कर सकता।

करुणाको अपने पतिके ऊपर विश्वास था, उसने सचमुच समझा कि यद्यपि अनेक कारणोंसे पढना-लिखना मेरे लिए सहज नहीं है, तो भी स्वामीकी आज्ञा और इच्छा है, इसलिए पढ़ना-लिखना सीखना मेरा परम कर्त्तव्य है। इसी कारण वह बड़े यत्नसे अपने अशान्त मन और अस्त-व्यस्त विचारोंको एकाग्र करके कमरेके फर्शके ऊपर बिछौनोंपर एक किनारे अत्यन्त गंभीर होकर बैठती और पोथीके ऊपर एकदम झुककर सिर हिला-हिलाकर पाठ याद करने लगती। कमरेमें दूसरी तरफ छोटेसे टेबलपर डाक्टरीकी किताबें खोलकर मास्टर साहब कुर्सीपर बैठे हैं और बीच बीचमें तिर्छी नजरसे अपने विद्यार्थीकी ओर देखते जाते हैं कि वह मन लगाकर पढता है या नहीं। देखते देखते एकाएक डाक्टरीकी किताबें बद करके कुजने पुकारा—चुन्नी! करुणाका पुकारनेका नाम चुन्नी था। करुणा चौंक उठी, उसने सिर उठाकर कुजकी तरफ देखा। कुंजने कहा—किताब ले आओ, देखें कहाँपर पढती हो।

करुणा डरी कि मास्टर साहब कहीं परीक्षा न लेने लगें, क्योंकि उसे परीक्षामें पास होनेकी आशा बहुत ही कम थी। लाख चेष्टा करनेपर भी ‘ हिन्दी-शिक्षावली ’ पढनेमें उसका मन न लगता था। वह पाठ पढकर जितना ही उसके सबंधमे ज्ञान प्राप्त करनेकी चेष्टा करती थी, उतना ही काले काले अक्षर चींटियोंकी तरह कतार बाँधकर उसकी आँखोंके आगेसे निकल जाते थे।

मास्टरके बुलानेपर करुणा अपराधीकी तरह डरते डरते किताब लेकर कुजकी कुर्सीके पास जाती। कुज अपना एक हाथ उसकी कमरमें इस तरहसे डालता कि जिसमे वह भाग न सके और दूसरे हाथमे पोथी लेकर कहता—" अच्छा बताओ, आज कितना पढा ?" करुणा जितनी लाइनोंपर दृष्टि डालती, उतनी दिखला देती। कुज आश्चर्यका भाव दिखलाकर कहता—" ओह! इतना पढ़ डाला! देखो मैं तो इतना नहीं पढ सका।" इतना कहकर वह अपनी पुस्तकमेंसे किसी बयानका हेडिंग भर दिखा देता। करुणा, भोलीभाली करुणा, विस्मित होकर कहती—" तो इतनी देर तक क्या करते थे ?" कुज उसकी ठोढी पकड़कर कहता—" मैं एक आदमीकी बात सोच रहा था, मगर जिसकी बात सोच रहा था वह निष्ठुर उस समय हिन्दी-शिक्षावलीमें ऑख गड़ाए हुए तितलीके बड़े ही रोचक पाठमें भूला हुआ था।" करुणा इस अमूलक अभियोगके विरुद्ध उपयुक्त उत्तर दे सकती थी, किन्तु हाय, केवल लज्जाके मारे, प्रेमके दबावसे, वह चुपचाप हार मानकर रह जाती।

इसीसे हमारे पाठकगण अच्छी तरह समझ सकते हैं कि कुजकी इस पाठशालामें सरकारी या गैर-सरकारी किसी भी स्कूलका कोई नियम नहीं माना जाता था।

किसी किसी दिन कुज कही बाहर जाता और इस सुयोगको पाकर करुणा पढना आरंभ करती कि इतनेहीमें कुज न जाने कहॉसे आकर पीछेसे उसकी ऑंखें बन्द कर लेता और फिर उसकी किताब छीनकर कहता—तुम बड़ी निठुर हो, जब मैं नहीं रहता तब तुम मुझे भुला देती हो और पढनेमें मन लगाती हो!

करुणा कहती—आप मुझे मूर्ख बनाये रखना चाहते हैं।

कुंज कहता—तो तुम्हारी कृपासे मैं ही कौन ऐसा पण्डित हुआ जाता हूँ!

इस बातसे करुणा एकाएक होशमें आकर वहॉंसे जानेके लिए तैयार होकर कहती—मैं क्या तुम्हारे पढनेमें बाधा डालती हूँ ?

कुज उसका हाथ पकड़कर कहता—इसका हाल तुम क्या जानो! मुझे छोड़कर तुम सहजमें पढने लग जाती हो, मगर तुम्हें छोड़कर पढना मेरे लिए उतना सहज नहीं है!

इतनी बडी लाञ्छना या दोषारोप! इसके बाद कुऑरकी हल्की वर्षाके समान करुणाका रोना-धोना शुरू हो जाता, परन्तु तत्काल ही 'सोहाग' के सूर्य-लोकमें वह विलीन हो जाती, केवल सजल उज्ज्वलताकी आभा छोड़ जाती।

शिक्षक अगर आप ही शिक्षामें विघ्न डाले, तो अबला बालिकाकी क्या मजाल जो विद्याके जंगलमें अकेले आगे बढ सके। कभी कभी करुणाका चित्त, अपनी मौसीकी डॉट याद आनेसे, व्यग्र और व्याकुल हो उठता था। वह सोचती कि

लिखना-पढना एक बहाना भर है। सासका सामना हो जानेपर वह लज्जासे जैसे मर जाती थी, किन्तु सास भी उसे कुछ काम करनेके लिए नहीं कहती और न कोई उपदेश ही देती। अगर बिना कहे करुणा कभी काम-काज करनेके लिए जाती, तो वह व्यंग्य या तानेकी तरह कहती कि—क्या करती हो! क्या करती हो! ऊपर कमरेमें जाओ, तुम्हारे पढ़ने लिखनेमें हर्ज होगा।

अन्तको गौरीने करुणासे कहा—तेरे पढने-लिखनेका ढग देखकर तो जान पड़ता है कि तू कुजको भी डाक्टरीकी परीक्षा न देने देगी!

तब करुणाने अपने जीको खूब कड़ा किया। कुजने कहा—तुम्हारे पढने लिखनेमें हर्ज होता है, आजसे मैं नीचे मौसीके पास रहूँगी।

इस अवस्थामें इतना बड़ा कठिन सन्यांस-व्रत! सोनेके घरसे एकदम मौसीके घरमें आत्म-निर्वासन! इस कठोर प्रतिज्ञाका उच्चारण करते समय करुणाकी आँखोंमें आँसू भर आये, उसके पतले होंठ काँप उठे और कण्ठ भर आया।

कुजने कहा—अच्छी बात है, चाचीके घर चलो किन्तु तब तो उनको यहाँ इस कमरेमें आना पड़ेगा।

करुणा अपने उदार और गभीर प्रस्तावके बदलेमें केवल परिहास पाकर चिढ गई। कुजने कहा —इससे अच्छा तो यह होगा चुन्नी, कि तुम मुझे दिनरात अपनी आँखोंके आगे रखकर खुद ही पहरा दिया करो। देखो मैं पढता हूँ या नहीं।

यह बात सहजहीमें ठीक हो गई। आँखोंके आगे रखकर पहरा देनेका काम किस तरह होता था, इसका विस्तृत ब्योरा देनेकी कोई जरूरत नहीं, केवल इतना कह देना यथेष्ट होगा कि उस साल परीक्षामें कुज फेल हो गया और 'हिन्दी-शिक्षावली'की शिक्षा चलते रहनेपर भी करुणाको इतना ज्ञान नहीं हो सका कि वह अपना नाम लिख सके!

पर यह पढने और पढानेका अपूर्व काम निर्विघ्नरूपसे चलता था, यह भी नहीं कहा जा सकता। बीच-बीचमें बिहारी आकर बहुत ही गोल-माल मचा देता था। 'कुज दादा, कुज दादा' कहकर वह मुहल्ले-भरको सिरपर उठा लेता था और किसी तरह कुजको अपने कमरेके विवरसे बाहर निकाले बिना न छोडता था। वह यह कहकर प्रायः ही कुजको खिझाया करता था कि 'तुम पढने लिखनेमें मन नहीं लगाते।' करुणासे कहता था—'बहूजी, मुँहका कौर यों ही निगल लेनेसे हजम नहीं होता, उसे खूब चबाकर खाना चाहिए। अभी तुम सारा भोजन एक कौरमें खाये जाती हो मगर फिर हाजमेकी गोलियाँ ढूँढे न मिलेगीं।'

कुज कहता था—चुन्नी, तुम बिहारीके कहेमें न आना, उसे हमारा सुख देखकर डाह होती है।

बिहारी कहता था—सुख जब तुम्हारे हाथमें ही है, तब उसे इस तरह भोग करो जिसमें दूसरेको डाह न हो।

कुंज उत्तर देता—पर तुम यह नहीं जानते कि जो जलता हो उसे जलानेमें सुख होता है! चुन्नी, ईश्वरने कुशल की, नहीं मैं तो गधेकी तरह तुम्हें बिहारीकी बना चुका था!

बिहारीका चेहरा खीझकर लाल हो जाता था, वह जोरसे कहता था—चुप रहो

इन सब बातोंसे करुणा मन ही मन बिहारीसे चिढ जाती थी। पहले एक बार उसके ब्याहकी बात बिहारीके साथ हुई थी, इस कारण वह स्वभावतः बिहारीसे कुछ विमुख सी रहती थी। बिहारी यह समझता था, और कुज इसीसे छेड़ छाडकर आनन्द पाता था।

लक्ष्मी बिहारीको बुलाकर उससे अपना दुखड़ा रोती थी। बिहारी कहता था—मा, रेशमका कीडा जबतक रेशम उगलकर गोली बनाता है तबतक अधिक डर नहीं रहता, लेकिन जब वह बन्धन काटकर उड जाता है तब उसे लौटाना या रोक रखना कठिन हो जाता है। कौन जानता था कि वह तुम्हारा स्नेह-बन्धन इस तरह तोड़ देगा।

लक्ष्मी कुजके फेल होनेकी खबर पाते ही गर्मीमें एकाएक लगी हुई आगकी तरह जल उठी, किन्तु उसका गरजना और जलना सब गौरीको भोगना पड़ा। गौरीका खाना पीना छूट गया। चिन्ताके मारे उसकी नींद भी भाग गई।

* * * *

छट्ठा परिच्छेद

वर्षाका आरभ था, शामसे कुछ पहले पानी बरस चुका था और उस समय भी घटा घिरी हुई थी। कुजने, एसेससे बसाई हुई रगीन रेशमी चादर ओढे हुए और गलेमें खिली हुई जूहीका गजरा डाले हुए, प्रसन्न चित्तसे अपने सोनेके कमरेमें प्रवेश किया। एकाएक पहुँचकर करुणाको चौंका दूँगा—इस इरादेसे वह बिलकुल दबे-पैरों गया। उसने झॉककर देखा कि पूर्व तरफसे दरवाजेका एक पट खुला है, हवाके झोंकेके साथ पानीके छींटे भीतर आ रहे हैं, हवामें दीपक बुझ गया है और करुणा नीचेके बिछौनेपर पड़ी हुई सिसक सिसक-कर रो रही है।

कुजने जल्दीसे करुणाके पास आकर पूछा—क्या हुआ?

बालिका और भी फूट-फूटकर रोने लगी। बहुत देरके बाद उसके टूटे-फूटे शब्दोंसे मालूम हुआ कि करुणाकी मौसीसे नित्यका झगड़ा नहीं सहा गया, इसीसे वह अपने फुफेरे भाईके घर चली गई हैं।

कुज खीझ उठा। उसने अपने मनमें कहा—गई और बदलीका ऐसा सुदर दिन मिट्टी कर गई!

अन्तको उसका सारा क्रोध मापर उतरा। वही तो इस सब गोल-मालकी जड़ है।

कुंजने कहा—चाची जहाँ गई है वहीं हम लोग भी जायँगे, देखें अब मा किससे झगड़ा करती हैं।

कुंजने उसी घड़ी व्यर्थका कोलाहल मचाकर सामान बाँधना और कुलियोंको बुलाना शुरू कर दिया।

लक्ष्मी सब समझ गई। उसने कुंजके पास आकर शान्त भावसे पूछा—कहाँ जाता है?

कुंजने पहले तो कुछ उत्तर ही न दिया। दो तीन बार पूछनेपर कहा—चाचीके पास जाऊँगा।

लक्ष्मीने कहा—तू कहीं मत जा, मैं ही तेरी चाचीको यहाँ लिवाये लाती हूँ।

इतना कह उसी समय, पालकीपर बैठकर, लक्ष्मी गौरीके पास गई। जाकर, हाथ जोड़कर कहने लगी—प्रसन्न होओ मँझली बहू, मुझे माफ करो!

गौरीने जल्दीसे लक्ष्मीके पैरोंपर सिर रख दिया और कातर स्वरसे कहा—जीजी, क्यों मुझे नरकमें ढकेलती हो। तुम जो कहोगी मैं वही करनेको तैयार हूँ।

लक्ष्मीने कहा—तुम चली आई हो, इसलिए कुंज भी बहूको लेकर घर छोड़े चला आता है। यह कहते कहते अभिमान, क्रोध और धिक्कारकी चोटसे वह रो उठी। गौरी उसी समय लक्ष्मीके साथ चली आई। उस समय भी कुछ बूँदाबाँदी हो रही थी। गौरी जब कुंजके घरपर पहुँची तब करुणाका रोना बंद हो गया और कुंज तरह तरहकी बातें बनाकर उसे हँसानेकी चेष्टा कर रहा था। देखनेसे जान पड़ता था कि बदलीकी बहुमूल्य रात बिल्कुल व्यर्थ न जायगी।

गौरीने जाकर कहा—चुन्नी, तू मुझे घरमें भी न रहने देगी और दूसरी जगह जानेपर भी पीछे लगेगी! मुझे क्या कहीं भी चैन न मिलेगी?

करुणा एकाएक घायल हरिणीकी तरह चौंक पड़ी।

कुंजने बहुत ही खीझकर कहा—क्यों चाची, चुन्नीने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

गौरीने कहा—नई बहूका इतना बेहयापन मुझसे नहीं देखा गया, इसीसे मैं चली गई थी, फिर सासको रुलाकर तूने मुझे क्यों बुलाया है हरामजादी?

जीवनके इस सरस कवित्व-अध्यायमें मा-चाची ऐसा विघ्न डालेंगी, यह बात कुंज नहीं जानता था।

दूसरे दिन लक्ष्मीने बिहारीको बुलाकर कहा—बेटा, तुम जरा कुंजसे कहो कि मैं कुछ दिनोंके लिए अपने मायके जाना चाहती हूँ, बहुत दिनोंसे वहाँ गई नहीं हूँ।

बिहारीने कहा—जैसे इतने दिनोंसे नहीं गईं वैसे अब भी न जाओ तो मेरी समझमें कुछ हानि न होगी। अच्छा, कुंज दादासे कहता हूँ, मगर मुझे तो विश्वास नहीं होता कि वे जाने देंगे।

बिहारीके कहनेपर कुजने कहा—अगर मा जन्मभूमि देखने जाना चाहती हैं, तो उन्हें रोक ही कौन सकता है ? मगर वहाँ माका बहुत दिन रहना मेरी समझमें अच्छा न होगा, वर्षाका समय है, जगह भी उजाड़ है ।

कुजको इतने सहजमें राजी होते देखकर बिहारीको बहुत बुरा मालूम हुआ । उसने कहा—मा अकेली जायँगी, तो वहाँ उनकी देख-रेख और सेवा-चाकरी कौन करेगा ? बहूको भी उनके साथ भेज दो तो अच्छा हो । इतना कहकर बिहारी कुछ मुसकराया ।

बिहारीकी व्यंग-भरी मीठी चुटकीसे कुछ कुछ कुंठित होकर कुजने कहा—सो तो शायद न हो सके !

बात यहींतक रही, आगे न बढी ।

बिहारी ऐसी ही मीठी चुटकियाँ लेले-कर करुणाको खिझाता था और करुणा भीतर-ही-भीतर कुढती थी । इससे कुजको एक प्रकारका रूखा सुख मिलता था ।

जहाँतक हम जानते है, लक्ष्मीको अपने पिताके घरपर जानेकी ऐसी उत्कण्ठा या इच्छा नहीं थी । गर्मीमें जब नदी घट जाती है तब मल्लाह जैसे पग पगपर लग्गी डालकर थाह लेता है कि कहाँ कितना जल है, वैसे ही लक्ष्मी भी इस समय मा-बेटेके नातेकी थाह लगा रही थी । उसे स्वप्नमें भी आशा न थी कि उसके मायके जानेका प्रस्ताव इतनी जल्दी और इतने सहजमें ही मजूर हो जायगा । उसने कुजका मन्तव्य सुनकर अपने मन-ही-मन कहा—मँझली बहूके घर छोडनेमें और मेरे घर छोडनेमें अन्तर है ! वह है टोना जाननेवाली डाइन, और मैं हूँ खाली मा, मेरा जाना ही अच्छा है ।

गौरीको भीतरका हाल मालूम हो गया । उसने कुजसे कहा—जीजी चली जायँगी तो मैं भी न रहूँगी !

कुजने लक्ष्मीसे कहा—सुनती हो मा ? तुम जाओगी तो चाची भी नहीं रहेंगी, तो फिर हमारे घरका काम-काज कैसे चलेगा ?

लक्ष्मीके रोम-रोममें विद्वेषका विष व्याप गया । उसने कहा—तुम भी जाओगी मँझली बहू ? यह भी कहीं हो सकता है ? तुम जाओगी, तो काम कैसे चलेगा ? तुमको तो यहाँ रहना ही चाहिए ।

लक्ष्मीको, घरमें, एक-एक घड़ी एक-एक वर्षके समान बीतने लगी । दूसरे दिन दोपहरको ही देश जानेके लिए उसने तैयारी कर डाली । सबको यही निश्चय था कि कुज ही माको उसके मायके पहुँचाने जायगा, किन्तु जानेके समय देखा गया कि कुजने माको ले जानेके लिए एक पहरेदार सिपाही और एक गुमाश्तेकी तजवीज की है ।

बिहारीने कहा—कुज दादा, तुमने अभीतक जानेकी तैयारी न की ?

कुंजने कुछ संकोचके साथ कहा—मुझे कालेज—

बिहारीने कहा—अच्छा तुम रहो, मैं माको पहुँचा आऊँगा।

कुंज मन-ही-मन कुढ गया। एकान्तमें उसने करुणासे कहा—सचमुच बिहारीने अब बहुत जियादती करना शुरू किया है। वह दिखाना चाहता है कि माकी मुझे तुमसे अधिक चिन्ता है।

गोरीको लाचार होकर रहना पड़ा; किन्तु लज्जा, क्षोभ और खीझके मारे वह दूर ही दूर रहने लगी। चाचीका यह बर्ताव कुजको बुरा लगा और करुणा भी मन-ही-मन रूठ रही।

सातवाँ परिच्छेद

लक्ष्मी अपने मायके पहुँच गई। पहले बिहारीने सोचा था कि पहुँचाकर लौट आऊँगा, लेकिन वहाँकी दशा देखकर वह लौट न सका।

लक्ष्मीके मायकेमे दो-एक बहुत बूढी विधवाओंके सिवा और कोई न था। गाँव बिलकुल उजाड़ था, आस-पास घना जंगल और बाँसके पेड थे। घरके सामने तालाब था जिसमें काई जम रही थी। दिन दोपहरको सियार बोला करते थे, उनका भयानक शब्द सुनकर लक्ष्मी घबरा उठती थी।

बिहारीने कहा—जन्मभूमि जरूर है, मगर मैं इसे स्वर्गादपि गरीयसी, स्वर्गसे भी बढकर, किसी तरह नहीं कह सकता। मा, कलकत्ते चलो। यहाँ तुमको अकेले छोड़कर जानेमें मुझे पाप लगेगा और तुम्हारा भी जी न लगेगा।

लक्ष्मी भी उकता गई थी। इतनेमें माया (लक्ष्मीकी भतीज-बहू) ने आकर लक्ष्मीको सहारा दिया और वह उसीके पास रहने लगी।

मायाका परिचय पहले ही दिया जा चुका है। एक बार कुजके साथ और फिर, उसके राजी न होनेपर, बिहारीके साथ उसके ब्याहका प्रस्ताव हुआ था। अन्तमे विधाताके विधानसे जिसके साथ उसका ब्याह हुआ वह रोगी था और, इस कारण, वह कुछ ही दिनोंमे सब परिवारको रुलाकर चल बसा।

उसके मरनेके बाद माया, उसी उजाड़ गाँवमें, जगलमे अकेली पड़ी हुई आश्रयहीन उद्यान-लताके समान, अपने जीवनके दिन बिता रही थी। आज उसी अनाथाने अपनी फुफुआ-सास लक्ष्मीको भक्तिके साथ प्रणाम किया और उसकी सेवामें अपना तन-मन लगा दिया।

सेवा इसीको कहते हैं। घडीभरके लिए भी आलस्य नहीं। अच्छी तरह मन लगाकर कायदेसे काम करती है, बढिया रसोई बनाकर खिलाती है और मीठी बातोंसे सबको प्रसन्न रखती है।

लक्ष्मी कहती—बेटी, बहुत देर हुई, अब तुम जाकर भोजन कर लो। लेकिन वह नहीं सुनती, पखा डुलाकर और पैर दबाकर फुफुआ-सासको सुलाये बिना नहीं उठती।

लक्ष्मी अगर कहती कि "बेटी, इस तरह मेहनत करनेसे तू मॉदी हो जायगी" तो वह अपने लिए अत्यत उपेक्षाका भाव दिखलाकर कहती—"मा, मैं जन्मकी दुखिया, मुझे रोग-ओगका डर नहीं है। आहा! तुम इतने दिनोंके बाद यहाँ आई हो, यहाँ सेवाके सिवा और क्या है जो मैं उससे तुम्हारा आदर सत्कार करूँ?"

बिहारी कुछ ही दिनोंमें उस गॉवका मुखिया बन बैठा। कोई उसके पास दवा पूछने आता है, कोई मुकद्दमेकी सलाह लेने आता है, कोई अपने लडकेको किसी बडे आफिसमें नौकर रखा देनेके लिए प्रार्थना करता है और कोई उससे अर्जी लिखानेके लिए आता है। बड़े बूढे लोग जहॉ बैठकर तास-चौसर खेलते थे वहॉ, और जहाँ नीच जातिके लोग बैठकर ताड़ी पीते थे वहॉ भी, बिहारी अपनी सकौतुक स्वाभाविक सहृदयता लेकर जाता-आता था। कोई उसे गैर न समझता था, सभी उसका आदर करते थे।

माया भी इस कुठौरमें पड़े, नगरनिवासी युवकके, निर्वासन-कष्टको यथासाध्य कम करनेके लिए अन्तःपुरकी आड़से चेष्टा किया करती थी। बिहारी जब गॉवमें घूमकर घर आता था तो देखता था कि किसीने उसकी बैठकको झाड़ बुहारकर साफ कर रक्खा है, एक कॉसेके गिलासमें दो चार जगली फूल और पत्तियोंका गुलदस्ता बना रक्खा है और उसके बिछौनेके पास एक तरफ सूरदास तुलसीदास आदिके ग्रथ और 'सरस्वती' मासिक-पत्रिकाकी कुछ संख्यायें ठीक तौरसे रक्खी हुई हैं। ग्रथ खोलकर भीतर देखता था कि उसमें जनाने किन्तु पक्के अक्षरोंमें 'मायावती' नाम लिखा हुआ है।

गॅवई-गॉवके आतिथ्य-सत्कारसे इस मेहमानदारीमें कुछ विशेपता थी। बिहारी उसकी चर्चा चलाकर मायाकी बड़ाई करता था, तो लक्ष्मी कहती थी—इसी लड़कीको तो तुम लोगोंने ग्रहण नहीं किया—विवाह करनेसे इनकार कर दिया!

बिहारी हँसकर कहता था—हॉ मा, अच्छा तो नहीं किया, ठगे गये। लेकिन व्याह न करके ठगाना अच्छा, व्याह करके ठगाना ही बुरा है—दुःखप्रद है!

लक्ष्मी मन-ही मन कहती थी—आहा, बस यही लड़की मेरी बहू होनेके योग्य थी! क्यों न हुई?

लक्ष्मी जब कभी कलकत्ते जानेकी बात चलाती थी तो मायाकी ऑखोंमें ऑसू भर आते थे। वह कहती थी—बुआजी, तुम दो दिनके लिए क्यों आईं? जब तुमको नहीं जानती थी तब तो किसी तरह दिन कट भी जाता था, मगर अब तुमको छोड़कर कैसे रहूँगी?

लक्ष्मी जोशमें आकर कह डालती थी—बेटी, तू मेरे घरकी बहू क्यों न हुई? मै तुझे कलेजेसे लगाकर रखती।

इस बातपर माया लज्जाके मारे किसी कामके बहानेसे उठकर चली जाती थी।

लक्ष्मी कलकत्तेसे एक कातर करुण अनुनय-विनयसे भरे हुए पत्रके आनेकी राह देख रही थी। उसका कुंज जबसे पैदा हुआ तबसे अबतक कभी इतने दिनोंतक माको छोडकर अलग नहीं रहा। जरूर इतने दिनोंतक माके वियोगसे वह व्याकुल और व्यग्र हो रहा होगा। लक्ष्मी उसी लड़केकी एक प्रार्थनापूर्ण चिट्ठीके लिए उत्कण्ठित हो रही थी।

बिहारीको कुंजकी चिट्ठी मिली। कुंजने लिखा था—मा, बहुत दिनोंके बाद जन्म-भूमिको गई हैं, अच्छी तरह प्रसन्न होंगीं।

लक्ष्मीने सुनकर सोचा—आहा, मेरे कुंजने अभिमान करके लिखा है 'प्रसन्न होंगीं'। अभागिनी मा कुंजके बिना कहीं प्रसन्न रह सकती है!

लक्ष्मीने कहा—बिहारी, कुंजने और क्या लिखा है, पढकर सुनाओ न बेटा!

बिहारीने कहा—और कुछ नहीं है मा!

इतना कहकर उसने चिट्ठीको मींज-माँजकर एक किताबकी जिल्दमे रखकर एक कोनेमें फेंक दिया।

लक्ष्मीको अब कैसे धीरज रह सकता है? जरूर कुंजने चिढकर—मासे चिढकर—कुछ ऐसा लिखा है जिसे बिहारी नहीं सुना सका।

जैसे बछड़ेके धक्केसे गऊके थनोंमें दूध उतर आता है, वैसे ही कुंजकी व्यंग्य-पूर्ण तानेकी चिट्ठीसे लक्ष्मीके हृदयमें बहुत दिनोंसे रुका हुआ पुत्र-स्नेहका सोता खुल गया। उसने कुंजके सब अपराधोंको हृदयसे क्षमा कर दिया—आहा, कुंज बहूको लेकर सुखसे है तो सुखसे रहे—जैसे हो, वह सुखी रहे! बहूके लिए अब मैं उसे कुछ भी कष्ट न दूँगी। जो उसे घडी-भरके लिए भी नहीं छोडती थी, वह मा यों छोड़कर इतनी दूर चली आई! कुंजका रूठना उचित ही है।

लक्ष्मीकी आँखोंमें आँसू भर आये। उस दिन लक्ष्मीने बिहारीसे कई बार कहा—जाओ बेटा, नहा डालो, बहुत देर हो गई।

उस दिन बिहारीको मानों नहाने-खानेकी इच्छा ही न थी। उसने कहा—नहीं तो मा, अभी देर नहीं हुई।

लक्ष्मीने जोर देकर कहा—नहीं, तुम जाकर नहा डालो।

बार बार कहनेपर बिहारी नहाने गया। बिहारीके जाते ही लक्ष्मीने जल्दीसे उस किताबके भीतरसे मली हुई चिट्ठी निकाली। फिर उसे मायाके हाथमे देकर कहा—देख तो बेटी, कुंजने बिहारीको क्या लिखा है?

माया पढकर सुनाने लगी। कुंजने पहले माकी बात लिखी है, मगर वह बहुत ही थोडी है—बिहारीने जो कुछ सुनाया था, उससे अधिक नहीं है।

उसके बाद ही करुणाकी बातें हैं। कुंजने मानों उन्हें रग-रस-रहस्य और आनन्दमे वेसुध होकर लिखा है। माया आगे नही पढ सकी, दो चार लाइनें पढकर ही लज्जाके मारे रुक गई और बोली—बुआ, इसे सुनकर क्या करोगी ? लक्ष्मीके स्नेह व्यग्र चेहरेका भाव एकदम बदलकर पत्थरकी तरह कठिन कठोर हो गया। वह कुछ देर चुप रहनेके बाद 'रहने दो!' कहकर चिट्ठीको बिना वापिस लिये ही कोठरीके बाहर चली गई।

माया चिट्ठी लेकर अपने सोनेकी कोठरीमे गई ओर भीतरमे जजीर वदकर बिछौनेपर लेटकर उसे पढने लगी।

चिट्ठीमें मायाको क्या रस मिला, सो तो वही जाने, किन्तु हम इतना जरूर कह सकने हैं कि वह रस उसके लिए सुख पहुँचानेवाला नहीं था। उसने कई बार आदिसे अन्त तक वह चिट्ठी पढी। पढते पढते उसकी दोनों ऑखे दोपहरकी गरम बालकी तरह जलने लगीं, उसकी गर्म साँसे मरुभूमिकी हवाके समान चलने लगीं।

उसके मनमे केवल यही विचार चक्कर खाने लगे कि कुज कैसा है, करुणा कैसी है, कुज और करुणाका प्रेम कैसा है! चिट्ठीको छातीपर दबाए पैर फैलाए बहुत देरतक वह सामने आकाशकी ओर देखती रही।

बिहारीने बहुत खोजा, मगर वह कुजकी चिट्ठी उसे न मिली।

उसी दिन दोपहरको एकाएक गौरी आ पहुँची। किसी कुसमाचारकी आशकासे लक्ष्मीका हृदय कॉप उठा। उसे सहसा कुछ पूछनेका साहस न हुआ, वह मलिन मुखसे गौरीकी ओर देखने लगी।

गौरीने कहा—जीजी, कलकत्तेमें सब कुशल है।

लक्ष्मीने कुछ स्वस्थ होकर कहा—तब तुम यहॉ कैसे ?

गौरीने कहा—जीजी, अपने घरको तुम जाकर देखो-भालो। मुझे अब ससारमें रहना अच्छा नहीं मालूम होता, इसलिए काशीवास करना चाहती हूँ। काशी जानेके लिए मैं तैयार हूँ, केवल तुम्हें देखनेके लिए यहॉं चली आई हूँ। जानमें या अजानमें मैंने जो कुछ अपराध किये हों,-उनके लिए मैं क्षमा चाहती हूँ और तुम्हारी बहू (कहते कहते ऑंखोंमें ऑसू गिरने लगे)—वह अभी बालिका है, उसके मा नहीं है, बाप नहीं है, वह दोषी हो या निर्दोष हो—तुम्हारी ही है—

आगे उससे कुछ कहा नहीं गया। लक्ष्मी उसी समय जल्दीसे नहाने-खानेका प्रबन्ध करने चलीं गई। बिहारी मौसीके आनेकी खबर पाते ही दुर्गाजीके मन्दिरसे दौड़ता हुआ आया। उसने गौरीके पैर छूकर कहा—चाची, तुमने यह क्या सोचा ? तुम यों ममता बिसारकर हम लोगोंको छोड़ जाओगी ?

गौरीने ऑंसुओंके वेगको रोककर कहा—बिहारी, अब तुम मुझे मत रोको। तुम सब सुखसे रहो, मेरे बिना कोई हर्ज न होगा।

बिहारी कुछ देरतक चुप बैठा रहा। उसके बाद उसने कहा—चाची, कुजकी तकदीर फूट गई, उसने तुमको भी बिदा कर दिया!

गौरी चौंककर कहा—यों न कहो बिहारी, कुजने मुझसे कुछ नहीं कहा, पर मेरे काशीवास किये बिना इस घरकी भलाई न होगी!

बिहारी सुदूर नील आकाशको निहारता चुपचाप बैठा रहा। गौरीने आँचलमें एक सोनेका मोटासा जड़ाऊ अनन्त खोलकर कहा—बेटा, यह अनन्त तुम अपने पास रक्खो, जब तुम्हारी बहू आवे, तब मेरा आशीर्वाद देकर उसे पहना देना।

बिहारीने उस अनन्तको लेकर माथेमें लगा लिया। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी, वह उठकर बाहर चला गया।

बिदा होते समय गौरीने कहा—बिहारी, मेरे कुज और करुणाको मत भूल जाना।

फिर लक्ष्मीके हाथमें एक कागज देकर कहा—ससुरजीकी सम्पत्तिमें जो कुछ मेरा हिस्सा है मैंने कुजके नाम लिखा दिया है, उसीका यह दान-पत्र है। मुझे तुम केवल १५) रु० महीना काशी भेज दिया करना।

यों कहकर और लक्ष्मीको साष्टाग प्रणाम करके गौरी काशीको चल दी।

आठवाँ परिच्छेद

करुणा डर गई। यह क्या हुआ? मा चली गई, मौसी चली गई। इनका (कुजका) सुख मानो सबको ही निकाल बाहर किये देता है और अबकी मानो उसीको निकाल बाहर करनेकी बारी है। उजड़े, सूने, अकेले, घरमें दाम्पत्यकी यह नई प्रेम-लीला उसे कुछ असगत-सी जान पड़ने लगी।

ससारके कठिन कर्तव्यसे प्रेमको, फूलकी तरह तोड़कर, अलग कर लेनेसे वह, (प्रेम) केवल अपने रससे, अपनेको सजीव नहीं बनाये रख सकता, धीरे धीरे विमृष्ट और विकृत होकर मुरझा जाता है। करुणाने भी देखा कि हमारे निरन्तर मिलनमें कुछ थकावट और कमजोरी आ गई है। वह मानो रह-रहकर गिरना चाहता है। ससारके दृढ़ और प्रशस्त आश्रय बिना उसे खींचकर खड़ा रखना कठिन है। काम-काजके भीतर प्रेमकी जड़ न रहनेसे भोगका विकास परिपूर्ण और स्थायी नहीं होता।

कुज भी, अपने विमुख परिवारके विरुद्ध विद्रोह करके, प्रेमोत्सवकी आरतीकी सब बत्तियाँ एक-साथ जलाकर, बड़े समारोहके साथ, सूने घरके सन्नाटेमें, सम्मिलनके आनन्दको सुसम्पन्न करनेकी चेष्टा करने लगा। करुणाके कोमल

हृदयमें हल्कीसी चोट देकर उसे सतेज करनेके लिए कुजने कहा—चुन्नी, आजकल तुमको क्या हो गया है? मौसी चली गई तो उसके लिए हर-घड़ी तुम इस तरह उदास क्यों रहती हो? हमारे-तुम्हारे नातेसे बढ़कर भी कोई नाता है? हम-तुम दोनोंके प्रेममें ही क्या सारे प्रेमका अन्त नहीं है?

करुणा दु:खित होकर सोचती थी—उदास क्यों रहती हूँ? कहीं हमारे प्रेममें कुछ असम्पूर्णता जरूर है। इसीलिए तो मैं लाख यत्न करती हूँ, मगर चित्त प्रसन्न ही नहीं होता। मौसी चली गई, मा भी घरमें नहीं है, यह सोचकर न जाने क्यों मैं व्याकुल हो उठती हूँ।—इसके बाद वह प्राण-पणसे प्रसन्न होनेकी चेष्टा करती थी और प्रेमके इस अपराधको धोनेका प्रयत्न करती थी।

अब घरके काम-काजमें अड़चन पड़ने लगी। कोई भी काम अच्छी तरह नहीं होता। नौकर-चाकर कामसे जी चुराते हैं—बेगार-सी टालते हैं। एक दिन चाकरानी तबीयत अच्छी न होनेका बहाना करके घर बैठ रही और रसोई करनेवाले महाराज भग पीकर और गाँजेका गहरा दम लगाकर लापता हो गये।

कुजने करुणासे कहा—बड़ा मजा होगा, आज हम-तुम दोनों मिलकर रसोई बनावेंगे।

कुज गाड़ीपर चढ़कर तरकारी वगैरह खरीदने बाजार गया। कौन चीज कितनी चाहिए, सो तो कुजको कुछ मालूम न था, वह बहुत-सी झब्बा-भर चीजें लेकर हँसता हँसता घर आया। उन चीजोंको लेकर क्या करना होगा, सो करुणा भी नहीं जानती थी। परीक्षा करते· करते दो-तीन बज गये। तरह तरहके विचित्र, स्वादवाले पदार्थोंका आविष्कार करनेमें कुजको बड़ा मजा आया। लेकिन कुजके इस मजेमें करुणाको मजा नहीं आया, उसे अपनी अज्ञता और असमर्थताके कारण भीतर ही भीतर बहुत लज्जा और खेद हुआ।

घरकी चीजें और सब सामान—इस तरह अस्त-व्यस्त पड़ा था कि कामके समय किसी चीजको ढूँढ निकालना सहज न था। कुजके डाक्टरीके औजार तरकारी काटनेके काममें आने लगे और कूड़ेके ढेरमें अज्ञातवास करने लगे। इसी प्रकार उसकी नोट-बुक भी पखेका पार्ट करते करते रसोईकी राखके ढेरमें विश्राम करने लगी।

इन सब गड़बड़ोंको, जिन्हें कभी सोचा भी न था, देखकर कुजके कौतुककी सीमा न रही। किन्तु करुणाको बड़ा ही दु:ख हुआ। उच्छृंखल यथेच्छाचारके प्रवाहमें सारी घर-गिरस्तीको बहाकर उसीके साथ आप भी हँसते हँसते गोते खाना और उतराना उस बालिकाको भयंकर जान पड़ने लगा।

एक दिन सन्ध्याके समय दोनो जने बरामदेके भीतर बिछौनेपर बैठे थे। सामने खुली हुई छत थी। पानी पड़नेके बाद कलकत्तेकी आकाशको चूमनेवाली इमारतें चटकीली चाँदनी पड़नेसे चमक रहीं थीं। घरके छोटे बागके ढेरके ढेर भीगे हुए

मौलसिरीके फूल लाकर करुणा चुपचाप सिर नीचा किये माला बना रही थी और कुंज उस मालाको खींच-खाँचकर, बाधा डालकर, प्रतिकूल समालोचना कर, व्यर्थ लड़ाई पैदा करनेकी चेष्टा कर रहा था। करुणा इस अकारण सतानेके लिए जब कुंजका तिरस्कार करना चाहती थी, तब वह किसी तरह करुणाका मुख बंद कर बातोंको बाहर ही निकलने न देता था।

इसी समय पड़ोसके घरमें पालतू कोयल 'कुहू-कुहू' करने लगी, तब कुंज और करुणाने भी अपने ऊपर टँगे हुए कोयलके पिंजड़ेपर नजर डाली। पड़ोसकी कोयल जब बोलती थी तब, कुंजकी कोयल भी चुप नहीं रहती थी, वह भी बोल उठती थी।

करुणाने उत्कंठित होकर कहा—कोयलको आज क्या हो गया?

कुंजने कहा—वह तुम्हारी आवाजके आगे शरमा रही है।

करुणाने गंभीर भावसे कहा—नहीं, हँसी नहीं, देखो तो उसे क्या हो गया है?

कुंजने पिंजड़ा उतारा। पिंजडेके ऊपरका कपड़ा उतारकर देखा, कोयल मरी पडी है। गौरीके चले जानेके बाद नौकर आया नहीं और अन्य किसीने उसकी खबर ली नहीं।

देखते देखते करुणासे, क्षोभसे और चिन्तासे करुणाका मुख मलिन हो गया। वह माला नहीं बना सकी—फूल पडे रह गये। यद्यपि इस घटनासे कुंजके हृदयमें भी एक प्रकारकी चोट लगी, तथापि असमयमें रस-भंग हो जानेके भयसे उसने इस बातको हँसीमें उड़ा देनेकी चेष्टा की। वह बोला—अच्छा ही हुआ, मैं डाक्टरी सीखने जाता, और यह 'कुहू-कुहू' करके तुमको जलाती।

यह कहकर कुंजने करुणाको दोनों हाथोंसे अपनी गोदमें लानेकी चेष्टा की किन्तु करुणाने धीरेसे अपनेको छुड़ाकर आँचलके फूल फेंक दिये और कहा—बस, अब यह लीला रहने दो, तुम जल्द जाकर माको ले आओ।

ॐ ॐ ॐ

नवाँ परिच्छेद

इसी समय नीचेसे 'कुंज दादा, कुंज दादा,' कहकर, बिहारीने पुकारा।

कुंजने भी, 'अरे कौन! बिहारी! आओ भैया, आओ' कहकर, उत्तर दिया। बिहारीको देखकर कुंजका चित्त प्रसन्न हो उठा। ब्याहके बाद बीच-बीचमें बिहारी उसके सुखमें विघ्न बनकर आया करता था। आज कुंजको उसी सुखके लिए वही बाधा बहुत जरूरी जान पड़ी।

बिहारीके आनेसे करुणाकी भी तबीयत कुछ हल्की हो गई। जल्दीसे सिर अच्छी तरह ढँककर वह उठकर जाने लगी। कुंजने कहा—जाती क्यों हो? और कोई नहीं, बिहारी है।

करुणाने कहा—उनके जल-पानके लिए कुछ लेने जा रही हूँ।

काममें लग जानेसे करुणाका खेद कुछ कम हो गया।

करुणा अपनी सासकी खबर सुननेके लिए घूँघट काढकर खड़ी हो रही। अब वह बिहारीके साथ बातचीत नहीं करती।

बिहारीने आते ही कहा—जान पड़ता है, मैंने आकर सब गुड़ गोबर कर दिया। अच्छा, कुछ डर नहीं है बहूजी, तुम बैठो, मैं जाता हूँ।

करुणा कुजकी तरफ देखने लगी। कुंजने कहा—बिहारी, मा कैसी हैं?

बिहारीने तानेके ढगसे कहा—मा-चाचीकी बात अब क्यों पूछते हो भाई? उसके लिए बहुत समय पड़ा है! Such a night was not made for sleep nor for mothers and aunts! (ऐसी रात सोनेके लिए नहीं बनाई गई और न मा-चाचियोंके लिए!)

इतना कहकर बिहारी लौटने लगा, कुजने जबर्दस्ती हाथ पकड़कर उसे बिठला लिया। बिहारीने कहा—बहूजी, देखो मेरा कोई कुसूर नहीं है, मुझे जबर्दस्ती बिठलाते हैं। ऐसा न हो कि पाप करें कुज दादा, और शाप पड़े मुझपर!

करुणा इन सब बातोंका कुछ जवाब न दे सकती थी, इसीसे वह मन-ही-मन खीझ उठती थी और बिहारी उसे जान-बूझकर खिझाता था।

बिहारीने कहा—वाह, घरकी क्या छवि बनी है! माको लानेका समय क्या अब भी नहीं हुआ?

कुजने कहा—उनकी बड़ी जरूरत है। हम तो उनके आनेकी राह ही देख रहे हैं।

बिहारीने कहा—अगर यही बात लिखकर एक चिट्ठी भेज दो, तो क्या कुछ हर्ज हो जाय? इतना लिखनेमें तुम्हारा बहुमूल्य सुखका समय अधिक नष्ट न होगा, और उनकी खुशीका ठिकाना न रहेगा। बहूजी, मैं प्रार्थना करता हूँ, तुम कुज दादाको चिट्ठी लिखनेके लिए दो तीन मिनटकी छुट्टी दे दो।

करुणा कुढकर चली गई, उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे।

कुजने चिढकर कहा—न-जाने कैसी शुभ घडीमें तुम्हारा दर्शन हुआ था कि किसी तरह भी मेल न हुआ। कुछ न कुछ कलह मची रहती है।

बिहारीने कहा—तुमको तुम्हारी माने तो बिगाड़ ही डाला, उसपर स्त्री भी बिगाड़ रही है। यह मुझसे देखा नहीं जाता, इसीसे मौका पाकर कभी कभी दो-चार बातें कह बैठता हूँ।

कुजने कहा—इससे लाभ क्या?

बिहारीने कहा—तुमको तो कुछ विशेष लाभ नहीं, मगर मुझे है।

❀ ❀ ❀

दसवाँ परिच्छेद

बिहारीने खुद बैठकर कुजसे चिट्ठी लिखा ली और उसे लेकर वह दूसरे ही दिन लक्ष्मीको लानेके लिए चला गया। लक्ष्मीको यह मालूम हो गया कि बिहारी ही चिट्ठी लिखा लाया है, तो भी उससे रहा नहीं गया। उसके साथ माया भी आई।

लक्ष्मीने आकर घरकी दुर्दशा देखी। सब गंदा, मैला-कुचैला और अस्त-व्यस्त हो रहा है। यह देखकर बहूकी तरफसे उसका मन और भी फिर गया।

मगर बहूका ढंग तो बिल्कुल बदला हुआ देख पड़ता है। वह छायाकी तरह सासके साथ रहती है। बिना कहे भी सासको काम-काजमें सहायता पहुँचाने जाती है। उसे देखकर लक्ष्मी कहने लगती है—रहने दो, तुम काम खराब कर डालोगी। जो काम जानती नहीं, उसमें क्यों हाथ डालती हो?

लक्ष्मीने समझा गौरीके चले जानेसे ही बहू इतनी मुघर गई है। मगर फिर उसने सोचा, कुज अपने मनमें कहेगा कि 'जब चाची थी तब मैं बहूको लेकर सुखसे था, माके आते ही मुझे विरहकी व्यथा मिलने लगी'। इससे यही सिद्ध होगा कि गौरी उसका हित चाहनेवाली थी और मैं सुखके मार्गमें काँटा हूँ। तब बहूसे काम-काज करानेकी जरूरत ही क्या है?

आजकल दिनको अगर कुज बुला भेजता है तो बहू जानेमें आना-कानी करती है, मगर लक्ष्मी जोर करके भेजती है कि—सुनती नहीं हो, कुज बुला रहा है! अधिक प्यार होनेसे अन्तको यही हाल होता है! जाओ, तरकारी काटनेकी जरूरत नहीं है।

फिर वही स्लेट-पेंसिल और 'हिन्दी-शिक्षावली'का खेल होने लगा। वही प्यारका अमूलक अभियोग उपस्थित कर परस्पर एकका दूसरेको अपराधी बनाना, 'दोनोंमें किसका प्रेम अधिक है' इस बातको लेकर बिना युक्तिके तर्क वितर्क करना, वर्षाके दिनको रात और चाँदनी रातको दिन बना डालना, थकान और शिथिलताको मनके जोरसे दूर कर देना, और परस्पर ऐसा अभ्यास करना कि जिस समय शिथिल चित्तको साथ रहनेमें कुछ आनन्द नहीं मिलता उस समय भी घड़ी-भरकी जुदाईको महाभयानक समझना,—इत्यादि बातें फिर होने लगीं। भोग-सुख सब समय प्रीतिकर न होनेपर भी उसे छोड़कर और कामके लिए हाथ पैर नहीं उठते। भोग-सुखमें यही बुराई है कि उसका सुख या स्वाद अधिक दिनोंतक नहीं रहता, पर बन्धन छुड़ाना कठिन हो जाता है।

इन्हीं दिनों एक दिन मायाने आकर करुणाके गलेमें दोनों बाहें डालकर कहा—बहन, तुम्हारा सुहाग सदा अचल रहे मगर, मैं दुखिया हूँ, इसलिए क्या तुम्हें एक बार आँख उठाकर मेरी ओर देखना भी न चाहिए?

चाचाके यहाँ लड़कपनसे गैरकी तरह पलनेके कारण लोगोंसे मिलने-जुलनेमें करुणाको एक प्रकारका सकोच मालूम पड़ता था। डरती थी कि शायद कोई हेल-मेल न करना चाहे। माया कामकी कमान-सी मिली हुई भौंहें, तीक्ष्ण किन्तु मनको मोह लेनेवाली दृष्टि, भोला चेहरा और सुडौल जवानी लेकर आगे आई, तो भी करुणाने अग्रसर होकर उससे उसके बारेमें कुछ पूछनेका साहस न किया।

करुणाने देखा कि मेरी सासकी सॉगत मायाको नहीं भोगनी पड़ती, माया उससे सकोच नहीं करती। सास भी जैसे विशेषरूपसे उसे दिखा-दिखाकर मायाका आदर करती है प्राय उसे विशेषरूपसे सुना-सुनाकर जोशके साथ मायाकी बड़ाई करती है। करुणाने देखा, माया घरके सब कामोंमें चतुर है, हुकूमत करना उसके लिए बहुत ही सहज और स्वाभाविक है। नौकर-चाकरोंको उनके काममे लगाने, डॉटने और आज्ञा देनेमे वह रत्ती-भर नहीं हिचकती। यह सब देखकर करुणाने मायाके आगे अपनेको बहुत ही साधारण समझा।

उसी गुणवती बुद्धिमती मायाने जब पास आकर इस तरह मित्रता करनेकी प्रार्थना की तब करुणाके आनन्दकी सीमा न रही। घड़ी-भरमें दो ही चार बातोंमें मायाने उसका सब सकोच दूर कर दिया। जादूगरके लगाये हुए वृक्षकी तरह दोनों सखियोंके प्रणयका बीज एक ही दिनमें अकुरित होकर फूल-फल उठा।

करुणाने कहा—अच्छा बहन, हम-तुम दोनों कोई एक नाम रख लें। उसी नामसे तुम मुझे और मैं तुम्हें पुकारा करूँ।

मायाने हँसकर कहा—क्या नाम रक्खोगी?

करुणाने गगा, गुलाब आदि अनेक अच्छी अच्छी चीजोंके नाम लिये।

मायाने कहा—ये सब नाम पुराने हो गये। प्यार और आदरके ऐसे नामोंका अब आदर नहीं रहा।

करुणाने कहा—फिर तुमको कौन पसद है?

मायाने हँसकर कहा—'ऑखकी किरकिरी।'

करुणा कोई मधुर नाम ही रखना चाहती थी, किन्तु मायाकी सलाहसे उसने इस प्यारकी गालीको ही सहर्ष स्वीकार कर लिया। मायाके गलेमे दोनों बाँहें डालकर करुणा बोली—'आँखकी किरकिरी!' और फिर हँसते हँसते लोटपोट हो गई।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

करुणाको एक साथिनकी बडी जरूरत थी। प्रेमका आनन्द-उत्सव भी केवल दो आदमियोंके द्वारा सुसंपन्न नहीं होता, चित्त प्रसन्न करनेवाली बात-चीतकी मिटाई बॉटनेके लिए किसी तीसरे आदमीकी जरूरत होती है।

माया भी ऐसे रसकी भूखी थी। वह नई बहूके नए प्रेमके इतिहासको उसी तरह कान लगाकर सुनने लगी जैसे मतवाला मनुष्य तेज शराबको चावसे पीता है। उससे मायाका दिमाग चक्कर खाने लगा और खून खौलने लगा।

दो-पहरके सन्नाटेमें जब लक्ष्मी सो रहती थी, नौकर-चाकर नीचेके घरमें विश्राम करने चले जाते थे, बिहारीके बहुत कहने-सुननेमें घड़ी भरके लिए कुज कालेज जाता था, और घामसे तपे हुए स्वच्छ नीलाकाशके किसी छोरमें केवल चीलहका तीव्र कण्ठस्वर धीरे धीरे क्षीण होकर कभी कभी सुनाई पड़ता था, तब करुणा अपने सोनेके कमरेमें नीचेके फर्शपर तकियेके ऊपर अपने खुले हुए बालोंको बिखराकर लेटती थी और माया छातीके नीचे तकिया रखकर, पैर फैलाकर, करुणाके मुखसे कुजके प्रेमकी कहानी मन लगाकर सुनती थी। सुनते सुनते उसके गुलाबी गाल और भी लाल हो जाते थे, साँस जोर-जोरसे चलने लगती थी।

माया खोद-विनोदकर प्रश्नके ऊपर प्रश्न कर छोटीसे छोटी बात भी पूछ लेती थी, एक बातको बार बार सुनती थी और जब घटनाका वर्णन पूरा हो जाता था तब कल्पनाकी अवतारणा करती थी, कहती थी—अच्छा बहन, अगर ऐसा होता तो क्या होता, और अगर ऐसा होता तो तुम क्या करतीं ?

इस प्रकारकी नई नई कल्पनाओंकी तरफ सुखकी बातोंको बढाकर ले जानेमें करुणाका भी जी न ऊबता था—उसे अच्छा लगता था।

माया कहती थी—अच्छा, तुम्हारे साथ अगर बिहारी बाबूका ब्याह होता ?

करुणा कहती—ना जी, ऐसी बातें न करो—छी-छी, मुझे बडी लाज लगती है। हाँ, तुम्हारे साथ होता, तो अच्छा होता। तुम्हारे साथ होनेकी भी तो बात चली थी !

माया—मेरे लिये तो बहुत लोगोंकी बहुत-सी बातें हुई थीं। नहीं हुआ, अच्छा हुआ—मैं जैसी हूँ, वैसी ही अच्छी हूँ।

लेकिन करुणा इस बातको नहीं मानती थी—प्रतिवाद करती थी। इस बातको वह कैसे मान लेती कि माया उससे अच्छी दशामें है !

करुणा कहती थी—अच्छा, अगर हमारे इनके साथ तुम्हारा ब्याह हो जाता—अगर ये राजी होते तो हो ही जाता !

हो ही जाता ! क्यों नहीं हुआ ? करुणाका यह पलग तो एक दिन मेरा ही होनेवाला था। माया उस सजे हुए केलि-निकेतनको देखती है और इसी प्रकार सोचती है। जो घर एक दिन उसीका होनेवाला था उसी घरमें आज वह गैर होकर रहती है। इस घरमें उसका क्या स्वत्व है ? वह तो मेहमान है, आज है कल चली जायगी।

सन्ध्यासे कुछ पहले माया बिना कहे ही कारीगरीके साथ करुणाकी वेणी बाँध देती और यथासमय उसे स्वामीके पास सिंगार करके भेज देती थी। उसकी

उसकी सुघर कल्पना, जैसे छिपकर, उस नव-वधूके पीछे पीछे एक मुग्ध युवकके अभिसारमें निर्जन कमरेमें प्रवेश करती थी। कभी कभी माया करुणाको किसी तरह जाने न देती थी, बातोंमें उलझा रखती थी, और कहती थी "अजी, जरा और बैठो न! तुम्हारे स्वामी कहीं भागे नहीं जाते! वे जंगली मृग थोड़े हैं, उन्हें तो पालतू हरना समझो!"

इसी तरह हँसी-दिल्लगी और बात-चीतमें उलझाकर माया देर कर देती थी। एक दिन कुंजने बहुत चिढकर करुणासे कहा—तुम्हारी सखी तो हिलनेका नाम नहीं लेतीं—वे घर कब जायँगीं?

करुणाने व्यग्र होकर कहा—देखो, तुम मेरी सखीको कुछ मत कहो। तुम नहीं जानते. वह तुमको कितना चाहती है, कितना मन लगाकर तुम्हारी बाते सुनती है, रोज शामको बड़े आदर और प्यारसे मुझे सिंगार कर तुम्हारे पास भेज देती है!

लक्ष्मी, पहले बहूको काम नहीं करने देती थी। मायाने बहूका पक्ष लेकर उसे काम-काजमें लगाया।। माया दिन-भर काम किया करती थी, घडी-भरके लिए भी उसे आलस्य न था। वह अपने साथ करुणाको भी छुट्टी देना नहीं चाहती थी। माया एकके बाद एक करके कामका ऐसा सिलसिला रखती थी कि उससे निकल जाना करुणाके लिए बहुत ही कठिन हो जाता था। माया यह कल्पना करके कि 'करुणाके स्वामी छतके ऊपर सूने कमरेके कोनेमें पडे कुढ-कुढकर छटपटा रहे हैं' भीतर ही-भीतर तीव्र कठिन हँसी हँसती थी।

करुणा व्यग्र होकर कहती थी—अब मुझे जाने दो, नहीं तो वे खफा होंगे। माया जल्दीसे कहती थी—ठहरो, यह काम करके जाना। बहुत देर न होगी। थोटी देरके बाद करुणा बहुत व्याकुल होकर कहने लगती थी—बस, अब नहीं, सचमुच वे खफा हो जायँगे, मुये जाने दो।

❧ ❧ ❧

बारहवाँ परिच्छेद

कुंजने एक दिन बहुत बिगड़कर अपनी माको बुलाया और कहा—यह क्या अच्छा हो रहा है? पराये घरकी जवान विधवा बहूको लाकर अपने यहाँ रखनेकी जरूरत क्या है? मैं तो उसे रखना पसंद नहीं करता—न जाने कब क्या हो!

लक्ष्मीने कहा—वह क्या कोई गैर है? मेरे भतीजेकी बहू है, मैं तो उसे गैर नहीं समझती।

कुजने कहा—नहीं मा, यह अच्छा नहीं होता। उसे उसके घर भेज देना ही उचित होगा।

लक्ष्मी अच्छी तरह जानती थी कि कुज जो चाहता है वही करता है, किसीका कहना नहीं मानता। उसकी बात टालना सहज नहीं। इस लिए उसने विहारीको बुलाकर कहा—बिहारी, तुम जरा कुजसे समझाकर कहो। माया घरका सब काम-काज देखती है, उससे मुझे बडी सहायता मिलती है। वह गैर ही सही, मगर वह जितनी सेवा करती है, उतनी सेवा तो कोई अपना भी नहीं करता।

विहारीने, लक्ष्मीको कुछ जवाब नहीं दिया और, कुजके पास जाकर कहा—कुज दादा, क्या मायाके बारेमे कुछ सोच रहे हो?

कुजने हँसकर कहा—हर घडी सोचता हूँ, सोचके मारे रातको नींद नहीं आती। अपनी भावजसे ही न पूछ लो, आजकल मायाके ध्यानमे मेरे और सारे ही ध्यान भग हो गये हैं।

करुणाने घूँघटके भीतरसे चुपचाप कुजकी तरफ एक कोप-कुटिल कटाक्ष किया।

बिहारीने कहा—कहते क्या हो? 'विष-वृक्ष' सरीखा हाल तो नहीं है?

कुजने कहा—ठीक वही हाल है, चुन्नी उसे विदा करनेके लिए छट-पटा रही है।

करुणाने घूँघटके भीतरसे तीव्र कटाक्षपात किया।

बिहारीने कहा—बिदा कर देनेसे क्या होगा, वह क्या फिर नहीं आ सकेगी? विधवाका ब्याह कर दो—विषैला दाँत जडसे उखड़ जायगा।

कुंजने कहा—कुन्दनन्दिनीका भी तो ब्याह कर दिया गया था।

बिहारीने कहा—खैर, अब इस उपमाको रहने दो। मैं कभी कभी मायाके बारेमें सोचता हूँ। तुम्हारे यहाँ तो वह हमेशा रह नहीं सकती। लेकिन उसे उस जगलमें भेजना भी, जिसे मैं खुद देख आया हूँ, उसके लिए एक बड़ा कठिन दण्ड होगा।

अभीतक माया कभी कुजके सामने नहीं आई। मगर विहारी उसे देख चुका है इसलिए वह इतना समझता है कि यह स्त्री जगलमें पडी रहनेके लायक नहीं है। परन्तु साथ ही उसे यह भी खटका है कि कुंजके घरमे उसका रहना कभी अनर्थ भी कर सकता है। क्योंकि जो दीपक घरमें प्रकाश फैलाता है, वही आग लगाकर उसे भस्म भी कर सकता है।

कुजने, बिहारीकी उक्त बातपर, उसकी खूब हँसी उड़ाई। बिहारीने भी उसका जवाब दिया। बिहारीको निश्चय हो गया था कि यह स्त्री खेलवाड़की चीज नहीं है, इसकी उपेक्षा करना कठिन है।

---

* यह उपन्यास बकिम बाबूने बगलामें लिखा है। हिन्दीमें भी 'कुन्दनन्दिनी' या 'विष-वृक्ष' नामसे इसके अनुवाद हो चुके हैं।

लक्ष्मीने मायाको सावधान कर दिया, कहा—बेटी, बहूको बहुत देर तक अपने पास न रक्खा करो। तुम गँवई-गाँवकी रहनेवाली सीधी सादी हो, आजकलके पढ़ेलिखे लड़कोंका ढँग नहीं जानतीं। तुम समझदार हो, अच्छी तरह सोच-समझकर चलना।

इसके बाद यह हुआ कि माया करुणाको बड़े आडम्बरके साथ अपनेसे दूर रखने लगी। मायाने कहा—मैं तुम्हारी कौन हूँ? मेरी अवस्था अच्छी नहीं है। यदि मैं अपनी इज्जत आबरू देखकर न चलूँगी, तो न जाने कब क्या हो जाय।

करुणा बहुत रोई-धोई, मगर माया अपनी बातपर दृढ रही। करुणाको अपनी नित्यकी कहानी कहनेकी आदत पड़ गई थी। अब किससे कहे? करुणा लाख लाख मायासे मिलना—बातचीत करना—चाहती है, मगर माया अलग ही अलग रहती है।

इधर कुंजका भी भाव कुछ बदलने लगा। प्रेम-बन्धन कुछ शिथिल होने लगा। हर-घड़ी पास बैठे रहनेका चाव भी कम हो चला। पहले यदि करुणा किसी कामको नहीं कर सकती थी या बिगाड़ देती थी तो, कुंज हँसने लगता था, उसमें भी उसे एक प्रकारका रस मालूम पड़ता था, लेकिन अब वह बात नहीं है। अब अगर करुणासे कोई काम बिगड़ जाता है या करते नहीं बनता है तो कुंजको अच्छा नहीं लगता। अब करुणाके अनाड़ीपनसे वह मनमें खीझ उठता है मगर कुछ कहता नहीं है। प्रकट रूपसे कुंजके कुछ न कहनेपर भी उसका खीझना करुणासे छिपा नहीं रहता, वह भीतर ही भीतर सब समझ लेती है। उसे जान पड़ने लगा कि हर घड़ी पास रहनेसे प्रेमका स्वाद फीका होता जाता है। कुंजके आदर और प्रेमकी रागिनी बेसुरी हो रही थी—उसमें बनावट और बहलानेकी मात्रा ही अधिक थी।

ऐसे समयमें अलग हुए बिना बचाव नहीं है, विच्छेद या वियोगके सिवा अब इसकी कोई दवा नहीं। स्त्रियोंका यह स्वभाव-सिद्ध सहज संस्कार होता है कि वे ऐसे अवसरपर दूर रहनेकी चेष्टा करती हैं। करुणा भी कुंजके पाससे हटकर दूर रहना चाहती है। मगर जाय कहाँ? मायाके सिवा उसका कोई आश्रय नहीं।

कुंजने भी, प्रेमका नशा कुछ कम हो जानेपर, सजग हो संसारके काम-काज और पढ़ने-लिखनेपर दृष्टि डाली। वह डाक्टरीकी किताबोंको इधर-उधरसे निकालकर उनकी धूल झाड़ने लगा और अचकन, कोट, पतलून वगैरहको सन्दूकसे निकालकर घाममें डालनेकी तैयारी करने लगा।

❦ ❦ ❦

तेरहवाँ परिच्छेद

जब माया किसी तरह हाथ न आई, तब करुणाको एक चाल सूझी। उसने मायासे कहा—अच्छा सखी, तुम उनके आगे क्यों नहीं निकलतीं? दूर ही दूर भागी क्यों फिरती हो?

मायाने संक्षेपमें तेजीके साथ जवाब दिया—छी छी!

करुणाने कहा—क्यों? मैंने माँसे सुना है कि तुम कोई गैर थोड़े ही हो।

मायाने गंभीर होकर कहा—संसारमें अपना-पराया कोई नहीं है। जो अपना समझे वही अपना है और जो गैर समझे वह, अपना होनेपर भी, गैर है।

करुणाने अपने मनमें कहा—इस बातका तो कोई जवाब नहीं है। सचमुच मायासे वे उचित व्यवहार नहीं करते। मायाको गैर समझना और उससे अकारण चिढ़ना अन्याय है।

उस दिन रातको करुणाने बहुत जोर देकर कहा—तुमको मेरी सखीसे बातचीत करनी होगी।

कुंजने हँसकर कहा—तुम्हारा साहस तो कम नहीं है!

करुणाने कहा—क्यों, इसमें डर ही क्या है?

कुंजने कहा—तुम अपनी सखीके रूपका जैसा वर्णन करती हो, उससे तो यह काम खटकेसे खाली नहीं जान पड़ता।

करुणाने कहा—तुम इसकी चिन्ता न करो, मैं सब सँभाल लूँगी। अब हँसी छोड़कर यह बतलाओ कि उससे बात-चीत करोगे या नहीं?

यह बात न थी कि मायाको देखनेकी कुंजको बिल्कुल इच्छा ही न हो। आज-कल तो कभी कभी उसे देखनेके लिए उसका बहुत जी चाहता था। मगर यह इच्छा उसे स्वयं उचित नहीं जान पड़ती थी।

आन्तरिक सम्बन्धके बारेमें कुंजका उचित-अनुचितका विचार और आदर्श अन्य साधारण लोगोंकी अपेक्षा कुछ कड़ा था। कहीं माताका अधिकार कुछ कम न हो जाय—इस विचारसे वह पहले ब्याह ही करनेको तैयार न था। अब आज-कल करुणाके सम्बन्धको वह इस तरह सुरक्षित रखना चाहता है कि दूसरी स्त्रीके ध्यान और चर्चाको अपने हृदयमें रत्ती-भर भी जगह नहीं देना चाहता। उसे इस बातका गर्व है कि मैं प्रेमके बारेमें बहुत ही खरा और सच्चा हूँ। यहाँ तक कि वह विहारीके सिवा और किसीको अपना मित्र भी नहीं बनाना चाहता था। और कोई अगर उससे घनिष्ठता बढ़ाने आता था तो वह उसे उपेक्षाकी दृष्टिसे देखता था और विहारीके आगे उसके प्रति अनादरका भाव दिखाता और उसकी हँसी उड़ाता था। विहारी इस बारेमें कुछ आपत्ति करता तो कुंज कहता—तुमसे हो

सकता है विहारी, तुम जहाँ जाते हो वहाँ ही तुमको मित्रोंकी कमी नहीं रहती; मगर मैं तो हर किसीको मित्र बनाने और माननेको तैयार नहीं हूँ।

उसी कुंजका मन जब आजकल बीचमें अनिवार्य व्यग्रता और कुतूहलके साथ इस अपरिचित स्त्रीकी तरफ आप ही आप चलायमान होता है, तब वह आप ही अपने आगे शर्माकर अपने ऊपर खीझता है और अन्तको खीझकर वह उसे अपने यहाँसे विदा कर देनेके लिए मासे झगड़ता है।

कुंजने कहा—रहने दो चुन्नी, तुम्हारी सखीके साथ बातचीत करनेकी मुझे फुरसत कहाँ है? पढ़नेके समय मैं अपना कोर्स पढ़ता हूँ और जब फुरसत होती है तब तुमसे बातें करता हूँ। मायासे मिलने और बातचीत करनेके लिए समय कहाँसे लाऊँ?

करुणाने कहा—अच्छा, तुम्हारे पढ़नेके समयमें न सही, यदि मैं अपने हिस्सेका समय अपनी सखीको दे दूँ, तब तो उससे बातचीत करोगे?

कुंजने कहा—तुम तो दोगी, लेकिन मैं क्यों देने दूँगा?

करुणा मायापर प्यार कर सकती है; परन्तु कुंज कहता है कि इससे तुम्हारे पति-प्रेममें कमी साबित होती है। वह अहंकार करके कहता था—चुन्नी, मेरे ऐसा अनन्य प्रेम तुम्हारा नहीं है। .

लेकिन करुणा किसी तरह इस बातको नहीं मानती थी, इसके लिए वह झगड़ा करती थी, लेकिन तर्कमें हार जाती थी।

कुंज अपने दोनों जनोंके बीचमें मायाको सुईकी नोकके बराबर भी स्थान नहीं देना चाहता—यह उसके लिए एक गर्वकी बात हो गई। करुणाको कुंजका यह अभिमान असह्य था। लेकिन आज उसने हार मानकर कहा—अच्छी बात है, मेरी खातिरसे ही तुम मेरी सखीसे बातचीत करो।

करुणाके निकट अपने प्रेमकी दृढ़ता और श्रेष्ठता प्रमाणित करके अन्तको कुंजने, अनुग्रह करके, मायाके साथ बात-चीत करना स्वीकार कर लिया। लेकिन यह कह रक्खा कि 'मगर जब देखो तब उससे बात-चीत न कर सकूँगा। एक आध दफेकी बात और है।'

दूसरे दिन जब तड़के माया सो रही थी, उस समय करुणा जाकर उसके गलेसे लिपट गई। मायाने कहा—वाह, यह कैसा अचरज है! चकोरी आज चन्द्रमाको छोड़कर मेघके पास कैसे आई?

करुणाने कहा—तुम्हारी तरह कविता मुझे नहीं आती, फिर क्यों घूरेपर मोती डालती हो? जो तुम्हारी इन बातोंका जवाब दे सकता है उसके पास क्यों नहीं चलती?

मायाने कहा—वह रसिया कौन है?

करुणाने कहा—तुम्हारे देवर। नहीं जी, हँसी नहीं, वे तुमसे बातचीत करनेके लिए मुझसे कई बार कह चुके हैं।

चतुरा मायाने अपने मनमें कहा—स्त्रीके हुक्मसे मेरी पुकार हुई है, मगर मैं ऐसी कहाँ हूँ जो पुकार होते ही दौड़ी जाऊँ!

माया किसी तरह राजी न हुई। करुणाको अपने पतिके आगे बहुत ही लज्जित होना पड़ा।

कुज भी मन-ही-मन कुढ गया। उसने कहा—मेरे सामने निकलनेमें नाहीं-नूहीं! मुझे भी क्या वह अन्य साधारण मर्दाकी तरह जानती है? और कोई होता तो वह अबतक किसी न-किसी कौशलसे मायाको देख लेता और बात-चीत करनेके लिए विवश करता, मगर मैंने उसकी कोई चेष्टा नहीं की, इससे भी क्या उसने मुझे नहीं पहचाना? अगर वह एक दफा अच्छी तरह विचार करे तो समझे कि और मर्दोंमें और मुझमें कितना अन्तर है।

मायाने भी दो दिन पहले मन ही-मन कहा था—इतने दिनोंमे घरमें हूँ मगर कुजने एक बार मुझे देखनेकी चेष्टा भी न की। जिस समय मैं बुआके पास रहती हूँ उस समय कोई बहाना बना करके भी मेरे पास नहीं आते। इतनी उदासीनता या लापरवाही किस लिये है? मैं क्या बिल्कुल जड़ पदार्थ हूँ? मैं क्या आदमी नहीं हूँ? मै क्या स्त्री नहीं हूँ? वे एक बार भी अगर मेरा परिचय पाते, तो समझ सकते कि चुन्नीमें और मुझमें कितना अतर है!

करुणाने स्वामीके निकट प्रस्ताव किया कि—तुम जब कालेज जाओगे, तब मैं अपनी सखीको कमरेमें ले जाऊँगी। तुम कालेज न जाना, रास्तेसे लौटकर एकदम चले आना। बस, माया काबूमें आ जायगी।

कुजने कहा—उसने ऐसा कौनसा अपराध किया है जिसके लिए यह दण्ड देनेकी तैयारी हो रही है?

करुणाने कहा—नहीं जी, सचमुच ही मुझे उसपर बड़ी भारी रिस आ रही है। तुमसे मिलनेमें भी उसे आपत्ति है! जब उसे अच्छी तरह छका लूँगी और उसकी प्रतिज्ञा तोड़ दूँगी तब छोड़ूँगी।

कुजने कहा—तुम्हारी प्यारी सखीको देखे बिना मैं मरा नहीं जाता।- मुझे इस तरह लुक-छिपकर देखना पसद नहीं।

करुणाने प्रार्थनाके ढगसे कुजका हाथ पकड़कर कहा—तुम्हें मेरी कसम, तुमको एक बार यह काम करना ही होगा। एक बार, चाहे जिस तरह हो, उसे छकाना चाहिए। फिर तुम्हारी जो इच्छा हो वही करना।

कुज चुप हो रहा। करुणाने कहा—प्राणनाथ, मैं तुमसे अनुरोध करती हूँ, मेरा कहना मानो।

मायाको देखनेके लिए कुजका आग्रह दिन दिन बढ रहा था, तो भी उसने आवश्यकतासे अधिक उदासीनता दिखाकर मानो केवल करुणाकी बात रखनेके लिए ही ऐसा करना स्वीकार कर लिया।

शरद ऋतु थी, स्वच्छ दिन था, दो-पहरके सन्नाटेमें माया कुंजके कमरेमें बैठी हुई करुणाको गुलूबद बुनना सिखा रही थी। करुणाका ध्यान उस ओर न था, वह बार बार दर्वाजेकी तरफ देखती हुई बुननेमें भूल-भूलकर मायाके आगे अपना असाध्य अनाड़ीपन प्रकट कर रही थी।

अन्तको मायाने खीझकर उसके हाथसे गुलूबद लेकर दूर फेंक दिया और कहा—यह काम तुमसे न होगा। मुझे और काम है, मैं जाती हूँ।

करुणाने कहा—जरा ठहरो, अबकी देखो मैं भूल नहीं करूँगी।

इतना कहकर वह फिर गुलूबद लाकर बुनना सीखने लगी। इसी बीचमें कुंज चुपचाप मायाके पीछे दर्वाजेके पास आकर खड़ा हो गया। करुणा उधर न देखकर सिर नीचा किये धीरे धीरे हँसने लगी।

मायाने कहा—क्यों क्यों, हँसने क्यों लगीं? कौन-सी बात याद आ गई?

करुणा हँसीके वेगको न रोक सकी, जोरसे खिलखिलाकर हँस पड़ी और गुलूबंद मायाके उपर फेंककर बोली—"ना बहन, तुमने ठीक कहा—यह मेरे किये न होगा।" इतना कहकर करुणा मायाके गलेसे लिपट गई और जोरसे हँसने लगी।

माया पहले ही सब समझ गई थी। करुणाकी चञ्चलता और चेहरेका भाव देखकर मायाने जान लिया था कि आज मुझे छकानेके लिए फंदा डाला गया है। कुंजका चुपचाप आकर पीछे खड़ा हो जाना मायासे छिपा नहीं था। परन्तु वह अत्यन्त सरल और भोले आदमीकी तरह जान-बूझकर ही करुणाके इस कच्चे फंदेमें फँस गई।

कुंजने कमरेमें घुसकर कहा—क्या मैं भी सुन सकता हूँ कि हँसीका कारण क्या है?

माया चौंककर आँचलसे माथा ढँकती हुई उठने लगी, मगर करुणाने हाथ पकड़कर रोक लिया।

कुंजने हँसकर कहा—आप बैठिए, मैं जाता हूँ।

करुणाने कहा—नहीं।

मायाने साधारण औरतोंकी तरह उठ जानेके लिए अधिक आग्रह या यत्न नहीं किया, जैसे बैठी थी वैसे ही बैठी रही। करुणाने कहा—उनसे इतना लजानेकी जरूरत क्या है?

मायाने कुंजकी तरफ इशारा करके कहा—आपकी ऐसी ही इच्छा है, तो मैं बैठती हूँ। मगर मुझे मन-ही-मन कोसिएगा नहीं! मुझे शाप मत दीजिएगा!

कुंजने कहा—ऐसा शाप तो जरूर दूँगा जिससे बहुत देरतक आपके पैरोंमें यहाँसे जानेकी शक्ति न रहे।

मायाने कहा—इसके लिए मैं नहीं डरती। क्योंकि आपकी 'बहुत देर' चार पाँच मिनटसे अधिक न होगी और अब तो शायद उतना समय हो भी गया होगा।

इतना कहकर माया फिर उठने लगी। करुणाने उसका हाथ पकड़कर कहा—तुमको मेरे सिरकी कसम, और जरा देर बैठो।

★ ★ ★ ★

चौदहवाँ परिच्छेद

करुणाने पूछा—सच कहो, मेरी सखी कैसी है?

कुंजने लापरवाहीके साथ कहा—बुरी नहीं है।

करुणाने बहुत ही खिन्न होकर कहा—तुमको तो कोई पसन्द ही नहीं आता।

कुंज—सिर्फ एक आदमीको छोड़कर।

करुणा—अच्छा, उसके साथ जरा अच्छी तरह बात-चीत होने दो, तब पूछूँगी।

कुंज—फिर बातचीत! जान पड़ता है, अब यह बात-चीतका सिलसिला बराबर जारी रहेगा!

करुणा—अगर वह सामने पड़ जायगी, तो क्या बातचीत न करोगे? भलमनसाहतके खयालसे भी तो आदमीसे बात-चीत करनी पड़ती है। अगर एक दिन जान पहिचान करके मुलाकात और बात चीत करना छोड़ दोगे, तो मेरी सखी अपने मनमें क्या कहेगी? तुम्हारी सभी बातें विचित्र हैं। और कोई होता तो ऐसी स्त्रीसे बात-चीत करनेके लिए कोशिश करता, मगर तुम्हारे सिरपर तो जैसे कोई बड़ी आफत आ पड़ी।

और लोगोंसे अपनेमें इतनी विशेषता सुनकर (जिसे वह अपनी एक प्रकारकी प्रशंसा समझता था) कुंज बहुत खुश हुआ। कुंजने कहा—अच्छी बात है। इसके लिए घबराने और अनुनय विनय करनेकी क्या जरूरत है? मुझे भी भाग जानेके लिए और जगह नहीं है, और अभी तुम्हारी सखीके भी यहाँसे जानेके लक्षण दिखाई नहीं देते, इस कारण कभी कभी सामना जरूर ही होगा, और सामना होनेपर भले आदमियों-सरीखा व्यवहार करना चाहिए—यह बात तुम्हें अपने स्वामीको सिखानी न पड़ेगी।

कुंजको विश्वास था कि अब माया कोई न कोई बहाना करके रोज सामने आवेगी और बात-चीत करेगी, लेकिन उसकी यह धारणा ठीक न थी। माया दिखाई नहीं देती, अचानक भी उससे मुलाकात नहीं होती।

किसी तरहकी व्यग्रता प्रकट न हो जाय इस खयालसे कुंज करुणाके आगे भी मायाकी चर्चा नहीं कर सकता। बीच-बीचमें मायासे मिलनेकी स्वाभाविक सामान्य इच्छाको छिपाने और दबानेसे कुंजकी व्यग्रता मानो अधिक बढ जाती है। इसके बाद मायाकी लापरवाही उसे और भी उत्तेजित कर देती है।

मायासे मुलाकात होनेके दूसरे दिन कुजने प्रसग उठाकर हँसी-हँसीमें करुणासे पूछा—अच्छा, तुम्हारी सखी तुम्हारे स्वामीके बारेमें क्या कहती थी ?

कुजको दृढ विश्वास था कि इस विषयमे करुणा एक उत्साहपूर्ण विस्तृत रिपोर्ट सुनावेगी, लेकिन जब करुणाने कुछ भी न कहा, तब उसने आप ही प्रसग उठाकर हँसीके बहाने यह प्रश्न किया।

करुणा बड़ी मुश्किलमें पड़ी। मायाने तो इस बारेमें कुछ भी नहीं कहा। इसलिए करुणा मन-ही-मन सखीपर बहुत झुँझलाई।

करुणाने कहा—ठहरो, दो-चार दिन बात-चीत होने दो, तब तुम्हारे बारेमें उसकी राय भी मालूम हो जायगी। अभी मुलाकात हुए कै दिन हुए और बातचीत ही कितनी हुई थी।

इससे भी कुज कुछ निराश हुआ और मायासे मिलनेमें लापारवाही दिखाना या उसकी उपेक्षा करना उसके लिए और भी असम्भव हो गया।

इतनेमें बिहारी आ पहुँचा। आते ही पूछा—क्यों कुज दादा, किस बातकी बहस हो रही है ?

कुजने कहा—देखो तो भाई, माया या ममता न-जाने क्या नाम है—उससे तुम्हारी भौजीने दोस्ती की है और आपसमें पुकारनेके लिए 'बालोंकी डोरी' या 'मछलीका कॉटा' ऐसा ही कोई एक नाम रक्खा है। कहती है, तुमको भी उससे दोस्ती करनी होगी और पुकारनेके लिए 'चुरटकी राख' या 'दियासलाईकी लकड़ी' ऐसा ही कोई नाम रखना होगा! भला यह भी कोई बात है ?

करुणाके रँगीले रसीले ओंठ प्रतिवाद करनेके लिए घूँघटके भीतर फड़क उठे। बिहारीने एक बार कुजके ऊपर दृष्टि डालकर कहा—भौजी, लक्षण अच्छे नहीं देख पड़ते। ये सब बहलानेकी बातें हैं। तुम्हारी 'ऑखकी किरकिरी'को मैंने देखा है और मैं यह बात कसम खाकर कह सकता हूँ कि अगर मुझे उनको बार बार देखनेका मौका मिले, तो उसे मैं अपना अभाग्य नहीं समझ सकता। तब उनसे मिलनेमें कुज दादाकी इतनी अनिच्छा होना अवश्य ही सन्देहकी बात है।

कुजमें और बिहारीमें बड़ा अन्तर है—करुणाको आज इस बातका और भी एक प्रमाण मिला!

एकाएक कुजको फोटोग्राफी सीखनेका शौक हुआ। पहले एक बार उसने फोटोग्राफी सीखना शुरू करके कुछ दिनोंके बाद छोड़ दिया था। अब फिर उसी कैमरेकी मरम्मत कराकर अरक लाकर तसवीरें उतारना शुरू कर दिया। घरके नौकर-चाकरों तककी तसवीरें उतारी गईं।

करुणा एक दिन अड़ गई, बोली—तुमको मेरी सखीका भी एक फोटो लेना होगा।

कुंजने अत्यन्त सक्षेपमे कहा—अच्छा।

मायाने उससे भी सक्षेपमें कहा—ना।

अबकी बार फिर करुणाको एक कौशल रचना पड़ा, किन्तु वह भी मायासे छिपा नहीं रहा।

ठीक हुआ कि करुणा दोपहरको अपने कमरेमें मायाको लाकर किसी तरह सुलावेगी और कुंज उसी अवस्थामें फोटो लेकर उसकी कहना न माननेवाली सखीको भरपूर छकावेगा।

आश्चर्यकी बात है कि माया दिनको कभी न सोती थी, मगर उस दिन करुणाके कमरेमें आते ही उसे नींद आ गई। वह लाल शाल ओढकर, खुली खिडकीकी तरफ मुँह करके, और, हाथका तकिया लगाकर ऐसे सुन्दर ढगसे सो गई कि कुंजने देखते ही कहा—जान पड़ता है, मानो यह तसवीर उतरवानेके लिए ही लेटी है।

कुंज केमरा ले आया। किधरसे फोटो लेना अच्छा होगा, यह ठीक करनेके लिए कुंजको चारों तरफसे अच्छी तरह मायाके अगोंपर दृष्टि डालनी पड़ी। यहाँतक कि उसे 'आर्ट' के लिए बहुत चुपके चुपके सिरहाने जाकर उसके खुले हुए बालोंको भी एक जगह हटा देना पड़ा। कुंजने करुणाके कानमें कहा—पैरोंके पासवाले शालके ऑचलको जरा बाईं तरफ हटा दो।

अनाड़ी करुणाने चुपकेसे कहा—मुझसे ठीक नहीं बनेगा, जग पड़ेगी—तुम्हीं हटा दो।

कुंजने उसे भी ठीक कर लिया।

अन्तको तसवीर लेनेके लिए कुंजने केमरेमें ज्यों ही काँच लगाया, त्यों ही जैसे किसी आवाजसे सजग होकर, माया अँगड़ाई लेकर और एक लम्बी साँस खींचकर झटपट उठ बैठी। करुणा जोरसे हँस उठी। माया बहुत ही बिगड़ी, उसने अपने ज्योतिर्मय नेत्रोंसे कुंजके ऊपर अग्नि-बाण बरसाकर कहा—बड़ा अन्याय है।

कुंजने कहा—अन्याय है, इसमें कोई सन्देह नहीं, किन्तु चोर कहलाये, चोरी भी की, मगर चोरीका माल हाथ नहीं लगा। इससे तो इहलोक और परलोक दोनों बिगड़े। इसलिए अब अन्यायको पूरा कर लेने दो, उसके बाद जो चाहे दण्ड देना।

करुणा भी मायाके पीछे पड़ गई। तसवीर उतारी गई, मगर वह खराब हो गई। इस कारण चित्रकारने दूसरे दिन एक तसवीर और भी लिये बिना न छोड़ा। उसके बाद प्रस्ताव हुआ कि दोनों सखियोंको साथ बिठलाकर एक तसवीर और उतारी जाय, वह तसवीर दोनों सखियोंकी मित्रताका चिह्न होकर कमरेमें रहेगी। इस प्रस्तावमें मायाको सहमत होना ही पड़ा। उसने कहा, अच्छी बात है, मगर इसके बाद मैं फिर और तसवीर न उतारने दूँगी।

कुजने जान-बूझकर उस तसवीरको खराब कर डाला। इस प्रकार तसवीर उतारते उतारते बात-चीत होते होते हेल-मेल बहुत बढ गया।

❦ ❦ ❦

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

बाहरसे हिलाने-डुलानेपर राखमें दबी हुई आग फिर भड़क उठती है। कुज और करुणाके नवीन प्रेमका उत्साह बुझता जाता था, अब वह तीसरी तरफसे उभारे जानेपर फिर जग उठा।

करुणामें हँसी-दिल्लगी करनेकी शक्ति नहीं थी, मगर माया हँसी-दिल्लगी और विनोद करना खूब जानती थी। यही कारण था कि करुणाको मायाकी अधिक चाह हुई, उसने मायाको अपने आनन्दका आश्रय समझा। कुजको हमेशा हँसाने और प्रसन्न रखनेके लिए अब उसे विशेष चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी।

ब्याहके बाद थोड़े ही दिनोंमें कुज और करुणाने, परस्पर एकके निकट दूसरेने, अपनेको नि:शेष कर देनेका डौल डाला था। प्रेमका सगीत एकदम 'निषाद'से शुरू हुआ था, सूद न खाकर मूल-धन ही खा डालनेकी चेष्टा हुई थी। पर इस पागलपनकी बढ़ियाको वे नित्यका सासारिक स्रोत कैसे बना सकते थे? नशा करनेके बाद बीचमें कुछ शिथिलता आनेपर उसे दूर करनेके लिए मनुष्य फिर नशा चाहता है; परन्तु वह नशा करुणा कहाँसे लावे? इसी समय मायाने नया रगीन प्याला भरकर करुणाके हाथमें ला दिया। करुणा अपने स्वामीको प्रसन्न और प्रफुल्लित देखकर निश्चिन्त हुई।

अब उसे चेष्टा नहीं करनी पड़ती। कुज और माया दोनों जब आपसमें हँसी-दिल्लगी करते थे, तब वह केवल जी खोलकर हँसनेमें साथ देती थी। ताश खेलते समय जब कुज करुणासे बेईमानी करता था, तब वह मायाको विचारक मानकर सकरुण अभियोगकी अवतारणा करती थी। कुज जब हँसता या कड़ी बात कहता था, तो करुणा इस आशासे कि माया मेरी तरफसे उचित उत्तर देगी, मायाकी तरफ देखने लगती थी। इसी तरह तीनों आदमियोंकी बैठक रोज जमने लगी।

मगर इतना सब होनेपर भी माया काम-काजमें जरा भी लापरवाही न होने देती थी। वह रसोई, घरके और और काम, लक्ष्मीकी सेवा आदि सब कर चुकनेपर हँसी-खेलमें सम्मिलित होती थी। कुज खीझकर कहता था—देख पड़ता है तुम नौकर-चाकरोंको, उनसे काम न कराकर, मिट्टी कर डालोगी।

माया कहती थी—कुछ काम न कर खुद मिट्टी होनेकी अपेक्षा यह अच्छा है। जाओ, तुम कालेज जाओ।

कुज—आज तो बदलीका दिन है।

माया—नहीं, यह न होगा—तुम्हारी गाड़ी तैयार है—कालेज जाना होगा।

कुज—मैंने तो गाडी लानेको मना कर दिया था।

माया—मैंने लानेको कह दिया था।

इतना कहकर माया झटपट कुजके कपड़े लाकर सामने रख देती थी।

कुज—तुमको किसी राजपूतके यहाँ जन्म लेना था। अगर तुम राजपूत-रमणी होतीं तो युद्ध-यात्राके समय स्वामीको अपने हाथसे कवच पहना देतीं।

मायाके मारे अब हँसी-खेलके लिए छुट्टी लेना या पढने न जाना कुजके लिए अत्यन्त कठिन हो गया। उसके कठिन शासनसे दिन-दोपहरका हँसी-खेल एकदम उठ गया, शामकी बैठक हो गई। इस प्रकार सायकालका अवकाश कुजको अत्यत सुहावना और लुभावना जान पड़ने लगा। दिनभर और कामोंमें लगे रहनेके कारण सायकालके विश्रामसे कुंजको एक नया आनन्द मिलने लगा। उसका दिन मानो अपने अन्त होनेकी प्रतीक्षा किया करता था।

पहले बीच-बीचमें जब कभी ठीक समयपर रसोई तैयार न होती थी तब इसी बहानेसे कुजका कालेज जाना रुक जाता था। अब माया आप सब ठीक-ठाक करके, कालेज जानेके समय तक, कुजको खिला-पिला देती है और खानेके बाद ही कुजको खबर मिलती है कि गाड़ी तैयार खड़ी है। पहले यह था कि बहुत देर तक हैरान हुए बिना यह पता न लगता था कि फलाना कपडा धोबीके यहाँ गया है या आलमारीके किसी कोनेमें नीचे दबा पड़ा है, मगर अब सब कपड़े तहाए हुए अलग आलमारीमें रक्खे रहते हैं।

पहले पहले माया इन सब विशृखलाओंके लिए कुजके आगे करुणाको बनाती और मीठी डॉट भी बताती थी—कुज भी करुणाके इस असाध्य अनाडीपनको हँसीमें टाल देता था। अन्तको मायाने, मित्रताके मारे, करुणाके कर्तव्यका भार अपने ऊपर ले लिया। घरकी श्री और ही हो गई।

कुजके कोटका बटन टूट गया है, करुणा उसी समय जल्दीसे उसका कुछ उपाय नहीं कर पाती, माया जल्दीसे आकर चिन्तामें पड़ी हुई करुणाके हाथसे कोट ले लेती और चटपट बटन टॉक देती है। एक दिन कुजके लिए रक्खे हुए भोजनमें बिल्लीने मुँह डाल दिया, करुणा चिन्ताके मारे व्याकुल हो रही थी, मायाने उसी समय रसोईमें जाकर, सब सामान जुटाकर, चूल्हा जलाकर, घडीभरमें और भोजन बना दिया। करुणाको देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

कुजको इसी तरह खाने-पीने, पहनने-ओढने, काम और विश्राम करनेमें सभी जगह तरह तरहसे मायाके निपुण हाथकी सेवाका अनुभव होने लगा। उसे मायाके बुने हुए ऊनी मोजे पैरोंमें और ऊनी गुलूबद गलेमें उसके कोमल मानसिक स्पर्शकी तरह जान पड़ते थे। आजकल करुणा भी सखीके सुघर हाथोंकी बदौलत

अच्छे ढँगसे सजकर और सुगन्ध लगाकर कुंजके पास जाती है। उस सजावटमें कुछ करुणाका अपना और कुछ उसकी सखीका सौन्दर्य मिला होता है। गंगामें यमुनाकी तरह करुणामें माया मिल गई थी और इसी रूपमें वह नित्य रातको कुंजके निकट नये नये ढँगसे उपस्थित होती थी।

आज कल बिहारीका वैसा आदर नहीं है जैसा कि पहले था। उसको कोई नहीं बुलाता। एक दिन बिहारीने कुंजको लिख भेजा कि 'कल रविवार है, मैं दोपहरके समय आऊँगा और माके हाथकी रसोई खाऊँगा।'

कुंजने देखा, बिहारीके आनेसे, यह रविवार मिट्टी हुआ जाता है। उसने चट पट लिखा भेजा कि 'कल मुझे एक बहुत जरूरी कामके लिए बाहर जाना पड़ेगा।'

कुंजने समझा था कि मेरे न रहनेकी खबर पाकर बिहारी न आवेगा। लेकिन ऐसा उत्तर पाकर भी बिहारी उस दिन खा-पीकर कुंजके यहाँ आ पहुँचा। बाहर नौकरसे पूछनेपर मालूम हुआ कि कुंज घरमें ही है, कहीं बाहर नहीं गया। बिहारी भीतर चला गया। सीढ़ीपर जाकर उसने कुंजको आवाज दी और वह सीधा कमरेमें पहुँच गया। कुंज कुछ झेंपकर 'सिरमें बड़ा दर्द है' कहता हुआ सिर पकड़कर तकियेपर पड़ रहा। दर्दका नाम सुनकर और कुंजकी बे-चैनी देखकर करुणा घबरा उठी, 'और अब क्या करना चाहिए' इस प्रश्नके भावसे उसने मायाकी तरफ देखा। माया अच्छी तरह जानती थी कि सिरका दर्द कैसा और कितना है, तो भी उसने बड़ी घबराहट दिखाते हुए कहा—बहुत देरसे बैठे हो, जरा सो रहो। मैं 'ओडि कोलोन' लाये देती हूँ।

कुंजने कहा—रहने दो, कोई जरूरत नहीं है।

मायाने नहीं माना, वह जल्दीसे 'ओडि कोलोन' को बर्फके पानीमें मिलाकर ले आई।

मायाने उसी पानीमें रूमाल तर करके करुणाके हाथमें दिया और कहा—इसे उनके सिरमें पट्टीकी तरह बाँध दो।

कुंज बार बार कहने लगा—रहने दो न!

बिहारी हँसीको मुँहमें ही रोककर चुपचाप यह तमाशा देखने लगा। कुंजने गर्वके साथ अपने मनमें कहा—बिहारी देखे, मेरा कितना आदर है!

बिहारीके आगे लज्जाके मारे हाथ काँपनेके कारण करुणा उस रूमालको अच्छी तरह बाँध न सकी, दो-तीन बूँद ओडि कोलोन कुंजकी आँखोंमें पड़ गया। तब उसे मायाने करुणाके हाथसे लेकर, अच्छी तरह सावधानीके साथ पट्टी बाँध दी और दूसरे कपड़ेको, ओडि कोलोनके पानीमें भिगोकर, थोड़ा थोड़ा करके पट्टीके उपर निचोड़ दिया। करुणा घूँघट काढे हुए सिरहाने बैठकर पखा डुलाने लगी।

मायाने स्नेहके स्वरमें पूछा—क्यों कुंज बाबू, कुछ आराम है?

इस प्रकार मधुर स्वरसे अमृत-वर्षा करके मायाने तेजीके साथ बिहारीकी तरफ

देखा, बिहारीकी आँखोंमें कौतुककी हँसी झलक रही है। वह जानता है कि सब तमाशा हो रहा है। मायाने समझ लिया कि इस आदमीको भुलाना या बहकाना सहज काम नहीं है, कोई रहस्य इससे छिप नहीं सकता।

बिहारीने हँसकर कहा—बड़ी बहू, ऐसी सेवा पाकर रोग घटेगा नहीं, बढ जायगा।

मायाने कहा—सो भला हम मूर्ख स्त्रियाँ क्या जानें ? आपकी डाक्टरीकी किताबोंमें क्या ऐसा ही लिखा है ?

बिहारीने कहा—लिखा भले ही न हो, मगर मैं तो प्रत्यक्ष देख रहा हूँ। यह सेवा देखकर मेरे सिरमें भी दर्द शुरू हो गया। किन्तु हम ऐसे अभागोंके सिरका दर्द बिना दवा-दारूके ही चटपट आराम हो जाता है। हमारे कुज दादा बड़े भाग्यशाली हैं।

मायाने ओडि कोलोनसे तर किया हुआ कपड़ा निकाल लिया और कहा—कोई जरूरत नहीं, मित्रकी दवा मित्र ही कर लेंगे।

हाल-चाल देखकर बिहारी मन-ही-मन कुढ गया था। इधर कुछ दिनों तक वह पढनेमें दत्तचित्त था, उसे कुज, करुणा और मायाके इस तरह मिल-जुल जानेका कुछ भी हाल मालूम न था। आज बिहारीने मायाको अच्छी तरह गौरसे देखा, और मायाने भी उसे देखा।

बिहारीने कुछ तीखे स्वरसे कहा—ठीक बात है। मित्रकी दवा, मित्रकी सेवा, मित्रहीसे हो सकती है। मैं ही सिर-दर्दको लाया था और मैं ही उसे साथ लिये जाता हूँ। 'ओडि कोलोन एसेंस' कीमती चीज है। उसे इस तरह व्यर्थ नष्ट न करो। इसके बाद करुणाकी तरफ देखकर कहा—बहूजी, दवा करके रोग हटानेकी अपेक्षा रोग न होने देना ही अच्छा और बुद्धिमानीका काम है।

❦ ❦ ❦ ❦

सोलहवाँ परिच्छेद

बिहारीने सोचा—अब दूर रहनेसे काम न चलेगा। जैसे हो, इनके बीचमें मुझे भी अपने लिए जगह करनी होगी। भले ही इनमेंसे कोई मुझे न चाहे, पर मुझे इनके साथ रहना चाहिए।

बिहारी बुलाने और आदर करनेकी अपेक्षा न रखकर आप ही कुजके चक्रव्यूहमें घुसने लगा। उसने मायासे कहा—देखो बड़ी बहू, इस लड़केको इसकी माने मिट्टी किया है, मित्रने मिट्टी किया है, और स्त्री भी मिट्टी कर रही है—अब तुम भी इस दलमें मिलकर इसे मिट्टी मत करो। मैं प्रार्थना करता हूँ, इसे दूसरा कोई रास्ता दिखलाओ।

कुजने कहा—अर्थात् ?

विहारी—अर्थात् मुझ ऐसे आदमीको, जिसे कोई नहीं पूछता—

कुंज—भले ही मिट्टी कर दो! बिहारी, मिट्टी होनेकी उम्मेदवारी सहज नहीं है। दरख्वास्त पेश कर देनेहीसे काम नहीं हो जाता!

मायाने हँसकर कहा—मिट्टी होनेकी योग्यता होनी चाहिए विहारी बाबू!

विहारीने कहा—निजकी योग्यता न रहनेपर भी कारीगरके हाथके गुणसे सब कुछ हो सकता है, एक बार परीक्षा करके न देख लो!

मायाने कहा—पहलेसे तैयार होकर आनेसे कुछ नहीं होता, असावधान रहना होता है। (करुणासे) क्या कहती हो? अपने इस देवरका भार तुम्हीं न अपने ऊपर ले लो।

करुणाने उसे अपने पाससे धीरेसे ढकेल दिया। विहारीने भी इस दिल्लगीका कुछ जवाब नहीं दिया।

मायामे यह बात छिपी नहीं थी कि करुणाको लेकर विहारीसे दिल्लगी करना विहारीको असह्य हुआ करता है। वह करुणाको देवीकी तरह भक्ति और श्रद्धा-पात्र समझता है और मुझे हल्की करना चाहता है—यह बात मायाको काँटेके समान खटकी।

उसने फिर करुणासे कहा—तुम्हारा यह भिखारी देवर मेरी आड़ लेकर तुम्हींसे आदरकी—प्यारकी—भीख माँगने आया है—कुछ दे दो न!

करुणा इस दिल्लगीसे जल उठी। मिनट-भरके लिए विहारीका चेहरा लाल हो आया। किन्तु उसने उस भावको दबाकर हँसते हुए कहा—वाह, मेरी दफा दूसरेपर टालोगी! क्या कुंज दादाके ही साथ नकद कारबार करना जानती हो?

माया अच्छी तरह समझ गई कि विहारी सब चौपट करनेके लिए ही आया है। उसने निश्चय कर लिया कि विहारीके सामने सशस्त्र रहना होगा।

कुंज भी झुँझला गया। खुलासा बात कहनेमे कविताकी मधुरता नष्ट हो जाती है, परन्तु बिहारीने खुलासा ही कह दिया। कुंजने कुछ तीव्र स्वरमें ही व्यंग्यके साथ कहा—विहारी, तुम्हारे दादाको और कहीं कारबार करने नहीं जाना पड़ता। जो अपने हाथमें है, उसे उसीमें सन्तोष है।

विहारीने कहा—हो सकता है, मगर भाग्यमें लिखा होता है तो कारबारकी लहर बाहरसे भी आकर विचलित कर देती है!

मायाने इसके उत्तरमे कहा—अभी तो आपके हाथमें कुछ भी नहीं है, फिर लहर किधरसे आती है?

विहारीकी ओर मंद मुसकानके साथ एक तीव्र कटाक्ष फेंककर मायाने अँगूठेसे करुणाका पैर दबाया। करुणा नाराज होकर उठ गई। विहारी हार मानकर क्रोधसे

चुप हो रहा। वह ज्यों ही जानेके लिए उठने लगा त्यों ही मायाने कहा—विहारी बाबू, हताश होकर न जाइए। मैं अपनी सखीको भेजे देती हूँ।

मायाके जाते ही जमी हुई बैठक उखड़ गई, इससे कुंज भीतर-ही-भीतर बहुत असन्तुष्ट हुआ। उसके अप्रसन्न चेहरेका भाव विहारीसे छिपा नहीं रहा। अभीतक विहारी खुलकर कुछ कह न सकता था, जोशको दबाये हुए था। अब उसे एकान्त मिला, वह खुल पड़ा। बोला—दादा, अगर तुम अपना सर्वनाश करना चाहते हो तो करो—सदासे तुम्हारी आदत ही यही है मगर जो भोलीभाली बालिका (करुणा) तुमपर पूरा विश्वास करती है और जिसके तुम एकमात्र आश्रय हो उसका सर्वनाश न करना—प्रार्थना करता हूँ कि उससे विश्वास-घात न करना!—यह कहते कहते विहारीका गला भर आया।

कुजने क्रोधको छिपाकर कहा—विहारी, तुम्हारी बात तो मैं कुछ भी नहीं समझा। पहेली बुझाना छोड़कर स्पष्ट कहो।

विहारीने कहा—स्पष्ट ही कहूँगा। माया जान-बूझकर तुमको कुराहमें खींचे लिये जा रही है, और तुम सोचे-समझे बिना नादानोंकी तरह उधर पैर बढा रहे हो।

कुजने गरजकर कहा—झूठ बात! तुम अगर किसी भले आदमीकी बेटी-बहूको इस तरह सन्देहकी बुरी दृष्टिसे देखते हो तो तुम्हारा भीतर जनानेमें आना उचित नहीं है।

इसी समय एक चाँदीकी छोटीसी थालीमें मिठाई लिये हँसती हुई माया आई और उसने वह थाली विहारीके आगे रख दी। विहारीने कहा—यह क्या मामला है? मुझे तो बिल्कुल भूख नहीं है।

मायाने कहा—यह भी कहीं हो सकता है? आपको मीठा मुँह करके जाना होगा।

विहारीने हँसकर कहा—जान पड़ता है मेरी दरख्वास्त मजूर हुई, आदर शुरू हो गया।

मायाने बहुत धीरेसे मुसकराकर कहा—आप देवर ठहरे, आपको तो नातेका जोर है न? जहाँ दावा चल सकता है वहाँ भीख माँगनेकी क्या जरूरत है? आप तो जबरदस्ती आदर ले सकते हैं, क्यों कुज बाबू?

कुज बाबूके मुँहसे उस समय क्रोधके मारे बात नहीं निकलती थी।

मायाने कहा—विहारी बाबू, लज्जाके मारे नहीं खाते हो या नाराज हो? क्या और किसीको बुलाना होगा?

विहारीने कहा—नहीं, कुछ जरूरत नहीं हैं। जो मिला वही बहुत है।

मायाने कहा—दिल्लगीमें तो आपसे जीतना कठिन ही है, मगर मिठाईसे भी आपका मुँह बन्द नहीं होता!

रातको करुणाने कुजके आगे विहारीपर कोप प्रकट किया। उस समय कुंजने और दिनकी तरह हँसकर उड़ा नहीं दिया—पूरी तरह साथ दिया।

सवेरे उठते ही कुंज विहारीके डेरेपर पहुँचा और बोला–विहारी, हजार हो, माया हमारे घरकी औरत नहीं है। तुम्हारे सामने आनेसे उसे कुछ बुरा मालूम होता है।

विहारीने कहा—यह बात है? तो अबसे सही, मैं उसके सामने न जाऊँगा। कुंजकी चिन्ता दूर हुई। बिल्कुल आशा न थी कि यह अप्रिय काम इतने सहजमें सिद्ध हो जायगा। कुंज, विहारीके अपने अनुगत होनेपर भी, आजकल उसे मन ही-मन डरता था।

उसी दिन विहारीने कुंजके घर जाकर कहा—बड़ी बहू, मै माफी चाहता हूँ।

मायाने कहा—क्यों विहारी बाबू?

विहारीने कहा—आज कुंज दादासे मालूम हुआ कि आप मुझसे पर्दा करना चाहती हैं। मैं बेधड़क उस दिन आपके सामने चला आया, इससे आप मुझपर नाराज हैं। इससे आपसे माफी माँगने आया हूँ।

मायाने कहा—यह क्या बात है विहारी बाबू? मैं आज हूँ, कल चली जाऊँगी। आप मेरे लिये क्यों आना छोड़ देंगे? मैं अगर यही जानती कि इतना बखेड़ा होगा तो यहाँ आती ही नहीं।

इतना कहते कहते मायाका चेहरा उतर गया, आँखे डबडबा आईं और वह उठकर जल्दीसे दूसरे कमरेमें चली गई।

विहारीने अपने मनमें सोचा कि मैंने कुंजके कहनेसे सन्देह करके मायाको व्यर्थ ही चोट पहुँचाई—यह गलती हुई।

उसी दिन शामको लक्ष्मीने कुंजसे कहा— कुंज, माया अपने घर जानेके लिए आग्रह कर रही है।

कुंजने व्यग्र होकर कहा—क्यों मा, यहाँ क्या उसको कुछ कष्ट है?

लक्ष्मीने कहा—कष्ट कुछ नहीं है। वह कहती है कि उसकी ऐसी जवान विधवा स्त्री अगर बहुत दिनोंतक पराये घरमें रहेगी, तो लोग निन्दा करेंगे।

कुंजने क्षोभके साथ कहा—यह पराया घर है!

विहारी बैठा था। कुंजने उसकी तरफ तिरस्कारकी दृष्टिसे देखा।

इस खबरसे विहारीको भी व्यथा हुई। उसने सोचा, कलकी मेरी बातचीतमे कुछ निन्दाकी झलक पाई जाती थी। शायद उसीसे मायाको चोट पहुँची है।

कुंज और करुणा दोनों मायासे नाराज हो गये। करुणाने कहा—हम लोगोंको गैर समझती हो बहन? कुंजने कहा—इतने दिनोंके बाद हम गैर हो गये?

मायाने कहा—आप लोग क्या मुझे सदा यहीं रक्खेंगे!

कुंजने कहा—हमारी इतनी मजाल कहाँ!

करुणाने कहा—तो फिर तुमने हमारा मन क्यों इस तरह अपने हाथमें कर लिया ? इतना हेल-मेल क्यों बढाया ?

उस दिन कुछ भी निश्चय न हो सका। मायाने कहा—नहीं बहिन, अब न रहूँगी, दो दिनके लिए मोहब्बत न बढाना ही अच्छा है।

इतना कहकर उसने एक बार व्याकुल दृष्टिसे कुजकी तरफ देखा। दूसरे दिन बिहारीने आकर कहा—बड़ी बहू, आप जानेके लिए क्यों कहती हैं ? मुझसे क्या कुछ अपराध हुआ है ? यह उसका दण्ड तो नहीं है ?

मायाने मुँह फिराकर कहा—आपका क्या दोष है, दोष सब मेरे भाग्यका है।

बिहारीने कहा—अगर आप चली जायँगी, तो मैं यह समझूँगा कि आप मुझपर नाराज होकर चली गई।

मायाने करुण दृष्टिसे देखते हुए कहा—आप ही बतलाइए, क्या मेरा यहाँ रहना उचित है ?

बिहारी असमजसमें पड़ गया। रहना उचित है, यह बात वह कैसे कहे ! उसने कहा—आपको जाना तो अवश्य ही पड़ेगा ! न हो, और कुछ दिन रहकर जाइए, इसमें क्या हानि है ?

मायाने आँखें नीचे करके कहा—आप सब लोग मुझसे रहनेके लिए अनुरोध कर रहे हैं, आप लोगोंकी बात टालना मेरे लिए कठिन है, किन्तु आप लोग यह अच्छा नहीं कर रहे हैं।

यह कहते समय मायाकी बड़ी विशाल आँखोंसे बड़े बडे मोती-ऐसे आँसूके बूँद टप टप करके टपक पड़े।

बिहारी इस नीरव आँसुओंकी वर्षासे व्याकुल होकर बोल उठा—इतने ही दिनोंमें आपने अपने गुणोंसे सबको अपना लिया है, इससे कोई आपको छोड़ना नहीं चाहता। कुछ खयाल न करना बड़ी बहू, तुम ऐसी लक्ष्मीको कौन अपनी इच्छासे छोड़ सकता है ?

करुणा एक कोनेमें घूँघट काढे बैठी थी, वह धोतीके आँचलसे बार बार आँसू पोंछने लगी।

इसके बाद फिर कभी मायाने जानेकी चर्चा नहीं चलाई।

सत्रहवाँ परिच्छेद

बीचके इस गोल-मालको एकदम मिटा डालनेके लिए कुजने प्रस्ताव किया कि आगामी रविवारको दमदमके बागमें चलकर खाना-पीना किया जाय। करुणा इस प्रस्तावसे बहुत ही उत्साहित हुई। मगर माया किसी तरह राजी

नहीं हुई। कुज और करुणा, मायाके राजी न होनेसे, नाराज हो गये। उन्होंने समझा, आजकल माया हम लोगोंसे मानो अलग, दूर, रहनेकी तैयारीमे रहती है।

तीसरे पहर बिहारीके आते ही मायाने कहा—बिहारी बाबू, कुज बाबू इतवारके दिन दमदमके बागमें 'सैल' करने जाना चाहते हैं। मै सग जाना नहीं चाहती, इसीसे दोनों आदमी आज सवेरेसे ही मुँह फुलाए बैठे हैं।

बिहारीने कहा—मुँह फुलाना बेजा नहीं है। आप न जायँगी तो इनकी 'सैल' में जो होगा वह, परमेश्वर करे किसी बडे भारी शत्रुके भी, न हो।

मायाने कहा—चलो न बिहारी बाबू! आप अगर चलें, तो मै भी चलनेको राजी हूँ।

बिहारी—अच्छी बात है। मगर मालिककी इच्छासे कार्य हुआ करता है, वे क्या कहते हैं?

मालिक (कुज) और मालिकिन (करुणा) दोनोंको बिहारीके प्रति मायाका यह विशेष पक्षपात बुरा लगा। बिहारीको साथ ले जानेके प्रस्तावसे कुजका आधा-सा उत्साह कपूरकी तरह उड गया। कुज चाहता था कि 'बिहारीका आना मायाको पसन्द नहीं है,' यह बात बिहारीके हृदयमें अङ्कित कर दी जाय और इसीके लिए वह तड़फड़ा रहा था किन्तु इस समय उसने सोचा कि अब तो बिहारीको अपनी मण्डलीमें आनेसे रोकना दुर्घट हो जायगा।

कुजने कहा—अच्छा तो है। मगर बिहारी, तुम जहाँ जाते हो वहाँ कुछ न कुछ गोलमाल किये बिना नहीं मानते। नहीं कहा जा सकता कि वहाँ तुम मुहल्ले-भरके लड़कोंको ले जाकर धूम मचा दोगे या किसी गोरेसे मार-पीट कर कर बैठोगे।

बिहारीको कुजकी आन्तरिक अनिच्छा मालूम हो गई। उसने मन-ही-मन हँसकर कहा—यही तो दुनियाका मजा है! कैसे क्या होगा, और कहाँ क्या फसाद उठ खड़ा होगा, पहलेसे यह कुछ भी नहीं कहा जा सकता। बड़ी बहू, मुझे जाने दो मैं ठीक जानेके समय आकर हाजिर हो जाऊँगा।

एतवारको सवेरे सामान और नौकरोंके लिए एक थर्ड क्लास और मालिकोंके लिए एक सेकड क्लास किरायेकी गाड़ी लाई गई। बिहारी भी एक बड़ा भारी पैक बाक्स साथ लिये हुए आ पहुँचा। कुंजने कहा—यह क्या लाये? नौकरोंकी गाड़ीमें तो इतनी जगह नहीं है, फिर यह भारी बाक्स कहाँ रक्खोगे?

बिहारीने कहा—घबराओ नहीं दादा, मैं सब ठीक किये देता हूँ।

माया और करुणा गाड़ीके भीतर जाकर बैठीं। बिहारी कहाँ बैठेगा, इस चिन्तासे कुज कुछ इधर-उधर करने लगा। बिहारीने अपना बाक्स गाडीकी छतपर रस्सीसे बाँधकर रख दिया और आप चटसे कोच बाक्सके ऊपर जा बैठा।

कुंजकी जान बची। वह नहीं चाहता था कि बिहारी गाड़ीके भीतर बैठे, मगर

मना भी न कर सकता था। मायाने घबराहटके साथ कहा—विहारी बाबू, गिर तो न पड़ेंगे ?

विहारीने कहा—डरो मत, गिरना और बेहोशी मेरे पार्टमें नहीं है।

गाड़ी चलते ही कुंजने तानेके साथ कहा—न हो, मैं ही ऊपर कोच-बाक्सपर जा बैठूँ, विहारीको यहाँ भेजे देता हूँ।

करुणाने व्यस्त होकर कुंजकी चादर पकड़कर कहा—नहीं, तुम यहीं बैठो।

मायाने कहा—आपको अभ्यास नहीं है। जरूरत क्या है ? कहीं गिर पड़ेंगे तो मुश्किल होगी।

कुंजने जोशमें आकर कहा—गिर पड़ूँगा ? 'कभी नहीं!' यों कहकर कुंज उठने लगा। मायाने कहा—आप विहारी बाबूको दोष देते थे, मगर मैं तो देखती हूँ, ऊधम मचानेमें आप ही बढ़-चढ़े हैं।

कुंजने मुँह लटकाकर कहा—अच्छा, एक काम किया जाय। मैं एक और गाड़ी मँगाकर उसपर चलता हूँ, विहारी भीतर आकर बैठे।

करुणाने कहा—तो मैं भी तुम्हारे साथ उसी गाड़ीमें बैठूँगी।

मायाने कहा—और मैं शायद गाडीपरसे कूद पड़ूँगी।

बात हँसीमें टल गई, मगर कुंज राहभर रूखे भावसे मुँह लटकाए रहा। दमदमके बागमें गाड़ी पहुँची। नौकरोंकी गाडी पहले चली थी, लेकिन अभी तक उसका पता न था।

शरद् ऋतुका प्रातःकाल बहुत ही सुहावना था। धूप फैलनेसे ओसकी नमी जाती रही थी, वृक्षोंके पत्ते सूर्यका स्वच्छ प्रकाश पाकर चमकने लगे थे। बागकी चहार-दीवारीके पास पास हरसिंगारके पेड थे। उनके नीचे पड़े हुए फूलोंकी भीनी सुगन्धसे बाग महक रहा था। करुणा कलकत्तेके मकानसे खुले हुए बागमें आकर, बन्धन खोलकर जंगलमें छोड़ी हुई मृगीकी तरह, प्रसन्न हुई। उसने मायाके साथ बहुतसे फूल इकट्ठे किये और शरीफेके पेड़से कई फल तोड कर खाये। फिर दोनों सखियाँ बहुत देर तक तालाबमें घुसकर नहाती रहीं। दोनों सुन्दरियोंने मिलकर अपने अकारण आनन्द-उल्लाससे पेडोंकी छायाको, डालियोंके बीचसे आनेवाले प्रकाशको, तालाबके उज्ज्वल जलको और बागके फल-फूलोंको मानों प्रसन्न, पुलकित और सजीव बना डाला।

नहानेके बाद दोनों सखियोंने आकर देखा कि नौकरोंकी गाडी उस समय भी आकर नहीं पहुँची है। कुंज बारहदरीके बरामदेमें कुर्सीपर बैठा एक विलायती दूकानका नोटिस पढ रहा है। उसका चेहरा उतरा और मुँह सूखा हुआ है।

मायाने पूछा—विहारी बाबू कहाँ हैं ?

कुंजने संक्षेपमें उत्तर दिया—मालूम नहीं।

मायाने कहा—तो चलो, उन्हें खोज लावें।

कुजने कहा—उन्हें कोई चुरा न ले जायगा और उनके खो जानेका खटका नहीं है। न खोजनेसे भी वे मिल जायँगे।

मायाने कहा—मगर शायद वे आपके लिए चिन्ता कर रहे हों कि ऐसा दुर्लभ रत्न कहीं खो न जाय। चलो, उन्हें निश्चिन्त कर आवें।

बागमें एक पक्का कुआँ था। वहींपर एक बरगदका बड़ा भारी पेड़ था और पेड़से मिला हुआ एक पक्का चबूतरा। वहीं बिहारी अपना पेक-बाक्स खोल, केरोसिन-चूल्हा (स्टोव) निकालकर, पानी गर्म कर रहा था। सबके आते ही उसने एक एक पियाला गर्म चाय दी और एक थालीमें कुछ मिठाई निकालकर आगे रख दी।

मायाने कई बार कहा—बिहारी बाबू सामान लेते आये थे इसीसे खैर हुई, नहीं तो चायके बिना कुंज बाबूको बड़ी बेचैनी होती।

चाय मिलनेसे कुजकी तबीयत ठिकाने हुई, तो भी उसने कहा—बिहारीने सब चौपट कर दिया। 'सैल' करने आये हैं—यहाँ भी सब घरके ऐसा सामान करके आये। इसमें बाहर जानेका और खाने-पीनेका मजा जाता रहता है।

बिहारी—तो भाई, मेरी चाय मुझे दे दो। तुम खाना-पीना छोड़कर जाओ मजा करो।

दोपहरका समय हो गया, तब भी नौकरोंकी गाड़ी नहीं आई। बिहारीके खाने-पीनेका सब सामान निकलने लगा। दाल, चावल, तरकारी और छोटी छोटी शीशियोंमेंसे तरह तरहका मसाला निकला। मायाने विस्मित होकर कहा—बिहारी बाबू, आपने तो हम लोगोंके भी कान काट लिये। घरमें तो अभी मालकिन नहीं हैं, फिर यह सब सीखा कहाँसे?

बिहारीने कहा—पापी पेटके लिए सब सीखना पड़ा है। अपना काम आप ही करना पड़ता है।

बिहारीने यह बात हँसीमें ही कही थी, मगर मायाने गंभीर होकर करुण कृपापूर्ण दृष्टिसे बिहारीकी तरफ देखा।

माया और बिहारी दोनों मिलकर रसोई बनाने लगे। करुणा संकोचके साथ सहायता करनेके लिए आई, मगर बिहारीने कहा—तुम बैठो, रहने दो।

कुंज एक तो कुछ जानता ही न था, दूसरे कुढ़ा हुआ था। वह पास भी नहीं आया, गठरीके सहारे लेटकर पैरपर पैर रक्खे हुए हवासे हिलनेवाले बरगदके पत्तोंपर सूर्यकी किरणोंका नाच देखने लगा।

रसोई तैयार होनेपर मायाने कहा—कुंज बाबू, बरगदके पत्ते गिन चुके, अब नहाने जाइए।

इतनेमें नौकर-चाकर सब सामान लिये आ पहुँचे। उनकी गाड़ी राहमें टूट गई थी। दोपहरके बाद खाना-पीना हुआ। बरगदके पेड़के नीचे ताश खेलनेका

प्रस्ताव हुआ, मगर कुंज किसी तरह राजी न हुआ और देखते ही देखते लेटकर सोने लगा। करुणा भी बारहदरीके भीतर किवाड़े बन्दकर सोने चली गई।

मायाने ऑचलसे सिर ढँकते हुए कहा—अच्छा, मैं भी सोने जाती हूँ।

बिहारीने कहा—कहाँ जाइएगा? जरा बातचीत कीजिए। कुछ अपने गाँवकी बातें सुनाइए।

पल-पल-भरमें दो पहरकी गर्म हवाके झोंके वृक्ष-पत्रोंको हिलाते निकल जाते थे और पल-पल-भरमें झीलके किनारे जामुनके पेड़पर घने पत्तोंके बीचमें कोयल बोल उठती थी। माया अपने बचपनकी बातें कहने लगी। मा-बापकी और बचपनके साथियोंकी बातें करते करते उसके माथेपरका कपड़ा सरक गया। मायाके चेहरेपर पूर्ण यौवनका तेज हरघड़ी बना रहता था, बाल्यस्मृतिकी छायाने इस समय उस तेजको और भी चटकीला कर दिया। मायाकी ऑखोंमें, पहले जिन कौतुक-तीक्ष्ण कटाक्षोंको देखकर बिहारीके मनमें अनेक संशय उपस्थित हुए थे, उन्हीं उज्ज्वल-श्याम कटाक्षोंकी ज्योति जब एक शान्त सजल रेखाके रूपमें परिणत हो गई, तब बिहारीको एक दूसरा ही आदमी देख पड़ा। उसने देखा कि इस ज्योतिके केन्द्रस्थलमें इस समय भी एक कोमल हृदय अमृत-धारासे सरस बना हुआ है—अभी तक अतृप्त रंग-रस-कौतुककी दहन-ज्वालासे स्निग्ध नारी-हृदय सूखा नहीं है। माया लजीली सती स्त्रीकी तरह, अनन्य भक्तिके साथ, हृदयमें पतिकी सेवा करती है और कल्याणमयी माताकी तरह सन्तानको हृदयमें स्थान दिये हुए है। इस मूर्तिकी छाया भी अबसे पहले बिहारीके मनो-मुकुरपर नहीं पड़ी थी। आज मानो अचानक रङ्ग-मञ्चका पर्दा दम-भरके लिए हट गया और उसे भीतरका एक मङ्गल-मय दृश्य दिख गया। बिहारीने सोचा—माया बाहरसे देखनेमें एक विलासिनी (शौकीन) स्त्री जान पड़ती है, मगर उसके भीतर एक पूजामें लगी हुई स्त्री निराहार तप कर रही है। बिहारीने एक लम्बी सॉस लेकर अपने मन-ही मन कहा—सच तो यह है कि आदमी दूसरेको क्या पहचानेगा, अपनेको ही अच्छी तरह नहीं जान सकता। अगर कोई जाननेवाला है, तो बस वही अन्तर्यामी है। बाहरके रंग-ढंगसे ही प्राय. लोग निश्चय कर बैठते हैं कि फलाना आदमी ऐसा है। लेकिन यह भूल है।

बिहारीने बात-चीतका सिलसिला रुकने नहीं दिया, प्रश्न कर करके उसे जारी ही रक्खा। मायाको अब तक ये सब बातें इस तरह सुनाने-लायक कोई आदमी नहीं मिला था—विशेष कर किसी मर्दके आगे उसने इस तरह अपनेको भूलकर जी खोलकर स्वाभाविक भावसे बातें नहीं की थीं।—आज लगातार कई घंटे तक, सहानुभूतिसे मन लगाकर सुननेवाले एक युवकके आगे, जीकी बातें कहनेसे मायाकी सारी प्रकृति मानो नवीन जल-धारासे धुलकर स्निग्ध और तृप्त हो गई।

कुंजको आज बहुत सवेरे उठना पड़ा था—सोनेमें विघ्न हुआ था। इसलिए तीन-चार घंटे अच्छी तरह सोनेके बाद पाँच बजे उसकी नींद खुली। उसने उठते ही खिजलाहटके साथ कहा—अब घर चलना चाहिए।

मायाने कहा—और जरा देर ठहरकर चलें तो क्या हर्ज है?

कुंजने कहा—हाँ। इधर गोरे लोग शामको शराब पीकर घूमने आते हैं। अगर उनसे सामना हो गया तो मुश्किल होगी।

सब सामान बटोरकर बाँधने रखनेमें अँधेरा हो आया। इसी बीचमें नौकरने आकर कहा—गाड़ी न जाने कहाँ चली गई, कुछ पता नहीं। उसे बाहर फाटक परसे दो गोरे जबर्दस्ती छीनकर स्टेशनकी तरफ ले गये हैं।

दूसरी गाड़ी लानेके लिए नौकरोंको हुक्म हुआ। खिजलाया हुआ कुंज अपने मनमें कहने लगा—'आजका सारा दिन बरबाद हो गया।' यह हाल हुआ कि उसे खिजलाहट और व्यग्रता छिपाना कठिन हो गया।

शुक्ल-पक्षका चंद्रमा वृक्षोंकी डालियोंसे निकलकर धीरे धीरे ऊपर चढने लगा। वह सुनसान सन्नाटेका स्थान छाया और प्रकाशके एकत्र समावेशसे विचित्र हो गया। आज इस माया-मण्डित पृथ्वीपर मायाने एक अपूर्व भावका अनुभव प्राप्त किया। आज जब वह बागके बीचकी अँधेरी राहमें करुणासे लिपट गई, तब उसके प्रेममें बनावटकी मात्रा बिल्कुल न थी। करुणाने देखा, मायाकी दोनों आँखोंसे आँसू गिर रहे हैं। उसने व्यथित होकर पूछा—क्यों बहन, तुम रोती क्यों हो?

मायाने कहा—कुछ नहीं बहन, कोई बात नहीं है—आजका दिन मुझे बड़ा भला लगा।

करुणाने कहा—क्यों बहन, आजका दिन तुमको क्यों इतना भला मालूम हुआ?

मायाने कहा—मुझे ऐसा जान पड़ता है जैसे मैं मर गई हूँ, परलोकमें आई हूँ और यहाँ मानो मुझे सब कुछ मिल सकता है।

विस्मयसे भरी हुई करुणा इन बातोंका मतलब कुछ न समझ सकी। मरनेकी बात सुनकर उसने दुःखके साथ कहा—छिः बहन, यह क्या कहती हो? ऐसी बातें न करनी चाहिए।

दूसरी गाड़ी मिल गई। बिहारी फिर कोच-बाक्सके ऊपर जाकर बैठ गया। माया चुपचाप खिड़कीसे बाहरकी तरफ देख रही थी, चाँदनीसे नहाए हुए वृक्षोंकी कतारें बढ़ते हुए घने छाया-प्रवाहकी तरह आँखोंके आगेसे निकलती जाती थीं। करुणा गाड़ीके एक कोनेमें नींदसे लुढक रही। कुंज राहभर मनमारे उदास भावसे आँखे मूँदे बैठा रहा।

❦ ❦ ❦ ❦

अठारहवाँ परिच्छेद

मेलवाले दुर्दिनके बाद मायाको फिर अपने हाथमें करनेके लिए कुज उत्सुक था, किन्तु उसके दूसरे ही दिन लक्ष्मीको बुखार आ गया। रोग प्रबल न होनेपर भी कष्ट और कमजोरी बहुत थी। माया दिन-रात उसकी सेवा-शुश्रूषामें रहने लगी।

कुजने मायासे कहा—दिन-रात इस तरह काम करनेसे अन्तको तुम भी बीमार पड़ जाओगी। माकी सेवाके लिए मैं आदमी ठीक किये देता हूँ।

बिहारी भी बैठा था। उसने कहा—दादा, तुम इतनी चिन्ता न करो। वे सेवा करती हैं तो करने दो। इस तरह क्या कोई दूसरा कर सकता है?

कुजने रोगीके पास घडी घड़ी जाना शुरू कर दिया। एक आदमी कोई काम नहीं करता, मगर काम करते समय हर घड़ी साथ लगा रहता है—यह बात काम-काजी मायाके लिए असह्य थी। उसने खीझकर दो-तीन बार कहा—कुंज बाबू, आप यहाँ बैठे रहकर क्या काम करा लेते हैं? जाइए, अपने पढनेमें व्यर्थ हर्ज मत कीजिए।

कुज उसके पीछे पीछे रहता है, यह देखकर माया मन-ही-मन एक प्रकारके विजय-गर्व और सुखका अनुभव करती थी। तो भी इतना कगलापन—बीमार पढी हुई माके पास भी जैसे कोई बिल्ली मासके छीछड़ेपर ताक लगाये बैठी हो वैसे बैठे रहना—उससे न देखा जाता था। उसे घृणा होती थी। जब माया कोई काम अपने ऊपर लेती है, तब वह और सब काम छोड देती है। जबतक खिलाना-पिलाना, रोगीकी दवा-सेवा तथा घरके और सब जरूरी काम हो नहीं जाते तब तक मायाको कोई इधर-उधर बैठे नहीं देखता। मतलब यह कि जिस समय जो काम करना चाहिए उस समय वह काम न करके और काम करना माया पसद नहीं करती थी।

बिहारी थोड़ी देरके लिए बीच बीचमें लक्ष्मीका हाल देखनेके लिए आता है। वह आते ही जो चाहिए सो बिना कहे ही जान लेता है और दम-भरमें सब लाकर जुटाकर चल देता है। माया समझती थी कि बिहारी बाबू मेरे इस कामको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते हैं। यही कारण है कि बिहारीका आना उसे अपने कर्तव्य-पालनका पुरस्कार (इनाम) जान पड़ता था।

कुजने अपनेको बहुत-कुछ धिक्कारा और रोज कालेज जानेका कड़ा नियम कर लिया। इधर उसका मिजाज बहुत ही रूखा और चिड़चिड़ा-सा हो गया, मगर उधर यह क्या परिवर्तन हो गया? रसोई ठीक समयपर नहीं तैयार होती, साईसका पता नहीं लगता, दूसरे ही दिन मोजेका जोड़ा गायब हो जाता है। अब ये सब असुविधाएँ देखकर कुजको पहलेकी तरह मजा नहीं आता।

ठीक समयपर जरूरी चीज मिल जानेसे जो आराम मिलता है उसका अनुभव कुछ दिनोंसे कुंजको हो गया है। अब वह आराम न पाकर कुंजको करुणाकी त्रुटियोंपर हँसी नहीं आती। वह कहता है—चुन्नी, मैं न जाने कितनी बार तुमको सहेज चुका हूँ कि मेरे नहानेसे पहले मेरे कोटमे बटन लगाकर रख दिया करो। मेरी पतलून गुलूबन्द मोजा वगैरह भी एक जगह रख दिया करो; मगर एक दिन भी तुमसे यह नहीं हो सकता। ठीक समयपर कपड़े और बटन वगैरह खोजनेमें मुझे हैरानी होती है।

उस समय लज्जा और क्षोभसे करुणाका बुरा हाल हो जाता था। वह धीरेसे कहती थी—मैंने महरासे कह दिया था।

कुंज कहता था—महरासे कह दिया था ? अपने हाथसे करनेमें क्या कुछ दोष था ? तुमको कोई काम करनेकी तमीज न आई।

यह करुणाके लिए वज्राघातसे बढकर था। कुंज पहले कभी इस तरह नहीं कहता था। करुणाको यह जवाब नहीं सूझता था कि तुम्हींने तो मुझे काम-काज सीखने नहीं दिया। उसे यह धारणा ही नहीं थी कि गिरिस्तीके काम सीखनेके लिए नित्य अभ्यास करनेकी जरूरत होती है। वह समझे हुए थी कि मैं स्वभावतः अक्षम और मूढ हूँ, इसी कारण कोई काम ठीक तरहसे नहीं कर पाती। कुंज जब कभी आत्म-विस्मृत-सा होकर मायाकी बड़ाई करता हुआ करुणाको धिक्कार देता था तब वह सरला बालिका चुपचाप विनम्र-भावसे उसे स्वीकार कर लेती थी।

करुणा बार बार अपनी मौंदी सासके कमरेके आसपास घूमती है—बार बार लज्जित भावसे दर्वाजेके पास आकर खड़ी होती है। वह अपनेको ससारके मतलबकी चीज बनाना चाहती है। वह काम दिखाना चाहती है किन्तु कोई उसके कामको नहीं चाहता। उसे यह भी नहीं मालूम कि किस तरह काममें घुसा जाता है—कैसे ससारमें जगह कर लेनी होती है। वह अपनी अयोग्यताके सकोचसे बाहर ही बाहर फिरती है। चित्तपर चोट पहुँचानेवाली कोई पीड़ा उसके हृदयमें नित्य बढती ही जाती है, लेकिन वह उस अस्पष्ट पीड़ाको—उस अव्यक्त आशंकाको—स्पष्ट रूपसे समझ नहीं सकती। उसको जान पड़ता है कि वह अपना सब सुख-सर्वस्व नष्ट कर रही है। लेकिन उसको वह सुख कैसे प्राप्त हुआ था, अब किस तरह नष्ट हो रहा है और क्या करनेसे वह बना रहेगा, सो कुछ भी वह नहीं जानती। उसे रह-रहकर केवल जोरसे रोकर कहनेकी इच्छा होती है कि मैं बिल्कुल नालायक हूँ, अत्यन्त असमर्थ हूँ, मेरे बराबर रद्दी आदमी ससारमें कहीं कोई न होगा।

पहले करुणा और कुंज दोनों कभी बात-चीत करके और कभी चुपचाप बैठकर मजेमें सुखसे समय बिताते थे, लेकिन आजकल मायाके न होनेसे, करुणाके पास अकेले बैठनेपर कुंजके मुँहसे सहजमें कोई बात ही नहीं निकलती—और कुछ बात-चीत न कर चुपचाप बैठे रहना भी उसे अनुचित मालूम पड़ता है।

तीसरे प्रहर कुंज बाहर बागमें टहल रहा था। भीतरसे महरा निकला। कुंजने उसके हाथमें चिट्ठी देखकर पूछा—यह चिट्ठी किसकी है?

कहारने कहा—बिहारी बाबूकी।

कुंजने कहा—किसने दी है?

कहारने कहा—बड़ी बहू (माया) ने।

'देखें' कहकर कुंजने चिट्ठी ले ली। इच्छा हुई कि फाड़कर पढे। दो-चार बार उलट-पुलटकर हिला-डुलाकर कुंजने वह चिट्ठी कहारके आगे फेंक दी, खोलकर पढी नहीं। अगर वह चिट्ठी खोलता तो देखता कि उसमें लिखा है—'बुआजी किसी तरह सागूदाना खानेके लिए राजी नहीं होतीं, आज क्या उनको दालका जूस दिया जाय?'

दवा और पथ्यके बारेमें माया कुंजसे कभी कुछ न पूछती थी, इस बारेमें बिहारीके ही कहनेपर चलती थी।

कुंज कुछ देरतक बरामदेमें टहलता रहा, फिर अपने कमरेमें गया। भीतर घुसते ही उसने देखा कि दीवालमें टँगी हुई एक तसवीरकी डोरी टूट जानेमें कुछ ही कसर है, तसवीर टेढी हो गई है। कुंजने करुणाको जोरसे डाँटकर कहा—तुमको कुछ भी नहीं सूझता, इसी तरह तो चीजें नष्ट हो जाती हैं।

माया दमदमके बागसे फूल चुनकर एक गुलदस्ता बना लाई थी और उसे उसने पीतलकी फूलदानीमें लाकर रख दिया था। कुंजने देखा, वह सूख गया है, तो भी फेंका नहीं गया। और दिन कुंजने उसपर ध्यान नहीं दिया, लेकिन आज उसपर भी उसकी नजर पड़ी। कुंजने कहा—माया आकर अगर इस सूखे गुल-दस्तेको न फेंकेगी, तो यह भी यों ही रक्खा रहेगा।

इतना कहकर उसने गुलदस्ते समेत फूलदानी उठाकर बाहर जोरसे फेंक दी। वह सीढियोंपर ठनठनाती हुई नीचेकी तरफ चली गई।

'करुणा मेरे मनके माफिक क्यों नहीं होती, वह मेरे मनके माफिक काम क्यों नहीं करती और उसमें इतनी स्वाभाविक शिथिलता और अल्हड़पन क्यों है कि वह मुझे सदा प्रसन्न नहीं रख सकती?'—मनमें इन्हीं बातोंपर आन्दोलन करते करते कुंजने करुणाकी ओर देखा कि उसका चेहरा पीला पड गया है, वह पलगका पाया पकड़े खड़ी है, उसके ओंठ काँप रहे हैं। क्षोभके मारे काँपते काँपते करुणा वहाँसे चली गई।

कुंज तब धीरेसे जाकर फूलदानी उठा लाया। कमरेके कोनेमें उसके पढनेका टेबुल था। कुर्सीपर बैठकर कुंज इसी टेबुलपर दोनों हाथोंपर सिर रक्खे बहुत देर तक सोचता रहा।

शाम हो गई। नौकर लैम्प जलाकर रख गया, मगर करुणा नहीं आई। कुंज बेचैनीके मारे उठकर छतके ऊपर इधर-उधर टहलने लगा। रातके नौ बज गये।

कुजके घरमें बहुत आदमी नहीं थे। आधी रातका ऐसा सन्नाटा छा गया तो भी करुणा न आई। कुजने उसको बुला भेजा। करुणा संकोचके साथ धीरे धीरे आकर दर्वाजेके पास खड़ी हो गई। कुजने पास आकर उसे छातीसे लगा लिया। करुणाके हृदयमें दु:ख भरा हुआ था। कुजके आदर करनेसे वह दबा हुआ दुःख उमड़ पड़ा। करुणा सिसक-सिसककर बालकोंकी तरह रोने लगी। कुजने उसे कसकर लिपटा लिया, मुख चूमा और फिर वह चुपचाप आकाशके तारोंकी तरफ ताकने लगा।

रातको बिछौनेपर जाकर कुजने कहा—चुन्नी, इधर कालेजमें मुझे 'नाइट-ड्यूटी' अधिक पड़ेगी। रातको यहाँसे कालेज जानेमें सुभीता न होगा। इसीसे अब मुझे कुछ दिनों तक कालेजके पास ही मेसमें रहना पड़ेगा।

करुणाने सोचा 'क्या अभी तक क्रोध शान्त नहीं हुआ ? मेरे ऊपर नाराज होकर ही क्या यह दूर रहनेकी व्यवस्था हुई है ? हाय, मै किसी कामकी नहीं हूँ, मुझे कोई शऊर नहीं है, मेरा मर जाना ही अच्छा है'।

लेकिन कुजकी बात-चीत और व्यवहारमें क्रोधका कोई लक्षण न देख पड़ा। वह बहुत देरतक चुपचाप करुणाको हृदयसे लगाये रहा और बार बार उँगलियोंसे बाल बिखेर बिखेरकर उसने करुणाका जूड़ा ढीला कर दिया। पहले आदरके समय दुलराते दुलराते कुज यों ही करुणाका जूड़ा खोल देता था—करुणा भी कुछ आपत्ति न करती थी। आज भी वह कुछ न कहकर पुलकित और विह्वल होकर स्वामीकी गोदमें पड़ी रही।

एकाएक करुणाके मस्तकपर एक गर्म आँसूका बूँद गिरा और साथ ही कुंजने उसके मुँहके पास मुँह ले जाकर स्नेहसे रुँधे हुए स्वरमें कहा 'चुन्नी!' करुणाने उसका कुछ उत्तर न देकर दोनों कोमल हाथोंसे कुंजको लिपटा लिया। कुजने कहा—मुझसे अपराध हुआ क्षमा करो।

करुणाने अपने कुसुम-सुकुमार कर-कमलोंसे कुजका मुँह बंद करके कहा—ना, ना, ऐसी बात मत कहो। तुमने कोई अपराध नहीं किया, मेरा ही दोष था। मुझे अपनी दासी समझकर जो चाहे सो दंड दो। मुझे अपने चरणोंमें आश्रय पानेके योग्य बना लो।

जिस दिन कुजने मेसमें जाकर रहनेका निश्चय किया उसी दिन सवेरे पलगसे उठते उठते समय उसने कहा—चुन्नी, तुम मेरी जीवन-सर्वस्व और हृदयकी मणि हो। मै तुम्हें सदा अपने हृदयमें रक्खूँगा। वहाँसे तुम्हें कोई हटा नहीं सकता।

तब करुणाने जी पोढ़ा करके विरह-वेदनाको सहनेके लिए प्रस्तुत होकर अपने स्वामीसे एक छोटी सी प्रार्थना की, कहा—तुम मुझको रोज एक चिट्ठी लिखोगे ?

कुजने कहा—तुम भी उसका उत्तर दिया करोगी ?

करुणाने कहा—मै तो नहीं जानती।

कुंजने प्यारसे उसके बालोंको सँवारते हुए कहा—तुम बाबू हरिश्चन्द्रके उस लेखसे, जिसे प्रेमयोगिनी कहते हैं, अच्छा लिख सकती हो।

करुणाने कहा—जाओ, तुम तो मुझसे ठट्ठा करते हो।

उस दिन करुणा यथाशक्ति अपने हाथसे कुजके कपड़े-लत्ते सन्दूकमें रखने बैठी। कुजके मोटे और भारी जाड़ेके कपड़ोंको ठीक तौरसे तहाना और बाक्समें रखना कठिन था; कुज और करुणा दोनोंने मिलकर किसी तरह दबाकर-ठूँस-ठॉसकर—एक बाक्सका सामान दो बाक्सोंमें भर पाया। उसपर भी जो कुछ भूलसे रह गया उसकी कई-एक छोटी छोटी गठरियाँ बनाईं। इसमें भी करुणा अपने अनाड़ीपनको देखकर बार बार लज्जित हुई, तो भी हँसी-दिल्लगी, कौतुक और परस्पर प्रेमपूर्ण दोषारोपण करनेमें उसे पहलेके दिनोंका आनन्द आया। घड़ी-भरके लिए करुणा यह भूल गई कि कुजके घरसे बाहर जानेकी तैयारी हो रही है। साईसने कई बार आकर कहा 'गाड़ी तैयार है'। मगर कुजने जैसे सुना ही नहीं। अन्तको उसने कहा—गाड़ी खोल दो।

सवेरेसे धीरे धीरे तीसरा पहर हुआ, तीसरे पहरसे शाम हो गई। तब कुजने करुणाको अच्छी तरह स्वास्थ्य-रक्षाके लिए सावधान किया और करुणाने भी बराबर चिट्ठी लिखनेके लिए। इसके उपरान्त दोनों जी कड़ा करके एक दूसरेसे अलग हुए।

आज दो दिनसे लक्ष्मी उठकर बैठी है। शामको एक मोटी रजाई ओढ़े बैठी हुई लक्ष्मी मायाके साथ ताश खेल रही थी। आज उसका चित्त स्वस्थ है, किसी प्रकारका कष्ट नहीं है। कुंज वहाँ गया। मायाकी तरफ न देखकर उसने लक्ष्मीसे कहा—मा, कालेजमें मुझे रातको काम सीखना पड़ेगा, यहाँ रहनेसे सुभीता न होगा। मैंने कालेजके पास ही बोर्डिंगमें रहनेका बदोबस्त कर लिया है। आजसे वहीं रहूँगा।

लक्ष्मीने भीतर ही भीतर नाराज होकर कहा—अच्छा है, जाओ। पढनेमें बाधा पड़ती है, तो फिर यहाँ रहकर क्या करोगे।

यद्यपि लक्ष्मीका बुखार जाता रहा था तो भी कुजके जानेकी बात सुनते ही उसको जान पड़ा कि वह बरसोंकी माँदी और कमजोर है। लक्ष्मीने मायासे कहा—बेटी, वह तकिया तो उठा दे।

तकियापर सिर रखकर लक्ष्मी लेट रही। माया धीरे धीरे उसके शरीरपर हाथ फेरने लगी। कुजने माताके मस्तकपर हाथ रक्खा और फिर नाड़ी टटोली। लक्ष्मीने हाथ खींचकर कहा—नाड़ी देखकर क्या होगा? तू जा, मैं अच्छी हूँ।

❦ ❦ ❦ ❦

उन्नीसवाँ परिच्छेद

माया अपने मनमें कहने लगी—मामला क्या है? अभिमान है, या क्रोध है, या भय है? मुझे दिखाना चाहते हैं कि मेरी परवा नहीं करते? दूर जाकर रहेंगे? देखती हूँ, कितने दिन वहाँ रहते हैं!

किन्तु कुजके चले जानेपर मायाका भी जी वहाँसे उचटने लगा, बेचैनी बढ़ने लगी।

कुजको रोज वह अपने गुणोंके जालमें जकड़ती और नयन-बाणोंसे वेधती थी। इसमें उसे न जाने क्या सुख मिलता था। कुजके साथ ही मायाका यह सुख भी चला गया, अब उसे सब घर सूना सूना मालूम पड़ने लगा। नशा उतर जानेपर नशेबाजकी जो हालत होती है वही हालत मायाकी हुई। कुजहीन करुणा मायाके निकट बिल्कुल फीकी—स्वाद-हीन—थी। कुज करुणाको प्यार और आदर करता था, इससे मायाका प्रणय-वञ्चित चित्त सर्वदा चचल रहा करता था—पीड़ा या एक प्रकारकी उग्र उत्तेजनासे उसकी विरहिणी कल्पना सजग बनी रहती थी। जिस कुजने उसके जीवनको निरर्थक बना दिया, जिस कुजने उस ऐसे स्त्री-रत्नका अनादर करके करुणा-ऐसी बुद्धि विहीन बालिकाको स्वीकार किया, उस कुजको माया प्यार करती है या शत्रु समझती है—उसको हृदय अर्पण करेगी या कठिन दण्ड देगी—सो माया स्वय नहीं समझ सकती। कुंजने मायाके हृदयमें एक आग लगा दी है। वह आग प्रेमकी है, या दाहकी है, या दोनोंसे पैदा हुई है, सो वह स्वयं नहीं जान सकती। माया अपने मनमें विकट हँसी हँसकर कहती है 'परमेश्वर न करे कि किसी स्त्रीकी मेरी ऐसी दशा हो। मैं मरना चाहती हूँ या मारना चाहती हूँ, सो मैं आप ही नहीं जानती।'

चाहे जिस लिए हो—जलनेके लिए हो, या जलानेके लिए हो—मायाको कुजकी बड़ी जरूरत है। वह अपने विषके बुझे अग्निमय बाणोंको और कहाँ चलावेगी? जोर-जोरसे साँस लेते हुए मायाने आप ही आप कहा 'जायँगे कहाँ! आवेंहीगे! वे मेरे हैं।'

दो-तीन दिनके बाद कुजने डाकसे एक चिट्ठी पाई। चिट्ठीपर कुजके परिचित अक्षरोंमें उसका पता लिखा हुआ था। दिनके समय गोल-मालमें चिट्ठी खोलना उचित न समझकर कुजने उसे छातीपर वेस्ट-कोटकी जेबमें बड़े यत्नसे रख लिया। कालेजमें लेक्चर सुनते समय, अस्पतालमें घूमते समय, कुजको कभी कभी जान पड़ता था कि प्रेमकी चिड़िया उसकी छातीपर घोंसला बनाकर उसमें सो रही है। उसे जगाते ही उसकी मधुर कोमल बोली कानोंमें गूँज उठेगी।

शामको कुज अपने कमरेमें, भीतरसे जञ्जीर बदकर, लैंपके आगे, आराम-कुर्सीपर आरामसे लेट गया, फिर उसने बदनकी गर्मीसे तपी हुई चिट्ठी जेबसे निकाली।

चिट्ठी हाथमें लेते ही उसे किसीके विरहकी आगमें तपे हुए सुकोमल हृदयकी याद आ गई। बहुत देर तक कुज लिफाफा हाथमें लिये उसके ऊपर लिखा हुआ अपना नाम देखता रहा। कुजको मालूम था कि चिट्ठीमें दस-बीस अक्षरोंके सिवा और कुछ न लिखा होगा, करुणा अपने भावको ठीक तरहसे प्रकट कर सकेगी—ऐसी आशा नहीं थी। कुज सोचता था कि टेढी-मेढी लाइनों और छोटे-बड़े अक्षरोंसे करुणाके प्रेम-पूर्ण उच्छ्वासकी कल्पना कर लेनी पड़ेगी। लिफाफेपर, करुणाके कच्चे अक्षरोंमें, चतुराईके साथ लिखे हुए अपने नामके साथ कुजने एक रागिनी सुन पाई,—वह सती-स्त्रीके पवित्र वैकुण्ठलोकके समान सुन्दर हृदयसे निकली हुई सच्चे प्रेमकी रागिनी थी।

कुजके मनमें दीर्घ-मिलनसे जो एक प्रकारकी शिथिलता या अनिच्छा आ गई थी सो इन्हीं दो-एक दिनोंके वियोगसे दूर हो गई और सरला करुणाके सरल सच्चे प्रेमका प्रकाश पाकर पहलेके सुखकी स्मृति फिर उज्ज्वल हो उठी। इधर करुणाके द्वारा होनेवाली घरके काम-काजकी विशृंखला कुजको उससे विमुख करने लगी थी, किन्तु अब कुज उससे दूर चला आया है, इस कारण उसके हृदयमें, कर्म-हीन कारण-हीन विशुद्ध प्रेमानन्दके प्रकाशमें, करुणाकी मानसी मूर्त्ति सजीव हो उठी।

कुजने धीरे धीरे बड़े यत्नसे लिफाफा फाड़कर चिट्ठीको बाहर निकाला और फिर आँखोंसे लगाकर चूमा। उसके रोमाञ्च हो आया। एक दिन कुजने जो एसेंस करुणाको उपहार दिया था उसी एसेंसकी सुगन्ध, किसीकी हल्की साँसकी तरह, उस चिट्ठीके भीतरसे निकलकर कुजके हृदयमें बस गई।

चिट्ठी खोलकर कुज पढने लगा। किन्तु यह क्या? जैसी टेढी-मेढ़ी लाइनें और भद्दे अक्षर हैं वैसी सीधी भाषा तो नहीं है! लिखावट तो जरूर करुणाकी है, लेकिन बातें उसकी नहीं जान पड़तीं। लिखा है—

"प्रियतम, जिसे भूलनेके लिए चले गये हो, इस चिट्ठीमें कैसे उसकी याद दिलाऊँ? जिस लताको उखाड़कर तुमने धरतीपर फेंक दिया, वह कौन मुँह लेकर तुम्हारे सहारे ऊपर उठनेकी चेष्टा कर सकती है? वह मिट्टीमें ही क्यों न मिल गई?

" मगर प्यारे, इतनेमें तुम्हारी क्या हानि होगी? न हो, मिनट-भरके लिए याद आ ही गई तो उससे हृदयमें कितनी चोट लगेगी? मगर, तुम्हारा यह 'भूल जाना' मेरी हड्डियोंमें काँटेकी तरह धसा हुआ है। वह दिन-भर, रात भर, हर काममें, हर चिन्तामें, जिधर फिरती हूँ उधर खटकता है। नाथ, तुम जिस तरह भूल गये हो, उस तरह भूल जानेका कोई उपाय मुझे भी तो बता दो।

" नाथ, तुम मुझे प्यार करने लगे, सो क्या मेरा ही अपराध है? मैंने क्या कभी स्वप्नमें भी इतने सौभाग्यकी आशा की थी? मैं कहाँसे आई? मुझे कौन जानता था? अगर तुम मेरी तरफ आँख उठाकर न देखते, अगर मुझे तुम्हारे घरमें बे-दामकी दासी होकर रहना पड़ता, तो क्या मैं तुमको दोष दे सकती थी?

प्रियतम, तुम आप ही मेरे किस गुणपर मुग्ध हो गये—क्या देखकर तुमने मेरा इतना आदर बढाया ? और अगर आज बिना बादलके वज्रपात ही हुआ तो उसने केवल जलाकर ही क्यों छोड़ दिया—एकदम चूर चूर करके नष्ट ही क्यों न कर दिया ?

“ जबसे तुम छोड गये तबसे मैने बहुत सहा, बहुत सोचा, मगर एक बात समझमें न आई,—घरमें रहकर भी क्या तुम मुझे छोड़ न सकते थे ? मेरे लिए भी घर छोडकर जानेकी कोई जरूरत थी ? मैं क्या तुमको घर-भरमें घेरे घेरे फिरती ? मुझे घरके एक कोनेमें जगह दे देते, या घरके बाहर दर्वाजेपर रखते, तो भी क्या मैं तुम्हारी आँखोंके आगे पड़ती ? और अगर मुझसे इतनी ही घृणा थी, तो तुम क्यों चले गये ? मुझे कहीं जानेकी जगह नहीं थी ? जैसे आई थी वैसे ही चली जाती । ”

यह कैसी चिट्ठी है ! यह भाषा किसकी है, सो कुजसे छिपा नहीं रहा । अकस्मात् चोट खाकर मूर्च्छित मनुष्यकी तरह उस चिट्ठीको हाथमे लिये कुज चुप रह गया । उसका मन जिस राहमें रेलगाडीकी तरह पूर्ण वेगसे दौड़ा गया था उसी राहमें दूसरी तरफसे एक धक्का खाकर उलट-पुलटकर ‘ किंभूत-किमाकार ’ बनकर ढेर हो गया । कुजके मनकी विचित्र दशा हो गई ।

बहुत देर सोचनेके बाद कुजने फिर उस चिट्ठीको दो-तीन बार पढा । कुछ समय तक जो बात ‘ भविष्य’की तरह अस्पष्ट थी, वह आज ‘ वर्तमान ’ की तरह स्पष्ट हो गई । कुजके जीवन-गगनके एक कोनेमें जो धूमकेतु छायाकी तरह दिखाई देता था वह, आज, अपनी विशाल शिखाकी अग्नि रेखासे प्रज्वलित होकर, सामने ही देख पड़ा ।

यह चिट्ठी मायाकी ही लिखाई थी । सरला करुणाने उसे अपनी समझकर लिखा है । पहले जिन बातोंको कभी करुणाने सोचा नहीं था, वे ही बाते मायाके लिखानेके अनुसार चिट्ठी लिखते समय उसे सूझने लगीं । नकल की हुई बातें बाहरसे बद्धमूल होकर उसके हृदयकी हो गई । कुजके वियोगसे जो नई पीड़ा हुई थी उसे करुणा, इस सुन्दर ढगसे, कभी प्रकट न कर पाती । वह सोचने लगी ‘ मेरी सखी मेरे मनकी बातोंको इस तरह ठीक ठीक कैसे समझ गई ? उसने कैसे इस तरह सुदर ढगसे सब बाते लिखवा दीं ? ’

करुणाने अपनी अतरग सखीको और भी आग्रहके साथ अपना लिया, क्यों कि जो व्यथा उसके मनमे थी, उसकी भाषा सखीके पास थी ।

कुजने कुर्सीसे उठकर भौं सिकोड़कर मायाके ऊपर क्रोध करनेकी बड़ी चेष्टा की, मगर बीचमे क्रोध हो आया करुणाके ऊपर ।

‘ करुणाकी यह कैसी नासमझी है ! स्वामीपर उसका यह कैसा अत्याचार है ! ’ यह कहकर कुजने कुर्सीपर बैठकर उसके प्रमाणमें फिर चिट्ठी पढना शुरु

किया। पढकर भीतर-ही-भीतर एक प्रकारकी खुशी हुई। उसने उस चिट्ठीको करुणाकी ही मानकर पढनेकी बहुत-कुछ चेष्टा की, मगर उसकी भाषा किसी तरह सरला करुणाकी याद नहीं दिलाती। दो-चार लाइनें पढते ही एक सुख और नशा पैदा कर देनेवाला सन्देह, उस शराबकी तरह जिसमें फेन हो, मनको चारों तरफसे छाप लेता है। छिपे हुए होनेपर भी प्रकट, निषिद्ध होनेपर भी निकटवर्त्ती, विष मिश्रित होनेपर भी मधुर, एक ही साथ सामने लाकर लौटा लिये गये, प्रेमके आभासने कुजके मनको मतवाला बना डाला। उसे यह इच्छा हुई कि अपने हाथ या पैरमें कहीं एक जगह छुरी भोंककर या और कुछ करके इस हानिकर नशेको नष्ट कर दूँ और मनको ठिकाने लाकर और किसी तरफ लगाऊँ।

कुज दोनों मुट्ठियोंसे भर-जोर टेबिलको दबाकर कुर्सीसे उठ खड़ा हुआ और 'दूर करो, चिट्ठीको जला डालो' कहता हुआ चिट्ठीको लैंपके पास तक ले गया मगर जलाया नहीं—एक बार और पढ लिया। दूसरे दिन सवेरे नौकर जब कमरा झाड़ने गया तो टेबिलपर उसे कागजकी बहुत-सी राख मिली। मगर वह राख करुणाके विचित्र पत्रकी न थी। कुजने रातको उस चिट्ठीका जवाब लिखनेमें कई चिट्ठीके कागज नष्ट किये थे, वह उन्हींकी राख थी।

❦ ❦ ❦

बीसवाँ परिच्छेद

इतनेमें और एक चिट्ठी आकर उपस्थित हुई—

"तुमने मेरी चिट्ठीका जवाब नहीं दिया, अच्छा ही किया। ठीक बात तो लिखी नहीं जाती, मगर तुम्हारा जवाब मैंने अपने मनसे समझ लिया। भक्त जब अपने इष्टदेवको पुकारता है तब वह (देव), क्या उसे कुछ कहकर, उसका उत्तर देता है? जान पड़ता है, दुखियाके पत्र-पुष्पको चरणोंमें स्थान मिल गया।

"किन्तु भक्तकी पूजा लेनेमें अगर शिवका तप नष्ट हो तो उससे, हृदयदेव, रूठना नहीं। तुम वरदान दो या न दो, आँख उठाकर देखो या न देखो, जान सको या न जान सको, पूजा चढाये बिना भक्तकी और गति नहीं है। इसीसे आज भी दो अक्षर लिखकर चिट्ठी भेजती हूँ। ऐ मेरे पत्थरके ठाकुर, तुम विचलित न होना।"

कुज फिर चिट्ठीका जवाब लिखनेके लिए बैठा। मगर करुणाको लिखनेमें मायाकी बातोंका उत्तर आपसे आप कलममें आ जाता है—चुरा-छिपाकर कौशल करके लिखा नहीं जाता। बहुतसे कागज फाड़कर, आधी रात बिताकर, एक चिट्ठी लिखी भी तो लिफाफेमें रखकर ऊपर करुणाका नाम लिखते समय उसे मानो किसीने

पीछेसे चाबुक मारा। किसीने मानो उससे कहा—दगाबाज, विश्वास करनेवाली बालिकासे इस तरह छल!

कुंजने चिट्ठीके टुकड़े-टुकड़े कर डाले और रात-भर टेबिलपर दोनों हाथ रखकर, हाथोंसे मुँह छिपाकर, वह अपने आगे अपनेको छिपानेकी चेष्टा करता रहा।

फिर तीसरा पत्र आया। उसमें लिखा था—

"जो बिल्कुल 'मान' करना नहीं जानता, वह प्यार करना भी नहीं जानता। अपने प्यारको अगर अनादार-अपमानसे बचाकर न रख सकूँगी, तो वह दूषित प्यार तुमको कैसे अर्पण कर सकूँगी?

"शायद मैं तुम्हारे मनको ठीक तरह समझ नहीं सकी, इसीसे इतना साहस कर सकी। इसीसे, तुम्हारे छोड़कर चले जानेपर भी, आप ही आगे बढ़कर, चिट्ठी लिखी,—तुम चुप थे तो भी मैंने अपने मनकी बात खुलासा कह दी। किन्तु, तुमको पहचाननेमें अगर मैंने भूल की तो उसमें क्या मेरा ही दोष है? एक बार आदिसे अन्त तक सब बातोंपर गौर करके देखो। फिर बतलाओ, जैसा मैं समझी वैसा ही तुमने समझा या नहीं?

"वह जो हो, भूल हो या सच हो, जो लिख चुकी वह अब मिट नहीं सकता—जो दे चुकी वह फिर नहीं सकता—यही पछतावा है। छी छी, ऐसी लज्जा भी कभी किसी स्त्रीको उठानी पड़ी होगी! मगर इससे यह न समझना कि मैं तुमको भूल जाऊँगी। जो प्यार करता है, चाहता है, वह अपने प्यारकी उपेक्षा भी सह सकता है। अगर तुम मेरी चिट्ठी नहीं चाहते तो—जाने दो—अगर जवाब न दोगे—तो बस यहीं तक।"

यह चिट्ठी पाकर कुंजसे रहा नहीं गया। उसने सोचा कि मैं करुणाकी इन चिट्ठियोंपर चिढ़कर ही घर लौटा जा रहा हूँ।—माया समझती है कि मैं उसे भूलनेहीके लिए घर छोड़कर भाग आया हूँ।—मायाके इस अपवादको हाथोंहाथ झूठा साबित करनेके लिए कुंजने घर लौटनेका संकल्प किया।

इसी समय बिहारी आ पहुँचा। बिहारीको देखते ही कुंजके हृदयके भीतरकी खुशी मानो दूनी हो गई। अभी तक तरह तरहके सन्देह उत्पन्न होनेके कारण बिहारीकी तरफसे उसका मन मैला होता जाता था—मित्रतामें अन्तर पड़ता जाता था। आज चिट्ठियाँ पढ़नेके बाद सब ईर्षा-द्वेष-सन्देह मिट गया।

कुंजने बढ़े हुए जोशके साथ बिहारीको बुलाया। कुर्सीसे उठकर, बिहारीकी पीठपर थपकी मारकर, उसे हाथ पकड़े हुए लाकर, दूसरी कुर्सीपर बिठलाया।

मगर बिहारीका मुँह आज उदास था। कुंजने सोचा 'बेचारा इस बीचमें मायासे मुलाकात करने गया है, और वहाँसे पुरस्कारमें तिरस्कार पाकर यहाँ आया है'। कुंजने पूछा—बिहारी, इधर हमारे घर गये थे?

बिहारीने गंभीर भावसे उत्तर दिया—अभी वहींसे आ रहा हूँ।

बिहारीके मानसिक कष्टकी कल्पना करके कुंजको एक प्रकारका कौतुक हुआ। उसने मनमें कहा—अभागा बिहारी! स्त्रियोंके प्यारसे बेचारा बिल्कुल खाली है।

यों सोचते सोचते कुंजने एक बार अपने वेस्ट-कोटके जेबपर, जिसमें चिट्ठियाँ रक्खी थीं, हाथ फेरा।

कुंजने पूछा—सब लोग अच्छे हैं?

बिहारीने कहा—अच्छे तो हैं, मगर तुम घर छोड़कर यहाँ कैसे?

कुंजने कहा—आजकल प्रायः रातको काम देखना पड़ता है, घरमें रहनेसे सुभीता न होता।

बिहारीने कहा—पहले भी तो नाइट-ड्यूटी पड़ा करती थी। तब तो तुमको घर छोड़कर यहाँ रहते मैंने कभी नहीं देखा।

कुंजने हँसकर कहा—मनमें कोई सन्देह हुआ है क्या?

बिहारीने कहा—नहीं दिल्लगी रहने दो, अब घर चलो।

कुंज घर जानेके लिए तैयार था, मगर बिहारीका अनुरोध सुनते ही उसने अपने इरादेको बदलना चाहा—ऐसा भाव दिखाया, जैसे घर जानेकी बिल्कुल ही इच्छा नहीं है। कुंजने कहा—बिहारी, यह कैसे हो सकता है? घर जानेसे मेरी साल-भरकी मेहनत चौपट हो जायगी।

बिहारीने कहा—देखो दादा, मैं तुमको लड़कपनसे जानता हूँ, मुझे बहलानेकी चेष्टा न करो। तुम अन्याय कर रहे हो।

कुंजने कहा—किसपर अन्याय करता हूँ जज साहब?

बिहारीने चिढकर कहा—तुम सदा अपने सहृदय होनेकी बड़ाई किया करते थे, आज वह सहृदयता कहाँ चली गई?

कुंजने कहा—आजकल वह कालेजके अस्पतालमें है।

बिहारीने कहा—बस, रहने दो। तुम यहाँ मेरे साथ हँस हँसकर बातें कर रहे हो, और वहाँ तुम्हारी चुन्नी कमरेके भीतर-बाहर रोती फिरती है।

करुणाके रोनेकी बात सुनते ही कुंजके हृदयमें एक चोट-सी लगी। संसारमें और किसीका भी सुख-दुख मेरे ऊपर निर्भर है यह बात ही जैसे कुंजको नये नशेमें भूल गई थी। वह एकाएक जैसे चौंक पड़ा, पूछा—चुन्नी रोती क्यों है?

बिहारीने खीझकर कहा—सो तुम्हें नहीं मालूम, मै जानता हूँ?

कुंजने कहा—तुम्हारा कुंज सर्वज्ञ नहीं है, इसके लिए अगर क्रोध करना हो तो कुंजके बनानेवालेपर करो।

बिहारीके जोशको देखकर कुंजको आश्चर्य हुआ। कुंज जानता था कि बिहारी रूखा हृदयहीन है। सोचने लगा—यह व्याधि इसके पीछे कबसे लगी? जिस दिन कुमारी करुणाको देखने गया था, उसी दिनसे तो नहीं? बेचारा बिहारी बड़ा ही अभागा है।

मनमें 'बेचारा' तो कहा, मगर उससे कुजको दुःख नहीं हुआ उलटा एक तरहका मजा मिला। करुणाके हृदयमें अनन्य रूपसे कौन विराजमान है, इस बातको कुज निश्चित रूपसे जानता था। एक आदमीके लिए जो चाहकी चीज है, किन्तु मिल नहीं सकती, वह उसके पास है, हमेशाके लिए वह उसकी है— इस बातका अनुभव कर वह गर्वसे फूल गया।

उसने कहा—अच्छा तो चलो। गाड़ी बुलाई जाय।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

कुज घरमें आया, उसका मुँह देखते ही करुणाका सब खटका दम-भरमें कुहासेकी तरह मिट गया। अपनी चिट्ठियोंकी याद आ जानेसे उसे ऐसी लज्जा आई और ऐसा क्षोभ हुआ कि वह कुजसे आँख न मिला सकी। कुजने मीठी झिड़कीके साथ कहा—छोड़ जाने, और भूल जानेका कलक लगाकर तुमने ऐसी चिट्ठियाँ किसके कहनेसे लिखीं?

इतना कहकर उन्हीं कई बारकी पढ़ी हुई तीनों चिट्ठियोंको कुंजने जेबसे बाहर निकाला। करुणाने व्याकुल होकर कहा—तुम्हारे पैरो पड़ती हूँ, इन चिट्ठियोंको फाड़कर फेंक दो।

यों कहकर करुणा कुजके हाथसे चिट्ठियाँ लेनेका उद्योग करने लगी। कुजने उससे बचाकर चिट्ठियोंको फिर जेबमें रख लिया और कहा—मैं कामसे लाचार होकर गया था, मगर तुमने और ही कुछ समझ लिया और व्यर्थका दोष लगाया।

करुणाकी आँखोंमें आँसू भर आये, उसने कहा—अबकी माफ करो, फिर कभी ऐसा न होगा।

कुजने कहा—कभी नहीं?

करुणाने कहा—कभी नहीं।

तब कुजने करुणाको प्यारसे अपने पास खींचकर उसका मुँह चूम लिया। करुणाने कहा—चिट्ठियाँ दे दो, फाड़कर फेंक दूँ।

कुजने कहा—नहीं, उन्हें रहने दो।

करुणाने साधारण भावसे समझा कि इन चिट्ठियोंको ये मेरे अपराधके दण्ड-रूपमें अपने पास रक्खेंगे।

इन चिट्ठियोंके मामलेसे करुणाका मन मायाकी ओरसे जैसे फिर गया। वह पतिके आनेकी खुश-खबरी लेकर अपनी सखीको सुखी करने नहीं गई, बल्कि मायाके मिलनेपर भी हटकर दूसरी तरफ चली गई। माया सब समझ गई और भाव जानके लगकर दूर-ही-दूर रहने लगी।

कुजने सोचा—यह तो बड़ी विचित्र बात है। मैंने सोचा था कि अब माया खुलकर मिलेगी—मगर यहाँ तो उलटा रंग है। फिर उन चिट्ठियोंका मतलब क्या है?

कुजने घरसे जानेके पहले स्त्री हृदयका रहस्य जाननेकी कोई चेष्टा न करनेका पक्का इरादा कर लिया था। सोचा था, माया अगर पास आनेकी चेष्टा करेगी, तो भी मैं दूर रहूँगा। परन्तु आज उसने अपने मनमें कहा—न, यह तो ठीक नहीं है। हम लोगोंके मनमें जैसे सचमुच एक प्रकारका विकार हो गया है। मायाके साथ सहज स्वाभाविक ढंगसे बात-चीत और हँसी-दिल्लगी करके इस संशयात्मक विकारके भावको दूर कर देना ही ठीक होगा।

करुणासे कुंजने कहा—आज कल तो मैं ही तुम्हारी सखीकी दृष्टिमें 'आँखकी किरकिरी' हो रहा हूँ। इधर तो उसके दर्शन ही नहीं होते!

करुणाने उदासीनताके साथ उत्तर दिया—कौन जाने, न मालूम उसको क्या हो गया है!

इतनेमें लक्ष्मीने आकर भर्राई हुई आवाजसे कहा—माया किसी तरह नहीं रहती, घर जानेके लिए कह रही है।

सुनकर कुज जैसे चौंक पड़ा; मगर वैसे ही सँभलकर उसने कहा—क्यों मा?

लक्ष्मीने कहा—क्या जानें बेटा, अबकी तो वह किसी तरह मानती ही नहीं। तुम तो किसीकी खातिर करना जानते ही नहीं। भले आदमीकी लड़की पराए घरमें मोहब्बतके मारे पड़ी है। अगर अपने आदमीकी तरह उसे अपनाओगे नहीं—उसको आदरसे रक्खोगे नहीं, तो वह कैसे रहेगी?

माया सोनेकी कोठरीमें बैठी हुई बिछौनेपरकी चादर सीं रही थी। कुँजने पहुँचते ही पुकारा—अजी 'आँखकी किरकिरी!'

माया सँभलकर कायदेसे बैठ गई और बोली—कौन, कुंज बाबू?

कुजने कहा—वाह! कुंज बाबू कबसे हो गये?

माया फिर चादर सीनेमें मन लगाकर आँखें उसी तरफ किये हुए बोली—तो फिर क्या कहूँ?

कुंजने कहा—जो अपनी सखीको कहती हो,—आँखकी किरकिरी।

मायाने पहलेकी तरह हँसकर इसका जवाब नहीं दिया—वह चुपचाप चादरकी सिलाई करने लगी।

कुजने कहा—जान पड़ता है, सचमुच मेरा तुम्हारा वही नाता हो गया।

मायाने जरा थमकर सिलाईसे बचे हुए डोरेका सिरा दाँतसे खुटककर कहा—क्या जानूँ, यह तो आप ही जानें!

इतना कहकर, अपने हृदयमें आये हुए उत्तरोंको दबाकर, मुँह गंभीर बनाकर उसने फिर कहा—कालेजके अस्पतालसे चले आये?

कुंजने कहा—हाँ, वहाँ केवल मुर्दोंको काटकर कब तक रह सकता था ?

फिर मायाने दाँतोंसे डोरा खुटककर कहा—अब जान पड़ता है जीतोंकी जरूरत है ?

कुंजने निश्चय कर लिया था कि आज मायाके साथ अत्यन्त सहज स्वाभाविक ढंगसे बात-चीत और हँसी दिल्लगी करके मनोमालिन्य मिटा डालूँगा। मगर मायाकी बात-चीत और रंग-ढंगसे कुंजकी सब चेष्टा विफल हुई। कुंजने देखा, माया आज पहलेकी तरह हँसकर बातचीत नहीं करती। मायाको यों दूर भागते देखकर कुंजका मन वेगके साथ उसकी तरफ बढ़ने लगा—बीचके अन्तरको किसी तरह मिटा देनेके लिए वह व्याकुल हो उठा।

मायाकी अन्तिम बातका यथोचित उत्तर न देकर कुंज उसके पास आकर बैठ गया और बोला—तुम हम लोगोंको छोड़कर जाना क्यों चाहती हो ? क्या मुझसे कोई अपराध बन पड़ा है ?

तब मायाने कुछ अलग हटकर, सिर उठाकर, अपनी दोनों बड़ी बड़ी उज्ज्वल आँखोंको कुंजकी आँखोंसे मिलाकर, कहा—जरूरी काम तो सभीको होता है। आप किसके अपराधसे चिढ़कर घर-बार छोड़ कालेजमें चले गये थे ? मुझे भी जाना है, मुझे क्या कोई जरूरी काम नहीं है ?

बहुत सोचनेपर भी कुंजको इसका कोई ठीक उत्तर नहीं सूझ पड़ा। कुछ देर ठहरकर उसने पूछा—तुम्हें कौनसा ऐसा जरूरी काम है जो बिना गये नहीं बनता ?

मायाने एकाग्र भावसे सुईमें डोरा डालते डालते कहा—जरूरी काम है या नहीं सो तो मैं ही जान सकती हूँ, आपको उसका ब्योरा क्या बतलाऊँ ?

कुंज, गम्भीर चिन्तित मुँह लिये, दर्वाजेके बाहर एक दूरपर लगे हुए पीपलके पेड़की चोटीको देखता हुआ, पाँच सात मिनट तक चुप बैठा रहा। माया चुपचाप सुई चलाती रही। ऐसा सन्नाटा छा गया कि सुई गिरनेसे भी उसका शब्द सुनाई पड़ता। बहुत देरके बाद कुंज बोला। अचानक कुंजके बोल उठनेसे माया चौंक पड़ी—उसकी उँगलीमें सुई चुभ गई।

कुंजने कहा—किसी तरह अनुनय विनय करनेसे भी न रहोगी ?

मायाने अपनी उँगली दबाकर खून निकालते हुए कहा—इतने अनुनय-विनयकी जरूरत क्या है ? मैं रहूँगी तो क्या और न रहूँगी तो क्या—आपका उससे क्या बनता-बिगड़ता है ?

यह कहते कहते मायाका गला भारी हो आया। वह बहुत सिर झुकाकर, मानो बहुत ही मन लगाकर सिलाई करने लगी। जान पड़ा, उसकी झुकी हुई आँखोंमें आँसू भर आये हैं। इस समय शीत-कालके दिनकी क्षीण-प्रभा सन्ध्याकालके अन्धकारमें लीन हो रही थी।

कुजने फुर्तीसे मायाका हाथ पकड़कर गद्गद कण्ठसे कहा—अगर मेरा बनता बिगड़ता हो, तो तुम रहोगी ?

माया जल्दीसे अपना हाथ छुड़ाकर अलग हट गई। कुजका जैसे नशा उतर गया। अपनी बात भीषण व्यंगकी तरह उसके कानोंमें बारम्बार प्रतिध्वनित-सी होने लगी। कुज अपनी अपराध करनेवाली जबानको दाँतोंमें दबाकर रह गया। उसकी जबानसे फिर कोई बात न निकली।

इसी समय उस सन्नाटेमें घरके भीतर करुणाने प्रवेश किया। मायाने ज़रा पहलेकी बात-चीतके सिलसिलेमें ही हँसकर कुजसे कहा—आप लोग जब इतना कह रहे हैं, तो मैं भी आप लोगोंको नाराज करके नहीं जा सकती। जब तक आप लोग न कहेंगे, तब तक न जाऊँगी।

करुणा अपने स्वामीकी सफलतासे प्रसन्न होकर मायासे लिपट गई, बोली—तो फिर यही बात रही ! अच्छा तीन बार कहकर प्रतिज्ञा करो कि जब तक तुम लोग न कहोगे तब तक न जाऊँगी न जाऊँगी न जाऊँगी।

मायाने यही किया। तब करुणाने कहा—अच्छा बहिन, जब तुम्हें रहना ही था, तो इतनी मनौवल क्यों कराई ? आखिरको तुम्हें मेरे इनसे तो हार माननी ही पड़ी !

मायाने हँसकर कहा—बाबू साहब, सच कहना मुझको हार माननी पड़ी या आपको ?

कुज अभी तक सन्नाटेमें खड़ा था। उसे जान पड़ता था कि उसका अनुचित अपराध घर-भरमें भरा हुआ है, लाञ्छना उसे चारों तरफ़से लपेटे हुए है। करुणाके आगे वह हँसी-खुशीके साथ पहलेकी तरह खुलकर कैसे बात-चीत करेगा ?—दम-भरके बाद वह अपने इस बीभत्स असंयमको सरल हँसी और स्वाभाविक बात-चीतके रूपमें कैसे बदल सकेगा ? यह पैशाचिक इन्द्र-जाल या छल करना उसकी शक्तिके बाहर था। उसने सूखे मुँहसे, टूटे-फूटे शब्दोंमें, कहा—मैं ही हार गया। इतना कह जल्दीसे बाहर चला गया।

थोड़ी ही देरमें फिर कुजने भीतर आकर मायासे कहा—मुझे माफ करो।

मायाने कहा—तुमने अपराध ही क्या किया है, जो मैं माफ करूँ ?

कुजने कहा—तुमको जबर्दस्ती यहाँ रखनेका हम लोगोंको कोई अधिकार नहीं है।

मायाने हँसकर कहा—मुझसे तो तुमने कुछ भी जबर्दस्ती नहीं की। सीधी तरह सीधी बातें की है। क्या इसीको जबर्दस्ती कहते हैं ? (करुणासे) तुम्हीं बताओ बहिन, जबर्दस्ती और मोहब्बत क्या एक ही चीज है ?

करुणाने उससे सम्पूर्ण सहमत होकर कहा—नहीं।

मायाने कहा—कुज बाबू, आप चाहते हैं कि मैं रहूँ, मेरे जानेसे आपको

कष्ट होगा, इसे तो मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। (करुणासे) क्यों बहिन, संसारमें ऐसे हेती कितने मिलते हैं? अपने सुखमें सुखी और दुखमे दुखी होनेवाला आदमी अगर भाग्यसे मिल जाय, तो उसे खुशीसे कौन छोड़ना चाहेगा?

करुणाने, अपने स्वामीको झेंपकर चुप रहते देख, कुछ उदास होकर कहा—बहिन, तुमसे बातोंमें कौन जीत सकता है?

कुंज फिर जल्दीसे निकलकर चला गया। उस समय लक्ष्मीसे कुछ देर बातचीत करके कुंजको खोजता हुआ बिहारी उधर ही आ रहा था। कुंज उसे दर्वाजेके सामने देखते ही बोला—"भाई बिहारी, मुझ-सा कपटी और नीच संसारमें कोई न होगा।" कुंजने यह बात इतने जोरसे कही कि उसे मायाने अच्छी तरह सुन लिया।

मायाकी कोठरीसे उसी समय आवाज आई—बिहारी बाबू!

बिहारीने कहा—जरा ठहरो बड़ी बहू, अभी आता हूँ।

मायाने कहा—जरा सुनते ही न जाओ।

बिहारीने भीतर घुसते ही एक बार करुणाकी तरफ देखा। घूँघटके भीतरसे जितना चेहरा देख पड़ा उसमें विषाद या वेदनाका कोई भी चिह्न नहीं था। करुणा उठकर जाने लगी, मायाने उसे जबरदस्ती पकड़ रक्खा, कहा—अच्छा बिहारी बाबू, मेरी सखीके साथ तुम्हारा क्या सौतका नाता है? तुमको देखते ही ये भागती क्यों हैं?

करुणाने बहुत ही लज्जित होकर दोनों हाथ मायाकी पीठपर दे मारे।

बिहारीने हँसकर कहा—विधाताने मुझे वैसा सुन्दर नहीं बनाया, इसीसे।

मायाने कहा—देखती हो चुन्नी, बिहारी बाबू कैसे बचाकर बात कहना जानते हैं! तुम्हारी रुचिको दोष न देकर विधाताको ही बुरा बतलाया। ऐसे लखन सरीखे सुलक्षण देवरको पाकर भी अगर तुमने आदर करना न जाना, तो सचमुच तुम्हारी तकदीर फूटी है!

बिहारीने कहा—बड़ी बहू, मगर इससे यदि तुमको मुझपर दया आती हो तो फिर मुझे दुःख काहेका है?

मायाने कहा—समुद्र तो पड़ा हुआ है मगर फिर भी स्वातिके पानी बिना चातककी प्यास नहीं मिटती।

अब करुणा रोके नहीं रुकी। वह जोर करके, मायाके हाथसे हाथ छुड़ाकर, चली गई। बिहारी भी उठकर चलने लगा। मायाने कहा—बिहारी बाबू, तुम्हारे दोस्तको क्या हुआ है, बतला सकते हो?

सुनकर बिहारी ठहर गया। बोला—मैं तो नहीं जानता, कुछ हो गया है क्या?

मायाने कहा—क्या जाने बिहारी बाबू, मुझे तो लक्षण अच्छे नहीं देख पड़ते।

बिहारी घबराकर बैठ गया। पूरा ब्योरा सुननेके लिए व्यग्रभावसे मायाकी तरफ देखने लगा। माया कुछ न कहकर चुप-चाप सिलाई करने लगी।

कुछ देर प्रतीक्षा करके बिहारीने कहा—कुज दादाके बारेमें तुमने कुछ विशे बात देखी-सुनी है क्या?

मायाने बहुत ही साधारण भावसे कहा—क्या जाने बिहारी बाबू, मुझे तो रग-ढग अच्छे नहीं देख पड़ते। मुझे सिर्फ अपनी सखीके लिए चिन्ता होती है।

इतना कहकर मायाने एक लम्बी साँस ले ली और चादर रखकर जानेके लिए उठ खड़ी हुई।

बिहारीने व्यग्र होकर कहा—बड़ी बहू, जरा बैठो।

मायाने कमरेके सब किवाड़े अच्छी तरह खोल दिये, लैंपकी रोशनी और तेज कर दी और सीनेके लिए चादर लेकर एक किनारे कुछ दूरीपर जाकर बैठ गई। बोली—बिहारी बाबू, हमेशा तो मै यहाँ रहूँगी नहीं, मेरे चले जानेपर तुम मेरी सखीका खयाल रखना, उसे दुख न हो।

यह कहते कहते अपने हृदयके उच्छ्वासको जैसे सँभालनेके लिए मायाने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया।

बिहारी जोशके साथ कह उठा—बड़ी बहू, तुमको रहना ही पड़ेगा। तुम्हारा सगा या अपना और कोई नहीं है, तुम सहजमें इस सरल-हृदया सखीकी देख-रेख रखनेका काम अपने हाथमे ले सकती हो। तुम उसे छोड़कर चली जाओगी तो मुझे और कोई उपाय नहीं देख पडता।

मायाने कहा—बिहारी बाबू, तुम ससारकी बातें जानते हो। मैं हमेशा यहाँ कैसे रह सकती हूँ? लोग क्या कहेगे?

बिहारीने कहा—लोग चाहे जो बकें, तुम ध्यान न देना। तुम देवी हो सहाय-हीन सीधी सादी बालिकाको ससारकी कठिन चपेटोंसे बचाना, तुम्हारा ही काम है। बड़ी बहू, पहले मैंने तुमको नहीं पहचाना था, इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। मैंने भी सकीर्ण-हृदयवाले साधारण इतर लोगोंकी तरह तुम्हारे ऊपर संदेह किया था,—एक बार ऐसी भी धारणा हुई थी कि तुम करुणाका सुख देख नहीं सकतीं—डाह करती हो। जैसे......मगर उन बातोंको जबानसे निकालना भी पाप है—मनमे लाना भी अन्याय है। इसके बाद उस दिन मुझे तुम्हारे पवित्र हृदयका परिचय प्राप्त हुआ। मुझे तुमपर भक्ति और श्रद्धा हो गई है, इसीसे तुम्हारे आगे अपना अपराध स्वीकार किये बिना मुझसे रहा नहीं गया।

मायाके रोमाच हो आया। यद्यपि वह बिहारीसे छल कर रही थी, तो भी बिहारीके इस भक्ति-उपहारको फिरा न सकी, उसे उसकी सचाई और पवित्रताप कुछ भी सन्देह न हुआ। ऐसी चीज उसने कभी किसीसे नहीं पाई थी। घड़ी-भरके लिए उसे मालूम पड़ा कि वह वास्तवमें पवित्र और उन्नत हृदयकी है। उ

करुणापर एक बार दया आ गई, आँखोंसे आँसू गिरने लगे। उन आँसुओंको उसने बिहारीसे छिपानेकी चेष्टा नहीं की। वह आँसुओंकी धारा मायाको आप ही भक्ति और श्रद्धाके योग्य जान पड़ी, और वह जैसे मोहमें आ गई।

मायाको रोते देख बिहारी अपने आँसुओंका वेग रोकता हुआ उठकर बाहर कुंजकी बैठकमें चला गया। बिहारी अभीतक कुंजके 'मैं कपटी हूँ, मैं नीच हूँ' कहनेका कुछ मतलब नहीं समझ सका था। बैठकमें जाकर उसने देखा, कुंज वहाँ नहीं था। खबर मिली कि वह कहीं घूमने बाहर गया है। पहले कुंज बिना किसी प्रयोजनके खाली टहलनेके लिए घरसे बाहर नहीं जाता था। सुपरिचित आदमी और सुपरिचित घरको छोड़कर कहीं जाना कुंजको बहुत अखरता था। बिहारी सोचता हुआ धीरे धीरे अपने घर चला गया।

मायाने करुणाको अपने कमरेमें लाकर, छातीसे लगाकर, आँखोंमें आँसू भरकर कहा—बहिन चुन्नी, मैं बड़ी अभागिनी हूँ! बड़ी ही राक्षसी हूँ!

करुणाने व्यथित और व्याकुल हो उसे कसकर लिपटा लिया और स्नेह-भरे स्वरमें कहा—बहन ऐसी बात क्यों कहती हो?

माया रोनेके लिए फूले हुए बालककी तरह करुणाकी गोदमें सिर रखकर बोली—मैं जहाँ रहूँगी वहाँ बुराईके सिवा भला न होगा। बहिन, मुझे जाने दो, मैं अपने जंगलमें जाकर रहूँ।

करुणाने प्यारसे उसकी ठोढ़ी पकड़कर सिर उठाकर कहा—बहिन ऐसी बात न कहो, तुमको छोड़कर मुझसे रहा नहीं जायगा।

इधर कुंजके न मिलनेपर बिहारीने सोचा—किसी बहानेसे फिर मायाके पास जाकर, करुणा और कुंजके बारेमें खटकेकी बात क्या है,—इसे अच्छी तरह समझ लेना ही ठीक है। बहाना यह सोचा कि मायासे कह दूँगा, 'कल मेरे यहाँ कुंजकी दावत है, उनसे कह देना कि कृपा करके अवश्य आवें।'

मायाके दर्वाजेपर पहुँचते ही बिहारीने आवाज दी—बड़ी बहू!

आवाज देते ही उसने देखा—लैम्पके उज्ज्वल प्रकाशमें दोनों सखियाँ परस्पर लिपटी खड़ी हैं, दोनोंकी आँखोंमें आँसू झलक रहे हैं। एकाएक करुणाको खयाल आया कि जरूर आज बिहारीने मेरी सखीसे कोई कड़ी या बेजा बात कही है, इसीसे इसने आज फिर जानेकी बात उठाई है।—बिहारीबाबू यह बड़ा अन्याय [illegible] नहीं है।

करुणा इस प्रकार अकारण बिहारीसे बिगड़कर चली गई। बिहारी भी मायाके ऊपर अपनी भक्तिकी मात्रा और बढ़ाकर गद्गद हो अपने घर चला गया।

उस दिन रातको कुंजने करुणासे कहा—चुन्नी, मैं कल सबेरेकी पैसिंजरगाड़ीसे काशी जाऊँगा।

करुणाकी छाती धक धक करने लगी। उसने घबराकर कहा—क्यों?

कुजने कहा—बहुत दिनोंसे चाचीको नहीं देखा, उन्हे देख आऊँ।

सुनकर करुणाको बड़ी लज्जा मालूम हुई। यह बात तो उसे ही पहले याद आनी चाहिए थी। अपने सुख-दुःखके झगड़ोंमें पड़कर वह अपनी स्नेहमयी मौसीको भूल गई और कुज उस प्रवासिन तपस्विनीको नहीं भूला,—यह सोचकर करुणाने अपने हृदयको कठिन कहकर बहुत ही धिक्कारा।

कुजने कहा—वे मुझे अपने जीवनका सर्वस्व सौंप गई हैं—उनको एक बार देखनेके लिए मेरा जी घबरा रहा है।

यह कहते कहते कुजका गला भर आया। स्नेह-पूर्ण नीरव आशीर्वाद और अव्यक्त मगल कामनाके साथ, वह करुणाके सिर और मस्तकपर अपना दाहिना हाथ धीरे धीरे फेरने लगा। इस एकाएक बढे हुए प्रेमके विश्वासका मर्म करुणा कुछ भी न समझ सकी, केवल उसकी आँखोंसे मोतीकी तरह आँसूके बूँद टपकने लगे। आज ही शामको मायाने इसी तरह अकारण अधिक स्नेह दिखाकर जो बातें कही थीं, वे भी याद आ गईं।। कुज और मायाकी बातोंमें कहीं कुछ सम्बन्ध है या नहीं, सो कुछ भी करुणाकी समझमें न आया किन्तु यह अवश्य जान पड़ा कि यह उसके जीवनमें एक नई सूचना प्राप्त हुई है। कौन जाने, यह सूचना भली है या बुरी।

एक प्रकारके भयसे उसका चित्त व्याकुल हो उठा, वह दोनों हाथोंसे कुजसे लिपट गई। कुजसे करुणाकी अकारण आशका छिपी नहीं रही। उसने कहा—चुन्नी, तुम्हारी पुण्यात्मा मौसीका आशीर्वाद, उनके मङ्गलमय हाथकी तरह, तुम्हारे सिरपर है। तुमको कोई, किसी तरहका, डर नहीं है। वे तुम्हारे ही मगलके लिए अपना सर्वस्व छोडकर चली गई हैं, तुम्हारा बुरा किसी तरह नहीं हो सकता।

करुणाने अपने चित्तको दृढ कर सब सशय और भय दूर कर दिये। उसने स्वामीके इस आशीर्वादको अक्षय कवचकी तरह धारण कर लिया। उसने मन-ही-मन अपनी मौसीको प्रणाम किया और कहा—मौसी, तुम्हारे आशीर्वादसे मेरे स्वामीका कल्याण हो।

दूसरे ही दिन सवेरे कुज चला गया, उसने मायासे कुछ भी नहीं कहा। मायाने अपने मनमें कहा—आप ही तो अन्याय करे और आप ही उलटा रूठ जाय, ऐसा साधु तो मैंने आज तक नहीं देखा! लेकिन ऐसा साधूपन बहुत दिन नहीं टिकता।

बाईसवाँ परिच्छेद

संसारसे अलग होकर भगवद्भजन करते करते गौरीने एक दिन देखा कि कुलीके सिरपर सामान रखाये कुंज आ रहा है। कुंजको देखकर स्नेहके आनन्दमें उसका हृदय गद्गद हो गया। मगर साथ ही यह डर हुआ कि कुंज कहीं फिर तो करुणाके लिए मासे नहीं लड़ पड़ा और उसकी नालिश करके, मेरे पास सान्त्वना प्राप्त करनेके लिए तो नहीं आया!

कुंजको बचपनसे यही अभ्यास है कि जब कोई सन्ताप या संकटका समय आ पड़ता है तब वह अपनी चाचीके ही पास दौड़कर जाता है। जब वह किसीसे बिगड़कर आता था तो गौरी उसे शान्त कर देती थी और जब वह दुखी होकर आता था तो उसे चुप चुप सह लेनेका उपदेश देती थी। लेकिन ब्याहके बाद जीवनमें सबसे बढ़कर जो संकटका कारण हो गया है, उसे मिटानेकी चेष्टा कैसी उसके बारेमें कुछ सान्त्वना देना भी उसकी शक्तिसे परे है। जब उसने निश्चय कर लिया कि इस सम्बन्धमें वह चाहे जिस भावसे, चाहे जिस तरफसे, हाथ डाले बुरेके सिवा अच्छा कभी न होगा—झगड़ा घटनेके बदले और बढ़ जायगा, तब वह हाथ खींचकर संसारसे अलग हो गई। जब बीमार बच्चा पानीके लिए व्याकुल होता है मगर डाक्टर या वैद्य पानी नहीं देने देता है, तब मा व्याकुल और व्यथित हो उस जगहसे हट जाती है। ठीक इसी तरहसे गौरी घर छोड़कर काशी चली गई थी। गौरीने अपने मनमें कहा—इतनी दूरीपर तीर्थमें रहनेके लिए आकर नित्य धर्म कर्म और भगवद्भजनमें लग गई थी, संसारके झगड़ोंको भूल गई थी आज क्या कुंज फिर उसी झगड़ेमें डालकर मेरे भरे हुए घावमें चोट पहुँचाने आया है?

लेकिन गौरीका सोचना व्यर्थ हुआ। कुंजने मौसीसे, स्त्रीका पक्ष लेकर, माता-पर कोई नालिश नहीं की। तब गौरीको दूसरा खटका हुआ। जो कुंज करुणाको छोड़कर कालेज नहीं जाता था वह आज करुणाको छोड़ चाचीकी खबर लेने इतनी दूर काशी कैसे आया है? तो अब क्या करुणा और कुंजमें वैसी नहीं पटती? प्रेम [illegible] ढीला हो गया?

गौरीने कुंजसे [illegible] साथ पूछा—हाँ रे कुंज तुझे मेरे सिरकी कसम, ठीक ठीक कहना [illegible]

कुंजने कहा— [illegible] अच्छी तरहसे तो है।

गौरीने कहा—[illegible] आज कल किस तरह रहती है? तुम लोग अभी तक वैसे [illegible] हो, कुछ घरका काम भी देखते हो?

कुंजने कहा—[illegible] है। वह झगड़े झंझटकी जड़ वह हिन्दी-[illegible] हो गई कुछ पता नहीं है। तुम रहती तो

प्रसन्न होतीं कि लिखना-पढना सीखनेमें औरतोंको जितनी लापर्वाही करनी चाहिए उसमे वह कुछ भी कसर नहीं रखती।

गौरीने पूछा—कुज, विहारी क्या करता है?

कुजने कहा—अपना काम छोडकर और सब करता है। नायब और गुमाश्ते उसके इलाकेको देखते हैं, लेकिन किस दृष्टिसे देखते हैं यह मैं ठीक नहीं कह सकता। विहारीका हमेशासे यही हाल है। उसका निजका काम और लोग करते हैं और वह दूसरोंका काम करता फिरता है।

गौरीने कहा—अच्छा कुज, क्या वह ब्याह नहीं करेगा?

कुजने जरा हँसकर कहा—कहाँ, कुछ उद्योग तो नहीं देख पडता।

इस बातसे गौरीके हृदयमें चोट लगी। चुन्नीको देखकर विहारी बड़े उत्साह और आग्रहके साथ ब्याह करनेके लिए उद्यत हुआ था मगर अकस्मात् अन्याय करके उसका हौसला तोड़ डाला गया। विहारीने उस समय कहा—चाची, अब मुझसे ब्याह करनेके लिए कभी अनुरोध न करिएगा। वही व्यथा-भरी बात गौरीको याद आ गई। वह एकान्त अनुगत और प्रिय-पुत्रके समान विहारीको उसी अवस्थामें छोड़कर चली आई—उसके हताश भग्न हृदयको कुछ भी सान्त्वना न दे सकी। गौरी अत्यन्त उदासी और भयके साथ सोचने लगी—क्या विहारी अभीतक करुणाको नहीं भूल सका?

कुजने कभी हँसते हँसते और कभी गभीर होकर अपने और करुणाके सम्बन्धकी बहुत-सी बातें कह डालीं। केवल मायाकी कोई चर्चा नहीं की।

आजकल कालेज खुला हुआ था। पढनेका हर्ज करके कुज काशी गया था, इस कारण कुज बहुत दिनोंतक रह नहीं सकता था। मगर कठिन रोग भोगनेके बाद स्वास्थ्य सुधारनेवाली अब-हवामें रहकर आरोग्य-लाभ करनेमे जो सुख होता है, वही सुख कुजको काशीमें चाचीके पास मिल रहा था। इसीसे एक एक करके कई दिन बीत गये। उसके मन और बुद्धिके बीच जो एक प्रकारका विरोध हो चला था, वह भी देखते-ही-देखते दूर हो गया। कई दिनतक सब समय धर्मपरायण चाचीकी पवित्र मूर्ति देखने और उसकी शान्तिदायक बातें सुननेसे कुजको ससारके कर्तव्योंका पालन ऐसा सहज और सुखपरिपूर्ण जान पडने लगा कि उसके चित्तमें जो एक प्रकारका आतङ्क उपस्थित हुआ था उसे याद कर वह हँसने लगा। उसने सोचा—माया कुछ भी नहीं है!—यहाँतक कि उसे अपने मनो-मुकुरमें मायाकी परछाहीं भी साफ न देख पड़ी। अन्तको कुजने बडे विश्वास और दृढताके साथ अपने मनमें कहा—मेरे हृदयमें करुणाका जो स्थान है उसे वहाँसे बाल-भर भी हटा देनेवाला आदमी मुझे ससारमें कोई नहीं देख पडता।

कुजने गौरीसे कहा—चाची, पढनेका हर्ज होता है, अब जानेकी आज्ञा दीजिए। बन सका तो फिर कभी आकर दर्शन करूँगा।

कुंजने घर आकर जब करुणाको उसकी मौसीका दिया हुआ स्नेहका उपहार—एक सेंदुरका डब्बा और चूड़ियोंका जोड़ा—दिया, तब उसकी आँखोंसे झरझर करके आँसू गिरने लगे। अपनी मौसीके परमस्नेहमय धैर्यकी ओर मौसीपर अपने और अपनी सासके कारण होनेवाले उपद्रवकी याद आ जानेसे करुणाका हृदय व्याकुल हो उठा। उसने अपने स्वामीसे कहा—मेरी बड़ी इच्छा होती है कि मैं भी एक बार मौसीको देख आऊँ। क्या यह किसी तरह नहीं हो सकता?

कुंजको करुणाकी मर्म-वेदना विदित हो गई और कुछ दिनके लिए उसे उसकी मौसीके पास भेजनेको वह राजी भी हो गया, परन्तु कालेजकी पढ़ाईका हर्जकर करुणाको काशी पहुँचा देनेके लिए वह हामी न भर सका।

करुणाने कहा—मेरी चाची भी तो कुछ दिनोंके लिए काशी जानेवाली हैं, उनके साथ जानेमें कोई हर्ज है?

कुंजने लक्ष्मीसे जाकर कहा—मा, चुन्नी अपनी चाचीको देखनेके लिए काशी जानेको कहती है।

लक्ष्मीने तानेके साथ कहा—वह जाना चाहती है तो जरूर जायगी। जाओ, उसको ले जाओ।

कुंजने फिर चाचीके पास आना-जाना शुरू कर दिया—यह लक्ष्मीको अच्छा नहीं लगा। बहूके जानेकी बात सुनकर वह और भी भीतर-ही-भीतर चिढ़ गई।

कुंजने कहा—मुझे कालेज जाना है, मैं पहुँचाने जा न सकूँगा, वह अपने चाचाके साथ जायगी।

लक्ष्मीने कहा—यह तो और भी अच्छी बात है। वे लोग बड़े आदमी हैं, वे भी हम ऐसे गरीबोंकी राह नहीं चलते, साथ जानेसे तो हमारा गौरव बढ़ेगा ही।

इस निरन्तर व्यंग-वर्षासे कुंजका मन और भी कठिन होकर माँसे फिर गया। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया, वह मन ही मन करुणाको काशी भेजनेका इरादा पक्का करके चला गया।

इसके बाद बिहारी जब लक्ष्मीसे मिलने आया तब उसने कहा—अरे बिहारी, सुना, बहूने काशी सिधारनेकी ठानी है।

बिहारीने कहा—क्या कहती हो मा, कुंज दादा पढ़ाईका हर्ज करके फिर काशी जायँगे?

लक्ष्मीने कहा—ना—न, कुंज क्यों जायगा? वह जायगा तो बीबीजानकी [illegible] पहरेदार बैठे हैं। वह यहीं रहेगा और उसकी बहू चाचाके साथ काशी जायगी। आज कलके लड़के और लड़कियाँ 'मर्द' 'बीबी' बन बैठे हैं।

बिहारी भीतर-ही-भीतर घबरा उठा। उसका बकवाद आजकलके मर्दों और बीबियोंको पसन्द आनेके लिए नहीं था। वह सोचने लगा—मामला क्या है? क्या कुंज

काशी गया तब करुणा यहाँ रही, और जब कुंज यहाँ आया तो करुणा काशी जानेके लिए तैयार है। दोनोंके बीचमें कोई बड़ी घटना हो गई है। मगर इस तरह कितने दिन चलेगा ? मित्र होकर भी क्या मैं इसका कोई उपाय नहीं कर सकता ? क्या मैं दूरसे खड़े खड़े देखनेके सिवा और कुछ न कर सकूँगा ?

माताके आजके बर्तावसे कुंजको बहुत ही क्षोभ हुआ, वह अपने सोनेके कमरेमें आकर बैठा। इधर माया कुंजसे नहीं मिली इसीसे करुणा उसे पासवाले कमरेमें कुंजके पास ले आनेकी चेष्टा करने लगी।

इसी समय बिहारीने आकर कुंजसे पूछा—बहूका काशी जाना क्या ठीक हो गया?

कुंजने कहा हाँ उसमें रुकावट ही क्या है ?

बिहारीने कहा—रुकावटकी बात कौन कहता है ? मगर एकाएक यह बात क्यों सूझी ?

कुंजने कहा—मौसीको देखनेकी इच्छा। प्रवासी आत्मीयसे मिलनेके लिए व्याकुल होना, क्या कोई विचित्र बात है ?

बिहारीने कहा—तुम साथ जाते हो ?

प्रश्न सुनकर ही कुंज समझ गया, बिहारी इसी बातकी अलोचना करने आया है कि चाचाके साथ करुणाको काशी भेजना उचित नहीं है। बहुत बातें कहनेसे क्रोधका वेग बढ न जाय, इसी लिए बहुत सक्षेपमें कुंजने कहा—नहीं।

बिहारी कुंजको अच्छी तरह जानता था। उसका भीतर ही-भीतर क्रोध करना बिहारीसे छिपा नहीं रहा। यह भी बिहारीको अच्छी तरह मालूम था कि कुंज जिस बातके लिए हठ करता है उस बातको करके ही छोडता है—उसके विचारको बदल देना सहज काम नहीं है। इसीसे बिहारीने कुंजके जानेके बारेमें और कुछ नहीं कहा। उसने सोचा—अगर बेचारी करुणा किसी व्यथासे ही काशी जाती है तो उसके साथ मायाके जानेसे उसे बहुत कुछ ढाढस होगा। इसीसे धीरे धीरे बिहारीने कहा—अच्छा, अगर बहूके साथ बडी बहू जायँ तो कैसा होगा ?

सुनतेही कुंजने गरज कर कहा—बिहारी, तुम अपने मनकी बात साफ खोल करके क्यों नहीं कहते ? मेरे साथ छल-कपट करनेकी जरूरत ही क्या है ? मैं जानता हूँ। तुमको सन्देह हुआ है कि मैं मायाको चाहने लगा हूँ। मगर यह झूठी बात है। मैं उसे कभी नहीं चाहता। मेरी रक्षाके लिए तुम्हारे पहरा देनेकी कोई जरूरत नहीं है। तुम पहले जाकर अपनी रक्षा करो। अगर तुम्हारे हृदयमें सरल मित्रताका भाव होता तो तुम बहुत दिन पहले ही मुझसे अपने मनकी बात साफ कह देते और अपनेको मित्रके अन्त.पुरसे बहुत दूर ले जाते। मैं तुम्हारे मुँहपर साफ साफ कहे देता हूँ, तुम करुणाको चाहते हो।

जैसे बहुत ही दुखते हुए अंगपर किसीका भरपूर पैर पड़ जानेपर चोट खाया हुआ आदमी बिना सोचे-विचारे उसी दम जोरसे धक्का देकर उसे हटानेकी चेष्टा

करता है, वैसे ही व्याकुल बिहारी कुर्सीसे उठकर कुजकी तरफ झपटा—मगर फिर समझकर रुक गया। उस समय उसकी विचित्र दशा थी, क्रोधके वेगको रोकनेसे आँखोंमे आँसू भरे थे, खेदसे चेहरा बिल्कुल उतरा हुआ था।

बिहारी बड़े कष्टसे केवल इतना ही कहकर कुजके कमरेसे बाहर हो गया कि 'ईश्वर तुमको क्षमा करे, मै जाता हूँ।' कुजके कमरेसे सटे हुए कमरेमे माया थी। वहीं करुणा भी थी। मायाने जल्दीसे बाहर निकल कर कहा—बिहारी बाबू!

बिहारीने दीवारका सहारा लेकर कुछ हँसनेकी चेष्टा करते हुए कहा—क्यों बड़ी बहू?

मायाने कहा—बिहारी बाबू, आँखकी किरकिरीके साथ मै भी काशी जाऊँगी।

बिहारीने कहा—ना ना, बड़ी बहू यह न होगा। किसी तरह न होगा। मै हाथ जोड़ता हूँ—मेरे कहनेसे तुम कोई भी काम न करना। मै यहाँका कोई नहीं हूँ। मै यहाँकी किसी बातमे हाथ डालना नहीं चाहता। मेरे हाथ डालनेसे अच्छा न होगा। तुम देवी हो जो अच्छा समझो वही करो। मै जाता हूँ।

इतना कहकर बिहारी आगे बढ़ा। मायाने कहा—बिहारी बाबू, मै देवी नहीं हूँ सुने जाओ। तुम्हारे चले जानेसे किसीकी भलाई न होगी, फिर मुझे दोष न देना।

बिहारी चला ही गया। कुज अपने कमरेमे बैठा था। माया, कुजके ऊपर, वज्र सरीखा कठिन अग्निमय कटाक्ष बाण छोड़कर अपने कमरेमे चली गई। उस कमरेमे करुणा लज्जा और सकोचके मारे मरी जाती थी। बिहारी उसे चाहता है यह बात कुजके मुखसे सुनकर करुणाको लज्जाके मारे सिर उठाना भारी हो गया। किन्तु उसकी यह दशा देखकर मायाको उसपर कुछ भी दया न आई। उस समय अगर करुणा सिर उठाकर मायाकी तरफ देखती तो अवश्य डर जाती। मायाके ऊपर जैसे खून सवार हो गया था। उसने अपने मनमे कहा—कैसी बात है, मुझे कोई नहीं चाहता और इस दुधमुँही अल्हड़ छोकरीको सभी चाहते हैं।

काशी गया तब करुणा यहाँ रही, और जब कुंज यहाँ आया तो करुणा काशी जानेके लिए तैयार है। दोनोंके बीचमें कोई बड़ी घटना हो गई है। मगर इस तरह कितने दिन चलेगा? मित्र होकर भी क्या मैं इसका कोई उपाय नहीं कर सकता? क्या मैं दूरसे खड़े खड़े देखनेके सिवा और कुछ न कर सकूँगा?

माताके आजके बर्तावसे कुंजको बहुत ही क्षोभ हुआ, वह अपने सोनेके कमरेमें आकर बैठा। उधर माया कुंजसे नहीं मिली इसीसे करुणा उसे पासवाले कमरेसे कुंजके पास ले आनेकी चेष्टा करने लगी।

इसी समय बिहारीने आकर कुंजसे पूछा—बहूका काशी जाना क्या ठीक हो गया?

कुंजने कहा—हाँ, इसमें रुकावट ही क्या है?

बिहारीने कहा—रुकावटकी बात कौन कहता है? मगर एकाएक यह बात क्यों सूझी?

कुंजने कहा—मौसीको देखनेकी इच्छा। प्रवासी आत्मीयसे मिलनेके लिए व्याकुल होना, क्या कोई विचित्र बात है?

बिहारीने कहा—तुम साथ जाते हो?

प्रश्न सुनकर ही कुंज समझ गया, बिहारी इसी बातकी आलोचना करने आया है कि चाचाके साथ करुणाको काशी भेजना उचित नहीं है। बहुत बातें कहनेसे क्रोधका वेग बढ न जाय, इसी लिए बहुत संक्षेपमें कुंजने कहा—नहीं।

बिहारी कुंजको अच्छी तरह जानता था। उसका भीतर ही-भीतर क्रोध करना बिहारीसे छिपा नहीं रहा। यह भी बिहारीको अच्छी तरह मालूम था कि कुंज जिस बातके लिए हठ करता है उस बातको करके ही छोडता है—उसके विचारको बदल देना सहज काम नहीं है। इसीसे बिहारीने कुंजके जानेके बारेमें और कुछ नहीं कहा। उसने सोचा—अगर बेचारी करुणा किसी व्यथासे ही काशी जाती है तो उसके साथ मायाके जानेसे उसे बहुत कुछ ढाढस होगा। इसीसे धीरे धीरे बिहारीने कहा—अच्छा, अगर बहूके साथ बड़ी बहू जायँ तो कैसा होगा?

सुनतेही कुंजने गरज कर कहा—बिहारी, तुम अपने मनकी बात साफ खोल करके क्यों नहीं कहते? मेरे साथ छल-कपट करनेकी जरूरत ही क्या है? मैं जानता हूँ। तुमको सन्देह हुआ है कि मैं मायाको चाहने लगा हूँ। मगर यह झूठी बात है। मैं उसे कभी नहीं चाहता। मेरी रक्षाके लिए तुम्हारे पहरा देनेकी कोई जरूरत नहीं है। तुम पहले जाकर अपनी रक्षा करो। अगर तुम्हारे हृदयमें सरल मित्रताका भाव होता तो तुम बहुत दिन पहले ही मुझसे अपने मनकी बात साफ कह देते और अपनेको मित्रके अन्तःपुरसे बहुत दूर ले जाते। मैं तुम्हारे मुँहपर साफ साफ कहे देता हूँ, तुम करुणाको चाहते हो।

जैसे बहुत ही दुखते हुए अंगपर किसीका भरपूर पैर पड़ जानेपर चोट खाया हुआ आदमी बिना सोचे-बिचारे उसी दम जोरसे धक्का देकर उसे हटानेकी चेष्टा

करता है, वैसे ही व्याकुल विहारी कुर्सीसे उठकर कुजकी तरफ झपटा—मगर फिर सँभलकर रुक गया। उस समय उसकी विचित्र दशा थी, क्रोधके वेगको रोकनेसे आँखोंमे आँसू भरे थे, खेदसे चेहरा बिल्कुल उतरा हुआ था।

विहारी बड़े कष्टसे केवल इतना ही कहकर कुजके कमरेसे बाहर हो गया कि 'ईश्वर तुमको क्षमा करे, मै जाता हूँ।' कुजके कमरेसे सटे हुए कमरेमे माया थी। वहीं करुणा भी थी। मायाने जल्दीसे बाहर निकल कर कहा—विहारी बाबू!

विहारीने दीवारका सहारा लेकर कुछ हँसनेकी चेष्टा करते हुए कहा—क्यों बड़ी बहू?

मायाने कहा—विहारी बाबू, आँखकी किरकिरीके साथ मै भी काशी जाऊँगी।

विहारीने कहा—ना ना, बड़ी बहू यह न होगा। किसी तरह न होगा। मै हाथ जोड़ता हूँ—मेरे कहनेसे तुम कोई भी काम न करना। मैं यहाँका कोई नहीं हूँ। मै यहाँकी किसी बातमें हाथ डालना नहीं चाहता। मेरे हाथ डालनेसे अच्छा न होगा। तुम देवी हो जो अच्छा समझो वही करो। मै जाता हूँ।

इतना कहकर विहारी आगे बढा। मायाने कहा—विहारी बाबू, मैं देवी नहीं हूँ सुने जाओ। तुम्हारे चले जानेसे किसीकी भलाई न होगी, फिर मुझे दोष न देना।

विहारी चला ही गया। कुज अपने कमरेमें बैठा था। माया, कुजके ऊपर, एक वज्र सरीखा कठिन अग्निमय कटाक्ष बाण छोड़कर अपने कमरेमे चली गई। उस कमरेमे करुणा लज्जा और सकोचके मारे मरी जाती थी। विहारी उसे चाहता है, यह बात कुजके मुखमे सुनकर करुणाको लज्जाके मारे सिर उठाना भारी हो गया। किन्तु उसकी यह दशा देखकर मायाको उसपर कुछ भी दया न आई। उस समय अगर करुणा सिर उठाकर मायाकी तरफ देखती तो अवश्य डर जाती। मायाके ऊपर जैसे खून सवार हो गया था। उसने अपने मनमें कहा—झूठी बात है, मुझे कोई नहीं चाहता और इस दुधमुँही अल्हड छोकरीको सभी चाहते हैं।

कुजने पहले तो जोशमें आकर उस दिन विहारीसे कह दिया कि 'मैं पातकी और नीच हूँ,' मगर तबीयत ठिकाने होनेपर विहारीके आगे अपनी मानसिक निर्बलता प्रकट हो जानेसे उसे रंज हुआ। उसे जान पड़ा जैसे उसकी सभी बातें प्रकट हो गईं। कुज मायाको चाहता नहीं है, मगर विहारी जानता है कि वह चाहता है, इससे विहारीके ऊपर कुज बहुत ही चिढ गया। विशेषकर तबसे जब जब विहारीका सामना होता था तब तब कुजको मालूम पड़ता था कि जैसे वह कुतूहलके साथ उसके हृदयकी किसी बातका पता लगा रहा है। भीतरी बुराई धीरे धीरे बढती जाती थी—आज जरा-सा आघात पाते ही वह बाहर निकल पड़ी।

किन्तु माया पासके कमरेसे जैसे व्याकुल भावसे दौड़ी आई, जैसी दीनताके साथ उसने विहारीसे न जानेका अनुरोध किया और उसकी बात रखनेके लिए वह चुन्नीके साथ काशी जानेको तैयार हो गई—उसकी कल्पना भी पहले कुंजने नहीं की थी। इस दृश्यने कुंजके हृदयपर एक गहरी चोट पहुँचाई, वह विकल हो उठा। कुंजने विहारीसे कह तो दिया कि मैं मायाको नहीं चाहता, किन्तु इस समय जो उसने देखा और सुना उससे वह सुस्थिर न रह सका। मायाने जो कुछ कहा और किया, उसपर जितना ही कुंज गौर करने लगा उतना ही उसे कष्ट पहुँचने लगा। और केवल निष्फल सन्तापके साथ उसे यह भी खयाल होने लगा कि मायाने मेरे मुँहसे सुन लिया कि मैं उसे नहीं चाहता।

❦ ❦ ❦ ❦

तेईसवाँ परिच्छेद

कुंज सोचने लगा—मैंने कहा कि झूठ बात है, मैं माया को नहीं चाहता। बात सच होनेपर भी कड़ी लगनेवाली है। मैं, मान लो, उसको नहीं ही चाहता, लेकिन 'मैं नहीं चाहता,' यह बात बड़ी कड़ी और कठोर है। ऐसी स्त्री कौन होगी जिसे यह बात न लगे? इस बातका प्रतिवाद करनेका अवसर कब, कहाँ और कैसे मिलेगा? यह तो ठीक कहा नहीं जा सकता कि मैं चाहता हूँ, किन्तु 'नहीं चाहता' यह बात अगर घुमा-फिराकर, ऐसे ढँगसे जिसमें बुरा न लगे, कही जाती तो अच्छा होता। मायाके चित्तमें ऐसी एक निष्ठुर और असत्य धारणा न रहने देनी चाहिए।

इतना सोचकर कुंजने अपने बाक्ससे उन तीनों चिट्ठियोंको, जो मेसमें मिली थीं, निकालकर फिर एक बार पढ़ा। वह मनमें कहने लगा—इसमें कोई सन्देह नहीं कि माया मुझे चाहती है। मगर वह कल विहारीके पास क्यों दौड़ी हुई गई? जरूर उसने मुझसे चिढ़कर मुझे चिढ़ाने और दिखानेके लिए ऐसा किया। जब मैंने स्पष्ट कह दिया कि मैं उसे नहीं चाहता, तब वह भी अवश्य मुझे न चाहेगी। इस तरह मुझसे अपमान पाकर अगर वह विहारीको चाहने लगे तो भी कोई आश्चर्य नहीं है।

यह सोचकर कुंजका क्षोभ इतना बढ़ा कि अपनी चंचलता देखकर वह आप ही विस्मित और भयभीत हो उठा। वह विचार करने लगा—मान लो, मायाने सुन ही लिया कि मैं उसे नहीं चाहता तो उसमें दोष ही क्या है? अगर मेरे न चाहनेकी बात सुनकर माया मेरी तरफसे विमुख होनेकी चेष्टा करेगी, तो उसमें हानि ही क्या है? आँधीके समय नावकी जंजीर जैसे लंगरको खींचकर

पकड़ लेती है, या डूबता हुआ आदमी अपने पासकी चीजको भरजोर पकड़ लेता है, वैसी ही व्याकुलताके साथ कुंज करुणाको यथाशक्ति अपने हृदयमें लाकर रखनेकी चेष्टा करने लगा।

रातको करुणाको छातीसे लगाकर कुंजने पूछा—चुन्नी, ठीक बतलाओ तुम मुझे कितना चाहती हो? कितना प्रेम करती हो?

करुणाने मनमें सोचा—यह कैसा प्रश्न है? बिहारीको लेकर दिनको जो अत्यन्त लज्जाजनक बात् उठी थी, उसीसे तो यह प्रश्न नहीं हुआ है? क्या मुझपर भी कुछ सन्देह है?

करुणा यह सोचकर लज्जाके मारे जैसे मर गई। उसने कहा—छी छी, आज तुमने ऐसा प्रश्न क्यों किया? मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, मुझसे खुलासा कहो—तुमने क्या कभी मेरे प्रेममें किसी तरहकी कमी पाई है?

कुंजने करुणाके मुखसे उसके प्रेमका विशेष प्रमाण पानेकी इच्छासे कहा—तो फिर तुम काशी क्यों जाना चाहती हो?

करुणाने जल्दीसे कहा—मैं काशी नहीं जाना चाहती, मैं कहीं न जाऊँगी।

कुंजने कहा—उस समय तो तुमने मेरे आगे काशी जानेकी इच्छा प्रकट की थी?

करुणाने बहुत ही व्यथित होकर दीन-भावसे कहा—तुम क्या जानते नहीं कि क्यों जाना चाहती थी?

कुंजने कहा—मुझे छोड़कर मौसीके पास शायद तुम अधिक सुख और चैनसे रह सकोगी।

करुणाने कहा—कभी नहीं, मैं सुख या चैनके लिए नहीं जाना चाहती।

कुंजने कहा—मैं सच कहता हूँ चुन्नी, अगर तुम्हारा और किसीसे ब्याह होता तो तुम अबसे अधिक सुखी हो सकती।

यह सुनकर पतिव्रता बालिका करुणाने अभिमान और क्षोभके मारे कुंजकी गोदसे हटकर तकियेमें मुँह छिपा लिया और दम-भरके बाद ही वह बड़े जोरसे फूल-फूलकर रोने लगी। कुंजने उसे सान्त्वना देनेके लिए गोदमें उठा लेनेकी चेष्टा की, मगर उसने तकियेको नहीं छोड़ा। पतिव्रताके इस अभिमानसे कुंजके हृदयमें सुख, गर्व और धिक्कारकी हलचल मच गई।

जो बातें अभी तक भीतर भीतर आभास-रूपमें थीं, उन्होंने एकाएक स्पष्ट रूपसे बाहर निकलकर सबको चंचल और व्यग्र कर दिया। माया अपने मनमें सोचने लगी—'अच्छा माना कि बिहारी करुणाको नहीं चाहता, मगर जब कुंजने उसके सामने स्पष्ट कहकर उसपर दोषारोप किया, तो बिहारीने उसका प्रतिवाद क्यों नहीं किया?'

अगर बिहारी मिथ्या प्रतिवाद करता, तो भी माया कुछ खुश होती। अच्छा

हुआ, कुजने बिहारीको चोट पहुँचाई तो उचित ही किया। फिर मायाने कहा—'बिहारी बड़ा सच्चा और धर्मात्मा है, वह पराई स्त्री करुणाको कभी नहीं चाहता होगा।—अच्छा, इस चोटसे बिहारी दूर चला गया तो अच्छा ही हुआ। मैं निश्चिन्त हुई।'

मगर बिहारीका वह विवर्ण मुर्देका ऐसा उतरा हुआ चेहरा मायाको किसी तरह न भूला, हर घड़ी हर काममें आँखोंके आगे फिरने लगा! मायाके भीतर जो सेवा निरत नारीकी मूर्ति थी, वह उस आर्त्त भग्नको स्मरण कर व्याकुल होने लगी। जैसे मा रोगी बच्चेको गोदमें लेकर घरमें इधर-उधर बहलाती है वैसे ही माया उस आतुर मूर्तिको हृदयमें रखकर घरका काम-काज करती फिरती थी। बिहारीको स्वस्थ और प्रसन्न कर फिर उस सरल सुन्दर मुखपर गुलाबी झलक, सजीवता और मुसकान देखनेके लिए मायाकी इतनी उत्सुकता हुई कि वह अधीर हो उठी।

दो तीन दिन तक हर घड़ी इस तरह व्यग्र रहनेके उपरान्त मायासे नहीं रहा गया। उसने बिहारीको सान्त्वना देनेके लिए चिट्ठी लिखी। उसने लिखा—

'बिहारी बाबू, उस दिन तुम्हारा उदास उतरा हुआ चेहरा देखकर मुझे बड़ा कष्ट हुआ। मैं तबसे यही मना रही हूँ कि तुम स्वस्थ होओ, जैसे थे वैसे होओ।—वह सहज हँसीकी रेखा फिर कब देखूँगी? वह उदार मधुर बातचीत कब सुनूँगी? तुम कैसे हो, दो लाइनें लिखकर भेज देना।

—तुम्हारी बड़ी बहू।'

मायाने महाराजके हाथसे चिट्ठी बिहारीके मकानपर भेज दी।

'बिहारी करुणाको चाहता है,' यह बात, इस तरह, ऐसे निन्दित ढंगसे कुज कह सकेगा—इस तरहकी कल्पना भी कभी बिहारी नहीं कर सकता था क्योंकि वह आप भी कभी इस तरह स्पष्ट करके ऐसी बातको अपने मनमें न लाया था। पहले तो वह वैसे ही रह गया जैसे किसीपर वज्र गिर पड़े, उसके बाद क्रोध और घृणासे छटपटाकर कहने लगा—अन्याय है, असगत है, अमूलक है।

लेकिन बात जब उठी है तो वह बिल्कुल मेटी नहीं जा सकती। उसमें जो कुछ सत्यका बीज था वह देखते-ही-देखते अकुरित हो उठने लगा। उस दिन जब बिहारी कुजके साथ कन्या देखने गया था और वहाँ उसने सूर्यास्तके समय, बागके ताजे खिले हुए फूलोंकी सुगन्धसे सनी हुई वायुके प्रवाहमें, लज्जा-सकोचसे भरी बालिकाका जो सुन्दर सुकुमार मुख बिल्कुल अपना ही समझकर उमगे हुए अनुरागकी दृष्टिसे एक बार देखा लिया था वही उसे बार बार याद आने लगा। उसकी छातीपर जैसे किसीने भारी बोझा रख दिया, एक अत्यन्त कठिन पीड़ा उसके हृदयको मथने लगी। आजतक जो प्रकट न था वह, छतपर बहुत रात बीते तक पड़े पड़े सोचते सोचते और दर्वाजेपर धीरे धीरे टहलते, बिहारीके हृदय-दर्पणमें स्पष्ट रूपसे दिखाई देने लगा। जो अबतक दबा हुआ था वह उमड़ पड़ा।

अपने पास भी जिसका कोई प्रमाण न था वह कुंजके कहनेसे विराट्रूप धारण कर विहारीके भीतर-बाहर व्याप्त हो गया।

तब विहारीने अपनेहीको अपराधी समझा। अपने मनमें कहा-- अब तो मुझे क्रोध करना सोहता नहीं, एक बार कुजसे क्षमा-प्रार्थना करके फिर उस घरका आना-जाना छोड़ना ठीक होगा। उस दिन मैं इस तरह बिगडकर चला आया जैसे कुज दोषी है और मैं विचारक हूँ।—अपनी यह गलती मैं कुजके आगे स्वीकार कर आऊँगा।

विहारी जानता था कि करुणा काशी चली गई होगी। एक दिन वह संध्याके समय धीरे धीरे टहलता हुआ कुजके दर्वाजेपर आया। लक्ष्मीके, दूरके, नातेके, मामा दीनानाथ बाहर बैठे हुक्का पी रहे थे। उनको देखकर विहारीने पूछा—सब कुशल तो है?

दीनानाथने कहा—हाँ सब कुशल है।

विहारीने कहा—बहू काशी कब गई?

दीनानाथने कहा—वे नहीं गई और न जायँगी।

यह सुनते ही विहारीका मन दुष्ट घोडेकी तरह दबाव न मानकर भीतर चलनेके लिए मचलने लगा। पहले वह जैसे सहज भावसे आनन्दके साथ आत्मीयकी तरह खटाखट सीढियाँ नाँघकर बे-खटके भीतर चला जाता था, या सबके साथ हँसकर बात-चीत कर आता था—कुछ भी संकोच न होता था—वैसे जाना और हँसना-बोलना आज अनुचित और दुर्लभ जानकर ही उसका मन पागलसा हो गया और एक बार, केवल एक ही बार, वैसे ही भीतर जाकर घरके लडकेकी तरह लक्ष्मीसे कुछ बातचीत करना,—घूँघट काढे हुए करुणाको बहू कहकर दो एक सरल हँसी-ठिठ्ठगीकी बातें कह आना—विहारीके लिए परम प्रार्थनीय हो उठा। दीनानाथने कहा—यहाँ अँधेरेमें क्यों खडे हो, भीतर चलो।

विहारी भीतर घुसकर कुछ दूर गया और फिर लौट आया। वह दीनानाथसे यह कहकर कि—'जाता हूँ, एक जरूरी काम याद आ गया,' जल्दीसे चल दिया।

जो महाराज मायाकी चिट्ठी लेकर गया था वह मकानपर विहारीको न पाकर चिट्ठी लौटा गया। उस समय कुज डयोढीके सामने चमनमें टहल रहा था। उसने महाराजसे पूछा—किसकी चिट्ठी है? महाराजने सब कह दिया। कुजने उससे चिट्ठी ले ली।

कुजने पहले सोचा कि यह चिट्ठी लेकर मायाके हाथमें दूँगा—अपराधिनी मायाके शरमाये हुए मुखको एक बार देख आऊँगा— कुछ कहूँगा नहीं। उसे निश्चय था कि इस चिट्ठीमें मायाके लज्जित होनेकी बात जरूर है। उसको याद आया कि पहले भी तो विहारीके नामसे एक ऐसी ही चिट्ठी गई थी। अब,— चिट्ठीमें क्या लिखा है—यह जाने बिना कुजसे किसी तरह रहा नहीं गया। उसने

मनको समझाया कि माया मेरी देख-रेखमें है, उसकी भलाई-बुराईका मैं जिम्मेदार हूँ, इसलिए ऐसा सन्देह-जनक पत्र खोलकर देखना ही मेरा कर्तव्य है। मैं किसी तरह मायाको बुरी राहपर न जाने दूँगा।

कुजने वह छोटीसी चिट्ठी खोलकर पढ़ी। वह चिट्ठी सहज स्वभावसे सरल भाषामें लिखी हुई थी—इस कारण उसमें सच्ची सहानुभूति और व्यग्रता साफ झलक रही थी। चिट्ठीको कुजने बार बार पढ़ा और सोचा। बहुत देर तक सोचकर भी वह यह ठीक न कर सका कि मायाके मनकी गति किस तरफ है। उसे केवल यही आशंका होने लगी कि 'मैं नहीं चाहता' कहकर मैंने मायाका अनादर किया, इसीसे चिढ़कर या कुढ़कर माया मेरी तरफसे मनको हटाकर दूसरी तरफ लगानेकी चेष्टा कर रही है। उसने खिन्न होकर मेरी आशा एकदम छोड़ दी है।

यह खयाल आते ही कुजके लिए धैर्यकी रक्षा करना एकदम असम्भव हो उठा। जो माया मेरे पास अपने आप आत्म-समर्पण करने आई थी वही मेरी एक मिनटकी मूर्खताके कारण मेरे हाथसे निकल जायगी—इस खयालने कुजको बावला बना दिया।

कुजने अपने मनमें कहा—माया अगर मन-ही- मन मुझे चाहती या स्नेह करती है तो यह उसके लिए भला है, वह एक जगह मन लगाकर बहली रहेगी। मैं अपने मनको जानता हूँ। मैं कभी उससे कोई अनुचित व्यवहार नहीं कर सकता। वह बे-खटके मुझे प्यार कर सकती है। मैं करुणाको प्यार करता हूँ, इसलिए मुझसे उसे कोई भय नहीं है। मगर जो वह किसी और तरफ बहक जायगी तो उसका सर्वनाश होना, असभव नहीं बल्कि, सहज है।

कुजने निश्चय कर लिया कि खुद बचे रहकर मायाको फिरसे अपनी ओर आकृष्ट कर लेना ही अच्छा है।

कुजने भीतर जाते ही देखा, राहमें खड़ी हुई माया जैसे किसीके आनेकी राह देख रही है। देखते ही उसके हृदयमे ईर्षा-द्वेषकी आग जल उठी। उसने कहा —'अजी यहाँ व्यर्थ खड़ी हो, मुलाकात न होगी। यह तुम्हारी चिट्ठी लौट आई है।' यों कहकर कुजने चिट्ठी मायाको दे दी।

मायाने कहा—इसे खोला किसने ?

कुज कुछ जवाब न देकर चला गया। मायाने समझा बिहारीने चिट्ठी खोलकर पढ ली है और फिर कोई जवाब न देकर वैसे ही लौटा दी है। मायाके बदनमें जैसे आग लग गई। जो महाराज चिट्ठी लेकर गये थे उनको बुला भेजा, किसी कामको गये थे डयोढीपर नहीं मिले। जैसे जलते चिरागकी बत्तीसे तेलकी बूँद टपकती है वैसे ही बद कमरेमे बैठी हुई मायाकी आँखोंसे ज्वालामय आँसू टप टप गिरने लगे। उसने नोंचकर अपनी चिट्ठीके टुकड़े टुकडे कर डाले, मगर किसी तरह उसके हृदयकी ज्वाला शान्त न हुई। उन स्याहीकी दो-चार लाइनोंको

'अतीत' और 'वर्तमान' से एकदम मिटा डालनेका—न रखनेका—कोई उपाय नहीं है ? जब मधुमक्खी क्रोध करती है तब जिसे सामने पाती है उसे ही काट खाती है। वैसे ही क्रोधसे नागिनकी तरह फुफकारती हुई माया भी कुजके घरमें आग लगानेके लिए तैयार हो गई। वह जो चाहती है उसीमें बाधा पड़ती है। किसी काममें, किसी तरह, क्या वह सफलता न प्राप्त कर सकेगी ? अच्छा, अगर उसे सुख नहीं मिला तो फिर जिन्होंने उसके सब सुखोंमें बाधा डाली, उसे कृतार्थ नहीं होने दिया और सब सम्भव सम्पत्तियोंसे वञ्चित कर दिया, उन्हें वह सुखी कृतार्थ और सब प्रकार सम्पन्न क्यों रहने देगी ? मायाने उन्हें परास्त कर बदला चुकाना ही अपने व्यर्थ जीवनका कर्तव्य मान लिया।

❦ ❦ ❦

चौवीसवाँ परिच्छेद

फागुनका महीना शुरू हुआ, नव-वसन्तकी हवा चलने लगी। बहुत दिनोंके बाद आज करुणा छतपर पलँगके ऊपर बैठी हुई, एक मासिक-पत्रको लिये हुए, उसमें क्रमशः प्रकाशित होनेवाली, एक कहानी खूब मन लगाकर पढ रही है। करुणाने पढा कि नायक बहुत दिनोंके बाद बड़े दिनकी छुट्टियोंमें अपने घर जा रहा था, राहमें डाकुओंने उसे पकड़ लिया। करुणाका कलेजा काँप उठा। उसने आगे पढा कि इधर नायिका ठीक उसी समय बुरा सपना देखकर रोती हुई जाग पड़ी। करुणाकी आँखोंसे आँसू बह चले। करुणा हिन्दीकी कहानियोंकी अत्यन्त उदार समालोचना करनेमें अद्वितीय थी। जो पढती थी वही उसे बहुत अच्छी जान पड़ती थी। पढते पढते मायाको बुलाकर कहती थी—बहिन, तुम्हें मेरे सिरकी कसम, वह कहानी जरूर पढ डालो, ऐसा सुन्दर उपन्यास है कि पढते पढते मेरे तो आँसू रोके नहीं रुकते। किन्तु माया भले बुरेका विचार करती थी, गुण-दोष निकालती थी। उससे करुणाके उच्छ्वसित उत्साहको बड़ा भारी धक्का लगता था।

करुणाने आजकी कहानी कुजको पढनेके लिए देनेका निश्चय कर जैसे ही मासिक-पत्रको रक्खा वैसे ही कुंज आ पहुँचा। कुजको देखते ही करुणा उत्कंठित हो उठी। कुजने चिन्तित होकर अपनी चिन्ता छिपानेके लिए कुछ हँसनेकी चेष्टा करके कहा—अकेली छतपर किस भाग्यशालीकी चिन्तामें बैठी हो ?

करुणा कहानीके नायक-नायिकाकी बात बिल्कुल भूल गई। उसने कहा—आज तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं है क्या ?

कुजने कहा— तबियत तो अच्छी है।

करुणाने कहा—तो तुम भीतर ही भीतर क्या चिन्ता किया करते हो ? बात क्या है ?

कुंजने करुणाके गिलोरी-दानसे एक पान खाकर कहा—मैं यही सोचता हूँ कि तुम्हारी मौसी बेचारीने कितने दिनोंसे तुमको नहीं देखा। एक बार एकाएक अगर तुम उनके पास जाकर खड़ी हो जाओगी तो वे बहुत ही खुश होंगी।

करुणा कुछ जवाब न देकर कुजकी तरफ ताकती रही। आज फिर यह बात कुजने क्यों उठाई, सो वह कुछ नहीं समझ सकी।

करुणाको चुपचाप अपनी ओर ताकते देखकर कुजने कहा—क्या जानेको जी नहीं चाहता?

इस प्रश्नका उत्तर देना सचमुच बड़ा कठिन है। मौसीको देखनेके लिए जानेकी इच्छा होती है, मगर कुजको छोड़कर जानेको भी जी नहीं चाहता।

करुणाने कहा—जब कालेजमें छुट्टी होगी और तुम जा सकोगे, तब मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।

कुजने कहा—छुट्टियोंमें भी शायद मैं तो नहीं जा सकूँगा, परीक्षाके दिन आ गये हैं—छुट्टियोंमें भी घरपर पढना पड़ेगा।

करुणाने कहा— तो रहने दो, फिर देखा जायगा।

कुजने कहा—रहने क्यों दो, तुम्हारी जानेकी इच्छा थी— फिर जाती क्यों नहीं हो?

करुणाने कहा—नहीं, मुझे जानेकी इच्छा बिल्कुल नहीं है।

कुजने कहा—वाह, अभी तो उस दिन जानेके लिए बड़ी इच्छा थी, एकाएक वह इच्छा कहाँ चली गई?

करुणा इसका कुछ उत्तर नहीं दे सकी, चुपचाप आँखें नीचे कर बैठी रही। मायासे मेल करनेका विघ्न-बाधाहीन सुयोग पानेके लिए कुजका मन अत्यन्त उद्विग्न हो रहा था। करुणाको चुपचाप निरुत्तर बैठे देखकर उसे अकारण कुछ क्रोध हो आया। कुजने कहा—क्या तुम्हारे मनमें मेरे ऊपर कुछ सन्देह हुआ है? क्या इसीसे तुम मुझे अपनी आँखोंके आगे रखकर पहरा देना चाहती हो?

करुणाका स्वभाविक सकोच, नम्रता और धैर्य कुजको एकाएक अत्यन्त असह्य हो उठा। वह अपने मनमें कहने लगा—मौसीके पास जानेकी इच्छा है, फिर क्यों नहीं कहती कि जिस तरह हो मुझे भेज दो? यों न कहकर कभी हाँ, कभी न और कभी चुप—यह क्या बात है?

एकाएक कुजका ऐसा उग्र व्यवहार देखकर करुणाको विस्मय और भय हुआ। बहुत चेष्टा करनेपर भी उसे कोई उत्तर न सूझा। वह किसी तरह नहीं समझ सकी कि कुज कभी अत्यंत आदर क्यों करता है, और कभी अत्यत निठुर क्यों बन जाता है। इस प्रकार जितना ही कुज करुणाके लिए पहेलीकी तरह गूढ और दुर्ज्ञेय हो उठा उतना ही करुणाका कम्पित हृदय, भय और प्रेमके कारण, उसे अपनानेके लिए आकुल होने लगा।

कुजपर सन्देह करके करुणा उसे अपनी आँखोंके आगे रखकर पहरा देना चाहती है। यह कठिन उपहास है या निर्दय सन्देह है, यह बात हँसीमें उड़ा देनी चाहिए या सौगन्ध खाकर इसका प्रतिवाद करना उचित है? करुणा इसका कुछ निश्चय न कर सकी।

किं-कर्तव्य-विमूढ करुणाको फिर चुप बैठे देखकर कुंज बहुत ही अधीर हो उठा और जल्दीसे उठकर बाहर चला गया। तब न जाने कहाँ गया उस मासिक-पत्रकी कहानीका नायक और न जाने कहाँ गई उसकी नायिका। सूर्यास्तके समयकी आभा अन्धकारमें लीन हो गई, सन्ध्या-समयकी वसन्तकी हवा खूब ठडी होकर चलने लगी। - उस समय भी करुणा उसी पलगपर पडी लोट लोटकर रो रही थी।

अधिक रात बीतनेपर करुणाने सोनेके कमरेमें जाकर देखा, कुंज अकेला पड़ा सो रहा है। तब करुणाने सोचा—मैं अपनी स्नेहमयी मौसीकी तरफसे ऐसी उदासीन हूँ कि उन्हें देखने भी जाना नहीं चाहती, इसीसे मेरे ऊपर इन्हें घृणा हो आई है। सचमुच दोष मेरा ही है, इन्होंने जो किया सो ठीक ही किया। यों सोचकर करुणा धीरे धीरे बिछौनेके पास गई और जाते ही कुजके दोनों पैरोंसे लिपट गई। तब कुजसे रहा नहीं गया, उसने करुणाको उठाकर छातीके पास लानेकी चेष्टा की। मगर करुणाने पैर नहीं छोड़े। उसने कहा—मुझसे अगर कोई अपराध हुआ हो तो मुझे क्षमा करो।

कुजने स्नेह-गद्गद स्वरसे कहा—तुम्हारा कोई अपराध नहीं है चुन्नी, मैं ही बड़ा नीच हूँ, इसीसे तुमको अकारण कष्ट पहुँचाया करता हूँ।

तब करुणाकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह चली और उससे कुंजके पैर भीग गये। कुज व्याकुल होकर उठ बैठा, और उसने करुणाको दोनों हाथोंसे उठाकर अपने पास सुला लिया। करुणाका रोना बन्द हुआ, उसने कहा—मौसीको देखने जानेके लिए क्या मेरा जी नहीं चाहता? मगर तुमको छोड़कर जानेकी इच्छा नहीं होती। इसीसे मैं नहीं जाना चाहती, तुम इससे मुझपर क्रोध न करना।

कुंजने धीरे धीरे करुणाके गीले गुलाबी गालोंको पोंछते पोंछते कहा—भला यह क्रोध करनेकी बात है चुन्नी? मुझे छोड़कर तुम जा नहीं सकतीं, इसके लिए मैं क्रोध करूँगा! तुमको कहीं न जाना होगा।

करुणाने कहा—नहीं, मैं काशी जरूर जाऊँगी।

कुजने कहा—क्यों?

करुणाने कहा—जब तुम्हारे मुँहसे यह बात एक दफा निकल गई कि मैं अपने मनमें सन्देह करके नहीं जाती तब, कुछ ही दिनके लिए सही, मैं काशी जरूर जाऊँगी।

कुजने कहा—पाप मैंने किया, और उसका प्रायश्चित्त तुम करोगी?

करुणाने कहा—सो तो मैं नहीं जानती, मगर मुझसे जाने या बिना जाने कुछ न-कुछ पाप जरूर हुआ है। नहीं तो ऐसी असभव बातें उठती ही नहीं। जिन बातोंको मैंने सपनेमें भी नहीं सोचा था वे ही बातें क्यों सुनाई पड़ती है?

कुंजने कहा—इसका कारण यही है कि मैं कैमा अधम और बुरा आदमी हूं सो तुम नहीं जानतीं।

करुणाने व्यस्त होकर कहा—फिर वे ही बातें! मै तुम्हारे पैरों पड़ती हूं, मेरे आगे ऐसी बातें न करो।

कुज चुप हो रहा। करुणाने फिर कहा—मगर मैं इस बार काशी जरूर जाऊँगी।

कुजने हँसकर कहा—अच्छा जाओ, मगर मैं कहीं तुम्हारे पीछे बिगड़ गया तो क्या होगा?

करुणाने कहा—इसके लिए तुम्हें इतना भय दिखानेकी जरूरत नहीं है। इसकी चिन्ता किये बिना क्या मै व्याकुल हो रही हूँ?

कुजने कहा—लेकिन चिन्ता करना उचित है। तुम अगर अपने ऐसे स्वामीको अपनी असावधानीसे बिगड़ जाने दो, तो फिर पीछे दोष किसे दोगी?

करुणा—तुमको दोष नहीं दूँगी, इसके लिए तुम चिन्ता न करना!

कुज–तो फिर उस समय अपना दोष स्वीकार करोगी।

करुणा—एक बार नहीं सौ बार।

कुज—अच्छा, तो कल एक बार तुम्हारे चाचासे जाकर बातचीत ठीक कर आऊँगा।

यह कहकर कुजने कहा कि 'रात बहुत बीत गई' और दूसरी तरफ करवट लेकर सो रहा। कुछ देरके बाद एकाएक फिर करवट बदलकर उसने कहा—चुन्नी, कोई जरूरत नहीं, तुम मत जाओ।

करुणाने कातर होकर कहा—अब क्यों मना करते हो? इस समय न जानेसे तुम्हारी झिड़कीकी चोट मेरे हृदयमें बनी रहेगी। मुझे, बहुत नहीं, दो-चार दिनके लिए ही भेज दो।

कुज 'अच्छा' कहकर फिर मुँह फेरकर सो रहा।

काशी जानेके एक दिन पहले करुणाने मायाके गलेसे लिपटकर कहा—सखी आँखकी किरकिरी, मेरे सिरपर हाथ रखकर एक बातके लिए हामी भरो।

मायाने करुणाकी ठोढी पकड़कर प्यारके साथ कहा—किस बातके लिए चुन्नी! क्या मैंने कभी तुम्हारी बात टाली है?

करुणाने कहा—कौन जाने बहिन, आजकल तुम न जाने कैसी हो गई हो!—मेरे स्वामीके आगे निकलती ही नहीं हो।

मायाने कहा—क्यों नहीं निकलती, सो क्या तुमसे छिपा है बहिन? उस दिन तुम्हारे स्वामीने बिहारी बाबूसे जो कहा था सो क्या तुमने अपने कानसे नहीं

सुना ? जब ऐसी बातें उठने लगीं तब, भला तुम्हीं बताओ, मुझे सबके सामने निकलना और हँसना बोलना उचित है ?

करुणा इस बातको अच्छी तरह जानती थी कि उचित है या नहीं। इन बातोंके उठनेसे कुल-कामिनीको कितनी लज्जा होती है, इसका अनुभव अभी अभी वह स्वयं ही कर चुकी है। तो भी उसने कहा—बाते तो ऐसी न जाने कितनी उठा करती हैं, उन बातोंपर अगर ध्यान दें और सहन न कर सकें तो फिर स्नेह काहेका ? अब तुम उन बातोंको भूल जाओ।

मायाने कहा—अच्छा बहिन, भूल जाऊँगी।

करुणाने कहा—मैं तो बहिन, कल काशी जाऊँगी, मैं तुमसे यही प्रार्थना करने आई हूँ कि मेरे पीछे मेरे स्वामीको किसी बातकी तकलीफ न होने पावे। अबकी तरह दूर दूर रहनेसे काम नहीं चलेगा, तुमको सदा उन्हें खुश रखना होगा।

माया चुप हो रही। करुणाने मायाका हाथ पकड़कर कहा—सखी आँखकी किरकिरी, तुमको मेरे सिरकी कसम, यह काम करना ही पड़ेगा।

मायाने कहा—अच्छा।

Bikaner

* * * *

पच्चीसवाँ परिच्छेद

एक तरफ चन्द्रमा अस्त होता है और दूसरी तरफ सूर्योदय होता है। करुणा चली गई, मगर कुजको अब भी मायाके दर्शन नहीं हुए। कुज इधर-उधर घूमता फिरता है, बीच-बीचमें कोई-न-कोई बहाना करके जब देखो तब अपनी माके कमरेमें जाता है मगर माया भुलावा देकर भाग जाती है, हाथमें नहीं आती।

लक्ष्मीने कुजको इधर अत्यन्त अनमना और उदास देखकर सोचा कि बहू चली गई है, इसीसे कुजको कुछ अच्छा नहीं लगता। आजकल कुजको माकी कोई परवा न थी, इससे लक्ष्मीको बड़ा दुःख था। और वह दु:ख, आज, यह देखकर कि कुजको माके बिना रहना कुछ भी नहीं खला मगर स्त्रीका दो दिनका वियोग भी असह्य हो उठा, दूना हो गया। तथापि लड़केका उदास उतरा हुआ चेहरा मासे नहीं देखा गया। पुत्रके दु:खके आगे उसे अपना दुःख और कष्ट भूल गया। लक्ष्मीने मायाको बुलाकर कहा—बेटी, अबकी बुखार जबसे आया तबसे मैं बहुत कमजोर हो गई हूँ। मुझसे तो आजकल बार बार सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाया नहीं जाता; साँस फूलने लगती है। अब तुम्हींको जाकर कुजको खिलाने-पिलानेका बंदोबस्त करना पड़ेगा। कुजको आदत पड़ गई है कि बिना किसी सेवा

करनेवाले अपने आदमीके पास रहे उससे रहा नहीं जाता। देखो न, जबसे वह गई है तबसे वह कैसा हो गया है। वह भी धन्य है, कैसे छोड़कर चली गई!

माया जरा मुँह तिर्छा करके बिछानेके चादरका सिरा खुटकने लगी। लक्ष्मीने कहा--क्यों बहू, क्या सोचती हो? इसमें सोचनेकी तो कोई बात नहीं है। लोग चाहे जो कहें, तुम कोई गैर थोड़े हो।

मायाने कहा—बुआजी, यह मुझसे न होगा।

लक्ष्मीने कुछ चिढकर कहा—अच्छा जाने दो। मुझसे जितना हो सकेगा, मैं ही करूँगी।

इतना कहकर वह उसी समय कुजके कमरेमें सफाई करनेके लिए उठने लगी। मायाने व्यग्र होकर कहा—तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं है, गिर पड़ोगी। तुम न जाओ, मैं जाती हूँ। माफ करो बुआजी, तुम्हारी जो आज्ञा होगी वही करूँगी।

लक्ष्मीका स्वभाव था कि वह लोगोंकी बातोंपर बिल्कुल ध्यान न देती थी। जबसे विधवा हुई तबसे वह ससार और समाजको कुछ भी न समझती थी। उसके लेखे कुज ही सब कुछ था। मायाकी बात-चीतसे कुजके सम्बन्धमें समाज-निन्दाका अभास पाकर लक्ष्मीको बहुत ही बुरा लगा। कुज जब बिल्कुल बच्चा था तबसे वह उसे देखती आती है। उसके ऐसा सच्चरित्र लड़का है कहाँ? उस कुजपर भी दोषारोपण अगर कोई करे तो उसकी जीभ निकलकर गिर पडे! लक्ष्मीको एक स्वाभाविक हठ था, उसे जो अच्छा लगता था, अच्छा जान पडता था, उसे चाहे ससार-भर बुरा कहे, मगर वह न मानती थी।

आज कुजने कालेजसे लौटकर अपने कमरेको देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। दर्वाजा खोलकर देखा, कमरा-भर धूपके धुएँसे महक रहा है। मशहरीमें गुलाबी रेशमकी झालर लगी हुई है। नीचेके फर्शपर सफेद चाँदनी चाँदनी सी बिछी हुई है। मशहरीपर पुराना तकिया नहीं है, उसकी जगहपर एक बहुत सुन्दर रगीन ऊनका बुना हुआ अँगरेजी ढँगका चौकोर चिपटा तकिया रक्खा हुआ है—जिसपर बड़े परिश्रमसे कारीगरीके साथ गुलाब वगैरहके फूल उभारे गये हैं। यह कारीगरी खुद मायाकी ही थी। एक दिन करुणाने मायासे पूछा था कि तुम इतनी मेहनत करके यह तकिया किसके लिए बना रही हो बहिन? मायाने हँसकर इसका जवाब दिया था कि "अपनी चिताकी सेजके लिए बना रही हूँ। मौतके सिवा और कौन मेरा प्यारा है!" दीवारपर कुंजकी एक तसवीर टँगी हुई थी। कुजने देखा, उस तसवीरके चौखटेमें चारों कोनोंपर रगीन फीतेसे निपुणताके साथ चार गाँठें दी हुई हैं जो देखनेमें बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ती हैं। उस तसवीरके नीचे इधर-उधर दो दीवारगीरियोंपर दो गुलदस्ते फूलदानियोंमें रक्खे हुए हैं,—जैसे कोई अज्ञात भक्त उसके चित्रकी पूजा कर गया है। सारे

कमरेका ढग ही बदल गया है। पलग जहाँपर था वहाँसे कुछ हटा दिया गया है। कमरेके दो विभाग कर दिये गये हैं। बीचमें एक डोरी बाँधकर उसपर एक कपड़ा फैलाकर सोनेका स्थान अलग और बैठकर पढने लिखनेका स्थान अलग कर दिया गया है। कमरेमें एक शीशेकी आलमारी थी, उसमें करुणाके शौककी चीजें और खिलौने वगैरह सजाये हुए रक्खे थे। उसपर एक लाल शाल डाल दिया गया है, अब उसके भीतरकी कोई चीज नहीं देख पड़ती। घरमें उसके पहलेके इतिहासका जो कुछ चिह्न था वह नये हाथकी नई सजावटमे सम्पूर्ण रूपसे छिप गया है।

थका हुआ कुज मशहरीसे तकिया उठाकर सफेद चाँदनीपर लेट गया। तकियेपर सिर रखते ही कुजको एक कोमल सुगध मालूम पड़ी। तकियेके भीतर रुईमें बहुत-सी नागकेसरके फूलोंकी रज और अतर मिला हुआ था।

कुजकी आँखे आप ही-आप आरामसे बद हो आई। उसे मालूम पड़ने लगा कि इस तकियेपर जिसके निपुण हाथकी कारीगरी है उसीकी कोमल चंपेकी कली जैसी उँगलियोंकी यह सुगंध आ रही है।

इसी समय घरकी दासी चाँदीकी रकाबीमें फल, मिठाई और काँचके गिलासमे बर्फ मिला हुआ अनानासका शर्बत ले आई। सब चीजोंका ढग कुछ दूसरा ही था। सब चीजें स्वादमें सुगधमें और देखनेमें सोफियानी और नये ढगकी थीं। उनसे कुजको एक नये ढँगकी तृप्ति हुई।

जब कुज जल-पान कर चुका तब माया चाँदीके गिलौरी-दानमें खुशबूदार पानोंकी गिलौरियाँ और इलायची वगैरह लेकर धीरे धीरे कमरेमें आई। उसने हँसते हँसते कहा—इधर कई दिन तुम्हारे भोजनके समय मैं नहीं आ सकी, इसके लिए माफी चाहती हूँ। देखो, तुम्हें मेरे सिरकी कसम, मेरी सखीको इसकी खबर न दो। जितना कर सकती हूँ उतना करती हूँ, क्या करूँ, घरका सब काम काज मुझे ही देखना पडता है।

इतना कहकर मायाने गिलौरी-दान कुजके आगे रख दिया। आजकी गिलौरियोंमें भी केवड़ा-पड़े हुए कत्थेकी नई सुगध पाई गई।

कुजने कहा—सेवामें बीच-बीच ऐसी त्रुटि रहना ही अच्छा है।

मायाने कहा—भला कैसे, सुनें।

कुजने कहा—त्रुटि रह जानेपर, दावा करके, ब्याज-समेत सब चुका लिया जाता है।

मायाने कहा—अच्छा सेठजी, ब्याज कितना हुआ?

कुजने कहा—भोजनके समय तुम यहाँ हाजिर नहीं थीं, अब खानेके बाद हाजिरी देनेपर भी ब्याज अदा नहीं होगा, कुछ बाकी रह जायगा।

मायाने कहा—तुम्हारा हिसाब तो बड़ा कड़ा देख पड़ता है। इससे तो मालूम होता है कि एक बार तुमसे व्यवहार हो जानेपर फिर उद्धार नहीं हो सकता!

कुंजने कहा—हिसाबमें चाहे जो हो, लेकिन मैं अभी तक वसूल तो कुछ भी नहीं कर सका।

मायाने कहा—वसूल करनेके लायक मेरे पास है ही क्या? मगर, तब भी तो तुमने कैद कर रक्खा है!

इतना कहकर हँसीको एकाएक गंभीर भावका रूप देकर मायाने धीरेसे एक साँस ले ली।

कुंजने भी कुछ गंभीर होकर कहा—तो माया, क्या यह जेलखाना है?

इसी समय नौकर लैंप जलाकर ले आया और तिपाई रखकर चला गया।

एकाएक आँखोंमें रोशनी लगनेसे मायाने, आँखोंके आगे जरा-सी हाथकी आड़ करके, आँखें नीचे किये हुए कहा—क्या जाने! बातोंमें तुमसे कौन जीत सकता है! अब जाती हूँ, काम है।

कुंजने एकाएक उसका हाथ पकड़कर कहा—जब तुमने बन्धन स्वीकार कर लिया तब जाओगी कहाँ?

मायाने कहा—छी छी, छोड़ दो। जिसके भागनेके लिए कोई राह ही नहीं है, उसे इस तरह जकड़नेकी जरूरत क्या है?

माया जोरसे हाथ छुड़ाकर चली गई।

कुंज उसी बिछौनेपर सुगन्धित तकियेपर सिर रक्खे पड़ा रहा, उसकी नसोंमें जोरके साथ खून दौड़ने लगा। सन्नाटेकी सन्ध्या थी, सूना घर था, नव वसन्तकी मस्त कर देनेवाली हवा चल रही थी, जान पड़ता था—मायाने आत्म समर्पण अब किया, अब किया। कुंजका मन मस्त हाथीकी तरह मचल चला। जल्दीसे लैंप बुझाकर कुंजने घरका दरवाजा बंद कर लिया और कुंडीमें एक लोहेकी छोटी-सी छड़ लगा दी। इसके बाद सोनेका समय न होनेपर भी वह मसहरीके ऊपर जाकर सो रहा।

यह भी तो वह पुराना बिछौना नहीं है! चद्दरके नीचे चार-पाँच तोशकें बिछा देनेसे पहलेकी अपेक्षा बहुत नरम हो गया है। इसमें भी एक तरहकी खुशबू आ रही है। ठीक समझमें नहीं आया कि यह सुगन्ध अगरुकी है या खसकी है। कुंजने कई बार इधर-उधर करवट बदली, जैसे वह इस बातकी चेष्टा कर रहा था कि कहीं भी कोई पुराना चिह्न देख पड़े तो उसमें लगाकर चंचल चित्तको एकाग्र करे। मगर कुछ भी हाथ न आया।

रातके नौ बजे दर्वाजेपर किसीने धक्का दिया। मायाने किवाड़े बंद पाकर बाहरसे कहा—कुंज बाबू, तुम्हारे खानेका सामान आया है, दर्वाजा खोलो।

कुंजसे न रहा गया; आवाज सुनते ही उठकर दर्वाजा खोलनेके लिए जंजीरमें

हाथ लगाया, मगर खोला नहीं। लौटकर चाँदनीपर लेट गया और बोला—ना ना, मुझे भूख नहीं है, मै नहीं खाऊँगा।

बाहरसे घबराई हुई आवाजमें मायाने पूछा—तबियत तो अच्छी है? जल ला दूँ? क्या कुछ चाहिए?

कुजने कहा—नहीं कुछ नहीं चाहिए—कुछ जरूरत नहीं है।

मायाने कहा—तुम्हें मेरी सिरकी कसम, मेरे आगे बनो नहीं। अच्छा, तबियत अच्छी है तो जरा दर्वाजा खोलो।

कुजने दृढताके साथ कहा—ना मैं नहीं खोलूँगा, किसी तरह नहीं। तुम जाओ।

यो कहते हुए जल्दीसे उठकर कुज फिर मशहरीपर जाकर लेट गया और भूली हुई करुणाकी यादको सूनी सेज और चचल हृदयके भीतर अन्धकारमें खोजने लगा।

जब किसी तरह नींद न आई तब कुज उठा और लैंप जलाकर दावात-कलम लेकर करुणाको चिट्ठी लिखने बैठा। लिखा "चुन्नी, और अधिक दिन तक मुझे अकेला मत रक्खो। तुम मेरे जीवनकी देवता हो,—तुम्हारे पास न रहनेसे मेरी प्रवृत्ति—मेरी वासना सब प्रकारके बन्धन तुड़ाकर मुझे किस तरफ खींच ले जाना चाहती है, कुछ समझमें नहीं आता। सुपथ देखकर चलना चाहिए, यह मैं जानता हूँ, मगर उस राहको दिखानेवाला प्रकाश कहाँ है? तुम्हारे विश्वासपूर्ण दोनों नेत्रोंकी स्नेह-स्निग्ध ज्योति ही वह प्रकाश है। तुम जल्द आओ। तुम्हीं मेरी भलाई, मेरा धर्म और मेरे जीवनको उज्ज्वल बनानेवाली प्रकाश हो। मुझे स्थिर करो, मेरी रक्षा करो, मेरे हृदयको अपने प्रेमसे परिपूर्ण करो। तुम्हारे साथ अणुमात्र विश्वासघात या अन्याय करनेसे महापाप होगा। उस महापापसे—तुमको घडी भरके लिए भी भूल जानेकी उस विभीषिकासे—मुझे उबारो।"

इस तरह करुणाके आगे अपने हृदयका हाल खोलकर, अपनेको धिक्कार देनेके लिए, कुजने बहुत रात बीते तक बैठकर बहुत-सी बातें लिखीं। थोडी दूरपर गिर्जेकी घड़ीमें टन-टन-टन करके तीन बजे। इस समय कलकत्तेकी चौड़ी सड़कपर गाड़ियोंके चलनेकी घरघराट नहीं सुन पड़ती। थोड़ी दूरपर नाटक-भवनमें कोई स्त्री विहागकी चीज़ गा रही थी, वह भी विश्वव्यापिनी शान्ति और निद्रामें एकदम लीन हो गई। एकाग्र चित्तसे करुणाकी याद करनेसे और उस लम्बी चिट्ठीमें तरह तरहसे अपने मनकी घबराहट और चचलता प्रकट करनेसे कुजको कुछ शान्ति मिली और बिछौनेपर लेटते ही वह सो गया।

सवेरे जिस समय कुजकी आँख खुली, उस समय, दिन चढ आया था; झरोखेमें कमरेके भीतर घाम आ गया था। कुज जल्दीसे उठकर बैठ गया। जागनेके कारण रातकी बातोंकी उत्तेजना और चित्तकी चंचलता कुछ कम हो गई थी। बिछौनेसे उठकर कुजने देखा कि कल रातको करुणाके पास भेजनेके लिए जो

चिट्ठी लिखी थी वह तिपाईके ऊपर दावातसे दबाई हुई रक्खी है। उसको फि पढकर कुजने अपने मनसे कहा—किया क्या ! यह तो नाटक नाविलोंकी ऐसी घटना है। बड़ी बात हुई जो यह चिट्ठी भेजी नहीं। चुन्नी पढती तो क्या कहती? वह तो इसकी आधीसे अधिक बातें समझ ही न सकती।

रातकी घड़ी भरकी घटनासे हृदयका आवेग इस प्रकार असगत रूपसे बढ उठा—यह सोचकर कुज मन-ही-मन बहुत लज्जित हुआ। उस चिट्ठीके टुकड़े टुकड़े कर उसने फिर सहज सरल भाषामें करुणाको एक छोटीसी चिट्ठी लिखी कि ‘ तुम और कितनी देर करोगी ? अगर तुम्हारे चाचाजी जल्द न लौटें तो मुझको लिखो, मैं आकर तुमको ले आऊँगा। यहाँ तुम्हारे बिना अकेले मुझे अच्छा नहीं लगता। ”

छब्बीसवाँ परिच्छेद

कुंजके जानेके कुछ ही दिन बाद जब करुणा काशी पहुँची तब गौरीके मनमें भारी आशंका उत्पन्न हुई। वह करुणासे तरह तरहके प्रश्न करने लगी। बात-चीतमें मायाका भी जिक्र आया। गौरीने कहा—हाँ चुन्नी, तेरी सखी आँखकी किरकिरी क्या सचमुच ऐसी चतुर और गुनी है कि वैसी इस ससारमें नहीं है ?

करुणाने कहा—सचमुच मौसी, वह ऐसी ही है। जैसी बुद्धि है, वैसा ही रूप है, और उसी तरह सफाई और सुघराईके साथ घर-गिरिस्तीके सब काम करना भी जानती है।

गौरीने कहा—तेरी सखी है, तू तो सब बातोंमें अद्वितीय समझेहीगी। अच्छा, यह बतला कि घरके और लोग उसे किस दृष्टिसे देखते हैं ?

करुणाने कहा—सासजी तो उसपर बहुत ही प्रसन्न हैं, जब देखो तब उसकी बड़ाई किया करती हैं। जब मेरी सखी अपने गाँव जानेके लिए कहती है, तभी वे व्याकुल हो उठती हैं। उसकी ऐसी सेवा कोई नहीं कर सकता। घरकी दासी या चाकर, अगर कोई, बीमार होता है तो वह बहिन और माकी तरह मन लगाकर उसकी सेवा करती है।

गौरीने फिर पूछा—उसके बारेमें कुजकी क्या राय है ?

करुणाने कहा—उनको तो तुम जानती ही हो मौसी, अपने किसी खास आदमीके सिवा और कोई रुचता ही नहीं। मेरी सखीको सब लोग प्यारकी दृष्टिसे देखते हैं, मगर उससे उनकी अभी तक अच्छी तरह नहीं पटी।

गौरीने कहा—कैसे ?

करुणाने कहा—मैंने बहुत कुछ यत्न करके उनसे उसकी भेट तो करा दी, मगर बातचीत बहुत ही कम होती है। तुम तो जानती ही हो कि वे कैसे स्वभावके हैं। लोग समझते हैं कि वे घमंडी हैं, मगर असलमें यह बात नहीं है मौसी, दो-एक आदमियोंके सिवा और किसीसे अधिक मेल-जोल रखना उन्हें पसंद ही नहीं है।

अन्तिम बात एकाएक मुँहसे निकल जानेके कारण करुणाको बड़ी लज्जा मालूम हुई, गुलाबी गालोंपर लाली आ गई। गौरीने मन-ही-मन प्रसन्न होकर हँसकर कहा—यही बात है, उस दिन जब कुञ्ज आया था तो उसने मायाका नाम भी नहीं लिया।

करुणाने खिन्न होकर कहा—यही उनमे दोष है। जिसको नहीं चाहते वह उनके लेखे जैसे है ही नहीं। जैसे उसको कभी देखा ही नहीं—जानते ही नहीं।

गौरीने कुछ मुसकराकर कहा—और जिसे चाहते हैं उसे ही देखते हैं, जानते है और सर्वस्व मानते हैं। क्यों न चुन्नी ?

करुणाने कुछ उत्तर न देकर आँखें नीचे कर लीं, उसके अरुण अधरमें हँसीकी रेखा दिख गई।

गौरीने फिर पूछा—चुन्नी, भला बिहारीका क्या हाल है ? वह क्या अब ब्याह न करेगा ?

यह प्रश्न सुनते ही करुणाकी मंद मुसकान गंभीरताके भावमे लीन हो गई। वह उत्तर न दे सकी।

करुणासे कुछ उत्तर न मिलनेपर गौरीने घबराकर पूछा—सच कह चुन्नी, बिहारी अच्छी तरहसे तो है न ?

गौरीके कोई लड़का बाला न था। वह बिहारीको अपने पुत्रसे बढकर चाहती और स्नेह करती थी। परलोक सुधारनेके लिए वह तीर्थमें आकर रही थी, मगर यहाँ भी उसे इस बातका दुःख बना हुआ था कि वह बिहारीको बहूके साथ सुखी देखकर न आ सकी। उसके छोटेसे परिवारके सब लोग सुखी थे, उसकी सब अभिलाषाएँ पूरी हो चुकी थीं, केवल यही अभिलाषा बाकी थी। जब उसे बिहारीका स्मरण हो आता था तब वह व्याकुल हो उठती थी।

करुणाने कहा—मौसी, बिहारी बाबूकी बात मुझसे न पूछो।

गौरीने विस्मित होकर पूछा—क्यों ?

करुणाने कहा—उनकी बात मैं न कर सकूँगी।

इतना कहकर करुणा दूसरे कमरेमे चली गई। गौरी चुप होकर सोचने लगी—बिहारी तो बड़ा लायक और सुशील लड़का था। क्या इतने ही दिनोंमें उसका चरित्र इतना खराब हो गया कि चुन्नी आज उसकी चर्चा भी करना

नहीं चाहती, उसका नाम सुनकर उठ गई। सब भाग्यका खेल है, नहीं तो क्यों उसके साथ चुन्नीके ब्याहकी बात होती और कुज ही क्यों हठ करके हाथसे चुन्नीको छीन लेता!

बहुत दिनोंके बाद आज फिर गौरीकी आँखोंमे आँसू बहने लगे। उसने अपने मनमें कहा—अगर बेचारे बिहारीने कुछ ऐसा ही किया होगा, जो उसके योग्य न था, तो अवश्य बहुत दुःख और कष्टमे विवश होकर किया होगा वह लड़का बड़ा ही सुशील है।

बिहारीके दुःखकी कल्पना करके गौरीको बड़ी व्यथा हुई।

सन्ध्याके समय गौरी ऊपर छतपर बैठी जप कर रही थी। इतनेमे एक गाड़ी दर्वाजेपर आकर ठहरी। साईस बन्द दर्वाजेपर धक्का देकर पुकारने लगा। गौरीने व्यस्त होकर करुणासे कहा—चुन्नी, आज इलाहाबादसे मेरी ननद और उनकी लड़कीके आनेकी बात थी, जान पड़ता है उन्हींकी गाड़ी आई है। तू लालटेन लेकर नीचे जा, दर्वाजा खोल दे, मैं जप कर रही हूँ।

करुणा लालटैन लेकर नीचे आई, किन्तु दर्वाजा खोलते ही उसने देखा कि बिहारी खड़ा है। बिहारी बोल उठा—यह क्या बहू, मैंने तो सुना था कि तुम काशी नहीं आओगी?

करुणाके हाथसे लालटैन गिर पड़ी! वह जैसे प्रेतकी मूर्ति देखकर एक साँसमे भागकर ऊपर मौसीके पास पहुँची और काँपती हुई आवाजमें कहने लगी—मौसी तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, तुम उनसे कहो कि अभी यहाँसे लौट जायँ।

गौरीने घबराकर कहा—किससे चुन्नी, किससे?

करुणाने कहा—बिहारी बाबू यहाँ भी आये हैं!

इतना कहती हुई वह कोठरीमे घुस गई और भीतरसे जंजीर चढ़ाकर निर्भय हुई।

बिहारी नीचेसे सब बातें सुन रहा था। वह उसी समय लौट चला। इतनेमें गोमुखी और माला फेंककर गौरी नीचे आ गई। उसने देखा, बिहारी दर्वाजेके पास जमीनपर बैठ गया है, उसके शरीरसे सब शक्ति जैसे किसीने निकाल ली है।

गौरी अपने साथ रोशनी नहीं लाई थी, केवल गाड़ीकी लालटैनकी धुँधली रोशनी बिहारीके ऊपर पड़ रही थी। इसीसे गौरी बिहारीके चेहरेकी हालत न देख सकी। बिहारीको भी चक्कर-सा आ गया था, वह भी गौरीको न देख सका।

गौरीने तीव्र स्वरमें कहा—बिहारी!

हाय, वह चिर-परिचित स्नेह-सरस स्वर कहाँ चला गया! इस स्वरसे तो कठिन न्याय-विचारकी ध्वनि निकल रही है! यह आवाज तो बिजलीकी कड़कसे भी बढ़कर कड़ी है! जननी गौरी, अभागा बिहारी तो आज अन्धकारमें तुम्हारे मङ्ग-

समय चरणोंका आश्रय लेने आया था, तुम यह तिरस्कारकी तरवार किसपर तान रही हो!

विहारीके शक्तिशून्य शरीरमें सिरसे पैर तक जैसे बिजली दौड़ गई। उसने दीन स्वरमें कहा—चाची, बस, अब और कुछ न कहना, मैं जाता हूँ।

इतना कहकर विहारीने पृथ्वीपर सिर रखकर दूरसे प्रणाम किया, गौरीके पैर छूनेकी भी हिम्मत उसे नहीं हुई। माता जैसे गंगासागरमें अपने बच्चेको विसर्जन कर देती है वैसे ही गौरीने बिहारीको उस रातके अन्धकारमें चुपचाप विदा कर दिया, एक बार फिरकर उसे पुकारा भी नहीं; गाड़ी विहारीको लेकर देखते ही देखते अदृश्य हो गई।

उसी रातको करुणाने कुजको चिट्ठी लिखी—आज शामको एकाएक विहारी बाबू यहाँ आये थे। चाचाजीके कलकत्ते जानेका अभी ठीक नहीं है, तुम जल्दी आकर यहाँसे मुझे ले जाओ।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

उस दिन रात-भर जागनेसे कुजके शरीरमें एक प्रकारकी शिथिलता-सी आ गई थी, और उद्वेगके कारण मनमें भी एक प्रकारके खेदकी छाया पड़ी हुई थी। फागुनके दिन थे, गर्मी पड़ना शुरू हो गया था। और दिन कुज सवेरे कमरेके कोनेमें टेबिलपर पोथी लेकर पढने बैठता था। आज चुपचाप बिछौनेपर तकियेके सहारे बैठा सोचता रहा। दिन चढ गया, मगर वह नहानेके लिए नहीं उठा। सड़कपर फेरीवाले अपना अपना सौदा लेकर फेरी लगाने लगे। आफिस जानेवालोंकी गाड़ियाँ तेजीके साथ जाने लगीं। पड़ोसमें एक नया मकान बन रहा था, मजूरोंकी लड़कियाँ छत पीटती हुई मिलकर गीत गाने लगीं। कुछ गरम दक्षिण पवनके लगनेसे कुजकी दुखती हुई शरीर-भरकी नसें जैसे और भी शिथिल—शक्तिहीन हो आईं। सचमुच ये वसन्तके दिन किसी कठिन प्रतिज्ञा, असाधारण चेष्टा, अथवा मानसिक हलचलके लायक नहीं होते; इनमें तो बस सब काम-काज छोड़ आनन्दसे लेटे रहनेकी ही इच्छा होती है।

इतनेमें मायाने आकर कहा "कुज बाबू, आज तुमको हो क्या गया है? नहाओगे नहीं? खानेको तैयार है और तुम अभी तक पड़े सो रहे हो! क्या कुछ तबियत खराब है? सिरमें दर्द है?" और यों कहते कहते माया कुजके सिरपर हाथ रखकर देखने लगी।

कुजने आँखे कुछ बन्द किये ही भर्राई आवाजमें कहा—आज तबियत कुछ गड़बड़ है, नहाऊँगा नहीं।

मायाने कहा—नहाओगे नहीं—न सही, चलकर कुछ खा-पी लो।

माया बहुत-कुछ कह-सुनकर कुजको नहलाने ले गई। कुज जब नहा चुका मायाने बड़े यत्न और उत्कंठाके साथ अनुरोध करके उसे भोजन कराया।

भोजनके बाद फिर कुज अपने कमरेमें आकर लेट रहा। माया सिरहाने बैठ धीरे धीरे उसका सिर दाबने लगी। कुजने आँखें बन्द किये-ही-किये कहा—मा तुमने अभीतक कुछ खाया-पिया नहीं, अब तुम जाकर भोजन करो।

माया किसी तरह नहीं गई। आलस पैदा करनेवाली दोपहरकी गरम हवा झोकोंसे कमरेका पर्दा उड़ने लगा और दीवालके पास हिलते हुए नारियल पेड़की अर्थहीन मर्मराहट सुनाई पड़ने लगी। कुजका हृदय जोरसे धड़कने ल और मायाकी घनी घनी साँसें कुजके घुँघराले मस्तकपरके छोटे छोटे बालोंको ता दे-देकर नचाने लगीं। मायाके मुँहसे भी कोई बात नहीं निकली। कुज अ मनमें सोच रहा था—'अब तो असीम संसारके अनन्त प्रवाहमें बह चला देखना है कि यह जीवनकी नौका कब कहाँ जाकर लगती है। फिर इससे अ किसीका क्या आता-जाता है—और अगर आता-जाता ही है, तो कितने दि लिए?—"

सिरहाने बैठकर कुजका सिर दाबते दाबते विह्वल यौवनके भारी भारसे धीरे-ध मायाका माथा झुक चला, अन्तको उसके नागिनसे लहराते हुए केशगुच्छ सिरा कुंजके गालोंपर पड़ गया। हवासे हिलते हुए उस केश-गुच्छके कमि कोमल स्पर्शसे कुजका सारा शरीर काँप उठा, उसकी साँस जैसे छातीमें अ रही, उसके बाहर निकलनेका रास्ता जैसे किसीने बन्द कर दिया। छटपटा कुज उठ बैठा और मायाकी तरफ दृष्टिपात न करके यह कहता हुआ उठ ख हुआ कि 'नहीं, मुझे कालेज जाना है, मैं जाता हूँ।'

मायाने कहा—घबराओ नहीं। मैं तुम्हारे कपड़े लाये देती हूँ।

कुजके कालेज पहनकर जानेके कपडे माया ले आई। कुज झटपट कपडे पहन कालेज चला गया, मगर वहाँ भी किसी तरह उसका जी नहीं लगा। वह ब देरतक पढने-लिखनेमें मन लगानेकी व्यर्थ चेष्टा कर दो ही बजे घर लोट आया

कमरेमे घुसते ही उसने देखा, माया छातीके नीचे तकिया रखकर लेटी हु कोई किताब पढ रही है, ढेरके ढेर काले काले केश उसकी पीठभर बिखरे हुए हैं जान पड़ता है, कुजके जूतोंकी आहट उसने नहीं सुनी। कुज दबे-पैरों चुप चुपके पीछे आकर खड़ा हो गया। वैसे ही पढते पढते मायाने एक लम साँस छोड़ी।

कुंजने कहा—अजी ए करुणामयी, कल्पित आदमियोंके लिए क्यों अप सहानुभूति व्यर्थ खर्च किये डालती हो? कहो—क्या पढ रही हो?

माया घबराकर उठ बैठी और उसने जल्दीसे उस पुस्तकको अपने आँचल

छिपा लिया। कुज उस पुस्तकको छीनकर देखनेके लिए चेष्टा करने लगा। बहुत देरतककी हाथापाई और छीना-झपटीके बाद माया हार गई, कुजने उसके आँचलसे पुस्तकको लेकर देखा। वह था बंकिम बाबूका 'विष-वृक्ष।' माया हाँपती हुई नाराज होकर मुँह फेरकर चुपचाप बैठ रही।

कुजका हृदय बड़ी तेजीसे धड़क रहा था। बड़ी चेष्टासे हँसकर उसने कहा "छी छी, बड़ा धोखा दिया! मैंने सोचा था कि कोई छिपानेकी चीज होगी। इतनी छीना-झपटीके बाद निकला क्या—विष-वृक्ष!"

मायाने कहा—अब मेरे छिपानेकी और क्या चीज होगी भला?

कुज झट कह उठा—यही मान लो, अगर बिहारीके पाससे कोई चिट्ठी आती।

पल-भरमें मायाकी आँखोंमें जैसे बिजली चमक गई। इतनी देरतक कामदेव घरके कोनेमें क्रीडा कर रहा था—इस समय वह जैसे दुबारा जलकर भस्म हो गया। भकसे जल उठनेवाली अग्नि-शिखाकी तरह माया हटकर खड़ी हो गई। कुजने उसका हाथ पकड़कर कहा—मेरी हँसीको माफ करो, मुझसे अपराध हुआ।

मायाने उसका हाथ छुड़ा लिया और कहा—हँसी करते हो किसकी? अगर तुम उनके साथ मित्रता करनेके योग्य होते तो तुम्हारी हँसी भी मैं सह लेती। तुम छोटी तबियतके आदमी हो। मित्रता करनेकी योग्यता नहीं है तो ठट्ठा तो मत करो।

माया बाहर जानेको आगे बढी, कुजने दोनों हाथोंसे उसके पैर पकड़कर बाधा डाली।

इसी समय दीवालपर किसीकी छाया पड़ी। कुजने जल्दीसे मायाके पैर छोड़ दिये और चौंककर पीछे देखा, बिहारी खड़ा है!

बिहारीने एक एक बार दोनोंपर स्थिर दृष्टि डालकर शान्त और धीमे स्वरमें कहा—बडे बे मौके आ गया, मगर बहुत देर-तक नहीं ठहरूँगा। एक बात कहनेके लिए आया हूँ। मैं काशी गया था। मुझे मालूम न था कि बहू वहाँ गई हैं। मैं बिना जाने उनके निकट अपराधी हुआ हूँ, उनसे क्षमा माँगनेका अवसर नहीं था, इसीसे तुम्हारे पास क्षमा माँगने आया हूँ। मेरी तुमसे यही प्रार्थना है कि मेरे मनमें, जानमें, या बे जानमें, अगर कोई पापकी छाया पड़ी हो तो उसके लिए उन्हें कभी कोई दुःख न सहना पड़े।

बिहारीके आगे एकाएक अपनी कमजोरी प्रकट हो जानेके कारण कुंज जैसे जल उठा। यह उसका उदारताका समय नहीं है। कुंजने व्यंग-भरी मुसकुराहटके साथ कहा—तुम तो ठीक 'चोरकी दाढीमें तिनके' वाली मसल कर रहे हो। मैंने तुमको अपराध स्वीकार करनेके लिए भी नहीं कहा और अस्वीकार करनेके लिए भी नहीं कहा। फिर क्षमा-प्रार्थना कर साधु बननेके लिए क्यों आये हो?

बिहारी काठके पुतलेकी तरह कुछ देर तक खड़ा रहा—उसके बाद कुछ कहनेके लिए ज्यों ही उसने चेष्टा की त्यों ही माया बोल उठी—बिहारी बाबू, तुम कुछ जवाब न देना, कुछ भी न कहना। इस आदमीने जो कुछ अपने मुँहसे कहा, इससे इसीके मुँहमें स्याही लगी, वह स्याही तुम तक नहीं पहुँची।

मायाकी बातें बिहारीके कानमें गई या नहीं, सो ठीक नहीं कहा जा सकता। वह निद्राके आवेशमें चलनेवाले मनुष्यकी तरह दर्वाजेसे लौटकर सीढ़ियोंकी तरफ चला।

मायाने उसके पीछे जाकर कहा—बिहारी बाबू, मुझसे क्या तुमको कुछ भी नहीं कहना है? अगर कुछ तिरस्कार करना हो, तो मेरा तिरस्कार करो!

बिहारी जब कुछ जवाब न देकर आगे बढ़ता ही गया तब सामने जाकर मायाने अपने दाहिने हाथसे उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। बिहारी अत्यन्त घृणाके साथ उसको ढकेलकर चला गया। उस धक्केसे मायाका गिरना उसे मालूम ही नहीं हुआ।

मायाके गिरनेका धमाका सुनकर कुंज दौड़ा आया। उसने देखा, मायाके बाएँ हाथकी कुहनी फूट गई है, कुहनीके पास घाव हो गया है, खून बह रहा है।

कुंजने कहा—ओह बड़ी चोट लगी!

इतना कहकर कुंज उसी समय अपनी धोती फाड़कर घावमें पट्टी बाँधनेके लिए तैयार हुआ।

मायाने जल्दीसे हाथ हटाकर कहा—ना ना, कुछ न करना, खून निकलने दो।

कुंजने कहा—पट्टी बाँधकर मैं अभी एक दवा लगाये देता हूँ। फिर दर्द न करेगा, और जल्दी अच्छा हो जायगा।

माया हट गई और बोली—मैं इसे आराम करना नहीं चाहती, यह घाव यों ही बना रहेगा!

कुंजने कहा—आज मेरी गलती और घबराहटसे तुमको दूसरेके आगे लज्जा और बदनामी उठानी पड़ी है। क्या मेरे इस अपराधके लिए तुम मुझे माफ न कर सकोगी?

मायाने कहा—माफी किस लिये माँगते हो? अच्छा किया। मैं क्या दूसरोंको डरती हूँ? मैं किसीको भी नहीं मानती। जो लोग धक्का मारकर चले जाते हैं वे ही क्या मेरे सब कुछ हैं, और जो पैर पकड़कर मुझे रखना चाहते हैं वे कोई नहीं हैं?

कुंज आनन्दके मारे फूल उठा, वह गद्गद स्वरमें कह उठा—माया, तो फिर तुम मेरे प्रेमको ग्रहण करोगी?

मायाने कहा—सिर आँखोंपर रक्खूँगी। मैंने अपने जन्ममें इतना अधिक प्रेम नहीं पाया है कि उसे 'नहीं चाहिए' कहकर फेर दूँ!

उस समय कुंजने मायाके दोनों हाथ पकड़कर कहा—तो आओ, मेरे कमरेमें चलो। तुमको आज मैंने कष्ट पहुँचाया है और तुम भी आज मेरा दिल दुखाकर चली आई हो; जब तक हम लोगोंका कष्ट और दुःख एकदम मिट नहीं जायगा, तब तक हमें खाकर-सोकर किसी तरह चैन न पड़ेगी।

मायाने कहा—आज नहीं—आज मुझे छोड़ दो। अगर मैंने तुम्हें कुछ दुःख पहुँचाया हो, तो माफ करना।

कुंजने कहा—तुम भी मुझे माफ करो, नहीं तो मुझे नींद न आवेगी।

मायाने कहा—माफ किया।

तब अधीर कुंज मायासे, हाथोंहाथ क्षमा और प्यारका एक प्रमाण या चिह्न पानेके लिए व्यग्र हो उठा। लेकिन मायाके चेहरेकी तरफ देखते ही उसे वैसी प्रार्थना करनेका साहस नहीं हुआ, खड़ा रह गया। माया सीढ़ियोंसे नीचे उतर गई। कुंज भी धीरे धीरे सीढ़ी चढ़कर कमरेकी छतपर टहलने लगा। बिहारीके आगे आज सब खुलासा हो गया इससे कुंजको, दुःख न होकर, बे-खटके हो जानेकी खुशी ही हुई। ऐसे ऐसे कामोंको चुरा-छिपाकर करनेमें अपनेको भी एक तरहकी घृणा मालूम हुआ करती है, किन्तु जब कोई जान जाता है तब वह घृणा, ग्लानि और भय भी, बहुत-कुछ दूर हो जाता है। यही दशा कुंजकी हुई।

कुंजने अपने मनमें कहा—अब मैं अपनेको झूठ-मूठ सच्चरित्र कहकर प्रसिद्ध करना नहीं चाहता। अब मेरा धर्म प्रेम है,—मैं उसे चाहता हूँ, यह बात झूठ नहीं है।

अपने प्रेमके गौरवमें वह इतना उद्धत हो उठा कि अपनेको बुरा समझकर गर्व करने लगा। शान्त सन्ध्या कालमें चुपचाप चमकते हुए तारागणसे सुशोभित अनन्त जगत्पर एक उपेक्षाकी दृष्टि डालकर कुंजने अपने मनमें कहा—लोग मुझे चाहे जितना बुरा समझें और कहें, लेकिन मैं प्रेमी हूँ।

कुंजने अपने मनमें बसी हुई मायाकी मूर्तिसे सारे संसार, सारे आकाश और सारे कर्तव्योंको ढँक दिया। बिहारीने आज, एकाएक आकर, जैसे कुंजके जीवनकी बंद दावातको उलटा कर तोड़ डाला, मायाकी काली आँखों और काले बालोंकी कालिमाने देखते-ही-देखते फैलकर पहलेकी सब सफेदी और लिखावटको लीपकर एकाकार कर दिया—अपने रंगमें लीन कर लिया।

ॐ ❦ ❦

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन नींद उचटनेपर बिछौनेसे उठते ही एक प्रकारके सुखमय मधुर आवेगसे कुंजका हृदय जैसे भर गया। प्रभातकी सुनहरी आभाने जैसे

उसकी सब अभिलाषाओं और विचारोंको सोनेका बना दिया। पृथ्वी कैसी सुन्दर है, आकाश कैसा सुहावना है, हवा जैसे पुष्प-परागके समान मनको उड़ाये लिये जा रही है।

सवेरे सवेरे एक फकीर खजड़ी बजाकर दर्वाजेपर गाने लगा। दर्वान उसे हटाने लगा, कुजने दर्वानको मना कर एक रुपया फकीरको दे डाला। नौकर कमरेसे लैंप उठाकर ले जाने लगा. असावधानीसे लैंप गिरकर चूर चूर हो गया, नौकर डरके मारे काँपता हुआ कुजकी तरफ देखने लगा। कुजने कुछ न कहकर प्रसन्नताके साथ शीशेका चूरा बुहारकर बाहर फेंक देनेके लिए आज्ञा दे दी। आज वह जैसे अपनी किसी हानिको हानि ही नहीं समझता।

प्रेम इतने दिनोंतक नेपथ्यकी आड़में तमाशा कर रहा था, आज उसने सामने आकर पर्दा उठा दिया। सारे संसारपरसे पर्दा उठ गया। नित्य देख पड़नेवाली पृथ्वीकी तुच्छता न जाने कहाँ चली गई। पेड़-पत्ते, फल-फूल, पशु-पक्षी, शहरकी भीड़, शहरका कोलाहल, सभी आज सुन्दर देख पड़ता है। यह विश्व-व्यापी नयापन इतने दिनोंतक कहाँ था?

कुजको मालूम पड़ने लगा कि आज माया और दिनोंकी तरह साधारण भावसे नहीं मिलेगी। आजकी बात-चीत कवितामें लिखने लायक और भाव संगीतसे प्रकट करने योग्य होंगे।

कुंज आज दिनको ऐश्वर्य-सौन्दर्यपूर्ण करके, जैसे सृष्टि और समाजसे निराला 'अलिफ-लैला' का 'अद्भुत दिन' बना डालना चाहता है। वह सच होगा, लेकिन स्वप्न होगा,—उसमें जगतका कोई विधि-विधान, कोई दायित्व (जिम्मेदारी) और कोई वास्तविकता (असलियत) नहीं रहेगी।

आज सवेरेसे ही कुजका मन चंचल, उत्सुक और उत्साहित था। वह कमरेसे उठकर बाहर चमनमें बहुत देरतक टहलता रहा। आज कालेज भी वह नहीं जा सका, क्योंकि मिलनकी लग्न अकस्मात् कब आ जायगी यह तो किसी पत्राङ्कमें लिखा ही नहीं रहता।

घरके काम-काजमें लगी हुई मायाकी आवाज कभी रसोईमें और कभी भंडारमें सुनाई पड़ती थी। लेकिन आज कुजको यह अच्छा नहीं लगता था—आज उसने मायाको संसारसे हटाकर अपने मनमें बसा लिया है।

समय किसी तरह कटता ही नहीं। कुज नहा चुका, खा चुका। घरका सब काम समाप्त हो गया। दो-पहर हो गई, घरमें सन्नाटा पड़ गया, तब भी माया नहीं देख पड़ी। दुःख और सुख, अधैर्य और आशासे कुजकी हृदय तन्त्रीके सारे तार झनकना उठे।

कलका छीना हुआ 'विष-वृक्ष' बिछौनेपर पड़ा हुआ था। उसे देखते ही उस छीना-झपटीकी याद आ जानेसे कुजके रोंएँ खड़े हो आये। माया जिस

तकियेको छातीके नीचे रखकर लेटी थी उसे खींचकर कुजने अपने सिरके नीचे रक्खा और 'विष-वृक्ष' की पोथी लेकर वह उसके पन्ने उलटने लगा। पन्ने उलटते उलटते पढनेमें मन लग गया, पढते पढते पॉच बज गये; मगर कुंजको कुछ भी खबर नहीं हुई।

इतनेमें एक थालीमें फल और मिठाई और दूसरी रकाबीमें कटा हुआ खुश बूदार चीनी-मिला खर्बूजा लिये माया कमरेके भीतर आई और सब चीजें कुजके आगे रखकर बोली—क्या कर रहे हो कुज बाबू? तुमको हुआ क्या है! पॉच बज गये, अभी तक पडे हुए हो। न हाथ-मुँह धोया और न कपडे ही बदले।

कुजका जी कुछ छोटा हो गया। उसे क्या हुआ है, यह भी क्या आज मायाके पूछनेकी बात है? कुजकी दशा क्या मायासे छिपी रहनी चाहिए? आजका दिन भी क्या और दिनोंकी तरह है? कुज, इस भयसे कि आशापर पानी न फिर जाय, कलकी कोई बात स्मरण कराकर कुछ कह न सका।

कुज खाने बैठा। मायाने बाहर घाममें फैले हुए कुजके कपड़ोंको लाकर अच्छी तरह तहाकर सदूकके भीतर और आलमारीमें रखना शुरू कर दिया।

कुजने कहा—जरा ठहर जाओ, मै अभी उठकर तुम्हारी सहायता करता हूँ।

मायाने हॅसते हुए कहा—मैं हाथ जोड़ती हूँ, और जो चाहे करो, सहायता न करना।

कुजने जल्दीसे उठकर हाथ-मुँह धोकर कहा—ठीक है। तुम मुझे बिल्कुल निकम्मा समझती हो। अच्छा, आज परीक्षा हो जाय।

यों कहकर वह कपडे तहानेकी व्यर्थ चेष्टा करने लगा। माया कुंजके हाथसे कपडे लेकर बोली—बस, आप रहने दीजिए। अच्छी सहायता करने आये, और भी काम बढाने लगे।

कुजने कहा—अच्छा तो तुम काम करो, मैं देखकर सीखूँ।

कुज उसी कपड़ोंकी आलमारीके सामने मायाके पास जमीनपर बैठ गया। माया कपड़े झाड़नेके बहाने कुजके ऊपर झुक झुककर, कपड़े तहा-तहाकर आलमारीमें रखने लगी।

आजका मिलन इसी तरह आरभ हुआ। कुजने सवेरेसे जो जो अपूर्व कल्पनाऍ की थीं, उनका कोई लक्षण न देख पड़ा। इस प्रकारका मिलना तो कवितामें रचनेकी. या सगीतमें गानेकी, अथवा उपन्यासमें लिखनेकी सामग्री नहीं है।

किन्तु तो भी कुज कुछ दु:खित नहीं हुआ—वरन् उसे कुछ सुख ही मिला। कुज, बहुत सोचनेपर भी कुछ, ठीक न कर सकता था कि वह अपने कल्पनामय मनोरथको कैसे पूर्ण करेगा—कैसे उसका आयोजन होगा, क्या बात-चीत होगी क्या क्या भाव प्रकट करने होंगे, सब प्रकारकी 'साधारणता' को किस तरह दूर,

उसकी सब अभिलाषाओं और विचारोंको सोनेका बना दिया। पृथ्वी कैसी सुन्दर है, आकाश कैसा सुहावना है, हवा जैसे पुष्प-परागके समान मनको उड़ाये लिये जा रही है।

सवेरे सवेरे एक फकीर खजड़ी बजाकर दर्वाजेपर गाने लगा। दर्वान उसे हटाने लगा, कुंजने दर्वानको मना कर एक रुपया फकीरको दे डाला। नौकर कमरेसे लैंप उठाकर ले जाने लगा, असावधानीसे लैंप गिरकर चूर चूर हो गया, नौकर डरके मारे काँपता हुआ कुंजकी तरफ देखने लगा। कुंजने कुछ न कहकर प्रसन्नताके साथ शीशेका चूरा बुहारकर बाहर फेंक देनेके लिए आज्ञा दे दी। आज वह जैसे अपनी किसी हानिको हानि ही नहीं समझता।

प्रेम इतने दिनोंतक नेपथ्यकी आड़मे तमाशा कर रहा था, आज उसने सामने आकर पर्दा उठा दिया। सारे संसारपरसे पर्दा उठ गया। नित्य देख पड़नेवाली पृथ्वीकी तुच्छता न जाने कहाँ चली गई। पेड़-पत्ते, फल-फूल, पशु-पक्षी, राहकी भीड़, शहरका कोलाहल, सभी आज सुन्दर देख पड़ता है। यह विश्व व्यापी नयापन इतने दिनोंतक कहाँ था?

कुंजको मालूम पड़ने लगा कि आज माया और दिनोंकी तरह साधारण भावसे नहीं मिलेगी। आजकी बात-चीत कवितामें लिखने लायक और भाव संगीतमें प्रकट करने योग्य होंगे।

कुंज आज दिनको ऐश्वर्य-सौन्दर्यपूर्ण करके, जैसे सृष्टि और समाजसे निराला ‘अलिफ-लैला’ का ‘अद्भुत दिन’ बना डालना चाहता है। वह सच होगा, लेकिन स्वप्न होगा,—उसमें जगतका कोई विधि-विधान, कोई दायित्व (जिम्मेदारी) और कोई वास्तविकता (असलियत) नहीं रहेगी।

आज सवेरेसे ही कुंजका मन चंचल, उत्सुक और उत्साहित था। वह कमरेसे उठकर बाहर चमनमें बहुत देरतक टहलता रहा। आज कालेज भी वह नहीं जा सका, क्योंकि मिलनकी लग्न अकस्मात् कब आ जायगी यह तो किसी पञ्चाङ्गमें लिखा ही नहीं रहता।

घरके काम-काजमें लगी हुई मायाकी आवाज कभी रसोईमें और कभी भंडारमें सुनाई पड़ती थी। लेकिन आज कुंजको यह अच्छा नहीं लगता था—आज उसने मायाको संसारसे हटाकर अपने मनमें बसा लिया है।

समय किसी तरह कटता ही नहीं। कुंज नहा चुका, खा चुका। घरका सब काम समाप्त हो गया। दो-पहर हो गई, घरमें सन्नाटा पड़ गया, तब भी माया नहीं देख पड़ी। दुःख और सुख, अधैर्य और आशासे कुंजकी हृदय तन्त्रीके सारे तार झनकना उठे।

कलका छीना हुआ ‘विष-वृक्ष’ बिछौनेपर पड़ा हुआ था। उसे देखते ही उस छीना-झपटीकी याद आ जानेसे कुंजके रोंएँ खड़े हो आये। माया जिस

तकियेको छातीके नीचे रखकर लेटी थी उसे खींचकर कुजने अपने सिरके नीचे रक्खा और 'विष-वृक्ष' की पोथी लेकर वह उसके पन्ने उलटने लगा। पन्ने उलटते उलटते पढनेमें मन लग गया, पढते पढते पॉच बज गये; मगर कुंजको कुछ भी खबर नहीं हुई।

इतनेमें एक थालीमें फल और मिठाई और दूसरी रकाबीमें कटा हुआ खुश बूदार चीनी-मिला खर्बूजा लिये माया कमरेके भीतर आई और सब चीजें कुजके आगे रखकर बोली—क्या कर रहे हो कुज बाबू? तुमको हुआ क्या है? पॉच बज गये, अभी तक पड़े हुए हो। न हाथ-मुॅह धोया और न कपड़े ही बदले।

कुजका जी कुछ छोटा हो गया। उसे क्या हुआ है, यह भी क्या आज मायाके पूछनेकी बात है? कुजकी दशा क्या मायासे छिपी रहनी चाहिए! आजका दिन भी क्या और दिनोंकी तरह है! कुज, इस भयसे कि आशापर पानी न फिर जाय, कलकी कोई बात स्मरण कराकर कुछ कह न सका।

कुज खाने बैठा। मायाने बाहर घाममें फैले हुए कुजके कपड़ोंको लाकर अच्छी तरह तहाकर सदूकके भीतर और आलमारीमें रखना शुरू कर दिया।

कुजने कहा—जरा ठहर जाओ, मैं अभी उठकर तुम्हारी सहायता करता हूँ।

मायाने हॅसते हुए कहा—मैं हाथ जोड़ती हूँ, और जो चाहे करो, सहायता न करना।

कुजने जल्दीसे उठकर हाथ-मुॅह धोकर कहा—ठीक है। तुम मुझे बिल्कुल निकम्मा समझती हो। अच्छा, आज परीक्षा हो जाय।

यों कहकर वह कपडे तहानेकी व्यर्थ चेष्टा करने लगा। माया कुजके हाथसे कपडे लेकर बोली—बस, आप रहने दीजिए। अच्छी सहायता करने आये, और भी काम बढाने लगे।

कुजने कहा—अच्छा तो तुम काम करो, मैं देखकर सीखूॅ।

कुज उसी कपड़ोंकी आलमारीके सामने मायाके पास जमीनपर बैठ गया। माया कपड़े झाड़नेके बहाने कुजके ऊपर झुक-झुककर, कपड़े तहा-तहाकर आलमारीमें रखने लगी।

आजका मिलन इसी तरह आरभ हुआ। कुजने सवेरेसे जो जो अपूर्व कल्पनाऍ की थीं, उनका कोई लक्षण न देख पड़ा। इस प्रकारका मिलना तो कवितामें रचनेकी, या सगीतमें गानेकी, अथवा उपन्यासमें लिखनेकी सामग्री नहीं है।

किन्तु तो भी कुज कुछ दुःखित नहीं हुआ—वरन् उसे कुछ सुख ही मिला। कुज, बहुत सोचनेपर भी कुछ, ठीक न कर सकता था कि वह अपने कल्पनामय मनोरथको कैसे पूर्ण करेगा—कैसे उसका आयोजन होगा, क्या बात-चीत होगी क्या क्या भाव प्रकट करने होंगे, सब प्रकारकी 'साधारणता' को किस तरह दूर,

रखना होगा। इस कपड़े झाड़कर और तहाकर रखनेमें हँसी-दिल्लगी करके वह जैसे अपनी एक असम्भव दुरूह कल्पनाके हाथसे छुटकारा पाकर स्वस्थ हुआ।

इसी समय लक्ष्मी कमरेमें आई। उसने कुजसे कहा—बहू तो कपड़े रख रही है, तू यहाँ बैठा बैठा क्या कर रहा है?

मायाने कहा—देखो तो बुआजी, झूठ-मूठ बैठे हुए और भी मेरे काममें देर करा रहे हैं।

कुजने कहा—वाह! मैं तो बैठा बैठा काममें सहायता कर रहा हूँ।

लक्ष्मीने कहा—ऐसे ही मेरे भाग हैं जो तू सहायता करेगा! बहू, कुजकी सदासे ऐसे ही तो आदत है। मा-चाचीका दुलारा कुज कोई भी काम अपने हाथसे करना नहीं जानता।

इतना कहकर माताने एक बार स्नेहपूर्ण दृष्टिसे अपने काम करनेमें अशक्त लड़केकी तरफ देखा। लक्ष्मी सदा मायासे यह चाहती थी कि वही किसी तरह इस आकर्मण्य और माताके स्नेहकी अत्यन्त अपेक्षा रखनेवाले सयाने लड़केको आराममें रक्खे। पुत्रकी सेवाका काम पूर्णरूपसे मायाको सौंपकर लक्ष्मी अत्यन्त निश्चिन्त और परम सुखी थी। अब कुज मायाकी कदर करने लगा है और उसे न जाने देनेके लिए आग्रह करता है—इससे भी लक्ष्मीको बड़ा आनन्द और सन्तोष है।

कुजको सुनाकर लक्ष्मीने कहा—बहू, आज तो तुमने कुजके जाड़ेके कपड़े घाममें डाले हैं, अब कल नये रूमालोंमें उसके नामके अक्षर काढ देना। तुमको यहाँ लाकर कुछ सुख तो नहीं दे सकी, उलटा दिन-रात काम कराकर कष्ट दे रही हूँ।

मायाने कहा—बुआजी, अगर यों कहोगी, तो मैं समझूँगी कि तुम मुझे गैर समझती हो।

लक्ष्मीने प्यारके साथ कहा—नहीं बेटी, तुम्हारे सरीखा अपना मुझे मिलेगा कहाँ!

माया जब सब कपड़े रख चुकी तब लक्ष्मीने कहा—रस पकाना है, पकवान बनाना है, कहो तो चलकर चूल्हा बालूँ, या तुमको अभी और कोई काम करना है?

मायाने कहा—नहीं बुआ, अब तो और कोई काम नहीं है। चलो, पकवान बना डालें।

कुजने कहा—मा, अभी तो तुम मायाको काम कराकर कष्ट देनेके लिए दुःख प्रकट कर रही थीं और अब फिर काम करनेके लिए घसीट ले चलीं!

लक्ष्मीने प्यारसे मायाकी ठोढी छूकर कहा—मेरी बहू साक्षात् लक्ष्मी है, उसे काम करते रहना ही अच्छा लगता है।

कुजने कहा—आज शामको कोई कामकाज नहीं है, मैंने सोचा था कि मायाको कोई पुस्तक पढ़कर सुनाऊँगा।

मायाने कहा—बुआजी, अच्छा तो है, आज शामको पोथी सुनने आना होगा। मैं भी आऊँगी, तुम भी आना

लक्ष्मीने सोचा, कुंज आजकल बिल्कुल अकेला रह गया है, हम सबको मिलकर उसे बहला रखना चाहिए। लक्ष्मीने कहा—हाँ, अच्छा तो है, पकवानके बाद ब्यालू बनाकर तेरे साथ मैं भी सुनने आऊँगी। क्यों कुंज, पोथी पढ़ेगा न?

मायाने कटाक्षके साथ एक बार कुंजकी तरफ देखा। कुंजने कहा—अच्छा, पढ़ूँगा। किन्तु कुंजका सारा उत्साह फीका पड़ गया। माया भी लक्ष्मीके साथ ही साथ चली गई।

कुंजने चिढ़कर अपने मनमें कहा—मैं भी आज शामको घूमने चला जाऊँगा और देर करके लौटूँगा।

विचार आते ही उसे कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए इतनी व्यग्रता बढ़ी कि वह उसी समय बाहर जानेके लिए कपड़े पहनने लगा। लेकिन बाहर जा नहीं सका। बहुत देर तक तो छतपर टहलता रहा, बीचमें कई बार सीढ़ियोंकी तरफ देखा भी, मगर अन्तको कमरेके भीतर जाकर कुर्सीपर बैठ गया। कुंजने मन ही मन नाराज होकर कहा—आज मैं पकवानमें हाथ भी न लगाकर माको जता दूँगा कि इतनी देर तक रस पकानेसे उसमें मिठास बिल्कुल नहीं रहती!

आज भोजनके समय माया लक्ष्मीको साथ लेती आई। सीढ़ियाँ चढ़नेसे लक्ष्मीकी साँस फूलने लगती थी, इसीसे अब वह प्रायः बहुत कम ऊपर आया-जाया करती थी। आज माया बहुत कुछ अनुरोध करके ही उसे साथ लाई है। कुंज बहुत गंभीर भावसे रूखा बनकर भोजन करने लगा।

मायाने कहा—यह क्या कुंज बाबू, आज तो तुम कुछ खाते ही नहीं!

लक्ष्मीने व्यस्त होकर पूछा—तबियत तो अच्छी है न?

मायाने कहा—मैंने इतनी मेहनत करके पकवान बनाया है, कुछ खाना ही पड़ेगा—मगर, जान पड़ता है, अच्छा नहीं बना। अच्छा, तो रहने दो!—ना ना, अनुरोधमें पड़कर जबर्दस्ती खानेकी कोई जरूरत नहीं है, पड़ा रहने दो!

कुंजने कहा—कैसी मुश्किलकी बात है! पकवान ही मुझको सब चीजोंसे अधिक पसन्द है, और बना भी अच्छा है, तुम अगर मना करोगी तो मैं कब सुननेवाला हूँ।

सब पकवान कुंजने खा डाला, उसका एक छोटा-सा टुकड़ा भी नहीं बचा।

भोजनके बाद कुंज, लक्ष्मी और माया—तीनों आदमी कमरेमें बैठे, लेकिन कुंजने पोथी पढ़नेका प्रस्ताव फिर नहीं उठाया!

लक्ष्मीने कहा—अरे कुंज, तूने इस समय पोथी पढ़कर सुनानेको कहा था, पढ़ न, कौन-सी पोथी पढ़ेगा?

कुंजने कहा—मगर उस पोथीमें राम-कृष्ण या देव-देवियोंकी कोई बात नहीं है, उसको सुननेमें तुम्हारा मन न लगेगा।

मन न लगेगा? जिस तरह हो, मन लगानेके लिए तो लक्ष्मी निश्चय किये बैठी

है। कुंज अगर अरबीकी भी कोई किताब पढ़े तो उसमें भी लक्ष्मीका मन लगेगा। आहा बेचारा कुंज! बहू काशी चली गई है, अकेला पड़ा हुआ है—उसे जो अच्छा लगेगा, वह माको कैसे न अच्छा लगेगा? न अच्छा लगेगा, तो काम कैसे चलेगा?

मायाने कहा—एक काम न करो कुंज बाबू, बुआजीके कमरेमें तुलसीकृत रामायण है, उसीको लाकर आज सुनाओ। बुआजीको भी अच्छी लगेगी और रामका नाम भी निकलेगा।

कुंजने अत्यन्त करुण भावसे एक बार मायाकी तरफ ताका। इसी बीचमें दासीने आकर कहा—माजी, चंदूकी मा तुम्हारे कमरेमें आकर बैठी हैं।

चन्दूकी मासे और लक्ष्मीसे बड़ी घनिष्ठता है। सन्ध्याके बाद उनसे बात चीत करनेकी इच्छाको रोकना लक्ष्मीके लिए दुःसाध्य है। तो भी आज उन्होंने दासीसे कहा—चंदूकी मासे जाकर कह दे कि आज कुंजके पास कोई नहीं है, कुछ बात चीत और सलाह भी उनसे करनी है, कल वे जरूर आवें।

कुंज झटपट बोल उठा—क्यों मा, तुम उनसे भेंट कर न आओ!

मायाने कहा—क्या जरूरत है बुआजी, तुम यहाँ रहो, मैं जाकर उनके पास बैठती हूँ।

लक्ष्मीसे बिना चंदूकी मासे मिले रहा न गया। उसने कहा—बहू, तुम तब तक यहाँ बैठो। मैं दो-चार बातें करके ही उन्हें बिदा किये आती हूँ। कुंज, तू पढ़ना शुरू कर—मेरी राह न देख।

लक्ष्मीके जाते ही कुंज स्थिर न रह सका, बोल उठा—माया, तुम जान बूझकर इस तरह व्यर्थके लिए क्यों मुझे सताती हो?

मायाने विस्मित होकर कहा—वाह जी, मैंने तुमको क्या सताया? अगर मेरे यहाँ आनेसे तुमको कष्ट हुआ हो तो, ए लो, मैं जाती हूँ।

उदास मुँह करके माया जानेके लिए उठने लगी।

कुंजने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—इसी तरह तो तुम मुझे सताती और जलाती हो!

मायाने कहा—वाह, मुझे नहीं मालूम था कि मुझमें इतना तेज है! मगर तुम्हारा भी तो हृदय कम कठिन नहीं है, बहुत सह सकते हो! लेकिन चेहरा देखनेसे तो तुम्हारे जलनेका कोई लक्षण देख नहीं पड़ता!

"चेहरा देखकर क्या जानोगी!" कहकर कुंजने मायाका हाथ बल-पूर्वक खींचकर अपनी धड़कती हुई छातीपर रख लिया।

माया 'उः' कहकर चीख उठी। कुंजने जल्दीसे हाथ छोड़ दिया और घबड़ाकर कहा—क्या लग गया?

कुजने देखा, उस दिन मायाके हाथमे जो चोट लगी थी उसीसे खून बह रहा है। कुजने दुःख करके कहा—मैं भूल गया था। मुझसे बड़ा भारी अपराध हुआ। अच्छा, लाओ, इसमें दवा लगा दूँ।

मायाने कहा—नहीं, आप ही अच्छा हो जायगा—मै दवा नहीं लगाऊँगी।

कुजने कहा—क्यों ?

मायाने कहा—क्यों क्या, तुमको क्या करना है। यह चोट जैसी है वैसी ही रहेगी।

कुजने खिन्न होकर अपने मनमें कहा—मायाकी माया कुछ भी समझमें नहीं आती। सच किसीने कहा है कि स्त्रीके चरित्रको अच्छी तरह देव भी नहीं जानता, मनुष्य क्या जान सकता है।

माया बाहर जाने लगी। कुजने भी अभिमानके मारे उसे न रोककर कहा—कहाँ जाती हो ?

'काम है' कहकर माया धीरे धीरे चली गई।

मिनट-भर बैठे रहकर, फिर मायाको लौटा लानेके लिए, कुज जल्दीसे उठ खड़ा हुआ, किन्तु सीढ़ियों तक जाकर लौट आया और कमरेके सामने टहलने लगा।

माया नित्य अपनी तरफ खींचती भी है, मगर पास भी नहीं आने देती। कुजको इस बातका गर्व था कि और कोई उसे जीत नहीं सकता। इस समय उसका यह गर्व मिट गया है किन्तु, वह चेष्टा करनेसे औरको अपने वशमें कर सकता है—यह गर्व भी क्या न रख सकेगा ? आज उसने हार मानी लेकिन हार मना नहीं सका। अपने हृदयके बारेमें कुजका बड़ा ऊँचा खयाल था। वह किसीको अपने समान उच्च-हृदय माननेके लिए तैयार न था लेकिन, आज, उसे मुँहकी खानी पड़ी—उच्चहृदयका अभिमान गँवाना पड़ा। जो श्रेष्ठता उसने गँवाई उसके बदलेमें कुछ मिला भी नहीं। जैसे बन्द दर्वाजेके सामने शामके वक्त कोई फकीर भीख माँगे और कुछ न पाकर खाली हाथ राहमें खड़ा रहे—ठीक वही दशा कुजकी हुई।

फागुन-चैतके दिनोंमें बिहारीके इलाकेपरसे बहुत-सा शहद आया करता था। हर साल वह लक्ष्मीके यहाँ भी आता था—इस साल भी बिहारीने भेज दिया।

माया खुद शहदका बर्तन लेकर लक्ष्मीके पास गई और बोली—बुआजी, बिहारी बाबूने शहद भेजा है।

लक्ष्मीने वह शहद भंडारेमें रखनेके लिए आज्ञा दी। माया शहद रखकर लक्ष्मीके पास आकर बैठ गई। उसने कहा—बिहारी बाबू किसी काममें तुमको नहीं भूलते। बेचारोंके मा-बाप कोई नहीं है, तुमको ही मा समझते हैं।

लक्ष्मीकी दृष्टिमें बिहारी कुजकी छायाकी तरह था। वह कुंजके आगे उसके बारेमें अधिक सोचती-विचारती न थी, वह उसके घरका बिना मूल्य और बिना

यत्नका अनुगत आदमी था। किन्तु आज जब मायाने लक्ष्मीको मातृ-हीन बिहारीकी मा बतलाया, तब उसका पुत्र-वंचित स्नेहमय हृदय एकाएक बिहारीकी यादसे विह्वल और गद्गद हो गया। एकाएक मनमें आया कि ठीक है, बिहारीके मा नहीं है, वह मुझको ही अपनी मा समझता है।

रोग, सन्ताप और सकटके समय बिहारीने बराबर बिना बुलाये आकर चुपचाप श्रद्धाके साथ सेवा की है। लक्ष्मीने वह सेवा बिना किसी सकोचके सहज ही स्वीकार कर ली है। उस सेवाके लिए किसीके निकट कृतज्ञ होनेकी बात कभी सोची भी नहीं। किन्तु बिहारीकी खबर किसने ली है?

जब गौरी थी तब उसकी खबर लेती थी, किन्तु उसमें भी लक्ष्मी समझती थी कि वह बिहारीको अपने काबूमें रखनेके लिए स्नेहका आडम्बर करती है।

लक्ष्मीने आज एक सॉस लेकर कहा—बेशक, बिहारी मेरे लड़केके बराबर है।

लक्ष्मीको जान पड़ा कि बिहारी उसके अपने लडकेसे बहुत अधिक सेवा और भक्ति करता है और उसने कभी अपनी सेवाके बदलेमें कुछ न पाकर भी बुरा नहीं माना—उसकी श्रद्धा नहीं घटी। यही सोचकर उसने सॉस ली थी।

मायाने कहा—बिहारी बाबूको तुम्हारे हाथका भोजन बहुत रुचता है।

लक्ष्मीने स्नेहके गर्वसे फूलकर कहा—और किसीकी बनाई कढी उसे अच्छी ही नहीं लगती।

यह कहते हुए उसे स्मरण हुआ कि बिहारी बहुत दिनोंसे नहीं आया। मायासे कहा—अच्छा बहू, आजकल बिहारी क्यों नहीं देख पड़ता?

मायाने कहा—मैं भी तो यही सोच रही थी बुआ! बात यह है कि तुम्हारा लड़का तो, जबसे ब्याह हुआ तबसे, अपनी बहूके फेरमें पड़ गया है—फिर इष्ट मित्र लोग आकर क्या करें?

मायाकी बात लक्ष्मीको ठीक जॅची। अपनी बहूको लेकर कुंजने अपने सब हित चाहनेवालोंको दूर हटा दिया है। बिहारीको तो बुरा मालूम ही पड़ेगा—वह क्यों आवेगा? बिहारीको अपनी ही अवस्थामें पाकर लक्ष्मीको उससे और भी सहानुभूति बढ गई। लक्ष्मी मायासे कहने लगी—बिहारी बचपनसे, बिना किसी स्वार्थके, कुजकी भलाई करता आया है, उसने कुंजके लिए अनेकों बार अनेकों कष्ट सहे हैं।

इस प्रकार बिहारीकी ओटमें अपने अभियोगका समर्थन करके लक्ष्मीने यह सिद्ध कर दिया कि, दो दिन बहूके पास रहकर अपने चिर-कालके बन्धुको इस तरह छोड़ देना कुंजकी भूल है, अन्याय है और अधर्म भी है।

मायाने कहा—कल इतवार है बुआजी, कल अगर तुम बिहारी बाबूको खानेके लिए बुलाओ तो वे बहुत प्रसन्न होंगे।

लक्ष्मीने कहा—ठीक कहती हो बहू,—अच्छा तो कुजको बुलाती हूँ, वह विहारीको न्यौता लिख भेजेगा।

मायाने कहा—नहीं बुआजी, तुम आप न्यौता भेजो।

लक्ष्मीने कहा—मैं क्या बेटी, तुम लोगोंकी तरह लिखना-पढ़ना जानती हूँ?

मायाने कहा—तुम नहीं लिख सकतीं तो मैं तुम्हारी तरफसे लिख भेजूँगी।

मायाने लक्ष्मीके नामसे आप ही चिट्ठी लिखकर आदमीके हाथ बिहारीके पास भेज दी।

रविवारका दिन कुजके लिए बड़ा बहुमूल्य होता है। शनिवारकी रातसे ही उसकी कल्पना प्रबल हो उठती है। वह सोचने लगता है कि कल क्या करना होगा। यद्यपि आजतक उसकी कल्पनाके माफिक कुछ नहीं हुआ, तो भी रवि-वारके प्रातःकालका प्रकाश उसे बहुत ही सुन्दर और सुहावना मालूम पड़ने लगा; जगे हुए नगरवासियोंका कोलाहल मनोहर सगीतके समान मधुर जान पड़ा।

मगर यह क्या मामला है? मा आज कोई व्रत या पूजा करेंगीं क्या? और दिनकी तरह आज तो वे बैठी नहीं हैं, मायाके साथ आप भी काम-काजमें लगी हुई हैं।

काम-काजकी धूममें दस बज गये। इस बीचमें किसी बहानेसे भी एकान्तमे माया नहीं मिली। कुज पुस्तक पढ़नेकी चेष्टा करने लगा। पढनेमें किसी तरह मन नहीं लगा तब एक अखबारमें छपे हुए किसी अनावश्यक विज्ञापनको १०-१५ मिनट तक व्यर्थ देखता रहा।

कुजसे रहा नहीं गया। उसने नीचे जाकर देखा, उसकी मा दालानमें बैठी हुई लोहेके चूल्हेमें तरह-तरहकी खानेकी चीजें बना रही है और माया, कमरसे धोती कसे हुए, सामान जुटानेमें—चीजें उठा-उठाकर देनेमें—लगी हुई है।

कुजने पूछा—आज मामला क्या है? इतनी धूम-घाम काहेकी है?

लक्ष्मीने कहा—क्या बहूने तुझसे नहीं कहा? आज मैंने बिहारीको न्यौता दिया है।

बिहारीको न्यौता! कुजके बदनमें नीचेसे ऊपर तक आग लग गई। उसने कहा—मगर मा, मैं तो रह नहीं सकूँगा।

लक्ष्मीने व्यस्त होकर कहा—क्यों? कहाँ जायगा?

कुजने कहा—मुझे अपने एक मित्रके यहाँ जरूरी कामके लिए जाना है।

लक्ष्मीने कहा—तो खा पी ले, तब जाना। अब बहुत देर नहीं है।

कुजने कहा—मेरा न्यौता भी वहीं है।

मायाने एक बार कुजकी ओर कटाक्ष करके कहा—अगर न्यौता है तो उन्हें जाने न दो बुआजी! न होगा, आज बिहारी बाबू अकेले ही भोजन कर लेंगे।

मगर अपने हाथकी बनाई रसोई कुंजको खिलाए विना लक्ष्मीको चैन कहाँ? वह भोजन करके जानेके लिए जितना ही कुंजसे अनुरोध करने लगी उतना ही कुंजका हठ बढने लगा। उसने कहा—बहुत जरूरी न्यौता है, मुझे जाना ही होगा। बिहारीको न्यौता देनेके पहले तुमको मुझसे पूछ लेना था—इत्यादि।

कुंजने नाराज होकर इस तरह माको छकानेकी व्यवस्था की। लक्ष्मीका सारा उत्साह और आग्रह कपूरकी तरह उड़ गया। उसकी इच्छा हुई कि सब छोड़कर पड़ रहूँ।

मायाने कहा—बुआजी, तुम चिन्ता न करो, कुंज बाबू खाली जबानी जमा खर्च कर रहे हैं। आज बाहर न्यौता खाने उनसे जाया ही न जायगा।

लक्ष्मीने सिर हिलाकर कहा—नहीं बेटी, तू कुंजको नहीं जानती, वह जो जिद पकड़ लेता है उसे करके ही छोड़ता है।

लेकिन अन्तको यही बात सिद्ध हुई कि माया कुंजको लक्ष्मीसे कम नहीं जानती। कुंज समझ गया था कि मायाने ही मासे कहकर, बिहारीका न्यौता कराया है। यह सोचकर जितनी ही ईर्षा बढने लगी उतना ही उसका बाहर जानेका संकल्प शिथिल होने लगा। कुंजसे यह देखे बिना कैसे रहा जा सकता था कि बिहारी क्या करता है, और माया क्या करती है? देखकर जलना होगा तो भी देखना जरूरी है।

बिहारीने आज बहुत दिनोंके बाद निमन्त्रित आत्मीय आदमीकी तरह कुंजके घरमें प्रवेश किया। यह घर उसे लड़कपनसे सुपरिचित है, इस घरमें उसने घरके लड़केकी तरह बे-रोक-टोक बहुत कुछ ऊधम मचाया है। इन्हीं बातोंको सोचता हुआ बिहारी जनानी ड्योढीपर जरा ठिठक गया। उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। बिहारीने बड़े कष्टसे आँसुओंके वेगको रोका और, मुसकराते हुए, घरमे घुसकर, उसी समय नहाकर बाल सुखाती हुई लक्ष्मीके पैरोंपर सिर रख दिया। जब बिहारी नित्य आता-जाता था तब इस तरह प्रणाम नहीं करता था। आज जैसे वह बहुत दिन विदेशमें रहकर घर आया है, इसीसे उसने इस तरह प्रणाम किया। बिहारी जब प्रणाम करके उठने लगा तब लक्ष्मीने स्नेहके साथ सिरपर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया।

लक्ष्मीने आज गूढ सहानुभूतिके कारण पहलेकी अपेक्षा कहीं अधिक बिहारीका आदर-सत्कार किया, कहा—बिहारी, तू इतने दिन इधर आया क्यों नहीं? मैं रोज सोचती थी कि आज बिहारी आवेगा—आज बिहारी आवेगा।

बिहारीने हँसकर कहा—मा, अगर मैं रोज आता तो फिर रोज मेरी याद कैसे आती? कुंज दादा कहाँ हैं?

लक्ष्मीने उदास होकर कहा—कुंजका आज कहीं न्यौता था, वह बहुत जरूरी था; इसीसे नहीं ठहर सका।

यह सुनकर बिहारीको बड़ी चोट लगी। बचपनकी मित्रताका अन्तको क्या

यही परिणाम होगा ? एक लम्बी साँस लेकर मनसे विषाद-घटाको इस समय उड़ा देनेकी चेष्टा करके बिहारीने पूछा—मा, मेरे लिए आज क्या क्या बना है—ज़रा सुनूँ तो।

बिहारीने एक एक करके अपनेको रुचनेवाली सब चीजोंके बारेमे पूछा। जब लक्ष्मी रसोई बनाती थी तब बिहारीकी आदत थी कि वह कुछ अधिक आडम्बर करके लक्ष्मीकी बनाई चीजोंपर अपनी रुचि दिखलाता था और, इस प्रकार, रुचि दिखाता हुआ, लक्ष्मीसे माताका स्नेह प्राप्त कर सुखी होता था। आज भी अपनी बनाई रसोईपर बिहारीकी अत्यन्त रुचि और उत्कण्ठा देखकर लक्ष्मी अत्यन्त प्रसन्न हुई और हँसते हँसते उसने सन्तान समान अतिथिको आश्वासन दिया।

इसी समय कुजने आकर रूखे भावसे कहा—क्यों बिहारी, कैसे हो ?

लक्ष्मीने चौंककर कहा—क्यों कुज, तू न्यौतेमें नहीं गया ?

कुज लज्जित हुआ, लेकिन लज्जा छिपानेकी चेष्टा करके बोला—नहीं जा सका। चिट्ठी लिखकर भेज दी है कि एक जरूरी काम आ पड़ा है, नहीं आ सकूँगा।

इतनेमें नहा-धोकर माया आई। उसे देखकर बिहारी कुछ नहीं बोला। कुज और मायाकी जो लीला उसने उस दिन कमरेमें देखी थी वह उसे अच्छी तरह याद थी।

मायाने बिहारीके पास आकर कोमल स्वरमे कहा—क्यों बिहारी बाबू, जान पड़ता है, जैसे बिलकुल पहचानते ही नहीं।

बिहारीने कहा—सभीको थोड़े पहचाना जा सकता है।

मायाने कहा—पहचाना जा सकता है, अगर कुछ समझसे काम लिया जाय तो पहचाना जा सकता है।

कुज और बिहारी दोनों भोजन करने बैठे। लक्ष्मी पास ही बैठकर देखने लगी और माया परोसने लगी।

कुजका मन भोजन करनेमें नहीं था। वह केवल 'परोसनेके पक्षपात' पर लक्ष्य कर रहा था। उसे जान पड़ा कि बिहारीको परोसने और खिलानेमें मायाको जैसे विशेष सुख मिल रहा है। 'बिहारीकी थालीमें ही अधिक कढी और किस-मिसकी तर्कारी क्यों दी गई' इस शिकायतका एक बड़ा अच्छा उत्तर मायाके पास था—कुज घरका आदमी है, और बिहारी निमन्त्रणमें बुलाया गया है।

लक्ष्मी पापड़ बहुत अच्छे बनाती और भूनती थी। बचा हुआ एक पापड़ माया बिहारीकी थालीमें डालने लगी। बिहारीने कहा—ना ना, कुज दादाको दो, उन्हें पापड़ बहुत अच्छा लगता है।

कुज तीव्र अभिमानके साथ कह उठा—नहीं नहीं, मुझे नहीं चाहिए।

मायाने फिर अनुरोध न कर वह पापड़ बिहारीकी थालीमें डाल दिया।

भोजनके बाद दोनों मित्र उठकर बाहर चले; मायाने जल्दीसे आकर कहा—बिहारी बाबू अभी न जाना, जरा ऊपर चलके बैठो।

बिहारीने कहा—तुम भोजन करने न जाओगी ?

मायाने कहा—नहीं, आज एकादशी है।

निष्ठुर विद्रूप-मयी एक सूक्ष्म हँसीकी रेखा बिहारीके मुखपर देख पड़ी। उसका मतलब यही था कि—इधर एकादशीका व्रत भी नहीं छूटता, धर्म-पालनमें कोई त्रुटि नहीं होने पाती और उधर—

वह विद्रूप-पूर्ण हँसीकी झलक मायाकी नजरोंसे छिपी नहीं रही। लेकिन उसने जैसे हाथकी चोट सह ली वैसे ही यह हँसीकी कटारी भी चुपचाप सह ली। मायाने बहुत ही दीनता दिखाकर कहा—तुमको मेरी कसम, जरा देरके लिए ऊपर चलकर बैठो।

कुंजने एकाएक असंगत भावसे उत्तेजित होकर कहा—तुम लोगोंको कुछ भी समझ नहीं है—काम हो या न हो, इच्छा हो या न हो, मगर बैठना ही होगा। इतने अधिक आदरका तो कुछ भी मतलब मेरी समझमें नहीं आता।

माया जोरसे हँस पड़ी, बोली—बिहारी बाबू, अपने दादाकी बातें सुनते हो? 'आदर' का मतलब है 'आदर।' कोशमें इस शब्दका मतलब समझानेके लिए कोई दूसरा शब्द लिखा ही नहीं है। (कुंजसे) मैं तो समझती हूँ कि 'अधिक आदर' का मतलब लड़कपनसे ही तुम जितना समझते हो उतना और कोई नहीं समझता होगा।

बिहारीने मायाको कुछ उत्तर न देकर कुंजसे कहा—कुंज दादा, एक बात कहनी है, जरा सुन लो, और कुंजको लेकर वह बाहर चला गया। माया चुपचाप बरामदेमें खड़े खड़े शून्य आकाशकी तरफ शून्य दृष्टिसे देखती रह गई।

बिहारीने बाहर आकर कहा—कुंज दादा, मैं जानना चाहता हूँ कि हम लोगोंकी मित्रताकी क्या यहीं इतिश्री होगी ?

उस समय कुंजके हृदयमें आग जल रही थी। मायाके व्यंगमय वचन विषबुझे पैने बाणोंकी तरह उसके हृदयको बारबार वेध रहे थे। उसने कहा—मित्रताकी इतिश्री हो जानेसे तुमको विशेष सुभीता हो सकता है, किन्तु मुझे तो यहीं मित्रताका अन्त हो जाना उतना प्रार्थनीय नहीं जान पड़ता। मैं केवल अपनी गिरिस्तीमें बाहरी आदमियोंको घुसेड़ना नहीं चाहता—अन्तःपुरको अन्तःपुर ही रखना चाहता हूँ।

बिहारी कुछ न कहकर चला गया।

कुंजका शरीर और मन ईर्षासे जर्जर हो रहा था। उसने प्रतिज्ञा की कि अब मायासे मुलाकात और बात नहीं करूँगा: लेकिन थोड़ी ही देरमें वह मायासे मिलनेकी घातमें भीतर-बाहर ऊपर-नीचे छटपटाता हुआ आने-जाने लगा।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

करुणाने एक दिन गौरीसे पूछा—अच्छा मौसी, तुमको मौसाजीकी कभी याद आती है ?

गौरीने कहा—मैं ग्यारह बरसकी अवस्थामें ही विधवा हो गई थी। स्वामीकी मूर्ति छायाकी तरह याद पड़ती है।

करुणाने कहा—तब फिर मौसी, तुम किसका ध्यान किया करती हो ?

गौरीने मुसकराकर कहा—मेरे स्वामी इस समय जिसमें विराजमान हैं उसी ईश्वरका ध्यान किया करती हूँ।

करुणाने कहा—इससे क्या तुमको सुख मिलता है ?

गौरीने प्यारके साथ करुणाके सिरपर हाथ फेरकर कहा—मेरे मनकी वह बात तू क्या समझ सकेगी बेटी। उसे मेरा मन जानता है, और जिसका ध्यान करती हूँ वे जानते हैं।

करुणा अपने मनमें कहने लगी—मैं जिनका दिन-रात ध्यान किया करती हूँ वे क्या मेरे मनकी बात नहीं जानते ? मैं अच्छी तरह चिट्ठी लिखना नहीं जानती, इससे उन्होंने क्यों मुझे चिट्ठी लिखना छोड़ दिया है ?

इधर करुणाको कुंजकी कोई चिट्ठी नहीं मिली। एक साँस लेकर उसने अपने मनमें कहा—मेरी सखी जो मेरे पास होती तो वह मेरे मनकी बातें अच्छी तरह चिट्ठीमें लिखा देती।

टेढ़े-मेढ़े बुरे अक्षरोंमें लिखी हुई छोटी-सी चिट्ठीको स्वामीसे आदर नहीं मिलेगा, इस विश्वासके कारण चिट्ठी लिखनेके लिए करुणाका हाथ नहीं उठता था। यदि जी पोढ़ा करके साहसके साथ चिट्ठी लिखने बैठी भी तो जितना ही वह बना-बनाकर लिखनेका यत्न करती थी उतना ही उसके अक्षर बिगड़ जाते थे। जितना ही वह अपने मनकी बातोंको सोचकर लिखना चाहती थी उतने ही उलझनमें पड़ जाती थी। यदि केवल 'श्रीचरणेषु' लिखकर दस्तखत कर देनेसे अन्तर्यामी देवताकी तरह कुंज उसके मनकी बातें समझ लेता तो करुणाका चिट्ठी लिखना सार्थक हो सकता था। हाय ! विधाताने करुणाको अगर इतना प्रेम दिया था, तो उसे प्रकट करनेके लिए सुन्दर भाषा क्यों नहीं दी ?

ठाकुरजीकी सन्ध्याकी आरती हो जानेके बाद करुणा फिर गौरीके पास बैठकर धीरे धीरे उनके पैर दबाने लगी। बहुत देर चुप रहनेके बाद करुणाने कहा—मौसी, तुम कहती हो कि स्वामीको देवताकी तरह समझकर उसकी सेवा करना स्त्रीका धर्म है, मगर जो स्त्री मूर्ख है, जिसके बुद्धि नहीं है, जो नहीं जानती कि स्वामीकी सेवा किस तरह करनी चाहिए, वह क्या करे ?

गौरी कुछ देरतक करुणाके मुखकी तरफ देखती रही, उसके बाद एक सहानुभूतिसे भरी हुई साँस लेकर उसने कहा—बेटी, मैं भी तो मूर्ख हूँ, तब भी भगवानकी सेवा और भजन किया करती हूँ।

करुणाने कहा—वे तुम्हारे मनकी जानते हैं, इसीसे प्रसन्न होते हैं, लेकिन मान लो, स्वामी अगर मूर्खकी सेवासे प्रसन्न न हो?

गौरीने कहा—सबको प्रसन्न करनेकी शक्ति सबमें नहीं होती बेटी। स्त्री यदि आन्तरिक श्रद्धा, भक्ति और यत्नके साथ स्वामीकी सेवा और गिरिस्तीका कामकाज करती रहे तो स्वामी अगर उसे, तुच्छ समझकर, स्वीकार नहीं करता, तो स्वयं जगदीश्वर ग्रहण करते हैं।

करुणाने कुछ उत्तर नहीं दिया, चुप रही। मौसीकी इस बातसे सान्त्वना प्राप्त करनेके लिए उसने बहुत चेष्टा की, लेकिन उसे किसी तरह इसपर विश्वास नहीं हुआ कि स्वामी जिसे तुच्छ समझ अस्वीकार करेगा उसे जगदीश्वर सार्थक सफल बना सकेंगे। वह फिर सिर झुकाकर मौसीके पैर दबानेमें लग गई।

गौरीने तब करुणाका हाथ पकड़कर उसे और भी निकट कर लिया और उसका माथा चूमकर अपने रुँधे हुए गलेको बड़ी चेष्टासे साफ करके कहा—चुन्नी, दुःख और कष्टमें जो शिक्षा मिलती है वह उन दुःख और कष्टकी बातोंको केवल कानसे सुन लेनेसे नहीं मिल सकती। एक समय मैंने भी तेरी-ही-इतनी अवस्थामें संसारसे व्यवहार कर लेने-देनका सम्बन्ध लगाया था। उस समय मैं भी तेरी ही तरह सोचती थी कि जिसकी सेवा करूँगी उसे सन्तोष क्यों न होगा? जिसकी पूजा करूँगी उसका प्रसाद क्यों न पाऊँगी? जिसकी भलाईकी चेष्टा करूँगी वह मेरी उस चेष्टाको भलाईकी दृष्टिसे क्यों न देखेगा? लेकिन पग-पगपर मुझे यही अनुभव हुआ कि वैसा नहीं होता। अन्तको एक दिन असह्य हो गया, मालूम पड़ा—संसारमें मेरा सब किया कराया मिट्टी हो गया, उसी दिन संसारसे नाता तोड़कर यहाँ चली आई। लेकिन आज देखती हूँ, मेरा कुछ भी निष्फल या व्यर्थ नहीं हुआ। अरी बेटी, जिनके साथ असल लेन-देनका सम्बन्ध है, जो इस संसारकी हाटके मूल महाजन हैं, वे ही मेरे सब कामोंको—सेवा, पूजा और भलाईकी चेष्टाको स्वीकार और ग्रहण करते हैं। वे ही हृदयमें बैठे हुए आज इस बातको स्वीकार कर रहे हैं। अगर पहले ही यह ज्ञान मुझे होता, अगर मैं उन्हींका काम समझकर संसारके सब काम करती, अगर उन्हींके उद्देशसे संसारको अपना हृदय अर्पण करती, तो मुझे कौन दुःख दे सकता?

करुणा बिछौनेपर पड़े पड़े बहुत रात बीते तक बहुत-सी बातें सोचती रही, तो भी अच्छी तरह समझ नहीं सकी। लेकिन पुण्यपरायणा मौसीपर उसे असीम भक्ति और श्रद्धा थी, मौसीकी बातको, अच्छी तरह न समझ सकनेपर भी, उसने शिरोधार्य माना। मौसीने जिसे, सारे संसारके ऊपर, हृदयमें जगह दी है उसी ईश्वरके

लिए, अन्धकारमें, बिछौनेपर उठकर बैठकर, लेटकर, बार बार करुणाने प्रणाम किया, कहा—'मैं बालिका हूँ, तुमको नहीं जानती, केवल अपने स्वामीको जानती हूँ। इससे अगर कुछ अपराध हो तो क्षमा करना। नाथ, मैं अपने स्वामीको जो पूजा अर्पण करती हूँ उसे ग्रहण करनेके लिए तुम मेरे स्वामीसे कहना। वे अगर मेरी पूजाको ग्रहण न करेंगे—पैरसे ठुकरा देंगे तो मैं मर जाऊँगी। मैं अपनी मौसीकी तरह पुण्यात्मा नहीं हूँ जो, केवल तुम्हारा ही आश्रय ग्रहण कर, जी सकूँगी।'

यों कहकर करुणाने बार बार हाथ जोड़कर जगदीश्वरको प्रणाम किया।

करुणाके चाचाने लौटकर कलकत्ते जानेका विचार किया। विदा होनेके पहले दिन शामको गौरीने करुणाको अपनी गोदमें बिठलाकर कहा—चुन्नी, मेरी बेटी, तुझे सर्वदा संसारके शोक, दुःख और अमंगलसे बचानेकी शक्ति मुझमें नहीं है। मेरा यही उपदेश है कि, कहींसे भी कितना ही कष्ट तुझे मिले मगर, तू अपने विश्वास—अपनी भक्ति—अपने धर्मको अटल बनाए रखना।

करुणाने मौसीकी चरण-रज मस्तकमें लगकर कहा—मौसी, तुम्हारे आशीर्वादसे ऐसा ही होगा।

* * * *

तीसवाँ परिच्छेद

करुणा कलकत्ते लौट आई। मायाने मुँह फुलाकर कहा—इतने दिन परदेशमें रहीं, क्या तुमको एक चिट्ठी भी लिखकर भेजना न चाहिए था?

करुणाने कहा—तुमने भी क्यों न लिखी?

मायाने कहा—मैं क्यों पहले लिखती? तुम्हारे पहले लिखनेकी बात थी।

करुणाने मायाके गलेसे लिपटकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया, कहा—जानती तो हो बहन, मुझे अच्छी तरह लिखना नहीं आता। खास कर तुम-ऐसी पढ़ी लिखी सुघर सुन्दरीको चिट्ठी लिखते मुझे लज्जा लगती है।

देखते-ही देखते दोनों सखियोंकी मान-लीलाका अभिनय समाप्त हो गया। उच्छ्वसित स्नेहसे दोनों सखियाँ परस्पर लिपट गईं।

मायाने कहा—दिन रात पास रहकर तुमने अपने स्वामीकी आदत बिल्कुल खराब कर डाली है। एक आदमी हर घड़ी उनके पास न रहे तो उनसे रहा नहीं जाता।

करुणाने कहा—इसी लिए तो मैं उन्हें तुमको सौंप गई थी। किस तरह साथ रखना होता है, इस बातको तुम मुझसे अधिक जानती हो।

मायाने कहा—दिनको तो किसी तरह उन्हें कालेज भेजकर निश्चिन्त हो जाती

थी, मगर रातको किसी तरह जान नहीं बचती थी। बातचीत करनी होगी—बैठकर पोथी पढनी और सुनानी होगी—कहकर किसी तरह छोड़ते ही नहीं थे।

करुणाने कहा—कैसी छकीं! सखी, तुम तो लोगोंको मोह लेती हो, फिर लोग तुमको क्यों छोड़ने लगे?

मायाने कहा—सावधान रहना बहिन, तुम्हारे स्वामी जैसी बढ़ाबढ़ी कर रहे हैं उसे देखकर मुझे तो कभी कभी सन्देह होता है कि शायद मैं वशीकरण-विद्या जानती हूँ।

करुणाने हँसकर कहा—तुम नहीं जानतीं तो कौन जानता है? तुम्हारी यह विद्या अगर जरा सी भी मुझे मिल जाती तो मैं अपनेको धन्य समझती।

मायाने कहा—क्यों, किसका सर्वनाश करनेकी इच्छा हुई है? घरमें जो है उसकी रक्षा करो, दूसरेको मोहनेकी चेष्टा न करना! बड़ी झंझट होती है!

करुणाने मायाका मुँह बन्द करते हुए कहा—चुप रहो, क्या बक रही हो?

काशीके लौटकर आनेके बाद करुणासे पहली भेंट होनेपर कुंजने कहा—जान पड़ता है मौसीके पास तुम बड़े सुखमें थीं, खूब मोटी हो आई हो।

करुणाको बड़ी लज्जा मालूम पड़ी। उसने सोचा कि किसी तरह मेरे शरीरको मोटा होना न चाहिए था। मैं बड़ी मूर्ख हूँ, मेरी कोई बात ठीक नहीं होती। जब मेरा मन इतना खराब था तब भी यह जला शरीर मोटा हो उठा! एक तो मनका भाव प्रकट करनेके लिए बातें नहीं जुटतीं, उसपर यह शरीर भी उलटी ही बात बता रहा है!

करुणाने धीरेसे पूछा—तुम कैसे रहे?

पहले दिन होते तो कुंज कुछ हँसी और कुछ मानके साथ कहता—'बिल्कुल मुर्दा हो रहा था' या 'मर रहा था,'—लेकिन आज उससे हँसी नहीं की गई, हँसी करते करते रुक गया।

कुंजने साधारण भावसे कहा—अच्छा रहा, कुछ बुरा नहीं रहा।

करुणाने कुंजकी तरफ आँख उठाकर देखा, वह पहलेकी अपेक्षा कुछ रोगीसा हो गया है,—चेहरा उतरा हुआ है, रंग पीला पड़ गया है, आँखोंमें एक तरहकी तीव्र चमक आ गई है। उसके पेटमें जैसे एक प्रकारकी भूखने आग लगा रक्खी है। वह आग भीतर-ही-भीतर जैसे उसे जलाए खाए जाती है।

हृदयमें बड़ी भारी व्यथा पाकर करुणा सोचने लगी—आहा, मेरे बिना मेरे स्वामीको बड़ा कष्ट हुआ! मैं क्यों छोड़कर काशी चली गई!

स्वामी रोगी और दुबला हो गया और आप मोटी हो गई, इससे भी करुणा अपने स्वास्थ्यको धिक्कारने लगी।

कुछ देरतक यह सोचते रहकर कि अब क्या बात करनी चाहिए अन्तको कुंजने पूछा—चाची तो अच्छी तरह हैं?

इस प्रश्नके उत्तरमें चाचीके कुशल-मंगलकी खबर मिलनेपर और कोई बात करना कुंजके लिए कठिन हो गया; कोई बात ही नहीं सूझती थी। पास ही एक फटा पुराना अखबार पड़ा था, उसीको उठाकर उचाट मनसे वह पढ़ने लगा। करुणा सिर झुकाकर सोचने लगी 'इतने दिनके बाद भेंट हुई तोभी इन्होंने मुझसे अच्छी तरह जी खोलकर बात नहीं की; यहाँतक कि मेरी तरफ अच्छी तरह, आँखसे आँख मिलाकर, देखा भी नहीं। यह बात क्या है? मैंने चिट्ठी नहीं लिखी, इसीसे क्या नाराज हैं? या मैं मौसीके कहने-सुननेसे इतने दिन काशीमें रही, इससे चिढ़ गये हैं?' करुणा अपने अपराधको ही, कुंजके इस परिवर्तनका कारण समझकर, क्लेशसे कुम्हलाए हुए अपने ही हृदयमें उस अपराधका पता लगाने लगी।

कुंज कालेज गया और लौट भी आया। शामको जल-पानके लिए मिठाई और फल वगैरह लेकर खुद लक्ष्मी आई, करुणा भी घूँघट काढ़े थोड़ी दूरपर किवाड़ पकड़े खड़ी थी। लेकिन और कोई नहीं था।

लक्ष्मीने व्यग्र होकर पूछा—आज क्या तेरी तबियत अच्छी नहीं है कुंज?

कुंजने अन्य मनस्क भावसे कहा—नहीं मा, तबियत तो अच्छी है।

लक्ष्मीने कहा—तो फिर तू कुछ खाता क्यों नहीं?

कुंजने कुछ खीझकर कहा—वाह, खाता नहीं हूँ तो और क्या कर रहा हूँ?

गर्मीकी ऋतु आ गई थी। कुंज शामको एक रेशमी हल्की चादर ओढ़े हुए छतके ऊपर इधरसे उधर टहलने लगा। कुंजको बड़ी आशा थी कि आज उसका नियमित पुस्तक पढ़ना बंद नहीं रहेगा। 'आनन्द-मठ' प्रायः समाप्त हो गया है, और केवल दो-तीन परिच्छेद बाकी हैं,—माया चाहे जितनी निष्ठुर हो, लेकिन वे दो-तीन परिच्छेद अवश्य पढ़कर सुना जायगी। लेकिन शाम हुई, रात हो गई, आने और सुनानेका समय भी बीत गया। कुंजकी आशा सफल नहीं हुई, भारी निराशाके भारसे दब कर उसे सोनेके लिए पलंगपर जाना पड़ा।

लजीली करुणा साज-सिंगार कर धीरे धीरे कमरेमें आई। देखा पलंगपर कुंज लेटा हुआ है। तब आगे बढ़नेमें उसे जरा संकोच मालूम पड़ने लगा। वियोगके बाद फिर मिलनेमें पहले कुछ समय तक नव-संगमके ऐसी लज्जा रहती है, जिस जगहपर छोड़कर गया जाता है ठीक उसी जगहपर, मिलनेके पहले एक दूसरेसे नवीन प्रेमालापकी प्रत्येक व्यक्ति प्रत्याशा करता है।

आज करुणा अपनी उसी चिरपरिचित सुख सेजपर बिना बुलाए कैसे जायगी? वह दर्वाजेके पास बहुत देर तक खड़ी रही—लेकिन कुंजके जागनेका कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया। बहुत धीरे धीरे एक एक पग आगे बढ़ाती हुई करुणा चली। अगर असावधानीके कारण दैव-संयोगसे कोई गहना बज उठेगा तो करुणाका तो लज्जाके मारे मरण हो जायगा। धड़कते हृदयको हाथोंसे थामे हुए करुणा मसह-

रीके पास पहुँची, मालूम पड़ा कि कुंज सो रहा है। तब करुणाको जान पड़ा कि उसका सब साज सिंगार उसे घेरे हुए जैसे विद्रूपकी हँसी हँस रहा है। करुणाका जी चाहा कि तेजीसे भागकर कहीं दूसरी जगह जाकर सो रहूँ।

करुणाने भरसक संकुचित होकर पलगपर पैर रक्खा। तो भी उससे इतना शब्द हुआ, इतना पलंग हिला-डुला, कि कुंज अगर सचमुच नींदमें होता तो भी जाग पड़ता। लेकिन आज उसकी आँख नहीं खुली। कुंज, सोता नहीं, जाग रहा था। वह पलगपर एक किनारे मुँह फेरे पड़ा हुआ था; करुणा उसकी पीठके पास मुँह करके चुपचाप सो रही। कुज मुँह-फेरे लेटा था; तो भी यह बात उससे छिपी नहीं थी कि करुणा चुपचाप आँसू बहा रही है। उसकी निठुराई चक्कीकी तरह उसके हृदयको पीसकर पीड़ा पहुँचाने लगी, लेकिन बहुत सोचनेपर भी कुंज यह ठीक न कर सका कि वह किस तरह करुणाका आदर–प्यार करे—किस तरह और क्या उससे बातचीत करे। वह, भीतर ही भीतर, अपनेको तीव्र ताड़ना देने लगा, लेकिन इससे उसे चोट ही मिली—कोई उपाय नहीं सूझा। कुंजने सोचा—सवेरे तो नींदका सहारा लाया न जायगा। जरूर सामना होगा। तब किस तरह आँखसे आँख मिलाऊँगा, क्या बातचीत करूँगा?

करुणाने आप ही कुजको इस संकटसे बचा दिया। वह बहुत तड़के ही अपना अपमानित साज-सिंगारको लेकर उठकर चली गई, वह भी कुजको मुँह न दिखा सकी।

❦ ❦ ❦

इकतीसवाँ परिच्छेद

करुणा सोचने लगी—ऐसा क्यों हुआ? मुझसे क्या अपराध हुआ? और जहाँ यथार्थ विपत्ति थी वहाँ उसकी नजर नहीं पड़ी। यह संभावना ही उसे नहीं हुई कि कुज मायाको प्यार कर सकता है। संसारकी लीलासे वह बिल्कुल अनभिज्ञ थी। इसके सिवा ब्याहके बादसेहीसे उसने कुंजको जैसा समझा था उसके विरुद्ध कल्पना करना ही उसके लिए असंभव था।

कुज आज ठीक समयसे पहले ही कालेज चला गया। पहले जब कुज कालेज जाता था तब करुणा कमरेकी खिड़कीके पास आकर खड़ी होती थी, कुज भी गाड़ीसे झाँककर एक बार करुणाको देख लेता था। यह नित्यकी चाल थी। उसी अभ्यासके अनुसार आज भी गाड़ीका शब्द सुनते ही यन्त्रचालित पुतलीकी तरह करुणा उसी खिड़कीके पास आकर उपस्थित हुई। कुजकी भी आँख अभ्यासके कारण एक बार ऊपर उठ गई। कुजने देखा, करुणा खड़ी हुई है, अभी

नहाना धोना नहीं हुआ है, कपड़े मैले हैं, बाल बिखरे हुए हैं, मुँह सूख रहा है। देखकर एक ही पलकमें आँखें नीचे कर कुंज अपने हाथकी किताब पढने लगा। आज वह चार आँखोंका नीरव रसमय सभाषण न जाने कहाँ चला गया, उस भाव-पूर्ण मधुर हँसीका कहीं पता न था।

गाड़ी चली गई, करुणा उसी जगह जमीनपर पड़ रही। पृथ्वी—ससार सब उसके लिए फीका, स्वाद-हीन हो गया। कलकत्तेके काम-काजके प्रवाहमें वह ज्वार आनेका समय था। साढे दस बज गये थे, आफिस जानेवाली गाड़ियोंका ताँता बँधा हुआ था, एकके पीछे एक ट्रामगाड़ी जा रही थी। उस व्यस्तता-वेग-पूर्ण कर्म-कल्लोलके निकट ही यह एक वेदनासे निश्चेष्ट पड़ी हुई बालिकाका मुरझाया हुआ हृदय अत्यन्त विसदृश जान पड़ता था।

एकएक करुणाके मनमें आया—समझी! बिहारी बाबू काशी गये थे, यही खबर पाकर ये मुझपर नाराज हैं। इसके सिवा इस बीचमें और कोई तो अप्रसन्न कर देनेवाली घटना हुई नहीं, लेकिन उसमे ही मेरा क्या दोष था?

सोचते सोचते अकस्मात् एक मिनट-भरके लिए करुणाके हृदयकी गति बन्द हो गई। एकाएक उसे आशका हुई,—जान पड़ता है कुजको सन्देह हुआ है कि बिहारीके काशी जानेके साथ करुणाका भी कुछ सम्बन्ध है। दोनोंकी सलाहसे वह काम हुआ है। छी छी छी ऐसा सदेह! कैसी लज्जाकी बात है! एक तो बिहारीके साथ उसका नाम लिये जानेसे ही वह अपनेको धिक्कार देकर अधमरी हो रही थी, दूसरे उसके ऊपर अगर कुञ्ज ऐसा सन्देह करे तो फिर प्राण ही दे-देने पड़ेंगे। लेकिन अगर कोई सन्देहका कारण है, तो कुञ्ज उसे स्पष्ट करके कहता क्यों नहीं! अगर कोई अपराध बन पड़ा है तो उसका दण्ड देनेकी व्यवस्था क्यों नहीं की जाती! कुछ खुलासा न कहकर वह जैसे करुणासे मुँह चुराता—भागता फिरता है। इसीसे करुणाको बार बार जान पड़ने लगा कि कुजको मन ही-मन ऐसा कोई सन्देह हुआ है जिसे वह आप ही अन्याय समझता है और मेरे निकट उसे स्वय स्वीकार करनेमें भी उसको लज्जा मालूम होती है। अगर ऐसा नहीं है तो उसका चेहरा अपराधीके समान शकित और चिन्तित क्यों है? क्रुद्ध विचारका तो ऐसा कुठित भाव नहीं देखा जाता?

कुज गाड़ी परसे चकितकी तरह एक पलकमें मुरझाए हुए करुण मुखको देख गया था। उसकी झलक दिन-भर उसके हृदयमें बनी रही। कालेजमें, लेक्चर सुनते समय, श्रेणीबद्ध विद्यार्थियोंके बीचमें खिड़कीपर खड़ी हुई, करुणाके वे ही बिखरे हुए रूखे बाल, वही मलिन वस्त्र, वही व्यथित व्याकुल दृष्टि, बारम्बार स्पष्टरूपसे हृदय-पटमें अंकित हो उठने लगी।

कालेजका काम समाप्त कर कुञ्ज गोल-दीघीके किनारे धीरे धीरे टहलने लगा। टहलते टहलते सन्ध्या हो आई, मगर वह किसी तरह ठीक नहीं कर सका कि

करुणाके साथ कैसा व्यवहार करना उचित है—दयापूर्ण छल या अकार निठुराई क्या उचित है ?

कुजने तब यह कहकर अपने मनको समझाया कि करुणाके ऊपर अभी जितना उसका प्रेम है उतना और स्त्रियोंको दुर्लभ है। उस स्नेह—उस प्रेमको—पाकर करुणा क्यों न सतुष्ट रहेगी ? माया और करुणा, दोनोंको स्थान देने लायक प्रशस्त हृदय कुजके पास है। मायाके साथ उसका पवित्र प्रेम-सबध है, उससे दाम्पत्य-नीतिकी कोई हानि न होगी।

' इस प्रकार अपनेको समझाकर कुजने हृदयपरसे बड़ा भारी बोझा उतार डाला। माया और करुणा, किसीको न छोड़कर, दो चन्द्र-बिम्बोंसे सुशोभित ग्रहकी तरह वह अपने जीवनको सुखसे बिता सकेगा—यों सोचकर कुजका मन प्रसन्न और प्रफुल्लित हो उठा। आज रातको सवेरे सवेरे बिछौनेपर, आदर प्यार, स्नेहपूर्ण बातचीत और हँसी दिल्लगीसे करुणाके मनकी सब व्यथा दूर कर दूँगा—यह निश्चय करके कुज जल्दीसे गाड़ीपर चढकर घरको चला।

भोजनके समय करुणा नहीं आई, कुंज यह समझकर कि ' सोनेके लिए तो आवेगी ' पलँगपर जाकर पड़ रहा। किन्तु उस सूने कमरेमें, उस सूनी सेजपर, किसकी यादने कुंजके हृदयपर अधिकार जमा लिया ? करुणाके साथ पहले जो नित्य नई प्रेम-लीला हुआ करती थी—उसकी यादने ? नहीं। सूर्यके प्रकाशके आगे जैसे चाँदनीका अस्तित्व नहीं रहता वैसे ही उसके हृदयमें पूर्वानुरागकी स्मृति फीकी पड़ गई है, वहाँ एक तीव्र उज्ज्वल तरुणीकी मूर्तिने सरला बालिकाकी सकोच-भरी सुकोमल मधुर छविको छिपाकर अपना अधिकार जमा लिया है।

मायाके साथ उस दिन विष-वृक्षके लिए जो छीना-झपटी हुई थी, कुजको उसका स्मरण हो आया। सन्ध्याके बाद माया ' कपाल-कुण्डला ' पढकर सुनाती थी, धीरे धीरे रात अधिक बीत जाती थी, घरके लोग सो जाते थे, रातको सूने कमरेमें उसी सन्नाटेमे मायाके कण्ठका स्वर जैसे एक प्रकारके आवेशसे अत्यन्त कोमल और गद्गद हो आता था। एकाएक वह अपनेको सँभालकर पोथी रख कर उठ खड़ी होती थी। कुज कहता था—तुमको सीढीके नीचे तक पहुँचा आऊँ।

ये सब बाते बारम्बार याद आ जानेसे कुजके शरीरमे रोमाच हो आया। रात बढ चली, कुजके मनमे कुछ आशा होने लगी कि अब करुणा आती होगी, लेकिन करुणा नहीं आई।

कुजने अपने मनमे कहा—मैं तो कर्तव्य-पालनके लिए तैयार था। करुणा व्यर्थ अभिमान करके नहीं आई तो मैं क्या करूँ ?

यों कहकर आधी रातके समय उसने अपने मनको और भी मायाके ध्यानमें अच्छी तरह लगा दिया।

घड़ीमें जब एक बज गया तब कुंजसे किसी तरह रहा नहीं गया; वह मशहरी खोलकर बाहर आया। छतपर आकर देखा—गर्मीकी चाँदनी रात बड़ी ही सुन्दर और सुहावनी हो रही है। कलकत्तेका भारी सन्नाटा और निद्रा-राज्य मानों स्थिर समुद्रकी जल-राशिकी तरह स्पर्श-गम्य हो रहा है—हवा असंख्य भवनोंकी श्रेणीके ऊपर होती हुई तथा महानगरकी निद्राको और भी घनीभूत करती हुई धीरे धीरे टहलती हुई आ रही है।

कुंजकी बहुत दिनोंकी आकांक्षा अपनेको सँभाल न सकी। जबसे करुणा काशीसे आई है, तबसे मायाको कुंजने नहीं देखा। चाँदनीके मदसे विह्वल सन्नाटेकी रात कुंजको, मोहित करके, जैसे मायाकी तरफ ढकेलकर ले जाने लगी। कुंज सीढ़ियोंसे उतरकर नीचे गया। माया जिस कमरेमें सोती और रहती थी उसके सामनेके बरामदेमें आकर कुंजने देखा, दर्वाजा खुला हुआ है। भीतर जाकर कुंजने देखा, बिछौना बिछा हुआ है लेकिन कोई सोया नहीं है। घरके भीतर पैरकी आहट पाकर दक्षिण ओरके खुले छज्जेपरसे माया पूछ उठी—कौन है?

कुंजने दीन और गद्गदमें स्वरमें कहा—माया, मैं हूँ।

यह कहकर वह एकदम मायाके पास पहुँच गया।

गर्मीकी रात होनेके कारण लक्ष्मी छज्जेपर चटाई डाले हुए मायाके साथ लेटी हुई थी। वह बोल उठी—कुंज, इतनी रातको तू यहाँ कैसे आया?

मायाने अपनी घनी भौहोंके नीचेसे कुंजपर अग्निमय वज्र-वाण छोड़ा। कुंज कुछ उत्तर न देकर झटपट वहाँसे चला गया।

❦ ❦ ❦

बत्तीसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन सवेरेसे ही बादल घिरे हुए थे। कई दिनोंकी असह्य गर्मीसे तपा हुआ आकाश-मण्डल स्निग्ध-श्यामल बादलोंसे शीतल हो गया। आज भी कुंज, ठीक समयसे पहले ही, कालेज चला गया। उसके उतारे हुए कपड़े चाँदनीपर अस्त-व्यस्त पड़े हुए थे। करुणा कुंजके मैले कपड़े गिन-गिनकर नोट-बुकमें लिख-लिखकर धोबिनको दे रही थी।

कुंज स्वभावतः भोला-भाला असावधान आदमी था, इसी लिए करुणासे उसका अनुरोध था कि, धोबीको देनेसे पहले, कपड़ोंकी जेब अच्छी तरह देख लिया करो। कुंजके एक कोटकी जेबमें हाथ डालते ही उसमेंसे एक चिट्ठी करुणाको मिली।

यह चिट्ठी अगर विषधर साँप बनकर उसी समय करुणाको डस लेती तो अच्छा होता क्योंकि उग्र विष शरीरमें प्रवेश करके केवल पाँच मिनटमें ही काम तमाम

कर देता है; लेकिन यह विष शरीरमें प्रवेश करके मृत्युकी यन्त्रणा देता है—मगर मृत्यु नहीं होती।

उस खुली हुई चिट्ठीको बाहर निकालते ही करुणाने देखा, मायाकी लिखी हुई है। पल-भरमें करुणाका चेहरा पीला पड़ गया। चिट्ठी लेकर वह दूसरे कमरेमें चली गई और हृदयको हाथसे थामकर पढ़ने लगी। उसमें लिखा था—

"कल रातकी करतूतसे भी क्या तुम्हारा जी नहीं भरा? आज फिर तुमने चुराकर दासीके हाथ मेरे पास चिट्ठी भेजी। छी-छी, उस दासीने अपने मनमें क्या समझा होगा! क्या तुम मुझे ससारमें किसीको मुँह दिखाने लायक न रक्खोगे!

"मुझसे तुम क्या चाहते हो? प्रेम? तुम्हें यह भिक्षा-वृत्ति क्यों सूझी है! जन्मसे लेकर अबतक बराबर तुमने प्रेम ही पाया है, तब भी तुम्हारा लोभ—तुम्हारी लालसा नहीं मिटती?

"संसारमें मेरे प्रेम करनेकी और पानेकी कोई जगह नहीं है। इसीसे मैं खेल खेलकर प्रेमका खेद मिटाती रहती हूँ। जब तुमको अवसर था तब तुम भी इस झूठमूठके खेलमें शामिल हुए थे। लेकिन खेलकी छुट्टी क्या कभी पूरी नहीं होती! छुट्टी पूरी हो गई, इस समय घरमें तुम्हारी पुकार पड़ी है, अब क्यों खेलनेके घरमें ताक-झाँक लगा रहे हो! अब धूल झाड़कर घर जाओ। मेरे तो घर है ही नहीं, मैं अकेले बैठकर खेलूँगी, तुमको नहीं बुलाऊँगी।

"तुमने लिखा है कि मुझसे प्रेम करो। खेलके समय यह बात सुनी जा सकती है—किन्तु जो सच पूछो तो मैं इस बातपर विश्वास नहीं करती। एक समय तुम समझते थे कि तुम करुणाको चाहते हो—उससे प्रेम करते हो, वह भी झूठ था, —इस समय तुम समझते हो कि तुम मुझे चाहते हो—मुझसे प्रेम करते हो, यह भी झूठ है। तुम केवल अपनेको चाहते हो।

"प्रेमकी प्यासके मारे मेरा हृदय तलेसे ऊपर तक सूख उठा है—उस प्यासको, उस तृष्णाको मिटानेकी सामग्री तुम्हारे पास नहीं है, इस बातको मैंने खूब अच्छी तरह देख लिया है। मैं तुमसे बार बार यही कहती हूँ कि तुम मुझे छोड़ दो, मेरे पीछे पीछे मत फिरो, निर्लज्ज होकर मुझे लज्जित न करो। अब मेरी खेल खेलनेकी हवस भी मिट गई है, अब पुकारनेसे किसी तरह तुमको मुझसे उत्तर नहीं मिलेगा। चिट्ठीमें तुमने मुझे निठुर लिखा है—यह बात सच हो सकती है, लेकिन मुझमें कुछ दया भी है—इसीसे मैं आज तुमको दया करके छोड़ देती हूँ। इस चिट्ठीका अगर तुम जवाब दोगे, तो समझूँगी, यहाँसे बिना भागे तुम्हारे हाथसे मेरा छुटकारा नहीं होगा।"

चिट्ठी पढ़ते ही दम-भरमें चारों तरफसे करुणाके सब सहारे जैसे टूट गये, शरीरकी सब नसें जैसे एकदम रक्त हीन और शिथिल हो गईं, साँस लेनेकी जैसे शक्ति नहीं रही, सूर्यने जैसे उसकी आँखोंके आगेसे अपना सारा प्रकाश

हटा लिया। करुणा पहले दीवालको—फिर आलमारीको—उसके बाद तखतेको पकड़ते पकड़ते जमीनपर बैठ गई। दम-भरके बाद सचेत होकर उसने फिर एक बार चिट्ठीको पढ़नेकी चेष्टा की लेकिन उसका भ्रान्त चित्त किसी तरह उस चिट्ठीके अर्थको समझ न सका—केवल उस चिट्ठीके काले काले अक्षर उसकी आँखोंके आगे नाचने लगे। यह क्या! यह क्या हुआ! यह कैसे हुआ! यह क्या सम्पूर्ण सर्वनाश है! वह क्या करे, किसको पुकारे, कुछ भी उसकी समझमें न आया। पानीसे बाहर आकर मछली जैसे तड़पती है वैसे ही उसका हृदय छटपटाने लगा। डूबताहुआ आदमी जैसे कुछ सहारा पानेके लिए बार बार जलके ऊपर हाथ फैलाकर शून्य आकाशमें शून्य चेष्टा करता है, वैसे ही करुणा भी अपने मनके भीतर, कुछ-न-कुछ सहारा ढूँढनेके लिए प्राण-पणसे चेष्टा करने लगी: लेकिन कुछ भी हाथ न लगा—सारी चेष्टा व्यर्थ हुई। अन्तको छाती पकड़कर एक लंबी साँसके साथ वह पुकार उठी—“ मौसी! ”

वह स्नेहका संभाषण उच्छ्वासके साथ निकलते ही करुणाकी आँखोंसे झरझर करके आँसू गिरने लगे। जमीनपर बैठे बैठे बहुत देरतक बिसूर-बिसूरकर रोनेके बाद करुणा सोचने लगी—यह चिट्ठी लेकर मैं क्या करूँ?

स्वामीको अगर मालूम हो जाय कि यह चिट्ठी करुणाके हाथमें पड़ गई है तो उनको बड़ी लज्जा होगी। स्वामीकी उस घोर लज्जाको सोचकर करुणा बहुत ही कुंठित हुई—उसे बड़ा कष्ट हुआ। उसने निश्चय किया कि इस चिट्ठीको फिर उसी कोटकी जेबमें रखकर कोटको खूँटीपर टाँग दूँगी, धोबिनको नहीं दूँगी।

यह निश्चय कर खुली चिट्ठी हाथमें लिये करुणा सोनेके कमरेमें आई। इधर धोबिन मैले कपड़ोंकी गठरीका सहारा लेकर सो गई थी। करुणा कुंजका कोट उठाकर उसकी जेबमें चिट्ठी रख ही रही थी,— इतनेमें आवाज आई—“ आँखकी किरकिरी! ”

करुणा जल्दीसे चिट्ठी और कोटको पलंगपर फेंककर उसके ऊपर आप बैठ गई। मायाने भीतर आकर कहा—धोबीके घर कपड़े बहुत अदल-बदल जाते हैं, जिन कपड़ोंपर निशान नहीं दिया गया, उन्हें निशान देनेके लिए मैं लिये जाती हूँ।

करुणासे मायाकी तरफ आँख उठाकर देखा नहीं गया। कहीं मुखके भावसे मनकी बातें स्पष्ट रूपसे प्रकट न हो जायँ, इसी लिए वह खिड़कीकी तरफ मुँह फिराकर आकाशकी तरफ ताकने लगी, ओंठसे ओंठ दबा रक्खा जिसमें कहीं आँखोंसे आँसू न निकल पड़ें।

मायाने जरा ठिठककर एक बार करुणाको देख लिया। देखकर अपने मनमें कहा—ओ समझी! कल रातका हाल मालूम हो गया है। मगर मेरे ही ऊपर सारा क्रोध है! जैसे मेरा ही अपराध है!

मायाने करुणासे बात करनेकी कोई चेष्टा नहीं की। वह कुछ कपड़े छाँटकर तेजीके साथ कमरेसे चली गई।

मायाके साथ, करुणा अब तक सरल चित्तसे मित्रताका भाव रखती आती है उसी मित्रताकी लज्जाने इस दारुण दुःखके भी ऊपर अपना आसन जमा लिया। अपनी सखीके बारेमें उसे जैसी धारणा थी उस धारणाके साथ उसे इस निठु चिट्ठीको और एक बार मिलाकर देखनेकी इच्छा हुई।

करुणा चिट्ठी खोलकर देख रही थी, इतनेमें जल्दीसे कुंज कमरेमें घुस आया। एकाएक न जाने क्या याद आ जानेसे, वह कालेजमें लेक्चर सुनना छोड़कर घर चला आया है।

करुणाने वह चिट्ठी धोतीके आँचलमें छिपा ली। कुंज भी कमरेमें करुणाको देखकर जरा ठहर गया, इसके बाद व्यग्रताके साथ कमरेमें इधर उधर दृष्टि दौड़ाने लगा। करुणा समझती थी कि कुंज क्या खोज रहा है, लेकिन उसे इसका कोई उपाय न सूझा कि हाथकी चिट्ठीको कुंजसे छिपाकर जहाँकी तहाँ रख दे और भाग जाय।

कुंज एक एक करके मैले कपड़े उठाकर देखने लगा। कुंजके इस निष्फल प्रयासको देखकर करुणासे नहीं रहा गया, उसने कोट और चिट्ठीको फर्शपर फेंक दिया, और दाहिने हाथसे पलंगका पाया थामकर उसी हाथसे अपना मुँह छिपा लिया। कुंजने बिजलीकी तरह लपककर चिट्ठीको उठा लिया, और फिर पल-भरके लिए सन्नाटेमें आकर करुणाकी तरफ देखा।

इसके बाद करुणाको कुंजके जल्दी जल्दी सीढ़ी उतरनेका शब्द सुनाई पड़ा उसी समय धोबिनने कहा—"बहूजी, कपड़े देनेमें और कितनी देर करोगी? दे हो गई, मुझे बहुत दूर जाना है।"

तेतीसवाँ परिच्छेद

लक्ष्मीने आज सवेरेसे मायाको नहीं पुकारा। माया नित्य-नियमके अनुसा भंडारेमें गई। लक्ष्मीने आँख उठाकर उसकी तरफ देखा भी नहीं।

उसपर लक्ष्य करके भी मायाने कहा—बुआजी, जान पड़ता है तुम्हारी तबि यत खराब है। तबियत खराब होनेकी बात ही है। कल रातको कुंज बाबूने का ही ऐसा किया। एकदम पागलकी तरह चले आये। मुझे तो उसके बाद नींद ह नहीं आई।

लक्ष्मी मुँह लटकाए रही, उसने 'हाँ'—या 'ना' कुछ भी नहीं कहा।

मायाने फिर कहा—शायद चुन्नीके साथ कुछ साधारण खटपट हो गई होगी। इस लिए उसी समय नालिश करनेके लिए या फैसला करानेके लिए मेरे पास चले आये होंगे—रात भर भी रहा नहीं गया। बुआजी, तुम चाहे जो कहो, तुम्हारे लड़केमें चाहे और हजार गुण हों, लेकिन धैर्य तो रत्ती भर नहीं है। इसी लिए मुझसे भी उनसे नहीं पटती।

लक्ष्मीने खीझकर कहा—बहू, तुम झूठ बक रही हो—मुझे आज और कोई बात अच्छी नहीं लगती।

मायाने कहा—बुआजी, मुझे भी आज कुछ अच्छा नहीं लगता। तुमको सुनकर दुख होगा, इसी भयसे अभीतक मैं झूठी बातें बनाकर तुम्हारे लड़केका दोष छिपानेकी चेष्टा कर रही थी। लेकिन अब ऐसा हो गया है कि कुछ छिप नहीं सकता।

लक्ष्मीने बिगड़कर कहा—अपने लड़केके दोष-गुण मैं अच्छी तरह जानती हूँ। लेकिन तुम ऐसी मायाविनी हो—यह न जानती थी।

माया न-जाने क्या कहनेके लिए उद्यत हुई, लेकिन वैसे ही अपनेको सँभाल-कर बोली—यह बात ठीक है बुआजी, कोई किसीको नहीं जानता। अपने ही मनको क्या सभी जानते हैं? तुमने भी क्या कभी अपनी बहूसे बिगड़कर मुझ मायाविनीके द्वारा अपने लड़केको फुसलाना नहीं चाहा था? जरा सोचकर देखो।

लक्ष्मी आग-बबूला हो उठी। उसने गरजकर कहा—अभागिनी, लड़केके सम्बन्धमें माको तू ऐसा कलंक लगाती है? तेरी जीभ गिर न पड़ेगी?

मायाने विचलित न होकर कहा—बुआजी, हम औरतोंकी जाति ही मायाविनी होती है। मुझमें क्या माया थी, सो मैं अच्छी तरह नहीं जान सकी—मगर तुमने जान लिया, ऐसे ही तुममें क्या माया थी, सो तुम अच्छी तरह नहीं जान सकीं—मैंने जान लिया। माया अवश्य थी, नहीं तो ऐसी घटना कभी नहीं हो सकती थी। मैंने भी कुछ जानकर और कुछ न जानकर फंदा डाला है और तुमने भी कुछ जानकर और कुछ न जानकर फंदा डाला है। हमारी जातिका धर्म ही ऐसा है—हम मायाविनी हैं।

क्रोधके कारण लक्ष्मीके मुँहसे बात न निकल सकी—वह उस कोठरीसे निकल कर तेजीके साथ चली गई।

माया उस कोठरीमें कुछ देरतक स्थिर-भावसे अकेली खड़ी रही,—उसकी आँखोंसे आग निकल रही थी।

सबेरेका काम-काज समाप्त करके लक्ष्मीने कुंजको बुला भेजा। कुंज समझ गया कि कल रातवाली घटनाकी आलोचना होगी। उसी समय उसको मायासे अपनी चिट्ठीका उत्तर मिला था और उस उत्तरको पढकर उसका मन बहुत ही खराब और व्याकुल हो रहा था। जैसे लहर एक तरफ टकराकर दूसरी तरफ कुछ हटकर

फिर उधर ही जोरसे जाती है, वैसे ही कुंजका चंचल हृदय— जिसमें तरह तरहके विचारोंकी लहरें उठ रही थीं—मायाकी तरफसे टक्कर खाकर क्षण भरके लिए पीछे हटा और फिर बड़े वेगसे उसीकी तरफ जा रहा था। ऐसी अवस्थामें माके साथ उत्तर-प्रत्युत्तर करना कुंजके लिए असाध्य था। कुंज खूब जानता था कि मा जब मायाके यहाँ असमय जानेकी बातका उल्लेख करके उसे डाँटेगी, तब वह स्वभावके अनुसार विद्रोही बनकर, अपने हृदयकी सब बातें खुलासा करके कह देगा,—और ऐसा करते ही घरमें घोर अशान्ति मच जायगी। कुंजने सोचा कि इसलिए इस समय घरसे दूर जाकर सब बातोंपर अच्छी तरह विचार करना चाहिए। यह सोचकर उसने नौकरसे कहा—मासे जाकर कह दे, आज कालेजमें मुझे एक खास और जरूरी काम है, इसलिए अभी तो मैं जाता हूँ—लौटकर आऊँगा।

जैसे कोई लड़का पढनेसे जी चुराकर स्कूलसे भागता है, उसी तरह कुंज भी बिना कुछ खाये-पिये झटपट कपड़े पहनकर घरसे भाग खड़ा हुआ। मायाकी जिस दारुण चिट्ठीको वह आज सवेरेसे बार बार पढता रहा था और जेबमें रख कर इधर-उधर घूमता रहा था वह जल्दीमें उतारे हुए कोटमें ही रह गई।

कुछ देरतक खूब पानी बरसकर बंद हो गया, मगर बदली बनी ही रही। आज मायाका मन बहुत खराब हो रहा है—उसके हृदयमे जैसे आग लगी हुई है। जब मायाका मन खराब होता है, तब वह काम-काजमें खूब मन लगाती है—खाली नहीं बैठती। आज भी वह घर-भरके कपड़े इकट्ठे करके उनमें स्याहीने निशान बना रही है। करुणाके पास कपड़े लेने जाकर मायाने जैसा उसका भाव देखा, उससे उसका मन और भी खराब हो गया। संसारमें अगर अपराधी ही होना हो, तो अपराधकी सब लाछना ही वह क्यों भोग करे—अपराधके सुखसे अपनेको क्यों वंचित रक्खे?—यही माया सोचने लगी।

रिम-झिम करके फिर पानी बरसने लगा। माया अपने कमरेमें जमीनपर बैठी है। सामने कपड़ोंका ढेर लगा है। दासी एक-एक कपड़ा उठाकर देती है और माया निशान देनेवाली स्याहीसे उसपर निशान डालती जाती है।

एकदम बिना पुकारे कुंज भीतर घुस आया। दासी उसे देखते ही कपड़े छोड़कर सिर ढँकती हुई चली गई।

माया हाथका कपड़ा फेंककर बिजलीकी तरह उठ खड़ी हुई और बोली—जाओ, इस घरमेंसे चले जाओ!

कुंजने कहा—क्यों, मैंने क्या किया?

मायाने क्रोधसे कहा—क्या किया? डरपोक! नामर्द! तुम कर ही क्या सकते हो! न तो प्रेम ही करना जानते हो और न कर्तव्य-पालनकी ही तुमको तमीज है, फिर मुझे क्यों सबके आगे बदनाम करते हो!

कुजने दीन-भावसे कहा—मैं तुमसे प्रेम नहीं करता ? ऐसी बात कहती हो ?

मायाने कहा—हाँ, मैं यही कहती हूँ। चुराकर, छिपाकर, एक बार इधर, एक बार उधर,—तुम्हारी यह चोरोंकी ऐसी चाल देखकर मुझे तुमसे घृणा हो गई है। अब अच्छा नहीं लगता ! तुम जाओ !

कुजने जैसे एकदम मोहको प्राप्त होकर कहा— तुम मुझसे घृणा करती हो माया ?

मायाने कहा—हाँ, घृणा करती हूँ।

कुजका भाव बदल गया। उसने कहा—माया, अभी प्रायश्चित्त करनेका समय है। मैं अगर दुविधा न करूँ, सब छोड़कर चल दूँ, तो तुम मेरे साथ चलनेके लिए तैयार हो ?

यह कहते कहते कुजने मायाके दोनों हाथ पकड़कर उसे जोरसे अपनी तरफ खींच लिया। मायाने कहा—छोड़ो, मेरे लगता है !

कुजने कहा—लगने दो। बोलो, तुम मेरे साथ चलोगी ?

मायाने कहा— नहीं जाऊँगी ! किसी तरह न जाऊँगी !

कुजने जोशमें आकर कहा—क्यों नहीं जाओगी ? तुम ही मुझे सर्वनाशकी तरफ यहाँ तक खींच लाई हो, अब तुम मुझे छोड़ नहीं सकोगी, तुमको चलना ही होगा।—

यह कहकर कुजने भरपूर जोरसे मायाको छातीके पास खींच लिया और उसे बल-पूर्वक वहीं रखकर कहा—तुम्हारी घृणा भी आज मुझे लौटा न सकेगी, मैं तुमको ले ही जाऊँगा और, जिस तरह हो, तुम्हें मुझको चाहना ही पड़ेगा।

मायाने प्राण-प्राणसे चेष्टा करके अपनेको कुजके बाहु-पाशसे छुड़ा लिया।

कुजने कहा—तुमने चारों तरफ आग लगा रक्खी है, अब उसे बुझा भी नहीं सकोगी, और भाग भी न सकोगी।—

यह कहते कहते कुजका स्वर ऊँचा हो गया। उसने जोरसे कहा—माया, तुमने ऐसा खेल क्यों खेला ? अब उसे खेल कह देनेसे छुटकारा नहीं मिल सकता। अब तुम्हारी और मेरी मौत एक ही साथ है।

इतनेमें लक्ष्मीने भीतर घुसकर कहा—कुज, क्या करता है ?

कुजने अपनी उन्मत्त दृष्टि मायाकी ओरसे माताकी ओर फेरी, उसके बाद फिर मायाकी तरफ देखकर कहा—मैं सब छोड़कर जाता हूँ, बोलो, तुम मेरे साथ चलोगी ?

मायाने क्रोधसे भरी हुई लक्ष्मीके मुँहकी तरफ एक बार देखा। उसके बाद आगे बढ़कर अवचलित भावसे कुजका हाथ पकड़कर कहा—चलूँगी।

कुजने कहा—तो आज-भर ठहरो। मैं जाता हूँ, कल तुम्हारे सिवा और कोई मेरा न होगा।—

कुंज चला गया।

इसी समय धोबिनने आकर मायासे कहा—बहू, अब तो मैं बैठ नहीं सकती। आज अगर तुम लोगोंको फुर्सत न हो, तो मैं कल आकर कपड़े ले जाऊँगी।

दासीने आकर कहा—बहू, साईस कहता है कि दाना चुक गया।

माया सात दिनके लिए दाना तौलकर अस्तबलमें भेज देती थी और खुद खिड़कीके पास खड़ी होकर घोड़ेको दाना खाते देख आती थी।

नौकरने आकर कहा—बहूजी, शंभू (दूसरा नौकर) आज बाबू (दीनानाथ) से लड़ पड़ा है। वह कहता है कि तेलके पीपेका हिसाब समझ लिया जाय तो मैं मालिकसे अपनी नौकरी चुककर कहीं दूसरा काम देखूँ।

संसारका—घरका—सब काम पहलेकी तरह चल रहा है।

चौतीसवाँ परिच्छेद

बिहारी भी मेडिकल-कालेजमें पढता था। ठीक परीक्षा देनेके पहले ही उसने पढना छोड़ दिया। कोई अगर इसपर विस्मय प्रकट करता था तो बिहारी कहता था—डाक्टर होकर दूसरेका स्वास्थ्य देखूँगा, इस समय अपने स्वास्थ्यको भी तो देखना चाहिए!

असल बात यह थी कि बिहारीको एक ही काम न था। हर-घड़ी कुछ न कुछ करते रहे बिना उससे रहा नहीं जाता था,—परंतु यशकी तृष्णा, रुपयेका लोभ या जीविकाके लिए चिन्ताका लेश भी उसमें न था। कालेजमें उपाधि प्राप्त करनेके लिए बिहारीको कुतूहल था, और हाथसे काम करनेमें जितनी दक्षता (होशियारी) प्राप्त करना वह आवश्यक समझता था, उतना ज्ञान और दक्षता प्राप्त करके वह मेडिकल कालेजमें भर्ती हो गया। कुंज उससे एक बरस पहले ही कालेजकी उपाधि प्राप्त करके मेडिकल-कालेजमें भर्ती हो चुका था। कालेजके विद्यार्थियोंमें कुंज और बिहारीकी मित्रता प्रसिद्ध थी। वे लोग हँसी-दिल्लगीमें इन दोनोंको 'श्याम देशके जुड़ैले भाई' कहा करते थे। गए-साल कुंज परीक्षामें फेल हो गया और तब दोनों मित्र एक ही क्लासमें आकर सहपाठी भी हो गये। इसी बीचमें यह जोड़ी क्यों 'फुट' हो गई—इसका रहस्य कोई भी विद्यार्थी नहीं समझ सका। बिहारी जहाँ देखता था कि यहाँ कुंजसे मुलाकात जरूर होगी वहाँ जाता ही नहीं था, और अगर जाता भी था तो बहुत देर तक ठहरता न था। इसका कारण यही था कि बिहारी सोचता था, 'मुलाकात होनेपर कुंज अवश्य ही पहलेकी तरह नहीं मिलेगा, और इससे और लोग हम दोनोंकी हँसी उड़ावेंगे'। प्रोफेसरोंसे लेकर विद्यार्थियों तक सबको दृढ विश्वास था कि बिहारी प्रशंसाके साथ पास होकर अवश्य

सम्मान और पुरस्कार प्राप्त करेगा, लेकिन उसने बीचहीमें, ठीक समयपर, पढ़ना छोड़ दिया—परीक्षा नहीं दी।

बिहारीके घरके पास एक झोपड़ीमें मनोहरनाथ नामका एक गरीब ब्राह्मण रहता था। वह छापेखानेमें कपोजीटरी करता था और वहाँसे हर महीने बारह रुपया पाता था, उसीमें निर्वाह करता था।

बिहारीने उससे कहा—तुम अपने लड़केको मेरे पास रहने दो, मैं खुद उसे लिखना पढ़ना सिखाऊँगा।

ब्राह्मणने खुश होकर अपना आठ बरसका लड़का, जिसका नाम वसन्त था, बिहारीको सौंप दिया।

बिहारी उसे अपने ढंगसे शिक्षा देने लगा, उसके बापसे कह दिया—"मैं इसे दस बरसकी अवस्थासे पहले पोथी नहीं पढ़ाऊँगा—सब जबानी सिखाऊँगा।"

बिहारी, उसी वसन्तके साथ खेल-खेलकर, किलेके मैदानमें, अलीपुरकी पशु-शालामें, शिवपुरके बड़े बागमें, और म्यूज़ियम आदि स्थानोंमें घूमघूमकर दिन बिताने लगा। बिहारी दिनभर उसे जबानी अँगरेजी बोलना सिखाता था और बात-चीतमें अतीत इतिहासकी बातें सुनाता था। अनेक प्रकारसे 'बालकके मनका झुकाव किधर है' इस बातकी परीक्षा करना और बालककी उस विशेष वृत्तिको उत्साह देकर उन्नत बनाना ही बिहारीका काम था। वह घड़ी-भरके लिए भी विश्राम नहीं करता था।

उस दिन—जिस दिनका हाल पिछले परिच्छेदमें लिखा जा चुका है—शामको बाहर जानेका सुभीता न था। दोपहरको कुछ देरके लिए पानी बद हो गया था; मगर तीसरे पहरसे इधर फिर पानी पड़ना शुरू हो गया है। बिहारी घरके दूसरे खटके बड़े कमरेमें लैंप जलाए बैठा हुआ वसन्तके साथ अपना नए ढगका खेल खेल रहा था।

बिहारी—वसन्त, इस घरमें कै धन्नियाँ हैं? चटपट बतलाओ।—नहीं, गिन न पाओगे।

वसन्त—बीस हैं।

बिहारी—तुम हार गये—अट्ठारह हैं।

चटपट किवाड़ेकी खड़खड़ी खोलकर बिहारीने पूछा—इस खड़खड़ीमें कै पल्ले हैं?—और चट खड़खड़ी छोड़कर बद कर दी।

वसन्त—आठ हैं।

बिहारी—तुम्हारी जीत हुई।

यह बेंच कितनी लम्बी होगी?—यह किताब कितनी भारी है!—इस तरह प्रश्न करके बिहारी वसन्तकी इन्द्रियोंका ज्ञान बढ़ा रहा था। इसी बीचमें नौकरने आकर कहा—बाबूजी एक औरत—

बात पूरी भी न होने पाई और माया भीतर घुस आई।

विहारीने आश्चर्य करके कहा—क्या मामला है बड़ी बहू !

मायाने कहा—यहाँ तुम्हारे घरकी औरतोंमेंसे क्या कोई नहीं है !

विहारी—न कोई घरकी है, न बाहरकी। केवल बुआजी हैं, वे भी गाँवके घरपर हैं।

माया—अच्छा तो तुम मुझे अपने गाँवके घरपर भेज दो।

विहारी—वहाँ मैं तुम्हें क्या कहकर ले जाऊँगा ?

माया—दासी कहकर। मैं वहाँ घरका सब काम करूँगी।

विहारी—बुआजीको कुछ आश्चर्य होगा, उन्होंने मुझसे कभी दासी न होनेकी शिकायत नहीं की। अच्छा, पहले यह तो बताओ कि तुमने यह इरादा क्यों किया? वसन्त, जाओ, सोने जाओ।

वसन्त चला गया। मायाने कहा—बाहरकी घटना सुनकर तुम भीतरकी बात कुछ भी नही समझ सकोगे।

विहारीने कहा—मान लो यदि नहीं ही समझा, या गलत ही समझा, तो इसमें हानि क्या है ?

मायाने कहा—अच्छा, न हो गलत ही समझ लेना। मैं कहे देती हूँ—कुंज मुझे चाहता है।

विहारीने कहा—यह खबर तो कुछ नई नहीं है, और ऐसी भी नहीं है कि दुबारा सुननेको जी चाहे।

मायाने कहा—मुझे भी बारबार सुनानेकी इच्छा नहीं है। इसी लिए तुम्हारे पास आई हूँ, मुझे आश्रय दो।

विहारीने कहा—तुम्हारी इच्छा नहीं है ? तो यह विपत्ति कौन लाया ? कुंज जिस राहपर जा रहा था उस राहसे उसे किसने भ्रष्ट किया !

मायाने कहा—मैंने किया। तुमसे छुपाऊँगी नहीं। मैं बुरी हूँ, या जो हूँ, एक बार मेरी तरफ होकर मेरे हृदयका हाल समझनेकी चेष्टा करके देखो। अपने हृदयकी ज्वालासे ही मैंने कुंजके घरमें आग लगाई है। एक बार जान पड़ा था कि मैं कुंजको चाहती हूँ, मगर वह मेरी भूल थी।

विहारीने कहा—यह तो मैं भी जानता हूँ। जो चाहता है वह इस तरह कभी आग लगा सकता है ?

मायाने कहा—विहारी बाबू, यह तुम्हारे शास्त्रकी बात है। इस समय भी इन सब बातोंके सुनने योग्य मेरी मति नहीं हुई है। विहारी बाबू, अपना शास्त्र एक किनारे रखकर एक बार अंतर्यामीकी तरह मेरे हृदयपर दृष्टि डालो। मैं अपना भला बुरा सब तुम्हारे आगे खोलकर कहना चाहती हूँ।

विहारीने कहा—क्या मैं शास्त्र ही खोले रहता हूँ बड़ी बहू ! हृदयको हृदयके

ही नियमसे समझनेका भार अंतर्यामीके ही ऊपर रहने दो। हम लोग अगर शास्त्र देखकर उसके विधानके अनुसार न चलें तो अन्तमें कुछ ठगाये नहीं जा सकते।

मायाने कहा—सुनो बिहारी बाबू, मैं इस समय निर्लज्ज होकर कह रहीं हूँ, तुम मुझे इस कामसे रोक सकते थे। कुंज मुझे चाहता जरूर है, लेकिन वह बिल्कुल अन्धा है—मुझे पहचानता नहीं। एक बार जान पड़ा था कि तुमने मुझको पहचाना है—एक बार तुमने मुझपर श्रद्धा भी की थी, सच बोलो, आज उस बातको छिपानेकी चेष्टा न करना।

बिहारीने कहा—सच ही कहूँगा। बेशक तुमपर मुझे उस दिन श्रद्धा हुई थी।

मायाने कहा—तुमने भूल नहीं की बिहारी बाबू,—मगर जो पहचाना ही था, मुझपर श्रद्धा ही की थी, तो वहींपर क्यो रुक गये ? मैं आज निर्लज्ज होकर तुम्हारे पास आई हूँ, और निर्लज्ज होकर ही तुमसे कह रही हूँ कि तुमने भी क्यों न मुझको चाहा ? मेरे भाग्य फूटे थे। तुम भी करुणाकी चाहमें डूब गये।—नहीं, तुम क्रोध न कर सकोगे। बैठो बिहारी बाबू, मैं कोई बात छिपाकर नहीं कहूँगी। तुम करुणाको चाहते हो—इस बातका खयाल जब तुमको खुद ही नहीं था, तब भी मैं जानती थी। किन्तु यह मेरी समझमें नहीं आता कि करुणामें तुम लोगोंने ऐसा क्या देख पाया है ? अच्छा या बुरा उसमें है क्या ? विधाताने क्या मर्दोंको केवल दो आँखें ही दी हैं ?—भीतरी दृष्टि कुछ भी नहीं दी ? तुम लोग क्या देखकर और कितना-सा देखकर मोहित हो जाते हो ? मैं तो समझती हूँ, तुम लोग सब निर्बोध, हियेके अन्धे, होते हो।

बिहारी उठकर खड़ा हो गया, बोला—आज तुम मुझको जो कुछ सुनाओगी—सब सुनूँगा, किन्तु जो बात कहनेकी नही है उसे जबानपर मत लाना, यही मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ।

मायाने कहा—बिहारी बाबू, तुमको कहाँ चोट पहुँचती है सो मै जानती हूँ—किन्तु, जिसकी श्रद्धा मैंने पाई थी और जिसका प्रेम पानेसे मेरा जन्म सफल हो जाता, उसके पास, जिस व्यथासे रातके समय भय लज्जा और शंका त्यागकर मैं दौड़ी आई हूँ वह व्यथा कितनी बड़ी होगी,—इसको समझकर जरा धैर्य धारण करो। मै सच कहती हूँ कि अगर तुम करुणाको प्रेमकी दृष्टिसे न देखते तो मेरे द्वारा उसका ऐसा सर्वनाश न होता।

बिहारीका चेहरा फीका पड़ गया। उसने कहा—करुणाका क्या हुआ ? तुमने उसका क्या किया ?

मायाने कहा—कुंज अपना सब घर-बार छोड़कर, मुझे साथ ले कल बाहर जानेको तैयार है।

बिहारीने एकाएक गरजकर कहा—यह कभी नहीं हो सकता।—किसी तरह नहीं हो सकता।

मायाने कहा—किसी तरह नहीं ? कुजको आज कौन रोक सकता है ?

बिहारीने कहा—तुम रोक सकती हो।

माया थोड़ी देर चुप रही, उसके बाद बिहारीकी आँखोंपर आँखें जमाकर बोली—किसके लिए रोकूँगी ? तुम्हारी करुणाके लिए ? क्या मेरा निजका सुख दुःख कुछ नहीं है ? तुम्हारी करुणाका भला हो, कुजके घरमें शान्ति और सुख रहे—इसलिए मैं अपने इस जन्मकी शान्ति और सुखको तिलाजलि दे दूँ ! इतनी भली मैं नहीं हूँ—इतना और इस तरहका धर्म-शास्त्र मैंने नहीं पढा। मैं जो छोडूँगी, उसके बदलेमें मुझे क्या मिलेगा ?

बिहारीके मुखका भाव क्रमशः अत्यंत कठिन हो आया। उसने कहा—तुमने अनेक स्पष्ट बातें कहनेकी चेष्टा की है, अबकी मैं भी एक स्पष्ट बात कहता हूँ। तुमने आज जो घटना कराई है और इस समय तुम जो बातें कर रहीं हो इनका अधिक अंश, तुमने जो साहित्य पढा-सुना है, उससे चुराया हुआ है। इसमें बारह आना नाटक और नाविल है।

मायाने कहा—नाटक ! नाविल !

बिहारीने कहा—हाँ, नाटक, नाविल। सो वे भी खूब ऊँचे दर्जेके नहीं। तुम समझती हो कि यह सब तुम्हारा निजका है—लेकिन यह बात नहीं है। यह सब सस्ते छापेकी प्रतिध्वनि है। अगर तुम बिल्कुल अबोध मूर्ख सरल बालिका होतीं तो भी तुमको संसारमें प्रेमसे वचित न रहना पड़ता। नाटककी नायिका स्टेजके ऊपर ही शोभा पाती है, उसे घरमें रखनेसे काम नहीं चलता।

मायाका वह तीव्र तेज और दुःसह दर्प पल-भरमे न जाने कहाँ चला गया। वह मन्त्र-मुग्ध नागिनकी तरह झुककर चुप रह गई। बहुत देरके बाद बिहारीकी तरफ बिना देखे ही शान्त और नम्र स्वरमें मायाने कहा—तुम मुझसे क्या करनेके लिए कहते हो।

बिहारीने कहा—कोई असाधारण काम करनेकी इच्छा मत करो। साधारण स्त्रियोंकी शुभ बुद्धि जो कहे, वही करो। अपने गाँवमें जाकर रहो।

मायाने कहा—कैसे जाऊँ ?

बिहारीने कहा—जनानी गाड़ीमें सवार कराकर मै तुमको तुम्हारे गाँवके स्टेशन तक पहुँचा आऊँगा।

मायाने काहा—तो आज रातको मैं यहीं सो रहूँ ?

बिहारीने कहा—नहीं, अपने ऊपर मुझे इतना विश्वास नहीं है।

सुनते ही उसी क्षण माया बिहारीके पैरोंपर लोट गई और उसके दोनों पैरोंको भर जोर छातीमें दबाकर बोली—प्राणनाथ, इतनी कमजोरी रहने दो। एकदम पत्थरके देवताकी तरह कठिन-पवित्र न बन जाओ। बुरेको प्यार कर जरा से बुरे भी बन जाओ।

यो कहकर माया बारबार बिहारीके पैरोंको चूमने लगी। एकाएक मायाके इस कल्पनातीत व्यवहारसे मिनट-भरके लिए बिहारी अपनेको सँभाल नहीं सका। उसके शरीर और मनकी सब गाँठें जैसे शिथिल हो आईं। बिहारीके इस स्तब्ध-विह्वल भावका अनुभव होते ही माया उसके पैर छोड़कर अपने घुटनोंके बल खड़ी हो गई और चौकीपर बैठे हुए बिहारीके गलेमें दोनों हाथ डालकर कहने लगी—जीवन-सर्वस्व, मैं जानती हूँ कि तुम चिरकालके लिए मेरे नहीं हो सकते। किन्तु, आज एक घड़ी-भरके लिए तुम मुझे प्यार करो। उसके बाद मैं अपने उसी उजाड़ जगलमें चली जाऊँगी। किसीसे कुछ न चाहूँगी। प्रियतम, मैं तुमसे आज केवल एक ऐसी वस्तु चाहती हूँ जिसे मरनेके समय तक मनमें रख सकूँ।—

यह कहते कहते आँखे बदकर मायाने अपने अरुण कपोल और ओंठ बिहारीके आगे बढा दिये। घड़ी-भरके लिए दोनों आदमी निश्चल और सारा कमरा निस्तब्ध हो रहा। उसके बाद एक लबी साँस लेकर, धीरे धीरे अपने गलेसे मायाके दोनों हाथ हटाकर, बिहारी दूसरी चौकीपर जा बैठा।

बिहारीने अपने रुँधे हुए कठको साफ करके कहा—रातको एक बजे एक पेसिंजर गाड़ी जाती है।

मायाने जरा ठहरकर धीमे और अस्फुट स्वरमें कहा—उसी गाड़ीमें जाऊँगी।

इसी अवसरपर नगे पैर और नगे-बदन वसन्त, अपने परिपुष्ट गोरे सुन्दर शरीरको लेकर, बिहारीकी चौकीके पास आ-खड़ा हुआ और गभीर भावसे मायाको देखने लगा।

बिहारीने पूछा—सोने नहीं गया?

वसन्त कोई उत्तर न देकर उसी तरह गंभीर भावसे खड़ा रहा।

मायाने उसकी तरफ दोनों हाथ बढा दिये। वसन्त पहले कुछ दुबिधामें पड़ा, उसके बाद धीरे धीरे मायाके पास चला गया। माया दोनों हाथोंसे उसे छातीसे लगाकर आँसुओंकी धारा बहाने लगी।

* * * *

पैंतीसवाँ परिच्छेद

जो असम्भव है वह भी सम्भव हो जाता है, जो असह्य है वह भी सह्य हो जाता है,—यदि ऐसा न होता तो कुजके घरमें उस दिन वह रात न कटती। कुज शामको मायासे अपने साथ चलनेके लिए वादा कराकर घरसे चला गया। रातको अपने एक मित्रके पास (कालेजके बोर्डिंग हाउसमें) रह गया, घर नहीं आया। उसी रातको उसने एक चिट्ठी मायाके नाम लिखकर डाकमें छोड़ दी। चिट्ठीमें और कुछ नहीं, साथ चलनेके लिए तैयार रहनेकी ताकीद थी।

वह चिट्ठी दूसरे दिन कुजके घर पहुँची । करुणामें उठनेकी भी शक्ति नहीं थी, वह खटियापर पड़ गई थी । नौकर चिट्ठी हाथमें लिये आया, बोला—बहूजी, चिट्ठी है ।

करुणाके हृदयमें जैसे एक धक्का लगा, हलचल मच गई । एक साथ ही तरह-तरहके आश्वास और आशंकाओंकी लहरें उठ आईं । जल्दीसे सिर उठाकर हाथ बढ़ाकर करुणाने चिट्ठी ले ली । उसने देखा, चिट्ठी कुजकी लिखी है और मायाके नामकी है । उसी समय करुणाका सिर तकियेपर गिर गया । और कुछ न कहकर उसने वह चिट्ठी नौकरको लौटा दी ।

नौकरने कहा—यह चिट्ठी किसे देनी होगी ?

करुणाने कहा—मैं नहीं जानती ।

रातके आठ बजे होंगे, उस समय आँधीकी तरह झपटता हुआ कुज मायाके कमरेमें सामने आ खड़ा हुआ । उसने देखा, घरमें प्रकाश नहीं है—अन्धकार छाया हुआ है । जेबसे दियासलाईकी डिबिया निकालकर दियासलाई जलाई—देखा, घर सूना पड़ा है । माया नहीं है, उसकी कोई चीज या सामान भी नहीं है । दक्षिण तरफके बरामदेमें जाकर देखा, बरामदेमें भी कोई नहीं है । कुजने पुकारा—'माया !'—पर कुछ भी उत्तर न मिला ।

कुजने आप-ही-आप जोशमें आकर कहा—मैं बड़ा ही बेवकूफ हूँ, बड़ा ही ना-समझ हूँ । उसी समय उसको अपने साथ ले जाना उचित था । जरूर माँने मायाको ऐसी कड़ी बातें कहीं हैं कि वह घरमें नहीं रह सकी ।

यह कल्पना, मनमें आते ही, निश्चय और सत्य जान पड़ी । कुज व्याकुल होकर उसी समय माके कमरेमें गया । उस कमरेमें भी प्रकाश न था—लेकिन दूसरी तरफका किवाड़ा खुला रहनेसे उस अन्धकारमें भी मालूम हो गया कि लक्ष्मी बिछौनेपर पड़ी हुई है । कुज एकदम क्रोधपूर्ण स्वरसे बोल उठा—मा, तुमने मायाको क्या कहा-सुना है ?

लक्ष्मीने कहा—मैंने तो कुछ नहीं कहा ।

कुजने वैसे ही उत्तेजित भावसे कहा—तो फिर वह गई कहाँ ?

लक्ष्मीने कहा—मैं क्या जानूँ ?

कुंजने अविश्वासके भावसे कहा—तुम नहीं जानतीं ? अच्छा, मैं उसका पता लगाने जाता हूँ—वह चाहे जहाँ हो, मैं पता लगा ही लूँगा ।

यह कहकर कुंज चल दिया । लक्ष्मी जल्दीसे उठकर उसके पीछे पीछे जाती हुई कहने लगी—कुज, अरे कुज, लौट आ, मेरी एक बात सुने जा ।

कुज एक साँसमें घरसे बाहर निकल गया । दम-भरमें फिर लौटकर उसने दर्बानसे पूछा—बड़ी बहू कहाँ गई हैं ?

दर्बानने कहा—हम लोगोंसे कुछ कह नहीं गईं, हम लोग कुछ भी नहीं जानते ।

कुजने जोरसे डाँटकर कहा—नहीं जानता !

दर्बानने फिर कहा —नहीं भैया, नहीं जानता।

कुजने मनमें निश्चय कर लिया कि माने इन लोगोंको भी पता न बतानेके लिए सिखा पढा दिया है। कहा—अच्छी बात है।

उस समय कलकत्ता महानगरके बीच गैसकी रोशनीसे मिटते हुए सन्ध्याके अन्धकारमें सौदेवाले अपना अपना सौदा लिये फेरी लगा रहे थे। सड़कपर आने-जानेवालोंकी भारी भीड़ थी। उसी कलरव-पूर्ण भीड़के भीतर कुज घुसा और देखते-ही-देखते अदृश्य हो गया।

छत्तीसवाँ परिच्छेद

बिहारीको अँधेरी रातमें अकेले बैठकर ध्यान करनेकी आदत न थी। वह कभी किसी समय आप अपनी आलोचना, या अपने बारेमें सोच विचार, नहीं करता था। वह पढने लिखनेमे ही प्रायः लगा रहता था और अवसरके समय अपने और औरोंके काम-काजमें तत्पर रहता था। इससे भी जो समय बचता था उसमें बैठकर अपने बन्धु-बान्धवों और इष्ट-मित्रोंके बारेमें सोचा करता था। अपनी अपेक्षा आसपासके अन्य लोगोंको प्रधानता देकर ही वह आनन्द पाता था। किन्तु, अचानक एक दिनके एक प्रबल आघातसे वह जैसे सब लोगोंसे छूट कर अलग हो पड़ा। प्रलयके अन्धकारमें वेदनाके गगनभेदी शैल-शिखरपर उसे अकेले खड़े रहना पड़ा। तभीसे वह अपने अकेले रहनेसे भय करने लगा। अब वह अपने सिरपर जबर्दस्ती काम लादकर अपने साथी मनको किसी तरह अवकाश नहीं देना चाहता।

किन्तु आज उस अपने हृदयनिवासीको (मन या आत्माको) वह किसी तरह बरलावर न रख सका। कल मायाको उसने उसके गाँव पहुँचा दिया है। तबसे वह चाहे जिस काममें, चाहे जिस आदमीके साथ, रहता है मगर उसका वेदना-व्याकुल हृदय उसे अपनी निगूढ निर्जनताकी तरफ बराबर घसीटता रहता है। थकावट और खेदसे आज बिहारीको हार माननी पड़ी। रातके नौ बजे होंगे। बिहारीके घरकी सामनेवाली छतपर सन्ध्या-शोभन ग्रीष्म ऋतुकी शीतल मन्द वायु बड़े मजेमें डोल रही है। चन्द्रोदय-हीन अन्धकारमें उसी छतपर एक कुर्सी डाले बिहारी बैठा है।

आज सन्ध्याको उसने बालक वसन्तको नहीं पढाया, शामहीमे जाकर सो रहनेके लिए उसे आज्ञा दे दी है। आज माताके त्यागे हुए बालककी तरह उसका

हृदय सान्त्वनाके लिए, सगके लिए, अपने चिराभ्यस्त प्रीति-सुधा स्निग्ध पूर्व जीवनके लिए, विश्वव्यापी अन्धकारमें, जैसे दोनों हाथ उठाकर किसीको खोजता फिरता है। आज उसकी दृढताका और कठोर सयमका 'बाँध' टूटकर दूर बह गया है। विहारीने जिनके बारेमें न सोचनेका प्रण-किया था उन्हींकी तरफ उसका हृदय दौड़ा जा रहा है, आज उसमें उसकी राह रोकनेका बल लेश मात्र भी नहीं है।

कुजके साथ लड़कपनकी दोस्तीसे लेकर उस दोस्तीके अन्ततककी सब बातोंको विस्तारके साथ विहारी सोचने लगा। जो लंबी-चौड़ी कहानी अनेक वर्णोंमे चित्रित थी, जल-स्थल-पर्वत-नदीमय मान-चित्रकी तरह मनमें लिपटी हुई थी, उसे विहारीने अपने आगे खोलकर—फैलाकर रख लिया। उसमें वह यही ध्यान देकर देखने लगा कि जिस छोटेसे जगत्पर उसने अपने जीवनकी इमारत खड़ी की थी वह किस जगह किस दुर्ग्रहसे टकराकर विच्छिन्न हो गई? पहले उसके बीचमें बाहरसे कौन आया? यह प्रश्न उठते ही उसके अन्धकारमय हृदयमें सूर्यास्त समयकी करुण अरुण आभासे भरा हुआ करुणाका लज्जाललित मुख उदय हो आया,—और उसके साथ ही मगलमय विवाहोत्सवकी पवित्र शख-ध्वनि उसके कानोंमें बजने लगी। यह शुभ ग्रह (करुणा), अदृष्ट आकाशके अज्ञात प्रान्तसे, दोनों बधुओंके बीचमें आकर खड़ा हो गया और उसने दोनोंमें मानो कुछ अन्तर-सा डाल दिया। फिर जाने उसने कहाँसे एक गूढ वेदना, जो मुँहसे कहने लायक या हृदयमें रखने लायक भी नहीं है, लाकर उपस्थित कर दी। मगर तो भी वह अन्तर, वह वेदना, अपूर्व स्नेहसे अनुरजित माधुर्यकी किरणोंसे आच्छन्न —परिपूर्ण हो गई।

उसके बाद जिस शनि-ग्रहका उदय हुआ उसने बधुओंके प्रणयको, पति-पत्नीके प्रेमको, घरकी शान्ति और पवित्रताको एकदम नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। विहारीने प्रबल घृणाके साथ उस शनि-ग्रहरूपिणी मायाको अपने अन्तःकरणसे ढकेल देनेकी चेष्टा की। किन्तु यह कैसा आश्चर्य है? विहारीका दिया हुआ धक्का बहुत ही कोमल हो गया, वह जैसे मायाके लगा ही नहीं। वह 'परम सुदरी पहेली' अपनी दुर्भेद्य रहस्य-पूर्ण अनिमेष दृष्टि लेकर कृष्ण-पक्षके अन्धकारमें, विहारीके सामने स्थिर भावसे खड़ी रही। गर्मीकी रातमें उच्छ्वसित होकर चलता हुआ दक्षिण पवन उसीके गरम-निःश्वासकी तरह मालूम पड़ने लगा। धीरे धीरे वह अनिमेष आँखोंकी ज्वालामुखी ज्योति मलीन होने लगी,—वह हृदयकी प्यासले सूखी हुई दृष्टि आँसुओंके जलमें सिंचकर, स्निग्ध होकर, देखते-ही-देखते गभीर भावके रससे भर गई। पल-भरमें उस मूर्तिने विहारीके पैरोंके पास गिरकर उसके दोनों पैरोंको भर-जोर छातीसे लगा लिया। उसके बाद उसने, सुन्दर माया-लताकी तरह

देखते-ही-देखते बिहारीसे लिपटकर, बढकर, ताजी खिली हुई सुगन्धित पुष्पमञ्जरीके-ऐसा अपना उन्मुख मुख चुम्बनके लिए बिहारीके पास लाकर रख दिया। बिहारी आँखें बदकर उस मुखको स्मृति-लोकसे निकाल देनेकी चेष्टा करने लगा। किन्तु किसी तरह उसे हटानेके लिए, आघात पहुँचानेके लिए, बिहारीका हाथ नहीं उठा,—एक असम्पूर्ण व्याकुल-चुम्बन उसके मुखके पास बना ही रहा। बिहारीके शरीर-भरमें रोमाच हो आया।

बिहारीसे छतपरके सुनसान अन्धकारमें ठहरा नहीं गया। और किसी तरफ मन लगानेके लिए वह जल्दीसे प्रकाश पूर्ण बड़े कमरेमें चला गया। कोनेमें तिपाईके ऊपर रेशमी कपड़ेसे ढँकी हुई एक तसवीर रक्खी हुई थी। बिहारी कपड़ा हटाकर उस तसवीरको हाथमें लेकर लैम्पके आगे बैठ गया और एकाग्र होकर देखने लगा।

वह तसवीर करुणा और कुजकी थी; ब्याहके कुछ ही दिन बाद उतारी गई थी। तसवीरके नीचे कुजने अपने हाथसे 'कुज', और करुणाने अपने हाथसे 'करुणा' लिख दिया था। तसवीरमें वह नव-विवाहका मधुर दिन सजीव हो रहा था।

एक कुर्सीपर कुज बैठा हुआ है, उसके मुखपर नव-विवाहके एव नवीन सरस भावका जोश झलक रहा है। पास ही करुणा खड़ी है। तसवीर उतारनेवालेने उसे घूँघट नहीं काढने दिया लेकिन उसके चेहरेपरसे वह लज्जाकी छाया नहीं हटा सका। आज कुज उसी अपनी सहचरी करुणाको रुलाकर कितनी दूर चला जा रहा है? किन्तु जड़ चित्रने कुजके मुखसे नवीन प्रेमकी एक रेखा भी बदलने नहीं दी,—उसने, अपनी जड़ताके कारण, कुछ भी न समझकर, मूढ भावसे अदृष्टके परिहासको स्थायी बना रक्खा है।

बिहारीने उसी तसवीरको हाथमें लेकर, धिक्कारके द्वारा, मायाको अपने हृदयसे निकालकर दूर कर देना चाहा, लेकिन मायाके वे प्रेमसे विह्वल और जवानीसे कोमल दोनों हाथ उसके पैरोंको पकड़े ही रहे। बिहारी अपने मनमें कहने लगा 'ऐसा सुन्दर प्रेमका ससार तूने चौपट कर दिया।' किन्तु मायाके उसी ऊपर उठे हुए व्याकुल मुखका चुम्बन-निवेदन चुपचाप उससे कहने लगा—'मैं तुमको चाहती हूँ। सारे ससार-भरमें मैंने तुमको ही पसद किया है।'

लेकिन बिहारीकी कातरता क्या यही जवाब है? वह बात क्या एक बिगड़े हुए घरके दारुण आर्त नादको छिपा सकती है? बिहारीने यही सोचकर अपने मनमें मायाके लिए कहा—'पिशाची!'

'पिशाची' यह कहा बिहारीने बिल्कुल विमुख होकर कहा, या इसके साथ कुछ आदरका स्वर भी मिला हुआ था!

बिहारी अपने जीवन-भरके सारे प्रेमके अधिकारोंसे वंचित होकर एकदम कंगाल फकीरकी तरह संसारके मार्गमें आकर खड़ा हुआ है, इस समय वह इस अयाचित अपरिमित प्रेमके उपहारको उपेक्षापूर्वक कैसे फेर सकता है? आज तक बिहारीने इस प्रेमोपहारके समान और क्या पाया है? वह इतने दिनोंतक अपना सारा जीवन औरोंको अर्पण कर, आप केवल प्रेम-भाण्डारके टुकड़े माँग-माँगकर, तृप्त-सन्तुष्ट होता रहा है। प्रेममयी अन्नपूर्णाने सोनेका थाल भर कर केवल उसीके लिए भेज दिया है, अभागा बिहारी किस दुविधामें पड़कर उसके अपूर्व स्वादसे अपनेको वंचित कर रक्खेगा?

बिहारी एकाग्र होकर तसवीर हाथमें लिये इसी प्रकारकी आलोचना कर रहा था, इसी समय सामनेके शब्दसे वह चौंक पड़ा। आँख उठाकर देखा, कुंज आ रहा है। बिहारी चौंककर उठ खड़ा हुआ, उसके हाथमें वह तसवीर गिर गई,—लेकिन उसपर उसका ध्यान नहीं गया।

कुंजने आते ही एकदम पूछा—माया कहाँ है?

बिहारी आगे बढ़कर कुंजके पास गया और उसका हाथ पकड़कर बोला—कुंज दादा, जरा बैठो, मैं तुम्हारे साथ कई बातोंकी अलोचना करना चाहता हूँ।

कुंजने कहा—मुझे बैठनेका और आलोचना करनेका समय नहीं है। बतलाओ—माया कहाँ है?

बिहारीने कहा—तुम जो प्रश्न कर रहे हो उसका उत्तर इतने संक्षेपमें नहीं दिया जा सकता। तुमको इसके उत्तरके लिए जरा देर स्थिर होकर बैठना पड़ेगा।

कुंजने कहा—मुझे उपदेश दोगे? ये सब उपदेशकी बातें मैं लड़कपनमें ही पढ़ चुका हूँ।

बिहारीने कहा—नहीं, मैं उपदेश नहीं दूँगा। उपदेश देनेका न मुझको अधिकार है और न मैं तुमको उपदेश देनेकी योग्यता ही रखता हूँ।

कुंजने कहा—तो क्या भर्त्सना करोगे?—डाँटोगे? मैं जानता हूँ कि मैं पाखण्डी हूँ, मैं नीच, नराधम, कपटी, जो तुम कहना चाहते हो सो सब, हूँ। किन्तु बात यह है कि माया कहाँ है सो तुम जानते हो या नहीं?

बिहारीने कहा—जानता हूँ।

कुंजने कहा—मुझे बतलाओगे या नहीं?

बिहारीने कहा—नहीं।

कुंजने कहा—तुमको बतलाना ही होगा। तुमने उसे फुसलाकर यहाँ लाकर छिपा रक्खा है। वह मेरी है, मुझे लौटा दो।

बिहारी दम-भर चुप रहकर दृढ़ताके साथ बोला—वह तुम्हारी नहीं है। मैं उसे फुसलाकर यहाँ नहीं लाया, वह स्वयं मेरे पास चली आई है।

कुजने गरजकर कहा—झूठ कहते हो।

इतना कहकर कुज बाहर निकल गया और दूसरे कमरेके बद दरवाजेपर बार बार धक्का देकर ऊँचे स्वरसे पुकारने लगा—माया! माया!

भीतर रोनेका शब्द सुनकर कुज बोल उठा—माया, कुछ डर नहीं है—मैं कुज हूँ। मैं तुमको छुड़ाकर ले जाऊँगा, कोई तुमको बद करके नहीं रख सकेगा।

इस तरह कहते कहते कुजने जोरसे एक धक्का दिया, दर्वाजा खुल गया। कुज वेगसे भीतर घुसा। देखा, घोर अन्धकार है। अस्फुट छायाकी तरह उसे देख पड़ा कि बिछोनेपर जैसे कोई भयके मारे सिकुड़कर सिसकता हुआ तकियेसे लिपट गया है।

बिहारीने जल्दीसे उस कमरेमें जाकर वसन्तको गोदमे उठा लिया और सान्त्व-नाके स्वरमें कहा—डर नहीं है वसन्त, कोई डर नहीं है।

कुज वहाँसे निकलकर तेजीके साथ नीचे-ऊपर इधर-उधर सब जगह मायाको ढूँढने लगा, मगर जब कहीं मायाकी छाया भी न देख पड़ी तब लाचार लौटकर फिर उसी जगहपर आया। उस समय भी बालक वसन्त डरके मारे सिसक सिसक-कर रो उठता था, और बिहारी उसके कमरेमें लैंप जलाकर, उसे बिछौनेपर लिटाकर, उसकी पीठपर हाथ फेरकर, उसे सुलानेकी चेष्टा कर रहा था।

कुजने आकर फिर कहा—मायाको तुमने कहाँ रक्खा है?

बिहारीने कहा—दादा, गड़बड़ न मचाओ, तुमने इस बालकको व्यर्थ ही डरा दिया है। इससे इसकी तबियत खराब हो जानेकी सभावना है।—मैं कहता हूँ, मायाकी खबरसे तुमको कोई मतलब नहीं है।

कुजने दाँत पीसते हुए कहा—साधु, महात्मा, अब तू धर्मका स्वाँग मत बना। मेरी स्त्रीकी यह तसवीर लेकर रातको तू किस देवताका ध्यान करके कौनसा पवित्र मत्र जप रहा था? पापी! दगाबाज!

यों कहते कहते कुजने वह तसवीर जमीनपर फेंक दी और उसपर जूते समेत पैर जोरसे रख दिया, ऊपरका शीशा चूर चूर हो गया। अन्तमें कुजने उसमेंसे चित्र निकालकर टुकड़े टुकड़े कर बिहारीके ऊपर फेंक दिया।

कुजकी ऐसी उन्मत्त दशा देखकर बिहारी भयके मारे रो उठा। क्रोध, क्षोभ और खेदके मारे उसका गला रुँध आया। उसने उँगलीसे दरवाजेकी ओर इशारा करके कहा—जाओ!

कुज आँधीकी तरह वेगसे बाहर चला गया।

★ ★ ★ ★

सैंतीसवाँ परिच्छेद

इधर यात्रियोंसे खाली जनानी गाड़ीमें बैठी हुई मायाने जब खेतोंके सिलसिलेमें वृक्षोंके बीच बसे हुए गाँवको देखा तब उसे सरल सरस ग्राम्य जीवनकी याद आ गई। उसके मनमें आया कि मैं वृक्षकी इसी सघन छायाके घेरेके भीतर, अपने बनाये हुए कल्पनाके घोंसलेमें, अपनी प्यारी पुस्तकें लेकर, नगर- निवासके समस्त क्षोभ, जलन और घावकी वेदनासे छुटकारा पाकर, कुछ समय तक सुख और शान्तिसे रहूँगी।

गर्मीके शस्य शून्य, और जहाँ तक नजर जाती थी वहाँ तक, फैले हुए मैले रंगके मैदानमें सूर्यके अस्त होनेका दृश्य देखकर माया अपने मनमें कहने लगी—'बस, और अब कुछ न चाहिए।' उसकी इच्छा होने लगी कि इसी तरहकी सुवर्ण-रंजित निस्तब्ध और विस्तीर्ण शान्तिमें डूबकर, सब भूलकर, आँखें बंद कर लूँ—किसीसे कुछ प्रयोजन नहीं, इस जीवनकी नौकाको, तरह तरहकी तरंगोंसे आन्दोलित होते हुए, सुख-दु:ख-सागरके किनारे ले जाकर, शब्द हीन सन्ध्याके समय, किसी कम्प-हीन वट-वृक्षके नीचे बाँध दूँ।

गाड़ी तेजीसे जा रही थी। कहीं-कहींपर आमके बागोंसे आती हुई मंजरियोंकी मस्त कर देनेवाली महक उसके मनमें गाँवोंकी शान्ति भर जाती थी। मायाके हृदयकी हालत बदल गई। उसने अपने मनमें कहा—खूब हुआ, अच्छा ही हुआ, अपने जीवनको लेकर अब मुझसे अधिक खींचतान नहीं हो सकती,—अब सब भूल जाऊँगी, चिन्ता छोड़कर सुखकी नींद सोऊँगी, गँवई गाँवकी साधारण सरल स्त्री बनकर घरके और गाँवके काम-काजमें सन्तोषके साथ—आरामके साथ अपनी जिन्दगी बिता दूँगी।

सन्तप्त हृदयमें इसी प्रकार शान्तिकी आशा भरकर मायाने अपनी कुटीरमें पैर रक्खा। किन्तु हाय, शान्ति कहाँ! जिधर देखो उधर शून्यता और दारिद्र्य है। चारों तरफ जो कुछ है; वह सब ही जीर्ण, अस्त-व्यस्त, अनादृत और मलिन हो रहा है। बहुत दिनसे घरमें ताला बंद था, एकाएक खोलकर भीतर जानेपर उसकी गंदी हवामें मायाका दम घुटने लगा। घरमें थोड़ी बहुत जो कुछ चीज-वस्तु थी वह भी कीड़ोंके काटनेसे, मूसोंके उत्पातसे, और धूलके आक्रमणसे, मिट्टी हो गई थी।

माया जिस समय घर पहुँची उस समय शाम हो चुकी थी, घर निरानन्द और अन्धकारसे परिपूर्ण था। किसी तरह सरसोंका तेल डालकर मिट्टीका दिया जलाया नहीं कि उसके धुएँसे और क्षीण प्रकाशसे घरकी दीनता और भी अधिक जान पड़ने लगी। पहले जो अवस्था उसे पीड़ा पहुँचाती थी, बुरी नहीं मालूम पड़ती

थी, वह अब असह्य मालूम पड़ने लगी। मायाका विद्रोही अन्तःकरण दृढताके साथ कह उठा—यहाँ तो घड़ी-भर भी न रहा जायगा। आलेमें पहलेकी दो एक किताबें और मासिक-पत्र बुरी हालतमें पड़े थे, उनपर सेरों धूल पड़ी हुई थी, उन्हें छूनेको भी जी न चाहा। बाहर आमके बागमें झिल्ली-झनकार और मच्छड़ोंकी भनभनाहट बढने लगी। हवाका नाम न था।

मायाके पास पहले उसकी सासकी बुआ एक बुढिया रहती थी। वह इधर घरमें ताला लगाकर अपनी बेटीको देखने जमाईके यहाँ चली गई थी। मायासे घरमें अकेले रहा नहीं गया। वह अपनी पड़ोसिनोंके यहाँ गई। मायाको देखकर पड़ोसकी स्त्रियाँ चौंक-सी गईं। एकने धीरेसे दूसरीके कानमें कहा—'अरे बापरे, माया तो खूब गोरी हो आई है, कपड़े लत्ते सब चुस्त-दुरुस्त हैं, ठीक मेमसाहब बन गई है!' वे स्त्रियाँ आपसमें न जाने क्या क्या इशारा करके मायाकी तरफ लक्ष्य कर फिर एक दूसरेके मुँहकी तरफ देखने लगीं। जो कुछ जन-रव सुनाई दिया था मानो उन्हें उसके लक्षण भी मिल गये!

मायाको पग-पगपर यह अनुभव होने लगा कि वह हर तरह अपने गाँवसे बहुत दूर चली गई है। आज अपने ही गाँवमें, अपने ही घरमें, उसके लिए जगह नहीं है। कहीं उसे एक घड़ीके लिए भी चैन नहीं मिल सकती।

डाक-घरके बूढे चपरासीको माया लड़कपनसे जानती-पहचानती थी। दूसरे दिन माया गाँवके तालाबमें नहानेके लिए गई। इतनेमें डाकका पियादा चमड़ेका बेग कंधेपर डाले उधरसे होकर निकला। उसे देखते ही माया अपनेको न रोक सकी। अँगोछा और धोती सब किनारे छोड़कर उसके पास गई और बोली—कल्लू काका, कोई मेरे नामकी चिट्ठी है?

बूढेने बहुत संक्षेपमें कह दिया—नहीं।

मायाने व्यग्र होकर कहा—जरा देखूँ, शायद निकल आवे।

यह कहकर मायाने गाँवकी आठ-दस चिट्ठियाँ, जो उसके हाथमें थीं, ले लीं। उलट-पलटकर देखा, कोई भी उसकी नहीं थी। उदास मुँह लिये माया जब घाटपर लौटकर आई तब उसकी एक सखीने कौतुकपूर्ण कटाक्ष करके कहा—क्यों री माया, तू चिट्ठीके लिए क्यों इतनी व्याकुल हो रही है?

और एक प्रगल्भ प्रौढाने कहा—भला, भला, डाकसे चिट्ठी आवे ऐसा भाग्य किसका है? हमारे तो मर्द, देवर, भाई सभी परदेशमें काम करते हैं, मगर डाकका पियादा हमपर तो कभी दया नहीं करता।

इसी तरह बात-ही-बातमें व्यंग्य स्पष्ट और कटाक्ष तीक्ष्ण होने लगा। माया [illegible]से प्रार्थना कर आई थी कि रोज न हो सके तो कमसे कम सप्ताहमें एक [illegible], कुछ न हो तो, दो अक्षर लिखकर मेरे पास अवश्य भेज दिया करना। आज [illegible]की चिट्ठी आनेकी सम्भावना बहुत ही कम थी तो भी उसकी चाह इतनी

अधिक हो उठी कि बहुत कम, असभव भी, सभावनाकी आग को भी वह न छोड़ सकी। उसे जान पड़ने लगा कि कलकत्ता छोड़े बरसों बीत गये।

शत्रुओं और मित्रोंकी कृपासे मायाको यह भी मालूम हो गया कि कुजके साथ उसके अनुचित सम्बन्धकी झूठी अफवाह गॉव भरमें किस तरह घर-घर फली हुई है। बेचारीको यहॉ भी शान्ति नहीं।

माया अपनेको सब गॉववालोंसे अलग निर्लिप्त रखनेकी चेष्टा करने लगी। इससे गॉववाले और भी चिढ़ गये। वे पापिनको पास पाकर उसे घृणाकी दृष्टिसे देखने, बोली ठोली मारने, और पीड़ा पहुॅचानेका मजा सहजमें नही छोड़ा चाहते।

छोटे से गॉवमें, जहॉ गिनतीके दस पॉच घर होते हैं, अपनेको सबसे अलग छिपाकर रखनेकी चेष्टा वृथा है। वहॉ चोट खाये हुए घायल हृदयको लेकर एक कोनेमे—अन्धकारमें—एकान्तमें—उसकी सेवा करनेका अवकाश नहीं है, इधर उधरसे सबकी तीक्ष्ण कुतूहलसे भरी दृष्टि आकर उसी घावकी जगहपर पड़ती है। मायाका चित्त, टोकनीके भीतरकी मछलीकी तरह, जितना ही छटपटाने लगा उतना ही चारों तरफकी सकीर्णतासे टकराकर अपनेको ही चोट पहुॅचाने लगा। यहाँ तो स्वाधीन भावसे पूरी तरह पीडा और कष्ट सहनेके लिए भी जगह नहीं है।

दूसरे दिन चिट्ठी पानेका समय व्यतीत होते ही माया घरका दर्वाजा बन्द करके चिट्ठी लिखने लगी—

" बिहारी बाबू, डरना नहीं, मैं तुमको प्रेमकी चिट्ठी लिखने नहीं बैठी हूँ। तुम मेरे विचारक हो, मैं तुमको प्रणाम करती हूॅ। मैंने जो पाप किया है तुमने उसका कठिन दण्ड दिया है और तुम्हारे मुॅहसे निकलते ही मैंने उस दण्डको सादर स्वीकार कर लिया है। दु.ख यही है कि तुम यह न देख सके कि दण्ड कितना कड़ा है! अगर देखते—अगर जान पाते—तो तुम्हे दया आती, पर मैं अभागिन वह दया भी नहीं पा सकी। तुमको स्मरण कर, मन-ही-मन तुम्हारे पैरोंके पास सिर रखकर, में इसे भी किसी तरह सह लूॅगी। किन्तु प्रभो, जेलखानेका कैदी क्या भोजन भी नहीं पाता? अच्छा, उत्तम, भोजन नहीं,—जितना और जैसा आहार न पानेसे प्राण नहीं बच सकते वह भी तो नहीं मिलता! तुम्हारी दो लाईनकी चिट्ठी ही मेरे इस देश-निकालेके दण्डमें आहारके बराबर है। वह भी अगर न मिले तो, नाथ, यह देश निकालेका दण्ड प्राण-दण्डसे भी बढकर है। मेरी इतनी अधिक परीक्षा न लेना दण्ड-दाता।

" मेरे इस पापी मनके अहकारकी हद न थी। कभी स्वप्नमें भी मैंने यह कल्पना न की थी कि किसीके आगे मुझे यों सिर झुकाना पड़ेगा। प्रभो, तुम्हारी जय हुई, मैं अब विद्रोह नहीं करूँगी। किन्तु मुझपर दया करो, मुझे जीने दो,

इस जंगलमें रहनेके लिए कुछ थोड़ा-बहुत सहारा अवश्य देते रहो। यदि वह मिलता रहा तो फिर तुम्हारे शासनसे कोई किसी तरह भी मुझे फिरा न सकेगा। केवल इतनी ही दुःखकी बात जताकर अब मैं चिट्ठी समाप्त किये देती हूँ। और जो बातें मनमें भरी हैं उन्हें कहनेके लिए व्याकुल हृदय फटा जा रहा है लेकिन मैं प्रतिज्ञा कर चुकी हूँ कि उन बातोंको तुम्हे न जनाऊँगी।

तुम्हारी—

बड़ी बहू (माया)"

मायाने चिट्ठी डाकके बंबेमे डाली। पास-पड़ोसके आदमी देखकर छी-छी करने लगे और दातों-तले उँगली दबाने लगे। कहने लगे—घरका दर्वाजा बंद करके चिट्ठी लिखती है, चिट्ठीके लिए डाकियेकी खोपड़ीपर सवार होत' है— उसे गलीमें घेरती फिरती है,—दो दिन कलकत्तेमे रहकर लाज-शरमपर पानी फेरकर बिल्कुल बर्बाद हो गई है।

तीसरे दिन भी बिहारीकी चिट्ठी नहीं मिली। माया दिन-भर काठकी पुतलीकी तरह चुपचाप सन्नाटेमें बैठी रही, उसके चेहरेका भाव कठिन हो आया। भीतर-बाहर चारों तरफके आघात और अपमानके आन्दोलनसे मायाके हृदयका अन्धकार निष्ठुर सहार-शक्तिकी मूर्ति धारण कर तलेसे ऊपर आनेकी चेष्टा करने लगा। उस निदारुण निष्ठुरताका आविर्भाव होनेवाला देख, भयके मारे, मायाने घरका दर्वाजा बन्द कर लिया, बाहरका जाना-आना ही छोड़ दिया।

मायाके पास बिहारीका कुछ भी नहीं था, न चित्र ही था और न कोई उसके हाथका लिखा पत्र ही था। वह इस शून्यतामें कुछ अवलम्ब—कुछ सहारा ढूँढने लगी। वह बिहारीके किसी चिह्नको हृदयमें रखकर सूखी आँखोंमें जल लाना चाहती है। आँसुओंके जलसे भीतरकी भारी कठिनताको गलाकर और उस जलसे मानसिक विद्रोहकी आग बुझाकर वह बिहारीकी आज्ञाको हृदयके अत्यन्त कोमल प्रेममय सिंहासनपर बिठा रखना चाहती है। किन्तु सूखेके सालमें जैसे दोपहरका आकाश तपता है वैसे ही उसका हृदय केवल जलने ही लगा, दूर तक कहीं एक बूँद आँसूका भी कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया।

मायाने सुना था—मनको एकाग्र कर ध्यान करते करते जिसको पुकारा जाता है, वह अवश्य पास आता है बिना आये उससे रहा नहीं जाता। इसीसे हाथ जोड़ आँखें मूँदकर वह बिहारीको पुकारने लगी—' मेरा जीवन शून्य है, हृदय शून्य है, चारों तरफ शून्य-ही शून्य है,—इस शून्यताके बीचमें एक बार तुम आओ, तुमको आना ही होगा, मैं किसी तरह तुमको नहीं छोड़ूँगी।'

प्राण पणसे यों कहते कहते मायाके हृदयमें सचमुच बल आ गया। जान पड़ा जैसे यह प्रेमका बल, यह ' पुकार ' का बल, कभी वृथा न होगा। केवल

स्मरण-मात्र करके, दुराशाकी जड़में हृदयका रक्त सींचकर, हृदय केवल अवसन्न—शिथिल—हो पड़ता है। किन्तु इस प्रकार एकाग्र मनसे ध्यान करके प्राण-पण शक्तिसे कामना करते रहनेमे, जान पड़ता है, जैसे कोई अपनी सहायता करनेवाला साथी अपने पास है। जान पड़ता है, जैसे जगत्‌की और सब चीजोंको छोड़कर, केवल वांछित वस्तुको प्रबल इच्छाके द्वारा अपनी ओर खींचते रहनेमे, हर घड़ी क्रमशः धीरे धीरे वह वस्तु निकटवर्ती होती जाती है।

बिहारीके ध्यानमे जब सन्ध्याके समय दीपक-शून्य अन्धकारमय घर और भी अन्धकारमय हो रहा था—मायाकी दृष्टिमें समाज, संसार, गाँव और सारा ब्रह्माण्ड जैसे प्रलयमें लीन हो गया था—उसी समय दर्वाजेपर किसीने धक्का दिया। सुनते ही माया फुर्तीके साथ जमीनसे उठ खड़ी हुई और संशय-हीन विश्वासके साथ दौड़कर दर्वाजा खोलते खोलते कह उठी—'प्रभो, आ गये?' उसे दृढ निश्चय हो गया कि इस घड़ी संसारका और कोई भी मनुष्य उसके दर्वाजेपर नहीं आ सकता!

कुजने आवेगके साथ उत्तर दिया—हाँ, आ गया माया!

माया अत्यन्त घृणा और धिक्कारके साथ कह उठी—जाओ, जाओ, यहाँसे चले जाओ! अभी जाओ!

कुज एकाएक स्तम्भित चकित-सा रह गया।

इतनेमें 'हाँ री माया, तेरी सासकी बुआ अगर कल—' कहते कहते एक प्रौढा पड़ोसिन मायाके दर्वाजेके पास आई, मगर दर्वाजेपर कुजको देखते ही 'ओ मैया!' कहती हुई हाथ-भरका घूँघट निकालकर वेगसे भाग गई।

अड़तीसवाँ परिच्छेद

गाँवके महल्ले-भरमें एक भारी गड़बड़ मच गई। गाँवके बूढे लोग दुर्गाजीके मंदिरमें जमा होकर परस्पर कहने लगे—यह तो कभी नहीं सहा जा सकता। कलकत्तेमें क्या होता है—उसे न सुननेसे भी कोई हानि नहीं थी किन्तु, इस तरह चिट्ठीपर चिट्ठी लिखकर, कुजको गाँवमें बुलाकर प्रकट रूपसे ऐसा साहस—ऐसी निर्लज्जता, करना तो नहीं देखा जाता!

मायाको आज निश्चित रूपसे बिहारीका पत्र पानेकी आशा थी पर वह आशा सफल नहीं हुई। माया अपने मनमें कहने लगी—मेरे ऊपर बिहारीका कैसा किस बातका अधिकार है? मैंने क्यों उसकी आज्ञा सुनी और मानी? मैंने क्यों उसके आगे यह प्रकट किया कि वह मेरे लिये जो व्यवस्था करेगा उसे मैं सादर

सिर झुकाकर स्वीकार कर लूँगी ? उसका मेरे साथ क्या उतना ही सम्बन्ध है जितना उसे अपनी प्यारी करुणाको बचानेके लिए आवश्यक है ? मुझे उससे क्या कुछ भी पाना नहीं है ? मेरा क्या कुछ भी दावा नहीं है ? साधारण दो अक्षरकी चिट्ठी नहीं !—मैं इतनी तुच्छ हूँ, इतनी घृणाकी सामग्री हूँ ?

उसी समय ईर्षाके विषम विषसे मायाका हृदय परिपूर्ण हो उठा। उसने कहा—और किसीके लिए होता तो मैं इतना दुःख-कष्ट उठा लेती, मगर करुणाके लिए मुझसे इतना नहीं सहा जायगा। यह दीनता, यह वनवास, यह लोक-निन्दा, यह अनादर, इस जीवनकी सब तरहकी अतृप्ति, केवल करुणाके लिए मुझे सहनी पड़ेगी—हर घड़ी उठानी पड़ेगी ? इतने बड़े धोखेको मैंने आप ही अपने सिरपर क्यों ले लिया ! मैं क्यों नहीं सर्वनाश करनेका अपना व्रत सपूर्ण करके आई ? मैं बेवकूफ हूँ, नासमझ हूँ। मैंने क्यों बिहारीको चाहा ? मैंने क्यों उसे आत्म-समर्पण कर दिया ?

माया काठकी पुतलीकी तरह कठिन होकर घरमें बैठी थी, इसी समय उसकी सासकी बुआ बुढ़िया अपनी बेटीको देखकर लौटकर घर आई। आते ही उसने कहा—हरामजादी, कलमुँही, ये सब बातें क्या सुनाई पड़ रही हैं ?

मायाने कहा—जो सुन पड़ रहा है, सो सब सच है।

बुढ़ियाने कहा—तो यह कलक गाँवमें लेकर आनेकी क्या जरूरत थी—यहाँ क्यों आई ?

मायाके हृदयमें घोर हलचल मची हुई थी, वह अपने क्षोभको रोककर चुप रही। बुढियाने कहा—अब तेरा यहाँ रहना नहीं हो सक्ता—यह मैं अच्छी तरहसे कहे देती हूँ। जले भाग्यके दोषसे मेरे सब कोई मर-खप गये ओर मैं इस दारुण दुःखको सहकर भी जी रही हूँ। मगर अब ये बातें मुझसे नहीं सही जायँगी। छी-छी, तूने चार आदमियोंमें मेरा सिर नीचा कर दिया ! तू अभी यहाँसे चली जा।

मायाने कहा—मैं अभी चली जाऊँगी।

इसी समय कुज बिना नहाये और भोजन किये पागलकी तरह रूखे और अस्त-व्यस्त बालोंसे भयानक चेहरा लिये एकाएक आकर उपस्थित हुआ। रात-भर न सोनेसे उसकी आँखें लाल हो रही थीं, मुँह सूख रहा था। पहले उसका यही दृढ सकल्प था कि अँधेरा रहते-ही-रहते बड़े तड़के फिर दुबारा जाकर मायाको अपने साथ ले जानेकी चेष्टा करूँगा किन्तु मायाके पहले दिनके व्यवहारसे—अभूतपूर्व घृणासे—कुजको बड़ी चोट पहुँची थी। वह अपने मनमें तरह तरहकी दुविधा करने लगा। मगर तो भी जब दिन चढ आया, रेलगाडीका समय निकट आ गया, तब कुजसे नहीं रहा गया। वह सब तरहका सकोच—सब तरहकी

दुबिधा—दूर कर स्टेशनके वेटिंगरूमसे निकलकर, गाड़ीपर चढकर एकदम मायाके घरपर आकर उपस्थित हुआ।

लज्जा छोड़कर प्रकाश्यरूपसे किसी दुःसाहसके काममें प्रवृत्त होनेमे एक प्रकारका स्पर्धा-पूर्ण बल आ जाता है, उसी बलके आवेगसे कुजको एक प्रकारका पागलोंका-ऐसा आनन्द मालूम पड़ा। उसके शरीरकी शिथिलता और मनकी दुबिधा दूर हो गई। गॉवके लोग कुतूहलके साथ उसकी तरफ देखते थे। उन्मत्त कुजकी दृष्टिमे वे लोग मिट्टीके निर्जीव पुतले-ऐसे मालूम पड़ते थे। कुंजने किसीकी तरफ ऑख उठाकर देखा ही नहीं, सीधे एकदम मायाके पास आकर कहा—माया, मैं ऐसा कायर नहीं हूँ कि तुमको यहॉ लोक-निन्दा और अपमान सहनेके लिए अकेली छोड़ जाऊँ। मैंने निश्चय कर लिया है कि, जिस तरह हो, तुमको यहॉसे ले ही चलूँ। मैं आज तुम्हें छूकर कसम खाता हूँ कि तुम जब जैसी इच्छा करोगी वही होगा। अगर दया करोगी तो जिन्दा रहूँगा, और न दया करोगी तो तुम्हारी राहसे दूर चला जाऊँगा। मैंने ससारमे अनेक अविश्वासके काम किये हैं, लेकिन आज तुम मुझपर अविश्वास न करना। हम लोग प्रलयके मुखपर खड़े हैं; यह समय छल और कपट करनेका नहीं है।

मायाने बिल्कुल विचलित न होकर अत्यन्त सहज भावसे कहा—मुझे अपने साथ ले चलो। तुम्हारी गाड़ी है?

कुजने कहा—हॉ है।

इतनेमें मायाकी बुढियाने बाहर निकलकर कुजसे कहा—कुज, तुम मुझे नहीं पहचानते, लेकिन तुम मेरे अपने हो—गैर नहीं हो। तुम्हारी मा लक्ष्मी मेरे ही गॉवकी लड़की है, गॉवके नातेसे, मै उसकी मौसी लगती हूँ। भला, मै तुमसे पूछती हूँ—ये तुम्हारे कौनसे ढंग हैं? तुम्हारे घरमे जोरू है, मा है,—और तुम ऐसे बेहया बनकर पागल हुए फिरते हो? तुम चार भले आदमियोंके बीचमें मुह कैसे दिखाओगे?

कुंज जिस उन्मत्त भावके राज्यमें था उसमें एक धक्का लगा। उसके स्त्री है, उसके मा है, चार भले आदमियोंका समाज है। मानों यह सहज बात उसे नये सिरेसे जान पड़ी। इस अज्ञात अपरिचित दूरके गावमे किसीके मुँहसे ऐसी बात सुननेका ध्यान ही कुजको नहीं था। कुजके जीवन-चरितमे एक ऐसा अद्भुत अध्याय भी लिखा गया कि दिनके समय, गॉवके बीचमे खड़े होकर, वह एक भले आदमीके घरकी विधवा बहूको घरसे बाहर निकाले लिये जा रहा है! तब भी उसके मा है, स्त्री है, चार भले आदमियोंका समाज है! वाह री विडम्बना!

कुंजने कुछ उत्तर नहीं दिया, वह चुपचाप खड़ा रहा। तब बुढियाने फिर कहा—जाना हो तो अभी जाओ, अभी जाओ! मेरे घरके दर्वाजेपर खड़े न रहो—बस, अब मिनट भरकी देर न करो!

इतना कहकर बुढियाने भीतरसे किवाडे बन्द कर लिये। माया विना नहाये, विना खाये, मैले कपड़े पहने, खाली हाथ, ड्योढीमे खड़ी, वैसे ही गाडीपर बैठ गई। जब कुज गाडीपर चढने लगा तब मायाने कहा—ना, स्टेशन दूर नहीं है, तुम टहलते टहलते पैदल चले आओ।

कुजने कहा—तब मुझे गॉवके सब लोग देखेंगे नहीं ?

मायाने कहा—अभी कुछ लोक-लाज शायद बाकी है ?

यह कहकर उसने गाड़ीका दर्वाजा बद कर लिया और गाडीवानसे कहा—स्टेशन चलो।

गाडीवानने कुजसे कहा—'बाबू, जायगा नहीं ?' कुज इधर-उधर करने लगा। गॉवके भीतर होकर जानेकी हिम्मत जाती रही। गाड़ी जब चली गई, तब गॉवके भीतरकी राह छोड़कर खेतोंके बीच होकर सिर झुकाये सोचता हुआ कुज भी स्टेशनकी तरफ चला।

उस समय गॉवकी बहू-बेटियॉ स्नान-भोजन कर चुकी थीं। केवल घरकी बड़ी-बूढी स्त्रियॉ, जो अबतक काम-काजमें लगी हुई थीं, अब छुट्टी पाकर धोती अँगोछा लोटा-कलसी लिये, आमकी मजरीकी महकसे भरे हुए, शीतल छायासे सुशोभित, तालाबके एकान्त और निर्जन घाटमें नहाने जा रही थीं।

उनतालीसवॉं परिच्छेद

कुज कहीं चला गया—इस चिन्तासे लक्ष्मीका खाना-पीना और सोना सब बन्द हो गया। दीनानाथ चारों तरफ कुजको खोजते-फिरते हैं,—जहॉ कुजके मिलनेकी सभावना बिल्कुल नहीं थी वह स्थान भी उनसे नहीं बचा। इसी बीचमें कुज मायाको साथ लिये कलकत्तेसे लौट आया। 'पटल-डागा' में एक मकान भाड़ेपर ले और उसीमें मायाको रखकर कुज अपने घर आया।

माके कमरेमें जाकर कुजने देखा, अन्धकार हो रहा है। साधारण प्रकाशके लिए लालटैनकी रोशनी आड़में रख दी गई है। लक्ष्मी रोगीकी तरह बिछौनेपर पड़ी हुई हैं और करुणा पैताने बैठी हुई धीरे धीरे उनके पैरोंपर हाथ फेर रही है। इतने दिनोंके बाद घरकी बहूने स्वय ही सासके पैरोंके पास अपना आसन ग्रहण कर लिया है।

कुजके आते ही करुणा चौंककर उठ खड़ी हुई और कमरा छोड़कर चली गई। कुजने जबर्दस्ती सब तरहकी दुविधा छोड़कर कहा—मॉ, यहॉ मेरा पटना-लिखना ठीक तरहसे नहीं होता। मैंने कालेजके पास ही एक घर किराये पर ले लिया है, वहीं रहूँगा।

लक्ष्मीने बिछौनेके सिरेपर उँगलीसे इशारा करके कुजसे कहा—कुज जरा बैठ जा।

कुज सकोचके साथ बिछौनेके सिरेपर बैठ गया। लक्ष्मीने कहा—कुज, तेरी जहाँ इच्छा हो वहाँ रह लेकिन मेरी बहूको तू कष्ट न दे!

कुंज चुप रहा। लक्ष्मीने कहा—मैं अब तक अपने अभागोंसे ऐसी सुशीला बहूको नहीं पहचान सकी थी।—(कहते कहते लक्ष्मीका गला भर आया।) मगर तूने इतना जानकर और इतना मानकर भी अन्तको उसे ऐसे घोर दुःखमें कैसे डाला?—

लक्ष्मीसे रहा नहीं गया, उसकी ऑखोंमे ऑसुओंकी धारा बह चली। कुज अगर वहॉसे उठकर भाग जा सकता तो मानो उसकी जान बच जाती, मगर एकाएक उससे उठा न गया—माके बिछौनेके किनारेपर अन्धकारमें सिमटा हुआ चुपचाप बैठा रहा।

थोड़ी देरके बाद लक्ष्मीने कहा—आज रातको तो यहीं रहेगा न?

कुजने कहा—नहीं।

लक्ष्मीने पूछा—कब जायगा?

कुजने कहा—अभी।

लक्ष्मी कष्टसे उठकर बैठ गई, बोली—अभी बहूसे एक बार अच्छी तरह मिलेगा भी नहीं?

कुज चुप रहा। लक्ष्मीने कहा—बहूके ये दो तीन दिन किस तरह बीते हैं सो तू कुछ भी नहीं समझ सका। ओ रे निर्लज, तेरी निठुराई देखकर मेरी छाती फट गई!

यह कहकर कटी हुई डालकी तरह लक्ष्मी बिछौनेपर गिर गई। कुजको भागनेका मौका मिला। वह बिछौनेसे उठकर कमरेसे बाहर हो गया और धीरे धीरे चुपचाप पैर रखता हुआ सीढ़ी चढकर ऊपर अपने कमरेकी तरफ चला। उसकी यह बिल्कुल इच्छा न थी कि करुणासे मुलाकात हो।

कुजने सीढी चढकर जैसे ही ऊपरकी छतपर पैर रक्खा, वैसे ही कमरेके सामने पड़ी हुई टीनके नीचे जमीनपर लेटी हुई करुणा दिखाई पड़ी। पहले पैरकी आहट नहीं मिली। कुज एकाएक छतपर सामने आ गया, यह देख करुणा जल्दीसे कपड़े लत्ते समेटकर उठ बैठी।

इस समय अगर कुज एक एक बार 'चुन्नी' कहकर पुकारता, तो वह उसका सारा अपराध जैसे अपने ही सिरपर ले लेती और उलटे आप, क्षमा चाहनेवाले अपराधीकी तरह, कुजके दोनों पैरोंसे लिपटकर, अपने जीवनका सब रोना रो डालती। लेकिन कुज उस प्रिय नामको जबानपर न ला सका। जितनी ही उसने चेष्टा की,—'चुन्नी' कहकर पुकारनेकी इच्छा की—उतनी ही उसे वेदना और

यन्त्रणा मिली। उसे मालूम पड़ने लगा कि आज करुणाको आदर और प्यारके पहले नामसे पुकारना सार-हीन हँसी-मात्र है, और कुछ नहीं। जब मैंने मायाको छोड़नेका मार्ग आप ही अपने हाथोंसे एकदम बंद कर दिया है तब करुणाको जबानी झूठा धीरज देनेसे लाभ ही क्या है?

करुणा संकोचके मारे मानो मर रही। उठकर खड़े होने और चले जानेकी कौन कहे—साँस लेनेमें भी उसे जैसे लज्जा मालूम पड़ने लगी। कुंजने उससे कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप धीरे धीरे छतपर टहलने लगा। कृष्णपक्ष था आकाशमें चन्द्रमाका बिंब अभीतक दिखाई नहीं पड़ा था, छतपर एक कोनेके छोटे से गमलेमें रजनीगन्धाका पेड़ लगा हुआ था, और उसकी दो डण्डियोंमें दो फूल खिले हुए थे। छतके ऊपरवाले अन्धकारमय आकाशमें इन नक्षत्रों, इन सप्त ऋषियों, और इन तारागणोंने, अनेक सन्नाटेकी रातोंमें कुंज और करुणाके अनेक निभृत नीरव प्रेमके तमाशे देखे हैं। आज भी वे सब इन दोनोंकी तरफ चुपचाप टक लगाकर देखने लगे।

कुंज सोचने लगा—बीचके इन कई दिनोंकी गड़बड़ इसी अंधकारमें मिटाकर अगर मैं, पहलेके उन्हीं दिनोंकी तरह, इसी खुली छतपर चटाई डालकर, करुणाके पास अपनी उसी हमेशाकी जगहपर अनायास ही जाकर बैठ सकूँ तो कोई प्रश्न न हो, कोई जवाबदेही न रहे, वही विश्वास, वही प्रेम, वही सहज आनन्द लौट आवे।

किन्तु हाय! इस संसारमें, सब जगह स्थान होनेपर भी, वह उतनी-सी जगह पानेका मार्ग अब नहीं रहा! इस छतपर करुणाके पास चटाईका थोड़ा-सा कोना मिलना कुंजके लिए असंभव हो गया है, उसे उसने अपने हाथसे गवाँ दिया है।

इतने दिनोंतक मायासे कुंजका एक प्रकारका स्वतन्त्र सम्बन्ध था,—प्यार करनेका—चाहनेका—उन्मत्त सुख था, किन्तु उसका ऐसा बन्धन न था कि जिससे छुटकारा न मिल सके—जो तोड़ा न जा सके। इस समय कुंज अपने हाथों मायाको समाजसे छुड़ा लाया है। अब मायाको कहीं रखनेकी—कहीं लौटा देनेकी—जगह नहीं है। कुंज ही उसका एकमात्र आधार है। इस समय, इच्छा हो या न हो, उसे मायाका सब बोझा अपने सिरपर लेना ही पड़ेगा।

यह सोचकर कुंजका हृदय भीतर-ही-भीतर पीड़ित होने लगा। उसे छतपरका यही बैठना-उठना, यही शान्ति, यही बाधाविहीन प्रेम-मिलनकी एकान्त रातें, एकाएक बड़े आराम और सुखकी सामग्री जान पड़ने लगीं। किन्तु आज वही सहज सुलभ सुख और आराम जिसपर एकमात्र उसीका अधिकार है, उसके लिए अत्यन्त दुराराध्य सामग्री हो रहा है। चिर-जीवनके लिए जो बोझा कुंजने अपने ऊपर लाद लिया है उसे दम-भरके लिए कहीं उतारकर साँस लेना भी उसके लिए कठिन है।

लक्ष्मीने बिछौनेके सिरेपर उँगलीसे इशारा करके कुंजसे कहा—कुंज जरा बैठ जा।

कुंज सकोचके साथ बिछौनेके सिरेपर बैठ गया। लक्ष्मीने कहा—कुंज, तेरी जहाँ इच्छा हो वहाँ रह लेकिन मेरी बहूको तू कष्ट न दे!

कुंज चुप रहा। लक्ष्मीने कहा—मैं अब तक अपने अभागोंसे ऐसी सुशीला बहूको नहीं पहचान सकी थी।—(कहते कहते लक्ष्मीका गला भर आया।) मगर तूने इतना जानकर और इतना मानकर भी अन्तको उसे ऐसे घोर दुःखमें कैसे डाला?—

लक्ष्मीसे रहा नहीं गया, उसकी आँखोंमे आँसुओंकी धारा बह चली। कुंज अगर वहाँसे उठकर भाग जा सकता तो मानो उसकी जान बच जाती, मगर एकाएक उससे उठा न गया—माके बिछौनेके किनारेपर अन्धकारमें सिमटा हुआ चुपचाप बैठा रहा।

थोड़ी देरके बाद लक्ष्मीने कहा—आज रातको तो यहीं रहेगा न?

कुंजने कहा—नहीं।

लक्ष्मीने पूछा—कब जायगा?

कुंजने कहा—अभी।

लक्ष्मी कष्टसे उठकर बैठ गई, बोली—अभी बहूसे एक बार अच्छी तरह मिलेगा भी नहीं?

कुंज चुप रहा। लक्ष्मीने कहा—बहूके ये दो तीन दिन किस तरह बीते हैं सो तू कुछ भी नहीं समझ सका। ओ रे निर्लज्ज, तेरी निठुराई देखकर मेरी छाती फट गई!

यह कहकर कटी हुई डालकी तरह लक्ष्मी बिछौनेपर गिर गई। कुंजको भागनेका मौका मिला। वह बिछौनेसे उठकर कमरेसे बाहर हो गया और धीरे धीरे चुपचाप पैर रखता हुआ सीढ़ी चढकर ऊपर अपने कमरेकी तरफ चला। उसकी यह बिल्कुल इच्छा न थी कि करुणासे मुलाकात हो।

कुंजने सीढी चढकर जैसे ही ऊपरकी छतपर पैर रक्खा, वैसे ही कमरेके सामने पड़ी हुई टीनके नीचे जमीनपर लेटी हुई करुणा दिखाई पड़ी। पहले पैरकी आहट नहीं मिली। कुंज एकाएक छतपर सामने आ गया, यह देख करुणा जल्दीसे कपड़े लत्ते समेटकर उठ बैठी।

इस समय अगर कुंज एक एक बार 'चुन्नी' कहकर पुकारता, तो वह उसका सारा अपराध जैसे अपने ही सिरपर ले लेती और उलटे आप, क्षमा चाहनेवाले अपराधीकी तरह, कुंजके दोनों पैरोंसे लिपटकर, अपने जीवनका सब रोना रो डालती। लेकिन कुंज उस प्रिय नामको जबानपर न ला सका। जितनी ही उसने चेष्टा की,—'चुन्नी' कहकर पुकारनेकी इच्छा की—उतनी ही उसे वेदना और

यन्त्रणा मिली। उसे मालूम पडने लगा कि आज करुणाको आदर और प्यारके पहले नामसे पुकारना सार-हीन हँसी-मात्र है, और कुछ नहीं। जब मैने मायाको छोड़नेका मार्ग आप ही अपने हाथोंसे एकदम बद कर दिया है तब करुणाको जबानी झूठा धीरज देनेसे लाभ ही क्या है?

करुणा सकोचके मारे मानो मर रही। उठकर खड़े होने और चले जानेकी कौन कहे—साँस लेनेमें भी उसे जैसे लज्जा मालूम पड़ने लगी। कुंजने उससे कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप धीरे धीरे छतपर टहलने लगा। कृष्णपक्ष था, आकाशमे चन्द्रमाका बिंब अभीतक दिखाई नहीं पड़ा था, छतपर एक कोनेके छोटे से गमलेमें रजनीगन्धाका पेड़ लगा हुआ था, और उसकी दो डण्डियोंमें दो फूल खिले हुए थे। छतके ऊपरवाले अन्धकारमय आकाशमे इन नक्षत्रों, इन सप्त ऋषियों, और इन तारागणोंने, अनेक सन्नाटेकी रातोंमें कुज और करुणाके अनेक निभृत नीरव प्रेमके तमाशे देखे हैं। आज भी वे सब इन दोनोंकी तरफ चुपचाप टक लगाकर देखने लगे।

कुज सोचने लगा—बीचके इन कई दिनोंकी गड़बड़ इसी अधकारमें मिटाकर अगर मैं, पहलेके उन्हीं दिनोंकी तरह, इसी खुली छतपर चटाई डालकर, करुणाके पास अपनी उसी हमेशाकी जगहपर अनायास ही जाकर बैठ सकूँ तो कोई प्रश्न न हो, कोई जवाबदेही न रहे, वही विश्वास, वही प्रेम, वही सहज आनन्द लौट आवे।

किन्तु हाय! इस ससारमें, सब जगह स्थान होनेपर भी, वह उतनी-सी जगह पानेका मार्ग अब नहीं रहा! इस छतपर करुणाके पास चटाईका थोड़ा-सा कोना मिलना कुजके लिए असभव हो गया है, उसे उसने अपने हाथसे गवाँ दिया है।

इतने दिनोंतक मायासे कुजका एक प्रकारका स्वतन्त्र सम्बन्ध था,—प्यार करनेका—चाहनेका—उन्मत्त सुख था, किन्तु उसका ऐसा बन्धन न था कि जिससे छुटकारा न मिल सके—जो तोड़ा न जा सके। इस समय कुज अपने हाथों मायाको समाजसे छुड़ा लाया है। अब मायाको कहीं रखनेकी—कहीं लौटा देनेकी—जगह नहीं है। कुज ही उसका एकमात्र आधार है। इस समय, इच्छा हो या न हो, उसे मायाका सब बोझा अपने सिरपर लेना ही पड़ेगा।

यह सोचकर कुजका हृदय भीतर-ही-भीतर पीड़ित होने लगा। उसे छतपरका यही बैठना-उठना, यही शान्ति, यही बाधाविहीन प्रेम-मिलनकी एकान्त रातें, एकाएक बड़े आराम और सुखकी सामग्री जान पड़ने लगीं। किन्तु आज वही सहज सुलभ सुख और आराम जिसपर एकमात्र उसीका अधिकार है, उसके लिए अत्यन्त दुराशादी सामग्री हो रहा है। चिर-जीवनके लिए जो बोझा कुजने अपने ऊपर लाद लिया है उसे दम-भरके लिए कहीं उतारकर साँस लेना भी उसके लिए कठिन है।

लक्ष्मीने बिछौनेके सिरेपर उँगलीसे इशारा करके कुजसे कहा—कुज जरा बैठ जा।

कुज सकोचके साथ बिछौनेके सिरेपर बैठ गया। लक्ष्मीने कहा—कुज, तेरी जहाँ इच्छा हो वहाँ रह लेकिन मेरी बहूको तू कष्ट न दे!

कुंज चुप रहा। लक्ष्मीने कहा—मैं अब तक अपने अभागोंसे ऐसी सुशील बहूको नहीं पहचान सकी थी।—(कहते कहते लक्ष्मीका गला भर आया।) मगर तूने इतना जानकर और इतना मानकर भी अन्तको उसे ऐसे घोर दुःखमें कैसे डाला?—

लक्ष्मीसे रहा नहीं गया, उसकी आँखोंमे आँसुओंकी धारा बह चली। कुज अगर वहाँसे उठकर भाग जा सकता तो मानो उसकी जान बच जाती, मगर एकाएक उससे उठा न गया—माके बिछौनेके किनारेपर अन्धकारमें सिमटा हुआ चुपचाप बैठा रहा।

थोड़ी देरके बाद लक्ष्मीने कहा—आज रातको तो यहीं रहेगा न?

कुंजने कहा—नहीं।

लक्ष्मीने पूछा—कब जायगा?

कुजने कहा—अभी।

लक्ष्मी कष्टसे उठकर बैठ गई, बोली—अभी बहूसे एक बार अच्छी तरह मिलेगा भी नहीं?

कुज चुप रहा। लक्ष्मीने कहा—बहूके ये दो तीन दिन किस तरह बीते हैं सो तू कुछ भी नहीं समझ सका। ओ रे निर्लज, तेरी निठुराई देखकर मेरी छाती फट गई!

यह कहकर कटी हुई डालकी तरह लक्ष्मी बिछौनेपर गिर गई। कुजको भागनेका मौका मिला। वह बिछौनेसे उठकर कमरेसे बाहर हो गया और धीरे धीरे चुपचाप पैर रखता हुआ सीढ़ी चढकर ऊपर अपने कमरेकी तरफ चला। उसकी यह बिल्कुल इच्छा न थी कि करुणासे मुलाकात हो।

कुजने सीढी चढकर जैसे ही ऊपरकी छतपर पैर रक्खा, वैसे ही कमरेके सामने पड़ी हुई टीनके नीचे जमीनपर लेटी हुई करुणा दिखाई पड़ी। पहले पैरकी आहट नहीं मिली। कुज एकाएक छतपर सामने आ गया, यह देख करुणा जल्दीसे कपड़े लत्ते समेटकर उठ बैठी।

इस समय अगर कुज एक एक बार 'चुन्नी' कहकर पुकारता, तो वह उसका सारा अपराध जैसे अपने ही सिरपर ले लेती और उलटे आप, क्षमा चाहनेवाले अपराधीकी तरह, कुजके दोनों पैरोंसे लिपटकर, अपने जीवनका सब रोना रो डालती। लेकिन कुज उस प्रिय नामको जबानपर न ला सका। जितनी ही उसने चेष्टा की,—'चुन्नी' कहकर पुकारनेकी इच्छा की—उतनी ही उसे वेदना और

यन्त्रणा मिली। उसे मालूम पड़ने लगा कि आज करुणाको आदर और प्यारके पहले नामसे पुकारना सार-हीन हँसी-मात्र है, और कुछ नहीं। जब मैंने मायाको छोड़नेका मार्ग आप ही अपने हाथोंसे एकदम बंद कर दिया है तब करुणाको जबानी झूठा धीरज देनेसे लाभ ही क्या है?

करुणा सकोचके मारे मानो मर रही। उठकर खड़े होने और चले जानेकी कौन कहे—साँस लेनेमें भी उसे जैसे लज्जा मालूम पड़ने लगी। कुंजने उससे कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप धीरे धीरे छतपर टहलने लगा। कृष्णपक्ष था, आकाशमें चन्द्रमाका बिंब अभीतक दिखाई नहीं पड़ा था, छतपर एक कोनेके छोटे से गमलेमें रजनीगन्धाका पेड़ लगा हुआ था, और उसकी दो डण्डियोंमें दो फूल खिले हुए थे। छतके ऊपरवाले अन्धकारमय आकाशमें इन नक्षत्रों, इन सप्त ऋषियों, और इन तारागणोंने, अनेक सन्नाटेकी रातोंमें कुंज और करुणाके अनेक निभृत नीरव प्रेमके तमाशे देखे हैं। आज भी वे सब इन दोनोंकी तरफ चुपचाप टक लगाकर देखने लगे।

कुंज सोचने लगा—बीचके इन कई दिनोंकी गड़बड़ इसी अंधकारमें मिटाकर अगर मैं, पहलेके उन्हीं दिनोंकी तरह, इसी खुली छतपर चटाई डालकर, करुणाके पास अपनी उसी हमेशाकी जगहपर अनायास ही जाकर बैठ सकूँ तो कोई प्रश्न न हो, कोई जवाबदेही न रहे; वही विश्वास, वही प्रेम, वही सहज आनन्द लौट आवे।

किन्तु हाय! इस संसारमें, सब जगह स्थान होनेपर भी, वह उतनी-सी जगह पानेका मार्ग अब नहीं रहा! इस छतपर करुणाके पास चटाईका थोड़ा-सा कोना मिलना कुंजके लिए असंभव हो गया है, उसे उसने अपने हाथसे गवाँ दिया है।

इतने दिनोंतक मायासे कुंजका एक प्रकारका स्वतन्त्र सम्बन्ध था,—प्यार करनेका—चाहनेका—उन्मत्त सुख था, किन्तु उसका ऐसा बन्धन न था कि जिससे छुटकारा न मिल सके—जो तोड़ा न जा सके। इस समय कुंज अपने हाथों मायाको समाजसे छुड़ा लाया है। अब मायाको कहीं रखनेकी—कहीं लौटा देनेकी—जगह नहीं है। कुंज ही उसका एकमात्र आधार है। इस समय, इच्छा हो या न हो, उसे मायाका सब बोझा अपने सिरपर लेना ही पड़ेगा।

यह सोचकर कुंजका हृदय भीतर-ही-भीतर पीड़ित होने लगा। उसे छतपरका यही बैठना-उठना, यही शान्ति, यही बाधाविहीन प्रेम-मिलनकी एकान्त रातें, एकाएक बड़े आराम और सुखकी सामग्री जान पड़ने लगीं। किन्तु आज वही सहज सुलभ सुख और आराम जिसपर एकमात्र उसीका अधिकार है, उसके लिए अत्यन्त दुराशादी सामग्री हो रहा है। चिर-जीवनके लिए जो बोझा कुंजने अपने ऊपर लाद लिया है उसे दम-भरके लिए कहीं उतारकर साँस लेना भी उसके लिए कठिन है।

एक लंबी साँस लेकर कुंजने एक बार करुणाकी तरफ देखा। जबर्दस्ती रोके गये आँसुओंसे और रुलाईसे उसका हृदय ऊपरतक भरा हुआ था। वह जरा भी हिलती डुलती न थी — चुपचाप बैठी थी। रातका अन्धकार, माके आँचलकी तरह, उसकी लज्जा और वेदनाको ढके हुए था।

कुंज टहलते टहलते एकाएक, न जाने क्या कहनेके लिए, करुणाके पास आकर खड़ा हो गया। यह देख करुणाके सारे शरीरका रक्त उसके कानोंमें जाकर सनसनाने लगा, उसने आँखें बंद कर लीं। कुंज, क्या कहने आया था सो, कुछ ठीक न कर सका, कहनेकी बात ही क्या थी? पर कुछ-न-कुछ कहे बिना लौटा भी नहीं गया। उसने कहा—चाबियोंका गुच्छा कहाँ है?

चाबियोंका गुच्छा था बिछौनेके गद्देके नीचे। करुणा उठकर कमरेके भीतर गई; कुंज भी उसके पीछे पीछे गया। गद्देके नीचेसे गुच्छा निकालकर करुणाने सामने रख दिया। कुंजने गुच्छेको उठाकर अपनी आल्मारीके तालेमें एक एक करके सब तालियाँ लगाना शुरू कर दिया। करुणासे रहा नहीं गया। उसने बहुत धीरेसे कहा—इस आल्मारीकी चाबी मेरे पास नहीं थी।

किसके पास चाबी थी यह बात करुणाके मुँहसे नहीं निकल सकी। लेकिन कुंज समझ गया। करुणा जल्दीसे कमरेके बाहर चली गई जिसमें कहीं कुंजके आगे उसका रोना न उमड़ पड़े। अँधेरी छतपर दीवालके एक कोनेकी तरफ मुँह फेरकर वह अपने उमड़े हुए रोनेके वेगको बलपूर्वक दबाकर चुपचाप आँसू गिराने लगी।

लेकिन बहुत देर तक आँसू भी न गिरा सकी, एकाएक याद आ गया कि कुंजके खाने-पीनेका समय हो गया है। करुणा जल्दीसे नीचे उतर गई।

लक्ष्मीने करुणासे पूछा—कुंज कहाँ है बहू?

करुणाने कहा—ऊपर हैं।

लक्ष्मीने कहा— फिर तू क्यों उतर आई?

करुणाने सिर झुकाये कहा—उनके खानेका—

बात बीचहीमें काटकर लक्ष्मीने कहा—खाने पीनेका प्रबन्ध मैं किये लेती हूँ बहू, तू तब तक जरा जाकर, तेल लगाकर, मुँह धोकर अच्छे साफ कपड़े पहन ले। अपनी वह नई बनारसी साड़ी पहनकर जल्दी आ, मैं तेरे बाल बाँध दूँ।

करुणा सासके आदरका निरादर या उपेक्षा न कर सकती थी, लेकिन इस शृंगारके प्रस्तावसे वह भीतर-ही-भीतर लज्जाके मारे कट गई। भीष्मपितामहने मृत्युकी इच्छासे चुपचाप पड़े रहकर जैसे बाणोंकी वर्षा सह ली थी, वैसे ही करुणाने भी बड़े धैर्यके साथ लक्ष्मीके किये हुए शृंगारको शरीरपर धारण कर लिया।

शृंगारके बाद करुणा बहुत धीरे धीरे चुपचाप सीढ़ी चढ़कर ऊपर गई। झाँककर देखा, कुंज छतपर नहीं है। धीरे धीरे दर्वाजेके पास आकर देखा, कमरेके भीतर

भी नहीं है। भोजनकी थाली भी वैसी ही भरी रक्खी है, उसमेंसे एक कौर भी कोई चीज नहीं खाई गई है।

चाबी न रहनेके कारण कुंजने बलपूर्वक आलमारीका ताला तोड़ डाला है और उस आलमारीसे कुछ जरूरी कपड़े और किताबें लेकर वह कहीं चला गया है।

दूसरे दिन एकादशी थी। अस्वस्थ और क्लिष्ट-शरीर लक्ष्मी बिछोनेपर पड़ी हुई थी। बाहर बदली घिरी हुई थी। मालूम पड़ता था कि जोरकी आँधी आवेगी। करुणा धीरे धीरे सासके पास गई और उनके पैरोंपर धीरे धीरे हाथ फेरती हुई कहने लगी—मा, तुम्हारे लिए दूध और फल रक्खे हैं, ले आऊँ—खाओगी?

करुणामयी बहूकी यह अनभ्यस्त सेवाकी चेष्टा देखकर लक्ष्मीकी दोनों आँखोंमें आसू भर आये। वह उठकर बैठ गई और करुणाको गोदमें लेकर उसके आँसु ओसे भीगे हुए कपोलोंको प्यारसे बार बार चूमने लगी।

लक्ष्मीने पूछा—बहू, कुज क्या कर रहा है?

करुणा इस प्रश्नसे अत्यन्त लज्जित हुई, धीरेसे बोली—वे चले गये।

लक्ष्मीने कहा—कब चला गया, मुझे तो मालूम भी नहीं हुआ!

करुणाने सिर झुकाये कहा—वे तो कल रातको ही चले गये थे।

सुनते ही लक्ष्मीकी सब कोमलता जैसे चली गई—बहूके आदरपूर्वक अंगस्पर्श करनेमें जैसे कुछ भी रस नहीं रहा। करुणा मनमें एक प्रकारकी नीरव लाछनाका अनुभव कर सिर नीचा किये हुए वहाँसे चली गई।

चालीसवाँ परिच्छेद

पिछली रातको कुज जब मायाको पटल-डाँगाके घरमें छोड़ कपड़े और पोथी लेने अपने घर गया, तब माया कलकत्तेमें निरन्तर बनी रहनेवाली भीड़के कोलाहलमें अकेले बैठकर अपने बारेमें विचार करने लगी। यद्यपि पृथ्वीपर उसके आश्रयका स्थान यथेष्ट विस्तृत तो किसी समय भी न था तो भी एक तरफसे दूसरी तरफ करवट बदलनेके लिए कुछ जगह थी, मगर आज उसके रहनेका स्थान बहुत ही सकीर्ण है। वह जिस नावपर चढकर समयके प्रवाहमें बह चली है वह नाव बहुत ही हल्की है, जरा भी इधर-उधर झोका खानेसे उसके उलट जाने और अपने डूब जानेका खटका है। इस समय उसे स्थिर और सावधान होकर डाँड़, पकड़ना चाहिए। जरासी भी भूल हो जानेसे, जरा भी हिलने डुलनेसे, अनर्थ हो जायगा।

ऐसी अवस्थामें किस रमणीका हृदय न काँपने लगेगा? दूसरेका मन सब तरहसे वशमें रखनेके लिए जितनी लीला—जितना खेल, खेलना चाहिए—जितना

अलग आड़में रहना चाहिए,—उसके लिए इस स्थानकी संकीर्णतामें अवकाश कहाँ है ? कुंजके बिल्कुल पास, आँखोंके आगे, रहकर सारा जीवन बितानेके लिए उसे प्रस्तुत होना होगा। भेद यही है कि कुंज किनारे लगकर अपनी जगह पा सकता है लेकिन मायाके लिए कोई उपाय नहीं है।

मायाको यह अपनी असहाय अवस्था जितनी ही सुस्पष्टरूपसे सूझ पड़ने लगी उतना ही वह अपने मनमें बल-संचय करने लगी। उसे अपने लिए एक-न-एक उपाय करना ही होगा, इस तरह वह नहीं रह सकती।

जिस दिन मायाने बिहारीके निकट अपना प्रेम प्रकट कर दिया, उसी दिनसे उसके धैर्यका बाँध टूट गया। जिस उद्यत चुम्बनको वह बिहारीके मुखके पाससे लौटा लाई है उसे जगतमें और कहीं जगह नहीं है। माया उसे पवित्र अर्घ्यकी तरह रात-दिन उसी इष्ट देवताके लिए लिये लिये फिरती है। मायाका स्वभाव है कि वह किसी कामको एकदम छोड़ देना नहीं चाहती। उसका हृदय सम्पूर्ण रूपसे निराश होना जानता ही नहीं। उसका मन नित्यप्रति प्राण-पणसे दृढ़ताके साथ कहा करता है कि मेरी यह पूजा बिहारीको स्वीकार करनी ही पड़ेगी !

मायाके इस प्रबल प्रेमके साथ आत्म-रक्षाका अत्यन्त आग्रह भी मिल गया। बिहारीके सिवा मायाके लिए और कोई उपाय नहीं है। कुंजको तो मायाने पूरा अच्छी तरह जान-पहचान लिया है, उसके ऊपर भार डाला जाय तो वह भार नहीं सह सकता। उसे छोड़ देनेहीसे वह पाया जा सकता है, पकड़ाई दे सकता है, पर पकड़े रहनेसे वह भागना चाहता है।

स्त्रीके लिए जिस निश्चित, विश्वस्त, निरापद, आश्रय या सहारेकी आवश्यकता है उसे बिहारी दे सकता है। आज बिहारीको छोड़ देनेसे मायाके लिए महा संकट है।

जिस दिन माया गाँव छोड़कर आने लगी थी उस दिन उसने स्टेशनसे मिले हुए डाकखानेमें कुंजको भेजकर विशेष रूपसे कहला दिया था कि उसके नामकी चिट्ठियाँ कलकत्तेमें नये पतेपर भेज दी जाया करें। इस बातको माया किसी तरह स्वीकार नहीं कर सकी कि बिहारी उसकी चिट्ठीका कोई उत्तर ही न देगा। उसने कहा—मैं सात दिन तक धैर्य धारण कर उत्तरकी अपेक्षा करूँगी, उसके बाद देखा जायगा।

इतना कहकर माया उठी और अन्धकारसे भरे हुए कमरेका एक बाहरी दर्वाजा खोलकर रास्तेकी तरफ अनमनी-सी होकर ताकने लगी। रास्तेपर गैसकी तेज रोशनी हो रही थी। इस सन्ध्याके समय बिहारी इसी शहरमें है, यहाँसे दो ही एक गली नाँघकर जानेसे बिहारीके दर्वाजेपर पहुँचा जा सकता है। दर्वाजेके भीतर जानेपर पहले जल-कलवाला छोटा आँगन मिलता है, फिर सीढ़ियाँ हैं, उसके ऊपर वही साफ सुथरा सजा-सजाया प्रकाश परिपूर्ण एकान्त कमरा है।

उसी कमरेमें सन्नाटेकी शान्तिमें बिहारी अकेला कुर्सीपर बैठा होगा और शायद उसके पास ही वही ब्राह्मण-बालक वसन्त—वही सुगोल सुडौल सुन्दर गोरे रगका बड़ी बड़ी आँखोंभाला भोलाभाला लड़का—तसवीरोंकी किताब लिये अपनी इच्छाके अनुसार पन्ने उलट-पुलट रहा होगा

धीरे धीरे उस दिनका सम्पूर्ण चित्र जैसे आँखोंके आगे आ गया, स्नेह और प्रेमकी लहरोंसे मायाका हृदय भर गया—रोमाञ्च हो आया। मायाके मनमें आया कि इच्छा करनेसे अभी जा सकती हूँ। यह खयाल आते ही वह उस प्यारी इच्छाको हृदयमें लेकर उसके साथ खेलने लगी। पहलेके दिन होते तो माया उस इच्छाको पूर्ण करनेके लिए अग्रसर होती; किन्तु आज यह बड़े सोच-विचारकी बात है। इस समय तो केवल इच्छा पूर्ण करना या वासना चरितार्थ करना नहीं है,—उद्देश्य सिद्ध करना है। मायाने अपने मनमें कहा—पहले देखूँ, बिहारी बाबू मेरी चिट्ठीका कैसा उत्तर देते हैं, उसके बाद यह निश्चय किया जायगा कि किस राहपर चलना उचित और आवश्यक है। कुछ समझे-बूझे बिना, बिहारीको अप्रसन्न करनेके लिए, जानेका उसे साहस न हुआ।

इसी प्रकार सोचते सोचते रातके दस बज गये, उसी समय कुंज आ पहुँचा। इधरके दो-तीन दिन उसने ऐसी उत्तेजित अवस्थामें विताये हैं कि न अच्छी तरह खाया है, न सोया है। आज कृतकार्य होकर, मायाको उसके घरसे अपने पास ले आकर, वह जैसे बहुत ही सुस्त हो गया है—उसे एक प्रकारकी थकन-सी हो गई है। आज जैसे ससारके साथ—अपनी अवस्थाके साथ—लड़नेके लिए उसमें कुछ भी शक्ति नहीं रही है। भारसे दबे हुए उसके भावी जीवनकी सारी ग्लानि और उदासी, जैसे पहलेहीसे उसके ऊपर चढ बैठी।

बद दर्वाजेके पास खड़े होकर दर्वाजा खटखटानेमें कुजको बड़ी ही लज्जा मालूम पड़ने लगी। जिस नशेमें उसने सारे ससारको कुछ नहीं समझा, वह नशा आज कहाँ है? राहमें आने-जानेवाले अपरिचित आदमियोंके आगे भी आज उसे सकोच क्यों हो रहा है?

नौकर नया था, वह भीतर सो रहा था—दर्वाजा खुलवानेके लिए बहुत चिल्लाना पुकारना और खटखटाना पड़ा। वेजाने-पहचाने नये घरके अन्धकारमें पहुँचते ही कुजका मन बुझ गया। कुंज धनीका लड़का और माताका प्यारा दुलारा था। उसके विलासकी सब सामग्री मूल्यवान् थी। घरमें तीन तीन कुली पखा खींचते थे। लेकिन नये घरमे इनमेंसे कोई भी चीज नहीं थी। उसने सोचा —यहाँकी यह कमी मुझे पूरी करनी होगी। घरकी सब व्यवस्थाका भार मेरे ही ऊपर है।

कुजने कभी अपने या पराए आरामके लिए चिन्ता नहीं की थी—आजसे एक नव-गठित असम्पूर्ण गृहस्थीकी देख-रेख उसीको करनी होगी। सीढीपर एक

केरोसिन तेलकी डब्बीका दीपक बेशुमार धुआँ उगलता हुआ टिम-टिमा रहा था। उसने सोचा, कल इसकी जगहपर एक अच्छी लालटेन या लैंप लाकर लगाना होगा। बरामदा नाँघकर सीढी चढनेका रास्ता कलके पानीसे भीगकर मिनभिना रहा था। कुंजने सोचा—मिस्त्री बुलाकर सीमेंटसे इतनी जगह पक्की करवा देनी होगी। रास्तेकी तरफ उस घरमें बाहर दो दुकानें थीं, उनमें जूते बिकते थे। कुजने सोचा—इस घरमें किसी दुकानका होना अच्छा नहीं, कल मकानवालेसे इन बातोंको जोर डालकर कहना होगा कि दो-ही तीन दिनमें दुकानें खाली हो जानी चाहिए—किरायेकी कमी मैं भर दूँगा।

ये काम स्वय करने होंगे—यह खयाल आते ही उसकी थकनका बोझा जैसे और भी बढ गया।

कुंजने सीढीके पास जरा देर ठहरकर अपनेको सँभाल लिया और मायापर जो उसका प्रेम था उसे उत्तेजित किया। अपनेको समझाया कि इतने दिन तक सारी पृथ्वीको भूलकर जिसे चाहा था उसे आज पा लिया है। आज दोनोंके बीचमें कोई नहीं है—आज आनन्दका दिन है। किन्तु, किसी बाधाका न होना ही आज सबसे बढकर बाधा है, आज कुज स्वय ही अपने लिये बाधा हो रहा है।

मायाने राहमें ही कुजको आते देख लिया था। उसने ध्यानासनसे उठकर लैंप जलाया और एक कसीदा हाथमे लेकर सिर झुकाकर उसे काढना शुरू कर दिया। यह कसीदा ही मायाका किला है, इसकी आड़में उसे बड़ा आश्रय मिलता है।

कुंजने कमरेमें घुसकर कहा—माया, जरूर तुमको यहाँ हर तरहकी असुविधा होती होगी।

मायाने कसीदा काढते-ही काढते कहा—मुझे तो कोई भी असुविधा नहीं मालूम होती।

कुजने कहा—मैं दो तीन दिनमें ही और सब सामान ले आऊँगा। तब तक तुम्हें और भी थोड़ा-सा कष्ट उठाना पड़ेगा।

मायाने कहा—नहीं, यह किसी तरह न हो सकेगा; तुम और कुछ भी सामान न लाना। यहाँ जो कुछ है वही जरूरतसे ज्यादह हो रहा है।

कुंजने रसिकताके साथ, किन्तु धड़कते हुए हृदयसे, कहा—मैं अभागा भी क्या उसी ‘जरूरतसे ज्यादह’ में हूँ?

मायाने कहा—तुम अपनेको इतना ज्यादह न समझना—जरा नम्रताका रखना अच्छा है।

उस निर्जन स्थानके भीतर लैंपके आगे सिर झुकाए अपने काममें लगी हुई मायाकी एकाग्र मूर्ति देखते ही कुजके मनमें फिर मोहका सचार हो चला।

आज यदि अपने घरमें होता तो वह दौड़कर मायाके पैरोंके पास आ जाता।

किन्तु यह तो घर नहीं है। आज माया असहाय है, वह बिल्कुल ही कुजके हाथमें है। इस समय अपनेको सँभाले न रहना बड़ी नीचता और नामर्दीका काम होगा।

मायाने कहा—तुम अपनी किताबे और कपड़े यहाँ क्यों ले आये ?

कुजने कहा—उनको मैं अपनी जरूरतकी चीजोंमें ही समझता हूँ। ये 'जरूरतसे ज्यादह' वाली चीजोंमें नहीं हैं।

मायाने कहा—जानती हूँ। लेकिन उनको यहाँ क्यों लाये ?

कुजने कहा—यह बात ठीक है,—यहाँ कोई आवश्यक चीज शोभा नहीं पाती,—माया, इन पोथियों ओथियोंको तुम रास्तेमें उठाकर फेंक दो, मैं कुछ भी नहीं कहूँगा; पर कहीं इनके साथ मुझे भी दूर न कर देना !—

यह कहकर इसी बहाने जरा आगे सरककर, कुजने पोथियोंकी पुटलिया मायाके पैरोंके पास रख दी।

माया गभीर भावसे कसीदा काढते काढते सिर बिना उठाए ही बोली—कुज बाबू, यहाँ तुम्हारा रहना न होगा।

कुज अपने उसी दम पैदा हुए आग्रहके मुँहपर चोट खाकर व्याकुल हो उठा, उसका गला भर आया। उसने कहा—क्यों माया, तुम मुझे दूर क्यों रखना चाहती हो ? तुम्हारे लिये सब छोड़कर क्या मैं यही पाऊँगा ?

मायाने कहा—मैं अपने लिये तुमको सब कुछ न छोड़ने दूँगी।

कुज कह उठा—अब यह तुम्हारे हाथकी बात नहीं रही। चारों तरफसे सारा परिवार, सारा ससार, मुझसे अलग हो पड़ा है—केवल अकेली तुम्हीं हो माया ! माया—माया—

यह कहते कहते कुज लोट गया और विह्वल-भावसे भर जोर मायाके दोनों पैर पकड़कर उन्हें बार बार चूमने लगा।

माया जबर्दस्ती पैर छुड़ाकर उठ खड़ी हुई। बोली—कुज बाबू, तुमने क्या प्रतिज्ञा की थी—याद नहीं है ?

कुजने बड़ी दृढताके साथ अपनेको सँभालकर कहा—याद है। मैंने कसम खाई थी कि जो तुम्हारी इच्छा होगी वही होगा। मैं उस कसमको निबाहनेके लिए तैयार हूँ। कहो, क्या करना होगा ?

मायाने कहा—तुम अपने घरमे जाकर रहो।

कुजने कहा—क्या मै ही एक तुम्हरी अनिच्छाकी सामग्री हूँ माया ? और अगर यही है तो मुझे यहाँ तक अपने साथ घसीट क्यों लाई ? जो तुम्हारे भोगकी चीज नहीं है उसका शिकार करनेकी क्या जरूरत थी ! सच कहना, मैं क्या अपनी इच्छासे तुम्हारे पास बँधनेके लिए गया था, या तुमने ही इच्छा करके मुझे बंधनमे डाला है ? मुझको लेकर तुम इसी तरह खेल खेलोगी ? यह भी

क्या मुझे सहना पड़ेगा ? अच्छा, तो भी मैं अपनी बातको निबाहूँगा, जिस घरमें मैंने स्वय लात मारकर अपना स्थान नष्ट कर दिया है, उसीमें जाकर रहूँगा।

माया जमीनपर बैठकर फिर चुपचाप कसीदा काढने लगी।

कुंज कुछ देरतक मायाकी तरफ स्थिर दृष्टिसे ताकता रहा और फिर बोल उठा—निष्ठुर , माया, तुम निठुर हो ! मैं अत्यन्त अभागा हूँ कि तुमपर मुग्ध हो गया !

माया डोरा निकालनेमें एक एक 'भूल' करके उसे लैंपके पास ले जाकर बड़े यत्नके साथ खोलने लगी। कुंजका जी चाहा कि मायाके इस पत्थरके हृदयको अपनी कठिन मुट्ठीमें लेकर जोरसे मसल डालूँ ! इस नीरव निर्दयता और उपेक्षाको जोरसे धक्का देकर बाहुबलके द्वारा पस्त कर डालूँ !

कुंज कमरेसे-बाहर निकलकर फिर लौट आया, बोला—मैं न रहूँगा, तुम अकेली रहोगी तो तुम्हारी रक्षा कौन करेगा ? तुमको डर न लगेगा ?

मायाने कहा—इसके लिए तुम न डरो। बुआजीने तुम्हारे घरकी दासीको छुड़ा दिया है, वह आजसे मेरे यहाँ चली आई है। दर्वाजेपर ताला बद कर हम दोनों बिल्कुल बे-खटके रहेंगी।

कुंज जितना ही मायापर चिढता और खीझता जाता था उतना ही मायाकी तरफ उसके मनका खिंचाव और अधिक प्रबल होता जाता था। उस अटल मूर्तिको वज्र-बलसे छातीमें दबाकर दल-मल डालनेकी उसकी इच्छा होने लगी। उसी दारुण इच्छाके हाथसे छुटकारा पानेके लिए कुंज जल्दीसे घर छोड़कर चला गया।

रास्तेमें चलते चलते कुंजने प्रतिज्ञा की कि वह भी मायाकी उपेक्षाके बदले लापर्वाही दिखावेगा। जिस अवस्थामें मायाके लिए जगत्-भरमें कुंज ही एक मात्र अवलम्ब है उस अवस्थामें भी वह कुंजको, इस तरह, चुपचाप बे-खटके, सुदृढ सुस्पष्ट रूपसे, उपेक्षा दिखलाती है—स्वीकार नहीं करती ! भला, कभी किसी पुरुषका इतना बड़ा अपमान भी हुआ होगा ?

कुंजका घमंड खड-खड होकर भी उनचास मरुद्गण * की तरह मरा नहीं, केवल हृदयको पीड़ित और दलित करने लगा। कुंजने कहा—क्या मैं इतना तुच्छ हूँ ? मेरे साथ ऐसा बर्ताव करनेकी हिम्मत उसे कैसे हुई ? इस समय उसका मेरे सिवा और कौन सहायक है ?

---

* दैत्योंकी माता दितिने इन्द्रकी हत्याकी कामनासे गर्भ-धारण किया था। इन्द्र चालाकीसे दितिके पास रहकर उसकी सेवा करने लगे। एक दिन इन्द्रको मौका मिला। उन्होंने योग बलसे गर्भमें प्रवेशकर बालकके सात टुकड़े किये, फिर भी उसके न मरनेपर एक एकके सात सात टुकड़े और किये, पर वे भी दितिके पुण्य-प्रतापसे नहीं मरे। वे ही उनचास मरुद्गण हो गये। — भागवत

सोचते सोचते याद आ गया—विहारी है! एकाएक दम भरके लिए उसकी छातीका सारा खून जैसे जम गया। मायाको विहारीका ही सहारा है; वह उसीको चाहती है। मैं तो केवल उपलक्ष्यमात्र हूँ,—लक्ष्य विहारीपर ही है। मैं उसकी सीढ़ी हूँ, उसके पैर रखनेकी, पग-पगपर लात मारनेकी, जगह हूँ। इसी साहससे वह मेरा इतना निरादर करती है! सोचते सोचते कुजको सन्देह हुआ कि विहारीके साथ मायाका पत्र-व्यवहार चल रहा है, और मायाको उसी तरफसे आश्रय मिला है।

तब कुज, विहारीके घरकी तरफ चला। जब विहारीके घरपर जाकर कुजने दर्वाजा खटखटाया तब रात बहुत अधिक नहीं थी। कई धक्के देनेपर कहारने उठकर दर्वाजा खोला और कहा—बाबूजी घरमें नहीं हैं।

कुज चौंक उठा। उसने सोचा, मैं बेवकूफकी तरह इधर-उधर घूमता फिरता हूँ, इस समय विहारी अवश्य मायाके पास गया होगा। इसी कारण मायाने इतनी रातको, निर्दयताके साथ, मेरा ऐसा अपमान किया है और मैं भी, पीटकर निकाले गये गधेकी तरह, भागकर चला आया हूँ!

कुजने उसी अपने पुराने परिचित कहारसे पूछा—भज्जू, बाबू घरसे कब गये हैं?

भज्जूने कहा—उनको यहाँसे गये चार-पाँच दिन हो गये।—वे कहीं पछाँहकी तरफ घूमने गये हैं।

यह सुनकर कुजकी जानमें जान आई। उसने सोचा—अब जरा लेटकर आराममे सो रहूँ, सारी रात घूम-फिरकर काटी न जायगी।

कुज ऊपर चढ़कर विहारीके कमरेमें कोचके ऊपर आँखें बन्द कर लेट रहा। लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई।

कुजने जिम दिन रातको विहारीके यहाँ आकर उपद्रव किया था उसके दूसरे ही दिन, विना यह निश्चय किये कि कहाँ जाना होगा, विहारी पश्चिमकी तरफ चल दिया। विहारीने मोचा—यहाँ रहनेसे, पहलेके मित्रके साथ, किसी दिन, ऐमा झगड़ा हो जायगा कि वह वास्तवमें बड़ा ही वीभत्स हो उठेगा, और बादका जीवन सन्तापका कारण बन जायगा।

दूसरे दिन जब कुज उठा तब ग्यारह बज गये थे। उठते ही सामनेकी तिपाईपर उसकी नजर पड़ी। देखा, मायाके हाथकी लिखी हुई विहारीके नामकी एक चिट्ठी 'पेपर-वेट' से दबाई रक्खी है। कुजने जल्दीसे उसे उठाकर देखा। चिट्ठी बन्द थी, किसीने खोली नहीं थी। प्रवासी विहारीके लिए वह चिट्ठी अपेक्षा कर रही है। कुजने काँपते हुए हाथसे चिट्ठी खोलकर पढ़ना शुरू किया। यह चिट्ठी मायाने अपने गाँवसे विहारीको लिखी थी और अभीतक इसीका उत्तर नहीं पाया था

चिट्ठीका हर-एक अक्षर कुंजको जैसे डसने लगा। बिहारी लड़कपनसे बराबर कुंजकी आड़में ही बड़ा हुआ था। जगतमें प्रेम और स्नेहके सम्बन्धमें कुलदेवताका सूखा निर्माल्य ही उसे नसीब होता था। आज कुंज स्वयं प्रार्थी हो रहा है और बिहारी विमुख है तो भी, आज, मायाने कुंजको ढकेलकर उसी अरसिक बिहारीको पसन्द किया है। कुंजको भी मायाकी दो-एक चिट्ठी मिली हैं, मगर बिहारीकी इस चिट्ठीके आगे वे बिल्कुल बनावटी, बेवकूफको बहलानेकी कोरी कपट-लीलायें, हैं।

जब कुंज मायाको उसके गॉवसे लेकर आ रहा था तब माया उसे डाकघर जाकर नया पता बता आनेके वास्ते क्यों व्याकुल हो रही थी, सो अब समझमें आया। माया अपना सब तन मन अर्पण करके बिहारीके जवाबकी राह देख रही है।

पहलेकी प्रथाके अनुसार, मालिकके न रहनेपर भी, मज्जू चाय बना लाया और जल-पानके लिए बाजारसे मिठाई ले आया। कुंजने चाय पी और भोजन किया, पर आज वह नहाना भूल गया। खूब तपी हुई बालूके ऊपर जैसे पथिक तेजीसे पैर उठा उठाकर चलता है वैसे ही कुंज भी क्षण-क्षणमें मायाकी जलानेवाली चिट्ठीपर नजर दौड़ाने लगा।

कुंज प्रण करने लगा 'अब किसी तरह मायासे मुलाकात नहीं करूँगा' किन्तु उसने सोचा कि दो-एक दिन चिट्ठीका जवाब न मिलनेपर माया बिहारीके घरपर आकर उपस्थित होगी और उस समय बिहारीके यहाँ न होनेका हाल मालूम हो जानेसे उसे एक प्रकारकी सान्त्वना मिलेगी। यह सान्त्वना कुंजको असह्य जान पड़ी।

उसी समय चिट्ठीको जेबमें रखकर सन्ध्यासे कुछ पहले ही कुंज मायावाले घरमें आ पहुँचा।

कुंजका उतरा हुआ मुरझाया चेहरा देखकर मायाको दया आ गई। उसने समझा कि कुंज सारी रात सड़कोंपर मारा मारा फिरा किया है। कुंजसे पूछा—कल रातको घरपर नहीं गये?

कुंजने कहा—ना।

माया व्यस्त होकर कह उठी—और आज अभीतक तुमने कुछ खाया-पिया नहीं?—

यह कहकर सेवापरायणा माया उसी समय भोजनका प्रबन्ध करनेके लिए तैयार हुई।

कुंजने कहा—रहने दो, रहने दो, मैं खा आया हूँ।

मायाने कहा—कहाँ?

कुंजने कहा—बिहारीके घरपर।

दम-भरके लिए मायाका चेहरा पीला पड़ गया। घड़ी-भर चुप रहकर उसने अपनेको सँभाल लिया, और फिर पूछा—बिहारी बाबू अच्छे तो हैं?

कुंजने कहा—अच्छे ही हैं। वे तो पश्चिमकी तरफ चले गये।

कुंजने यह बात इस तरह कही जैसे आज ही विहारी बाहर गया है।

मायाका चेहरा फिर एक बार उतर गया। उसने फिर अपनेको सँभालकर कहा—ऐसे चचल आदमी तो देखे ही नहीं। जान पड़ता है, हम लोगोंकी सब खबर उन्हें लग गई है। क्या वे बहुत नाराज हो गये हैं?

कुजने कहा—मालूम तो पड़ता है। नहीं तो इस असह्य गर्मीके दिनोंमें कोई शौकिया परदेश घूमने जाता है?

मायाने कहा—उन्होंने कुछ मेरी भी बात की थी क्या?

कुजने कहा—बात करनेको और क्या है? लो विहारीकी चिट्ठी।—

यह कहकर कुजने वह चिट्ठी मायाके हाथमें दे दी और आप तीव्र दृष्टिसे उसके मुखका भाव निरखने लगा।

मायाने झटपट चिट्ठी देखी—चिट्ठी खुली हुई है, लिफाफेपर उसके हाथके अक्षरोंमें विहारीका नाम लिखा हुआ है। लिफाफेसे निकालकर देखा,—वह चिट्ठी उसकी लिखी हुई है। उलट-पुलटकर अच्छी तरह देखा, उसमें कहीं एक अक्षर भी विहारीके हाथका न देख पड़ा।

जरा देर चुप रहकर मायाने पूछा—चिट्ठी तुमने पढ़ी है?

मायाके मुखका भाव देखकर कुजको भय मालूम पड़ने लगा। वह जल्दीसे झूठ कह उठा—नहीं।

मायाने उस चिट्ठीके टुकड़े टुकड़े कर डाले फिर, उन टुकड़ोंको भी. रत्ती रत्ती नोचकर खिड़कीसे बाहर फेंक दिया।

कुजने कहा—मैं घर जाता हूँ।

मायाने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया।

कुजने फिर कहा—तुम जैसी इच्छा प्रकट करोगी वैसा ही करूँगा। सात दिन तक मैं अपने घरमें रहूँगा। कालेज जानेके समय नित्य एक बार आकर दासीके द्वारा यहाँका सब बदोबस्त कर जाया करूँगा। तुमसे मिलकर तुम्हें दिक न करूँगा।

कुजकी कोई बात मायाको सुन पड़ी या नहीं सो तो नहीं कहा जा सकता लेकिन उसने कुछ उत्तर नहीं दिया वह खुले दर्वाजेसे अन्धकारमय आकाशकी ओर ताकती रही।

छाती पीटनेका शब्द सुनकर घबड़ाई हुई दासी ऊपर चढ आई, बोली—यह क्या करती हो ?

मायाने गरजकर कहा—तू जा यहाँसे। दासी दबकर नीचे चली गई। मायाने उठकर धमाकेके साथ जोरसे किवाड़ बंद कर लिये और उसके बाद वह जमीनपर लोटकर बाणसे बिंधे हुए जानवरकी तरह आर्त्त-स्वरमे रोने लगी। इस तरह अपनेको थकाकर और घायल करके मूर्च्छित-सी होकर, सारी रात उसी खुले हुए दर्वाजेके पास माया पड़ी रही।

सवेरे सूर्यका प्रकाश कमरेमे आते ही उसे एकाएक यह सदेह हुआ कि अगर बिहारी बाहर न गया हो, और उसे धोखा देनेके लिए कुजने झूठ कहा हो तो !

उसी समय दासीको बुलाकर मायाने कहा—तू अभी जा—बिहारी बाबूके यहाँ जाकर उनके यहाँका हाल ले आ।

घटे-भरके बाद दासीने आकर कहा—बिहारी बाबूका घर बिल्कुल बद पड़ा है। दर्वाजेपर धक्का देनेपर महाराजने भीतरसे कहा कि बाबू घरमें नहीं हैं। पश्चिमकी तरफ बाहर घूमने गये हैं।

अब मायाके मनमें कोई सन्देहका कारण नहीं रह गया।

❁ ❁ ❁

इकतालीसवाँ परिच्छेद

रातको ही कुज उठकर चला गया, यह सुनकर लक्ष्मी अपनी बहूपर बहुत ही नाराज हुई। उसने समझा कि करुणाकी बक-झकमे ऊबकर कुज चला गया। लक्ष्मीने करुणासे पूछा—कल रातको कुज क्यों चला गया ?

करुणाने सिर झुकाकर कहा—मैं नहीं जानती।

लक्ष्मीने सोचा—यह भी अभिमानकी बात है। उसने और भी चिढकर कहा—तुम नहीं जानतीं तो और कौन जानेगा ? उसको कुछ कहा-सुना था ?

करुणाने केवल कह दिया—ना।

लक्ष्मीको इस 'ना' पर विश्वास नहीं हुआ। ऐसा भी कहीं हो सकता है ?

लक्ष्मीने पूछा—कल कुज किस समय गया ?

करुणाने और भी सकुचकर कहा—यह भी मैं नहीं जानती।

लक्ष्मीका क्रोध प्रचण्ड हो उठा। उसने डपटकर कहा—तुम कुछ भी नहीं जानतीं ! बिल्कुल नन्हीं नादान हो ! यह सब तुम्हारी चालाकी है !

लक्ष्मीने तीव्र स्वरसे यह भी घोषणा कर दी कि करुणाके ही आचरण और स्वभावके दोषसे कुज घर छोड़ गया है। करुणाने सिर झुकाकर यह अपवाद

और झिड़की सुन ली। वह चुपचाप अपने कमरेमें जाकर रोने लगी और अपने मनमे सोचने लगी—मै नहीं जानती कि एक दिन मेरे स्वामीने मुझे क्यों इतना चाहा था, और यह भी नहीं कह सकती कि किस उपायसे स्वामीका वह प्रेम मुझको फिर मिलेगा।

जो आदमी अपनेको चाहता है उसे किस तरह प्रसन्न करना चाहिए,—यह बात हृदय आप बता देता है; किन्तु जो चाहता नहीं उसका मन और मान किस तरह रखना होता है, इसे करुणा क्या जाने? जो आदमी औरको चाहता है उससे आदर-प्यार पानेकी चेष्टा करना अत्यन्त लज्जाकी बात है, ऐसी चेष्टा करुणा कैसे कर सकेगी?

सन्ध्याके समय पुरोहितजी और उनकी बहिन, जो जादू-टोना-मारण-मोहन वशीकरण-उच्चाटनमें सिद्धहस्त समझी जाती थी, आकर उपस्थित हुई। लक्ष्मीने आज इनको लड़केका मन फिरानेके लिए ग्रह-शान्ति करनेके वास्ते बुला भेजा था। लक्ष्मीने करुणाकी जन्मपत्री और उसका हाथ देखनेके लिए पुरोहितजीसे अनुरोध किया और साथ ही करुणाको बुलाकर हाजिर कर दिया। 'दूसरेके निकट अपने दुर्भाग्यकी आलोचना होगी' इस सकोचसे कुंठित हुई करुणाने अपना हाथ बड़ी कठिनाईसे दिखानेके लिए निकाला। इसी समय लक्ष्मीको अपने कमरेके पासवाले अँधेरे बरामदेमें किसीके पैरोंकी दबी हुई आहट मालूम हुई। उसको मालूम पड़ा जैसे कोई छिपकर जानेकी चेष्टा कर रहा है।

लक्ष्मीने पुकारा—कौन है?

पहले कुछ जवाब नहीं मिला। उसके बाद फिर उसने पुकारा—इधर कौन जा रहा है? तब चुपचाप कुंजने कमरेमें प्रवेश किया।

करुणा खुश क्या होती—कुंजकी लज्जा देखकर उसका हृदय जैसे लज्जासे भर गया। अब कुंजको अपने घरमें भी चोरकी तरह आना पड़ता है! उस समय पुरोहितजी और उनकी बहिन बैठी थी, इससे करुणाको और भी लज्जा मालूम पड़ी। सारी पृथ्वीके निकट अपने स्वामीकी लज्जाका अनुभव करके करुणा अपना दुःख भूल गई।

इतनेमें लक्ष्मीने कहा—बहू, मिसरानीजीसे कह दो कि कुंजके खानेके लिए थाली परोस लावें।

करुणाने कहा—मा, मै ही लिये आती हूँ।

पतिव्रता करुणा घरके नौकर-चाकरोंकी नजरसे भी कुंजको छिपा रखना चाहती है।

इधर घरमे पुरोहित और उनकी बहनको देखकर कुंज मन-ही-मन बहुत ही चिढ़ उठा। उसकी माता और स्त्री, दोनों दैवकी सहायतासे, उसे वश करनेके

लिए इन अशिक्षित मूढ़ोंके साथ इस तरह खुल्लमखुल्ला निर्लज्ज भावसे षड्यन्त्र रच रही हैं—यह कुंजको असह्य हो गया। इसके ऊपर जब पुरोहितजीकी बहिनने अत्यन्त अधिक मीठे स्वरमें स्नेह-रस भरकर पूछा 'अच्छे तो हो भैया?' तब कुंजसे वहाँ बैठा न गया। कुशल प्रश्नका कोई उत्तर न देकर उसने कहा—मा, मैं जरा ऊपर जाता हूँ।

माने सोचा—कुंज शायद ऊपर एकान्त कमरेमें बहूसे कुछ बातचीत करना चाहता है। उसने अत्यन्त प्रसन्न हो जल्दीसे रसोईमें जाकर करुणासे कहा—जाओ जाओ, जल्द जरा ऊपर जाओ। कुंजको शायद कुछ जरूरत है।

करुणा धड़कते हुए हृदयसे संकोचके साथ पैर रखती हुई ऊपर गई। सासकी बातोंसे वह समझी थी कि कुंजने उसे बुलाया है। किन्तु कमरेके भीतर उससे किसी तरह एकाएक घुसा नहीं गया। करुणा अन्धकारमें दर्वाजेकी आड़से पहले कुंजकी चेष्टा देखने लगी। कुंज उस समय अत्यन्त सूने भावसे नीचेके फर्शपर तकियेके सहारे लेटा हुआ छतकी धन्नियाँ देख रहा था। वही कुंज है, वही सब है, मगर कैसा परिवर्तन हो गया है! इस छोटेसे सोनेके कमरेको एक दिन कुंजने स्वर्ग बना डाला था। कुंज, तुम आज क्यों उसी आनन्दको याद कर इस पवित्र स्थानका अपमान कर रहे हो? अगर इतना कष्ट है, इतनी उदासीनता है, इतनी चञ्चलता है, तो उस पलगपर पैर मत रखना। कुंज, यहाँ आकर भी अगर तुमको वे परिपूर्ण पुरानी रातें और प्रेमकी सरल बातें न याद आवें—वर्षाके रंगीन दिन, दक्षिण-पवन-विकम्पित वसन्तका विह्वल सन्ध्या काल भूला ही रहे,—तो इस मकानमें और कई कमरे हैं, उनमेंसे किसी एकमें चले जाओ, पर इस छोटेसे घरमें अब घड़ी-भर भी न ठहरो।

करुणा, अन्धकारमें खड़े होकर, जितना ही कुंजको निरखने लगी उतना ही उसे विश्वास होने लगा कि वह अभी मायाके पाससे आया है, उसके अंगमें उसी मायाके अंग लगे हैं, उसकी आँखोंमें वही मायाकी मूर्ति है, उसके कानोंमें उसी मायाके वचनोंकी झनक भरी हुई है, उसके मनमें उसी मायासे मिलनेकी लालसा छिपी हुई है। इस कुंजको करुणा कैसे अपनी पवित्र भक्तिकी पूजा अर्पण कर सकेगी? वह कैसे अनन्य मनसे कहेगी कि 'आओ, मेरे अनन्यपरायण हृदयके भीतर आओ, मेरे अटल-निष्ठ सती-प्रेमके शुभ्र शतदलपर अपने दोनों श्रीचरण रक्खो!'

मौसीका उपदेश, पुराणोंकी बातें, शास्त्रकी शिक्षा,—कुछ भी करुणासे न माना गया। इस दाम्पत्य-स्वर्गसे भ्रष्ट कुंजको वह अपने मनमें देवता नहीं समझ सकी। उसने आज, मायाके कलंक-सागरमें, अपने हृदय-देवताका विसर्जन कर दिया। उस प्रेमपूर्ण रात्रिके अन्धकारमें, उसके कानोंके भीतर, हृदयके भीतर, मस्तकके भीतर, नस-नसमें, चारों तरफसे सारे संसारमें, ऊपरके नक्षत्रोंमें, दीवालसे

घिरी हुई एकान्त छतमें, कमरेके भीतर पड़े हुए पलगके तले, एक भयानक गभीर व्याकुलताके साथ विसर्जनका बाजा बजने लगा।

मायाका कुज करुणाके निकट जैसे पर-पुरुष है,—पर-पुरुषसे भी अधिक है। वह किसी तरह कमरेके भीतर न जा सकी।

इतनेमें कुजकी उचाट दृष्टि घड़ियोंसे हटकर दीवालपर आई। उसकी नजरके साथ ही करुणाने भी देखा कि सामने दीवालपर कुजकी तसवीरके पास ही करुणाका भी चित्र लटका हुआ है। इच्छा हुई कि उसको दौड़कर आँचलसे छिपा लूँ—खींचकर बाहर फेक दूँ। वह विकल होकर अपनेको धिक्कार देने लगी कि मैंने अबतक पहले ही इस अपने चित्रको अलग क्यों न कर लिया। करुणाको जान पड़ा कि कुज देख देखकर अपने मनमें हँस रहा है और उसके हृदय-सिंहासनपर विराजमान मायाकी मूर्त्ति भी, अपनी जुड़ी हुई भौंहोंके भीतर, उसके फोटोकी तरफ विद्रूप-पूर्ण कटाक्षपात कर रही है।

अन्तको कुजकी उदास उचाट दृष्टि दीवालसे उतरकर फर्शपर आई। करुणा आजकल अपनी मूर्खता मिटानेके लिए, सन्ध्याके समय, काम और सासकी सेवासे जो समय बचता है उसमें, रात-गए तक, एकातमें पढा करती है। उसके पढनेकी किताबें और कई मासिकपत्रोंकी फाइलें एक तरफ रक्खी हुई थीं। एकाएक कुजने अलस भावसे उसमेंसे एक किताब खींच ली और उसे वह इधर-उधर उलट-पुलट कर देखने लगा। करुणाका जी चाहा कि चिल्लाती हुई दौड़ जाऊँ और उस पुस्तकको झट-पट छीन लूँ। अन्तमें जब उसने सोचा कि मेरे कच्चे हाथके भद्दे अक्षरोंपर कुजकी हृदय-हीन विद्रूप-दृष्टि अवश्य पड़ेगी तब तो उससे वहाँ दमभर भी न ठहरा गया। वह जल्दीसे नीचे उतर गई, पैरोंका शब्द छिपानेकी चेष्टा भी न कर सकी।

कुजका भोजन परोसा हुआ रक्खा था। लक्ष्मी समझती थी कि कुंज अपनी स्त्रीके साथ एकान्तमे बातचीत कर रहा होगा। इसी लिए उसने वहाँ भोजन ले जाकर बाधा डालना मुनासिब न समझा। करुणाके नीचे आते ही लक्ष्मीने कुजको खबर दी कि भोजन परोसा हुआ रक्खा है। कुज भोजन करने आया। तब तक करुणाने जल्दीसे कमरेमें जाकर अपनी तसवीर उतार ली और उसे कोनेमें सन्दूकके नीचे फेंक दी। उसके बाद वह अपने पढनेकी सब किताबें भी वहाँसे उठा ले गई।

खानेके बाद कुज फिर अपने सोनेके कमरेमें आया और बैठा। लक्ष्मीने इधर-उधर देखा, आस-पास कहीं बहूका पता नहीं है। अन्तको रसोईकी दालानमें जाकर देखा, करुणा उसके लिए दूध औंटा रही है। वास्तवमें इसकी कोई जरूरत न थी क्योंकि जो दासी नित्य लक्ष्मीके लिए दूध औंटाती थी वह पास ही

थी और करुणाके इस अकारण उत्साहको नापसन्द कर रही थी। विशुद्ध जल मिलाकर दूधका जितना अंश वह अपने काममें लाती थी आज उसके पानेकी संभावना न थी, इससे वह भीतर-भीतर व्याकुल भी हो रही थी।

लक्ष्मीने कहा—यह क्या बहू, यहाँ क्या कर रही हो? जाओ, ऊपर जाओ!

करुणा ऊपर जाकर अपनी सासके कमरेमें बैठ रही। लक्ष्मी बहूका यह बर्ताव देखकर क्रुद्ध गई। उसने सोचा—कुंज किसी तरह उस मायाविनीका मायां-जाल छुड़ाकर, घड़ीभरके लिए, घर आया भी तो बहू इस तरह बिगाड़ बकवाद कर दूर दूर रहकर उससे फिर घर छुड़ानेकी चेष्टामें लगी हुई है। करुणाके ही दोषसे कुंज मायाके फंदेमें जाकर फँसा। मर्द लोगोंका तो स्वभाव ही है कि वे सर्वदा विपथमें जानेके लिए प्रस्तुत रहते हैं, स्त्रियोंको चाहिए कि छल-बल कौशलसे—जिस तरह हो—उन्हें सीधी राहपर रक्खें।

लक्ष्मीने डपटकर कहा—बहू, तुम्हारा यह कैसा बर्ताव है? तुम्हारे भाग्यसे तुम्हारा स्वामी अगर घर आया भी तो तुम इस तरह मुँह लटकाए कोने कोनेमें क्यों छिपती फिरती हो?

करुणा अपनेको ही अपराधी जानकर अंकुश खाये हुए हाथीकी तरह ऊपर चली गई और, मनको दुविधामें पड़नेका कुछ भी अवकाश न देकर, एक साँसमें कमरेके भीतर जा खड़ी हुई। दस बज गये थे। कुंज ठीक उसी समय बिछौनेके सामने खड़ा हुआ, चिन्तित भावसे, व्यर्थ ही मशहरी झाड़ रहा था। मायाके ऊपर इस समय कुंजका भाव बदला हुआ था। वह अपने मनमें कह रहा था—मायाने क्या मुझको अपना ऐसा बे-दामका गुलाम ठहरा रक्खा है कि मुझे करुणाके पास भेजनेमें उसे कुछ भी आशंका नहीं हुई? आजसे अगर मैं करुणाके प्रति जो मेरा कर्तव्य है उसे पालन करूँ तो फिर माया किसके सहारे इस पृथ्वीपर खड़ी होगी? मैं क्या इतना अपदार्थ हूँ कि कर्तव्य-पालनकी इच्छा करना मेरे लिए एकदम असंभव है? मायाके निकट अन्तको क्या मेरा यही परिचय हुआ! श्रद्धा भी खोई और प्रेम भी न पाया। मुझे अपमानके साथ घरसे निकालनेमें उसे कुछ भी संकोच न हुआ।

कुंज मशहरीके सामने खड़ा हुआ दृढ चित्तसे प्रतिज्ञा कर रहा था कि मायाके इस साहसका वह प्रतिवाद करेगा। जिस तरह हो वह करुणाकी तरफ अपने हृदयको अनुकूल करके मायाको उसके बर्तावका बदला देनेकी चेष्टा करेगा।

करुणा जैसे ही कमरेमें घुसी वैसे ही कुंजका अन्यमनस्क होकर मशहरी झाड़ना बंद हो गया। पर अब क्या कहकर वह करुणाके साथ बातचीत शुरू करे—यही एक विषम समस्या उसके सामने खड़ी हो गई।

कुंजने बड़ी चेष्टासे रूखी हँसी हँसकर एकाएक जो बात मुँहमें आई उसे कह

ही डाला। कहा—देखता हूँ, तुमने भी मेरी तरह पढनेमें मन लगाया है! अभी मैंने यहाँ जो सब किताबें और पत्र देखे थे, वे कहाँ चले गये?

बात केवल बेतुकी या बेगार टालनेके ढँगकी ही नहीं थी; उससे कुजने करुणाके चित्तपर बड़ी चोट पहुँचाई। मूर्ख करुणा सुशिक्षिता बननेका प्रयत्न कर रही थी—यह उसकी बड़ी गुप्त बात थी। करुणाने निश्चय कर रक्खा था कि यह बात बहुत ही हँसने लायक है। उसके इस लिखने-पढनेके सम्बन्धमें उसे अगर रत्तीभर भी हास्य—विद्रूप—किसीका असह्य है तो कुजका। उसी कुजने आज जब, इतने दिनोंके बाद, पहले-ही-ऐसी हँसने और बनानेकी बात उठाई, तब निष्ठुर बेतकी चोट खाये हुए बच्चेके कोमल शरीरकी तरह करुणाका हृदय संकुचित और व्यथित होने लगा। वह कुछ जवाब न देकर, मुँह फिराकर, तिपाईका किनारा पकड़े खड़ी रही।

कुजने भी मुँहसे निकलते ही समझ लिया था कि बात ठीक संगत या फबती हुई नहीं है—ठीक समयके माफिक भी नहीं है। किन्तु वर्तमान अवस्थामें कौन-सी बात समयानुकूल होगी—यह वह सोच ही नहीं पाया। बीचमें इतने बड़े विप्लवके बाद एक तो पहलेकी ऐसी कोई सीधी सादी सहज बात ठीक नहीं जँचती और दूसरे हृदय भी एकदम गूँगा हो रहा है, वह कोई नई बात कहनेके लिए तैयार नहीं है। कुजने सोचा—बिछौनेपर पड़ रहनेपर शायद उसके छोटे घेरेके भीतर बातें करना सहज हो जाय।

यही सोचकर कुंज मशहरीके बाहरी हिस्सेको फिर साफ करने लगा। नया पात्र जैसे रंग-भूमिमें प्रवेश करके पहले उत्कण्ठाके साथ नेपथ्यके द्वारपर अपने पार्टको अच्छी तरह बार बार मनमें दुहराता-तिहराता है, वैसे ही कुज भी मशहरीके सामने खड़े होकर अपने वक्तव्य और कर्तव्यकी आलोचना करने लगा। इसी समय एक बहुत हल्का-सा शब्द सुनकर कुजने घूमकर देखा—करुणा कमरेके भीतर है।

बयालीसवाँ परिच्छेद

छोड़ सकता। ऐसी लक्ष्मी स्त्रीको छोड़कर वैसी मायाविनी डाइनके फेरमें कितने दिन तक कोई आदमी रह सकता है!

लक्ष्मी जल्दीसे कह उठी—अच्छा बेटा, मैं उस घरको ठीक कराये देती हूँ।

इसके बाद ही उसने ऑचलसे ताली खोलकर घर खुलवा दिया और उसे झाड़ने-झड़नेकी धूम मचा दी—बहू, बहू, बहू कहाँ गई? बहुत खोज करनेपर मकानके एक कोनेमें सकुची हुई बहूका पता लगा। आज्ञा होने लगी—जाओ बहू, एक साफ जाजिम निकाल लाओ, इस घरमें टेबिल नहीं है, यहाँ एक टेबिल लगवा देना होगा, इस दियेसे यहाँका काम नहीं चलेगा, ऊपरसे लैंप भेज दो—इत्यादि।

इस प्रकार सास बहू दोनोंने मिलकर, अपने घरके राजाधिराजके लिए, गोरीके घरमें राज्यासन तैयार कर दिया। कुंज इन सेवा करनेवालियोंकी तरफ कुछ भी ध्यान न देकर, गभीर भावसे अपनी किताबें और जरूरी सामान लेकर, नये घरमें जा बैठा और समयका रत्ती-भर भी अपव्यय न करके उसी घड़ी पढ़नेमें मग्न हो गया।

शामको भोजन करनेके बाद कुंज फिर पढ़ने बैठ गया। कोई यह न समझ सका कि वह अपने पहलेके कमरेमें सोवेगा या नीचे सोवेगा। लक्ष्मी करुणाको बड़े यत्नसे कठ-पुतलीकी तरह सँवार सिंगारकर बोली—जाओ तो बहू, कुंजसे पूछ आओ, उसका बिछौना क्या ऊपर बिछेगा?

इस प्रस्तावका समर्थन करनेके लिए करुणा अग्रसर न हो सकी, उसे जैसे किसीने वहीं गाड़ दिया। करुणा चुपचाप सिर झुकाए खड़ी रही। यह देखकर जब लक्ष्मी क्रोधमें आकर बहूकी भर्त्सना करने लगी तब वह लाचार होकर बड़े कष्टसे धीरे धीरे दर्वाजेके पास गई। किन्तु फिर रुक रही, उससे आगे न बढा गया। लक्ष्मी बरामदेके कोनेपर खड़ी हुई बहूका हाल देख रही थी। उसने बड़े क्रोधसे भीतर जानेका जब इशारा किया तब करुणा मुर्दा-सी होकर भीतर घुस पड़ी। कुंजने पीछे पैरोंकी आहट पाकर सिर उठाकर भी नहीं देखा, पुस्तक देखते-ही-देखते कह दिया—अभी मुझे देर है—कल सवेरे उठकर भी पढ़ना पड़ेगा—मैं यहीं सोऊँगा।

कैसी लज्जाकी बात है! करुणा क्या कुंजसे ऊपर चलकर सोनेके लिए अनुरोध करने आई थी!

कमरेसे फिरकर बाहर निकलते ही लक्ष्मीने रूखे और तीव्र स्वरमें पूछा—क्यों, हुआ क्या?

करुणाने अस्फुट शब्दोंमें कहा—वे अभी पढ़ रहे हैं, नीचे ही सोवेंगे।

इतना कहकर वह अपने सोनेके कमरेमें—अपमानित शयन-गृहमें—आकर

पड़ रही। कहीं भी उसे सुख नहीं है। सब जगहकी पृथ्वी उसके लिए दोपहरकी तपी हुई रेतीकी तरह जलानेवाली हो रही है।

थोड़ी रात और बीतनेपर बंद दर्वाजेमे किसीने जोरसे धक्का दिया। सुनाई पड़ा—बहू, दर्वाजा खोल।

करुणाने जल्दीसे उठकर किवाड़ खोल दिये। लक्ष्मी नीचेसे ऊपर आनेमें थककर हाँफ रही थी। साँस लेनेसे उसे बड़ा कष्ट हो रहा था। घरमे घुसते ही वह बिछौनेपर बैठ गई और बोलनेकी शक्ति होते ही, भर्राई हुई आवाजमे बोली—बहू, तुम्हारे कैसे ढँग हैं? ऊपर आकर दर्वाजा बंद कर पड़ रही हो? तुम नहीं समझतीं कि यह समय बिगड़ने और लड़ने झगड़नेका नहीं है! इतना दुःख पड़नेपर भी तुमको समझ नहीं आई! जाओ, नीचे जाओ!

करुणाने बहुत धीरेसे कहा—उन्होंने अकेले रहनेके लिए कहा है।

लक्ष्मीने कहा—उसने कहा और तुमने मान लिया? क्रोधमे आदमी न जाने क्या क्या कह डालता है, उसे सुनकर कहीं यों बिगड़ बैठना होता है? इतना अभिमान रखनेसे काम नहीं चल सकता। जाओ, जल्दी जाओ!

दुःखके दिनोंमें सासको बहूसे कुछ भी लज्जा नहीं रह गई। लक्ष्मीने दृढ निश्चय कर लिया है कि मेरे हाथमें जितने उपाय हैं वे सब करके कुंजको किसी तरह घर रखना होगा।

जोशके साथ बात करते करते लक्ष्मीकी साँस फिर फूल आई। उसे कुछ रोककर वह उठी। करुणा भी कुछ न कहकर उसको सहारा देकर नीचे चली। करुणाने लक्ष्मीको उसके कमरेमें ले जाकर बिछौनेपर बिठा दिया और आप पीठके नीचे ठीक कर इधर-उधर तकिये रखने लगी। लक्ष्मीने कहा—रहने दो बहू रहने दो, दासीको भेज दो। तुम जाओ, देर न करो।

अबकी करुणाने अपने जीमें कुछ भी दुविधा नहीं की। वह सासके कमरेसे निकलकर सीधी कुंजके घरमे पहुँच गई। कुंजके सामने टेबिलपर खुली हुई किताब पड़ी है और वह टेबिलपर दोनों पैर फैलाए कुर्सीके पिछले हिस्सेपर सिर रक्खे हुए बिलकुल एकाग्र हो न-जाने क्या सोच रहा है। पीछे पैरकी आहट सुनकर वह चौंक पड़ा और फिरकर देखने लगा। उसे एकाएक ऐसा भ्रम-सा हो गया कि मैं जिसके ध्यानमें डूबा हुआ था, शायद, वही हृदय-देवता मुझे वरदान देनेके लिए आ गई है। किन्तु करुणाको देखकर कुंज जैसे बुझ गया। पैर उतारकर उसने खुली हुई किताब हाथमें ले ली।

कुंजको मन-ही-मन आज बड़ा आश्चर्य हुआ। आजकल तो करुणा इस तरह बिना सकोचके कभी उसके सामने नहीं आती, दैव-संयोगसे अगर सामना हो भी जाता है तो वह उसी समय दबाकर चली जाती है। आज इतनी रातको, इतने साजसे, उसे घरमें घुस आते देखकर कुंजके विस्मयकी सीमा न रही। कुंजने

पुस्तकसे दृष्टि हटाए बिना ही समझ लिया कि इस समय करुणाके चले जानेके लक्षण नहीं हैं। करुणा कुंजके आगे स्थिर भावसे आकर खड़ी हो गई। अब कुंजसे पढ़नेका ढोंग नहीं रचा गया, उसने आँख उठाकर करुणाकी तरफ देखा।

करुणाने सुस्पष्ट स्वरमें कहा—माकी साँस बहुत फूल रही है। तुम जरा चलकर उनको देख लो तो अच्छा हो।

कुंजने कहा—वे कहाँ हैं?

करुणाने कहा—अपने सोनेके कमरेमे हैं, उनसे सोया नहीं जाता।

कुंजने कहा—तो चलो, उनको देख आवें।

बहुत दिनोंके बाद करुणाके साथ इतनी बातचीत हो जानेसे कुंजको अपने मनका बोझा कुछ हल्का जान पड़ा। नीरवता, दुर्गकी दुर्भेद्य दीवालकी तरह, दोनोंके बीचमें अपनी काली छाया फैलाए हुए खड़ी थी, कुंजके पास उसके तोड़नेका कोई अस्त्र नहीं था—इसी बीचमें मानो करुणाने अपने हाथसे उस दुर्गकी छोटी सी खिड़की खोल दी।

लक्ष्मीके दर्वाजेके बाहर करुणा खड़ी रही, कुंज भीतर गया। कुंजको बेवक्त कमरेमें आते देखकर लक्ष्मी डर गई। उसने समझा, शायद करुणासे फिर कुछ लड़ाई झगड़ा हो गया है।

लक्ष्मीने कहा—कुंज, अभी तक नहीं सोया?

कुंजने कहा—मा, तुम्हारी साँस क्या बहुत फूल रही है?

इतने दिनोंके बाद पुत्रका यह प्रश्न सुनकर माताको मन-ही-मन बड़ा अभिमान हुआ। उसने समझा, 'बहूने जाकर कहा है—तभी कुंज अपनी माकी खबर लेने आया है।' अभिमानके आवेगसे उसका हृदय और भी आन्दोलित हो उठा। बड़े कष्टसे अपनेको सँभालकर उसने कहा—जा, तू सोने जा, मुझे तो यह रोजका रोग है।

कुंजने कहा—नहीं मा, एक बार अच्छी तरह देख लेना अच्छा होगा, यह रोग साधारण नहीं है।

कुंजको मालूम था कि उसकी माका कलेजा बहुत कमजोर है। एक तो इससे, दूसरे रोगीके चेहरेकी रंगत देखकर, कुंजको कुछ घबराहट मालूम हुई।

माने कहा—अच्छी तरह देखने और परीक्षा करनेकी कोई जरूरत नहीं है। मेरा यह रोग अच्छा होनेवाला नहीं है।

कुंजने कहा—अच्छा, आज रात-भरके लिए एक नींद लानेवाली दवा ला देता हूँ, कल अच्छी तरह देखा जायगा।

लक्ष्मीने कहा—बहुत-सी दवाइयाँ खा चुकी हूँ, दवासे मुझे कुछ फायदा नहीं होता। कुंज, बहुत रात गई है, तू सोने जा।

कुंजने कहा—तुम्हारी तबियत जरा ठीक हो ले, तब मैं जाऊँगा।

तब अभिमानिनी लक्ष्मीने दर्वाजेकी आड़मे खड़ी हुई बहूको सम्बोधन करके कहा—बहू, तुम इतनी रातको कुंजको दिक करनेके लिए यहाँ क्यों ले आई हो?—

यह कहते कहते उसका श्वास-कष्ट और भी बढ गया। तब करुणाने कमरेमें प्रवेश कर, कोमल किन्तु दृढ स्वरसे (कुंजसे), कहा—जाओ, तुम सोने जाओ मैं माके पास रहूँगी।

कुंजने करुणाको आड़मे ले जाकर कहा—मैं एक दवा मँगाये देता हूं। शीशीमें दो औंस दवा रहेगी। एक औंस पिलानेपर अगर नींद न आवे तो एक घटेके बाद बची हुई दवा भी पिला देना। रातको ज्यादा तबियत बेचैन हो तो मुझे जरूर खबर देना।

इतना कहकर कुंज अपने नये घरमें चला गया। करुणा आज जिस मूर्तिसे कुंजको दिखाई दी वह मूर्ति कुंजके लिए नई थी। इस करुणामे सकोच नहीं है, दीनता नहीं है, यह करुणा अपने अधिकारको आप अपने हाथमे लिये है—उसके लिए, कुंजके निकट भिक्षा-प्रार्थिनी नहीं है। यद्यपि कुंजने 'अपनी स्त्री'की उपेक्षा की है, किन्तु आज इस 'घरकी बहू'के प्रति उसे श्रद्धा उत्पन्न हुई।

लक्ष्मी यह सोचकर बहूपर मन-ही-मन बहुत खुश हुई कि बहूको मेरा इतना खयाल है, वह मेरा कष्ट न देख सकी—कुंजको बुला लाई। लेकिन उसने मुँहसे कहा—बहू, मैंने तो तुमको सोनेके लिए भेजा था, तुम वहाँसे कुंजको क्यों घसीट लाई?

करुणा इसका कुछ उत्तर न देकर पखा हाथमे ले उनके पीछे बैठकर हवा करने लगी।

लक्ष्मीने कहा—जाओ बहू, सोने जाओ।

करुणाने धीरेसे कहा—मुझे यहीं बैठनेके लिए कह गये हैं।

करुणा जानती थी कि 'कुंज माताकी सेवामे उसे लगा गया है' इस खबरसे लक्ष्मी खुश होगी।

तेतालीसवाँ परिच्छेद

लक्ष्मीने जब, स्पष्ट रूपसे, अच्छी तरह, देख लिया कि करुणा कुंजके मनको बहलाकर अपने काबूमे नहीं रख सकती, तब सोचा—कमसे कम मेरी बीमारीके कारण अगर कुंजको घरमें रहना पड़े तो भी अच्छा है।

अब लक्ष्मीको यह भय हुआ कि कहीं मेरी बीमारी एकदम अच्छी न हो जाय। इसी भयके कारण दवाको करुणासे छिपाकर इधर-उधर फेंक देने लगी।

कुजका जी उचाट था। वह लक्ष्मीकी अवस्थापर उतनी दृष्टि नहीं रख सकता था किन्तु करुणाको देख पड़ा कि सासका रोग किसी तरह कम नहीं होता, वरन् बढता ही जाता है।

करुणा सोचने लगी कि वे (कुज) अच्छी तरहसे सोच-विचार कर दवा नहीं देते। वे ऐसे दुचित्ते हो रहे हैं कि माँकी बीमारी भी उन्हे सचेत नहीं कर सकती।

कुजकी इतनी बड़ी दुर्गतिको—इतने भारी अध पातको --देखकर उसे मन ही-मन धिक्कार दिये बिना करुणासे नहीं रहा गया। एक तरफ नष्ट होनेमे क्या आदमी सभी तरफसे इस तरह नष्ट हो जाता है?

एक दिन सन्ध्याके समय रोगका कष्ट अधिक बढ जानेपर लक्ष्मीको विहारीकी याद आई। कुछ ठीक है कितने दिनोंसे विहारी नहीं आया! लक्ष्मीने यह सोचकर करुणासे कहा—बहू, तुम जानती हो, आजकल विहारी कहाँ है?

करुणाने समझ लिया कि सदासे बीमारी और कष्टके समय विहारी ही उनकी सेवा करता आया है, इसीसे कष्टके समय विहारीकी याद आई है। आज इस घरका पुराना शुभचिन्तक और अटल अवलम्ब विहारी भी पास नहीं है। विहारी बाबू अगर होते तो इस कुसमयमें माकी सेवा होती। कुजकी तरह वे हृदय-हीन नहीं हैं। करुणाके हृदयसे एक लम्बी साँस निकल पड़ी।

लक्ष्मीने कहा—जान पड़ता है, कुजने विहारीसे लड़ाई कर ली है। कुजने बहुत बुरा किया। उसे वैसा हित-चिन्तक मित्र मिल नहीं सकता—

यह कहते कहते उसकी दोनों आँखोंमें पानी भर आया।

धीरे धीरे करुणाको भी बहुत-सी बातें याद आ गईं। समय-समयपर विहारीने अन्ध-मूढ करुणाको सचेत करनेके लिए अनेक चेष्टाएँ की थीं, उन्हीं चेष्टाओंके कारण वह करुणाके मनसे धीरे धीरे उतरता चला गया और अन्तको अप्रिय हो गया। इस बातको याद कर करुणा मन-ही-मन अपना तीव्र अपमान करने लगी। सच्चे मित्रको लाञ्छित कर जो घोर शत्रुको गलेसे लगाता है उस कृतघ्न मूर्खको विधाता क्यों न दण्ड देंगे? भग्न-हृदय निरपराध विहारी जैसी आह खींचकर इस घरसे विदा हुआ है, वह आह क्या इस घरको हिला न देगी?

और थोड़ी देर तक चिन्तित भावसे स्थिर रहकर एकाएक फिर लक्ष्मीने कहा—बहू, अगर विहारी रहता तो यह नौबत न आने पाती। इस दुर्दिनमें वह हमारी रक्षा कर सकता था।

करुणा चुपचाप बैठी सोचती रही। लक्ष्मीने एक साँस लेकर कहा—अगर विहारीको मेरी बीमारीकी खबर मिल जाय तो वह बिना आये रह नहीं सकता।

करुणाने समझा, लक्ष्मीकी इच्छा है कि विहारीको खबर दी जाय। विहारीके बिना आजकल वे बिल्कुल निराश्रय निर्जीव हो गई हैं।

कमरेका लैंप बुझाकर चाँदनीमे दर्वाजेके पास ही कुज चुपचाप खड़ा है—पढ़नेमें जी नहीं लगता। घरमें भी कोई सुख नहीं है। जो अपने परम आत्मीय हैं उनके साथ, सहज भावका सम्बन्ध दूर हो जानेपर, ऐसा असमंजस होता है कि न तो उन्हें गैरकी तरह अनायास छोड़ा जाता है, और न अपने प्रिय-जनोंकी तरह सहजमें ग्रहण किया जाता है। उनकी वह अत्याज्य आत्मीयता नित्य-प्रति असह्य भारी भारकी तरह छातीपर धरी रहती है। माके सामने जानेकी कुजको इच्छा नहीं होती। वह एकाएक उसे, अपने पास आते देखकर, शका और घबराहटकी दृष्टिसे उसकी तरफ ताकने लगती है। इससे कुजको एक प्रकारकी चोट पहुँचती है। करुणा अगर कभी किसी कामके बहाने पास आती भी है तो बात मुँहसे निकलना कठिन हो जाता है और चुप रहनेसे भी कष्ट होता है। इस तरह तो कुज अब घड़ी भर भी नहीं रह सकता। कुजने दृढ प्रतिज्ञा की थी कि कमसे कम सात दिन तक तो मैं मायासे बिल्कुल मुलाकात न करूँगा। उस प्रतिज्ञाके पूर्ण होनेमें दो दिन अभी और बाकी हैं। ये दो दिन किस तरह कटेंगे!

कुजको पीछेसे पैरकी आहट मिली। समझ गया कि करुणा आई है, मगर तो भी वह, जैसे सुना ही नहीं—इस ढगसे, चुपचाप दूसरी तरफ मुँह किये खड़ा रहा। करुणा सब ढग समझ गई तो भी लौटी नहीं। पीछे खड़ी होकर बोली—एक बात है, वही कहकर मैं जाती हूँ।

कुजने फिरकर कहा—जाओगी क्यों, जरा बैठ ही न जाओ।

करुणाने इस इन्सानियतपर ध्यान न देकर खड़े ही खड़े कहा—विहारी बाबूको माकी बीमारीका समाचार देना उचित है।

विहारीका नाम सुनते ही कुजके कलेजेमें चोट लगी। उसने अपनेको सँभालकर कहा—क्यों उचित है? क्या तुमको मेरे इलाजपर विश्वास नहीं होता?

करुणाके हृदयमें यह बात जम रही थी कि कुज, अच्छी तरह मन लगाकर, ध्यान देकर, रोगीको नहीं देखता—यथोचित यत्न नहीं करता। अतएव उसके मुँहसे अनायास निकल पड़ा—कहाँ, माका रोग तो दिन दिन बढ़ता ही जाता है।

इस सामान्य बातके भीतरकी गर्मी कुंजसे छिपी नहीं रही। ऐसी गूढ झिड़की तो मूढ करुणाने आज तक कभी नहीं दी! तिरस्कृत कुजने विस्मित विद्रूपके साथ कहा—अब तो शायद मुझे तुमसे डाक्टरी सीखनी पड़ेगी!

इस विद्रूप-बाणसे करुणाके वेदनामय हृदयमें एकाएक ऐसी कड़ी चोट पहुँची जिसकी उसे कुछ भी आशा न थी। इसके सिवा वहाँपर अँधेरा भी था। इसीसे बर सदाकी सरल निरस्त्र करुणा आज बिना किसी सकोचके तीव्र तेजके साथ साथ कर उठी—डाक्टरी तो नहीं, मगर माकी सेवा करना सीख सकते हो।

लेते हुए कहा—तुम्हारे बिहारी बाबूको मैंने इस घरमें आनेके लिए क्यों मना किया है—सो तुम जानती ही हो। जान पड़ता है, फिर उनकी याद की गई है!

करुणा जल्दीसे उस कमरेसे चली गई, मानो उसे लज्जाकी आँधी उड़ा ले गई। लज्जा उसे अपने लिए नहीं थी; किन्तु जो आदमी स्वय अपराधमें डूबा हुआ है वह भी ऐसे अन्याय अपवादकी बात अपनी जबानपर ला सकता है—इसके लिए थी। ऐसी बड़ी निर्लज्जता तो लज्जाके पहाड़ोंसे भी नहीं ढकी जा सकती!

करुणाके जाते ही कुजको सम्पूर्ण रूपसे अपनी ही हार जान पड़ी। उसको, इससे पहले, कभी ऐसी कल्पना भी न थी कि करुणा कभी किसी अवस्थामें, उसे इस तरह, धिक्कार दे सकती है। कुजने देखा, जहाँ उसका सिंहासन था वहाँ वह धूलमें लोट रहा है। इतने दिन बाद कुजको खटका हुआ कि यह वेदना कहीं घृणाके रूपमें न बदल जाय।

उधर बिहारीकी याद आते ही कुजको मायाकी चिन्ताने व्याकुल बना दिया। कौन जाने, बिहारी पश्चिमसे लौटा या नहीं। इस बीचमें माया उसका पता भी जान सकती है। मायाके साथ बिहारीकी भेंट होना भी असभव नहीं है। अब कुंजको अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना कठिन हो गया।

रातको लक्ष्मीका रोग-कष्ट और भी बढ़ गया, उससे रहा नहीं गया—उसने स्वय आदमी भेजकर कुंजको बुलवाया। कुजके आनेपर लक्ष्मीने बड़े कष्टसे वाक्य उच्चारण कर कहा—कुंज, बिहारीको देखनेकी मुझे बड़ी इच्छा है, बहुत दिनोंसे वह आया नहीं है।

करुणा सासको पखा झल रही है। वह चुपचाप सिर झुकाये बैठी रही। कुजने कहा—बिहारी यहाँ नहीं है, पछाँहकी तरफ घूमने चला गया है।

लक्ष्मीने कहा—मेरा मन कहता है कि वह यहीं है। तुझपर नाराज है इसीसे नहीं आता। तुझे मेरी कसम, कल एक बार तू उसके घर जा।

कुंजने कहा—अच्छा जाऊँगा।

आज सभी कोई बिहारीको बुलाता है, पुकारता है! कुजको मालूम पड़ा कि मुझे सारे ससारने त्याग दिया है।

卐 卐 卐

चवालीसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन बड़े तड़के ही कुज बिहारीके घर पहुँचा। देखा, दर्वाजेके पास बहुत सी बैल-गाड़ियोंपर नौकर लोग असबाब लाद रहे हैं। उसने भज्जूसे पूछा—मामला क्या है? भज्जूने कहा—बाबूने गगाके किनारे रेतीपर एक बाग

लिया है, वहीं सब असबाब जा रहा है। कुंजने पूछा—बाबू घरमें हैं? भज्जूने कहा—वे सिर्फ दो दिन कलकत्तेमें रहकर कल बाग चले गये हैं।

सुनकर कुंजका मन आशंकासे भर गया। वह मौजूद न था, इस बीचमें निःसन्देह बिहारी और मायासे मुलाकात हुई है। कुंज कल्पनाकी आँखोंसे देखने लगा कि इस समय मायाके दर्वाजेपर भी बैल-गाड़ियोंपर असबाब लादा जा रहा है। उसे निश्चय जान पड़ा कि इसी लिए मुझ मूर्खको मायाने अपने मकानसे इतनी दूरपर भेज दिया है।

दम-भर भी देर न करके कुंजने अपनी गाडीपर चढ़कर कोचवानसे गाड़ी हाँकनेके लिए कहा। घोड़े अपनी चाल-भर नहीं जा रहे हैं, यह कहकर उत्तेजित कुंजने दो-चार बार कोचवानको डाँटा और गालियाँ भी दीं। थोड़ी देरमें गलीके बीचमें मायाके दर्वाजेपर पहुँचकर देखा वहाँ यात्राकी कोई तैयारी नहीं है। डर हुआ कि यह काम कहीं पहले ही न किया जा चुका हो। जोरसे दर्वाजेमें धक्का दिया। भीतरसे बूढ़े नौकरके दर्वाजा खोलते ही उससे कुंजने पूछा—घरमें सब खैरियत है न?

उसने कहा—जी हाँ, सब खैरियत है।

कुंजने ऊपर जाकर देखा, माया नहाने गई है। उसके सूने सोनेके कमरेमें जाकर रातको वह जिस पलंगपर—बिछौनेपर—लेटी थी उसीपर वह लेट गया। उसने उस कोमल बिछौनेको दोनों हाथोंसे समेटकर छातीके नीचे दबा लिया और उसे सूँघकर, उसके ऊपर मुँह रखकर, वह बार बार कहने लगा—निठुर! निठुर!

इस प्रकार अपने हृदयकी उमंग अच्छी तरह निकालकर कुंजने वह बिछौना छोड़ दिया और फिर वह अधीर चित्तसे अलग बैठकर मायाके आनेकी राह देखने लगा। बैठा न गया, तब इधर-उधर टहलने लगा। टहलते टहलते उसने देखा, नीचेके बिछौनेपर एक हिंदी समाचारपत्र खुला हुआ पड़ा है। कुंजने समय बितानेके लिए उसे कुछ अन्य-मनस्क भावसे उठा लिया। संयोगकी बात कि जहाँपर उसकी नजर पड़ी वहीं बिहारीका नाम देख पड़ा। दम-भरमें उसका सारा ध्यान उस समाचारपत्रके उसी स्थानपर आ पड़ा। उस समाचारपत्रमें एक पत्रप्रेरक लिखता है कि "कम तनख्वाह पानेवाले क्लर्क लोग जब बीमार पड़ जाते हैं, तब उन्हें बड़ा कष्ट मिलता है। इन लोगोंकी मुफ्त दवा और सेवा करनेके लिए बिहारी बाबूने गंगाके किनारे रेतीपर एक बाग लिया है और इस समय वहाँ एक साथ पाँच आदमियोंको आश्रय देनेका पूरा प्रबन्ध है।"—इत्यादि।

कुंजने सोचा—मायाने यह खबर जरूर पढ़ी है। पढ़कर उसका कैसा भाव हुआ होगा? अवश्य उसका मन उसी तरफ खिंच गया होगा।

केवल इसी लिए नहीं—कुंजका मन इस कारणसे और भी छटपटाने लगा

कि बिहारीके इस संकल्पकी खबरसे मायाको उसके ऊपर और भी श्रद्धा-भक्ति हो जायगी। कुजने अपने मनमें बिहारीको 'पाखंडी' कहा और उसके इस कार्यको 'ढोंग' समझकर कहा—'बिहारी लड़कपनसे ही लोगोंके आगे अपनेको परोपकारी सिद्ध करनेकी चेष्टा करता आता है।' इसके बाद कुजने अपनेको बिहारीकी अपेक्षा बिल्कुल निष्कपट और अकृत्रिम कहकर वाह-वाही देनेकी चेष्टा की, कहा—'मैं उदारता और स्वार्थ-त्यागके ढोंगसे साधारण मूढ लोगोंको बह लानेकी चेष्टा करनेको घृणित कार्य समझता हूँ।'

किन्तु हाय, कुजकी इस परम-निश्चेष्ट अकृत्रिमताके माहात्म्यको लोक, अर्थात् कोई एक खास आदमी, शायद कुछ भी न समझेगा। कुजने समझा कि बिहारीने उसके ऊपर यह भी एक चाल चली है।

मायाके पैरोंकी आहट पाकर कुजने जल्दीसे उस समाचारपत्रको लपेटकर अपने नीचे रख लिया। स्नान करके आई हुई मायाने कमरेमें प्रवेश किया। कुज उसके चेहरेकी तरफ देखकर विस्मित हो उठा। उसमें एक प्रकारका परम सुन्दर परिवर्तन हो गया है—वह जैसे इधर कई दिनोंसे आग जलाकर तपस्या कर रही थी। उसका शरीर दुबला हो गया है और, उस दुर्बलताके कारण, उसके सूखे हुए चेहरेपर एक प्रकारका तीव्र तेज झलक रहा है।

मायाने बिहारीके उत्तरकी आशा छोड़ दी है। उसने कल्पनासे अपने प्रति बिहारीकी अत्यन्त अवहेला समझ ली है और उस अवहेलनाकी आगसे वह दिन रात चुप-चाप जल रही है। क्यों कि इस जलनसे छुटकारा पानेके लिए उसके पास कोई राह नहीं है। उसने समझा—मेरा ही तिरस्कार करनेके लिए बिहारी पश्चिमकी तरफ चला गया है। बिहारीकी खबर पानेका या मगा जाननेका भी कोई उपाय उसके हाथमे नहीं है। सदाकी काम-काजी, आलस्यका नाम न जाननेवाली, माया काम-काजके बिना इस छोटेसे घरमें तड़फड़ा रही है—उसका सारा उद्योग उसीको घायल करके चोट पहुँचा रहा है। इस प्रेमहीन, कर्महीन, आनन्दहीन मकानमें, इस गदी गलीके भीतर, चिरकालके लिए, अपने आगेके सारे जीवनके बन्धनकी कल्पना करके उसकी विद्रोही प्रकृति मानो अनिवार्य अदृष्ट भाग्यके विरुद्ध होकर आकाशमें माथा ठोकनेकी व्यर्थ चेष्टा कर रही है। जिस मूढ कुजने मायाक छुटकारेकी राहमें चारों ओरसे काँटे रूँधकर उसके जीवनको इतना सकीर्ण, इतना तग, बना डाला है उस कुजके ऊपर उसे अत्यन्त क्रोध और असीम घृणा हो गई है।

मायाने अच्छी तरह सोच समझ लिया था कि वह अब कुजको किसी तरह अपनेसे दूर नहीं रख सकेगी। इस छोटेसे घरमें कुज रोज आवेगा और उससे बिल्कुल सटकर सामने ही बैठेगा—प्रति दिनके अलक्ष्य आकर्षणसे तिल तिल

करके उसकी तरफ अधिकतर अग्रसर होता रहेगा। इस अन्ध कूपमें, इस समाजसे भ्रष्ट जीवनकी पंक-परिपूर्ण सेजपर, घृणा और आसक्तिमें जो नित्य लड़ाई मची रहेगी वह बड़ी बीभत्स होगी। मायाने अपने हाथसे, अपनी चेष्टासे, मिट्टी खोदकर, कुंजके हृदयकी भीतरी तहसे यह जो लपलपाती जीभवाला लोलुपताका विकट जन्तु बाहर निकाला है, उसके पुच्छ-पाशसे वह कैसे अपनी रक्षा करेगी? एक तो अपना हृदय व्यथित है, उसपर इस छोटेसे तंग घरमें कैदीकी तरह रहना है, और उसपर भी कुंजकी वासनाकी लहरोंसे दिन रात टकराना है,—इसकी कल्पना करनेसे भी मायाका हृदय भयसे काँप उठता है। जीवनमें इसकी समाप्ति कहाँ है? कब वह इन सब आपत्तियोंसे छुटकारा पा सकेगी?

मायाके उस दुर्बल पीले मुखको देखकर कुंजके मनमे ईर्षाकी आग जल उठी। उसमें क्या ऐसी कोई शक्ति नहीं है जिससे वह इस तपस्विनीके हृदयसे बिहारीकी चिन्ताको जड़-समेत उखाड़ कर अलग कर दे? ईगल पक्षी जैसे मेढ़कके बच्चेको पल-भरमें झपट्टा मारकर पंजोंमें उलझा लेता है और अपने सुदुर्गम अभ्रभेदी पर्वतके घोंसलेपर ले जाता है वैसे ही क्या कोई ऐसा विश्व-विस्मृत एकान्त अगम्य स्थान नहीं है जहाँ अकेला कुंज अपने इस सुकोमल सुन्दर शिकारको अपने हृदयके पास छिपाकर रख सके? ईर्षाकी गर्मीसे उसकी इस इच्छाका आग्रह चौगुना बढ़ उठा। अब वह एक घड़ी-भर भी मायाको अपनी आँखोंकी ओटमें नहीं रख सकता। बिहारीकी बिभीषिकाको दिन दिन दूर ही रखना होगा, उसे सुईकी नोक भरका अवकाश देनेके लिए भी कुंजको अब साहस नहीं हो सकता।

कुंजने यह बात संस्कृत-साहित्यमें पढ़ी थी कि विरहके तापसे रमणीका सौन्दर्य और भी निखर उठता है। आज मायाको देखकर वह इस बातको जितना ही अनुभव करने लगा उसका हृदय उतना ही सुख-मिश्रित दुःखके सुतीव्र आन्दोलनमें मथा जाने लगा।

कुंज—मुझे तो इसकी ऐसी कोई जरूरत नहीं जान पड़ती।

माया—जरूरत ही क्या सब कुछ है? बचपनकी दोस्ती कुछ भी नहीं है?

कुंज—बेशक, बिहारी मेरा बचपनका साथी है मगर तुम्हारे साथ तो उसकी दो ही दिनकी दोस्ती है तो भी उसकी खबरके लिए—उसका पता लगानेके लिए—तुम्हारा ही अधिक आग्रह देख पड़ता है—तुमको ही अधिक चिन्ता जान पड़ती है।

माया—यह देखकर तुमको लज्जा आनी चाहिए। मित्रता किस तरह करनी होती है सो तुम अपने ऐसे मित्रसे भी न सीख पाये?

कुंज—इसके लिए मैं इतना दुःखित नहीं हूँ। दुःख मुझे इस बातका है कि धोखा देकर स्त्रियोंका मन किस तरह काबूमें कर लिया जाता है—यह विद्या मैं उससे न सीख सका। अगर यह विद्या सीख ली होती तो आज काम आ सकती थी।

माया—वह विद्या केवल इच्छा करनेसे नहीं सीखी जा सकती। उसे सीखनेके लिए लियाकत चाहिए।

कुंज—गुरुदेवका ठिकाना अगर तुम्हारा जाना हो तो बता दो, इस अवस्थामें एक बार उनके पास जाकर मंत्र ले आऊँ, उसके बाद लियाकतकी जाँच होगी।

माया—अगर तुम अपने मित्रका पता न लगा सको—ठिकाना न जान सको, तो अब मेरे आगे प्रेमका नाम न लेना! बिहारी बाबूके साथ तुमने जैसा व्यवहार किया है, उसे देखकर तुमपर कौन विश्वास कर सकता है?

कुंज—अगर तुम मुझपर पूर्णरूपसे विश्वास न करतीं तो मेरा इस तरह इतना अपमान न कर सकतीं। मेरे प्रेमके बारेमें अगर तुम इतनी निःसंशय न होतीं तो शायद मुझे भी इतना असह्य दुःख न उठाना पड़ता। बिहारी बंधनमें न फँसनेकी विद्या जानता है, वह विद्या अगर वह इस अभागेको सिखला देता तो अवश्य मित्रताका काम करता!

'बिहारी मनुष्य हैं, इसीसे वे बंधनमें नहीं फँसते,' इतना कहकर माया, अपने खुले हुए बालोंको पीठपर फैलाकर दर्वाजेके पास जिस तरह खड़ी थी उसी तरह खड़ी रही। कुंज एकाएक उठकर खड़ा हो गया और जोरसे दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर क्रोधसे गरजकर बोला—क्यों तुम बार बार इस तरह मेरा अपमान करनेका साहस करती हो? इस अपमानका कुछ भी बदला तुमको नहीं मिलता, सो क्यों? तुम्हारी लियाकतसे, या मेरी योग्यतासे? अगर तुम मुझे मनुष्य नहीं पशु ही, समझती हो तो खूनी जानवर ही समझना! मुझे ऐसा नामर्द न समझना कि यों ही मार खाता रहूँगा और चोट न करूँगा!

यों कहकर कुंज घड़ी-भर चुपचाप मायाके मुँहकी तरफ देखता रहा। उसके बाद फिर कुंजने कहा—माया, यहाँसे और कहीं चलो। हम लोग यहाँसे बाहर

चल दें। पश्चिममें हो, पहाड़पर हो, जहाँ तुम्हारी इच्छा हो, चलो। यहाँ बचनेकी जगह नहीं है। मैं मरा जा रहा हूँ।

मायाने कहा—चलो, अभी चलो—पश्चिम चलें।

कुंज—पश्चिममें कहाँ चलोगी?

माया—कहीं भी नहीं। एक जगह नहीं ठहरूँगी—घूमती फिरूँगी।

कुंज—यही अच्छा है, आज ही रातको चलो।

मायाने मंजूर कर लिया और वह कुंजके लिए रसोई बनानेकी तैयारीमें लग गई।

कुंजने समझा मायाने वह समाचारपत्र नहीं देखा। इस समय उसमें समाचारपत्रमें मन लगानेकी शक्ति नहीं है। एकाएक देव-संयोगसे कहीं मायाकी नजर-तले वह अखबार न पड़ जाय—इस आशंकासे कुंज दिन-भर सावधान होकर रहा।

ॐ ॐ ॐ

पैंतालीसवाँ परिच्छेद

बिहारीकी खबर लेकर कुंज लौटा आता होगा—यह समझकर घरमें उसके लिए रसोई तैयार हुई। जब बहुत देर हो गई, कुंज लौट कर न आया, तब रोगसे पीड़ित लक्ष्मी और भी घबड़ाने लगी। सारी रात नींद न आनेसे एक तो वह ऐसे ही सुस्त और मुरझाई हुई थी उसपर कुंजकी चिन्ता उसे और भी क्लेश पहुँचाने लगी। करुणाने अस्तबलमें नौकर भेजा, मालूम हुआ कि गाड़ी लौट आई है। कोचवानसे खबर मिली कि कुंज बिहारीके घर होकर 'पटना डॉगा' के स्टेशन गया है। लक्ष्मी यह सुनकर दीवालकी तरफ फिरकर चुपचाप सो रही। करुणा उसके सिरहाने तसवीरकी तरह स्थिर होकर पंखा झलाने लगी।

देना नहीं चाहता; इसीसे उसने माताके रोगको—कष्टको—इतना हल्का—इतना सामान्य—मान लिया है। कहीं उसे माके पास फँसकर रहना न पड़े इसी आशंकासे वह यों निर्लज्जकी तरह जरा-सा मौका पाते ही मायाके पास भाग गया है।

रोगके और आरोग्यताके प्रति लक्ष्मीको जरा भी उत्साह नहीं रह गया—उसने दारुण अभिमानसे यही सिद्ध करना चाहा कि कुजका न घबड़ाना उसकी भूल है, अर्थात् उसकी बीमारी साधारण नहीं है।

जब दो बजे तब करुणाने कहा—मा, दवा खानेका समय हो गया। लक्ष्मी कुछ उत्तर न देकर चुप रही। करुणा जब दवा लानेके लिए उठी तब लक्ष्मीने कहा—दवा देनेकी कोई जरूरत नहीं है बहू, तुम जाओ।

करुणा अपनी सासका अभिमान समझ गई। उस अभिमानने संक्रामक रोगकी तरह करुणाके हृदयमें प्रवेश कर और भी खलबली डाल दी। करुणासे नहीं सहा गया। वह सँभालनेकी चेष्टा करती हुई धीरे धीरे फफक-फफक कर रोने लगी। तब लक्ष्मीने धीरे धीरे करुणाकी तरफ करवट बदली और उसके ऊपर करुणा और स्नेहके भावसे धीरे धीरे हाथ फेरते हुए कहा—बहू, अभी तुम्हारी बहुत कम उमर है, अभी तुमको सुखका मुख देखनेके लिए समय है। मेरे लिये अब तुम कुछ यत्न न करो बेटी,—मेरी बहुत उमर हुई। अब जीकर क्या करूँगी?

लक्ष्मीके यों कहनेसे करुणाका रोना और भी उमड़ पड़ा, उसने आँचलमें मुँह बन्द कर लिया।

इसी तरह रोगीके घरमें वह निरानन्द दिन धीरे धीरे किसी तरह बीत गया। यद्यपि लक्ष्मी और करुणा दोनों दुखी थीं और कुञ्जपर अभिमान किये बैठी थीं तो भी भीतर-ही-भीतर उन्हें आशा थी कि कुज अब आता होगा—अब आता होगा। बाहर जरा-सा भी खटका होनेसे दोनों स्त्रियाँ भीतर-ही-भीतर चौंक पड़ती थीं कि शायद कुंज आया। क्रमशः दिनके अन्तकी आभा स्पष्ट हो आई। कलकत्तेके बंद जनाने मकानोंमें गोधूलिके समयकी जो मलिन आभा पड़ती है उसमें प्रकाशकी प्रफुल्लता भी नहीं होती और अन्धकारका आवरण भी नहीं होता। वह विषादको भारी और निराशाको अश्रु-हीन बना देती है, काम-काज और धीरजके बलको हर लेती है, परन्तु विश्राम और वैराग्यकी शान्तिको नहीं लाती। रोगी घरकी उस शुष्क श्रीहीन सन्ध्यामें करुणा चुपचाप उठकर लैंप जलाकर ले आई। लक्ष्मीने कहा—बहू, रोशनी अच्छी नहीं लगती, लैंप बाहर रख दो।

करुणा लैंप उठाकर बाहर रख आई। अन्धकार जब, अत्यन्त घना होकर, उस छोटेसे कमरेमें बाहरकी अनन्त रात्रिको ले आया तब करुणाने धीरेसे लक्ष्मीसे पूछा—मा, उनके पास क्या कोई आदमी भेजकर खबर दूँ?

लक्ष्मीने दृढ़ स्वरसे कहा—नहीं बहू, तुमको मेरी कसम, कुजको खबर न देन

यह सुनकर करुणा चुप रह गई, उसमें अब रोनेकी भी शक्ति न थी।

इतनेमें नौकरने आकर कहा—बाबूके पाससे चिट्ठी आई है।

यह सुनकर एकाएक लक्ष्मीको जान पड़ा कि, हो न हो, कुज अकस्मात् कुछ बीमार हो गया है, इसीसे किसी तरह न आ सकनेके कारण उसने चिट्ठी भेजी है। लक्ष्मीने अनुतप्त और व्यस्त होकर कहा—देख तो बहू कुजने क्या लिखा है!

करुणा बाहर लैंपके पास जाकर काँपते हुए हाथसे चिट्ठी पढ़ने लगी। कुजने लिखा है कि कुछ दिनसे यहाँ उसका जी नहीं लगता, इसीसे आज वह पश्चिमकी तरफ घूमने जा रहा है। माताकी बीमारीके लिए विशेष चिन्ता करनेका कोई कारण नहीं है। उन्हें नित्य नियमपूर्वक देखनेके लिए उसने अपने एक मित्र डाक्टरसे कह दिया है। रातको नींद न आवे या सिरमें दर्द हो तो कब क्या करना चाहिए—सो भी चिट्ठीमें लिखा है। हल्के और पुष्टि-कारक पथ्यके भी दो डिब्बे उसने डाक्टर-खानेसे मँगाकर चिट्ठीके साथ भेज दिये हैं। चिट्ठीमें 'पुनश्च' करके लिखा है कि जब तक कोई दूसरा पता न लिखा जाय तब तक पटनेके पोस्ट-मास्टरके पतेपर चिट्ठी भेजकर माकी तबियतका हाल जरूर जरूर जताती रहना।

यह चिट्ठी पढ़कर करुणा स्तम्भित हो गई, प्रबल धिक्कारने उसके दुःखको भी नीचे दबा दिया। यह निष्ठुर बात—ऐसी चोट पहुँचानेवाली चिट्ठी—वह माको कैसे सुनावेगी?

करुणाके विलम्बसे लक्ष्मी और भी अधिक व्यग्र हो उठी। उसने कहा—"बहू, कुजने क्या लिखा है? जल्दी मुझे सुना जाओ। यह कहते कहते वह आग्रहके मारे बिछौनेपर उठकर बैठ गई।

करुणाने तब कमरेमें आकर धीरे धीरे वह चिट्ठी पढ़कर सुना दी। पूछा—तबियतके बारेमें कुजने क्या लिखा है? जरा उसे फिर तो पढ़ो।

करुणा फिर पढ़ने लगी—"कुछ दिनसे मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता, तबियत उचाट रहती है इसीसे मैं—"

बाहर जूतेका शब्द सुनाई दिया। नौकरने कहा—डाक्टर साहब आये हैं।

डाक्टरने खाँसकर कमरेमें प्रवेश किया। करुणा जल्दीसे घूँघट काढ़कर खाटकी आड़में जा खड़ी हुई। डाक्टरने लक्ष्मीसे पूछा—बतलाइए तो आपको क्या हुआ है?

लक्ष्मीने क्रोध-भरे स्वरमें कहा—होगा और क्या? किसीको मरने न दोगे! तुम्हारी दवा खानेहीसे क्या मैं अमर हो जाऊँगी!

डाक्टरने सान्त्वनाके स्वरमें कहा—मैं अमर नहीं कर सकता, लेकिन कष्ट जिसमें कम हो वह चेष्टा—

लक्ष्मी बीचहीमें बोल उठी—कष्टकी अच्छी दवा तो तब थी जब विधवायें जलकर मर जाती थीं। इस समय तो यह केवल बाँधकर मारना है! जाओ डाक्टर साहब, तुम जाओ—मुझे दिक न करो, मैं अकेले रहना चाहती हूँ!

डाक्टरने डरते डरते कहा—आपकी नाड़ी तो एक बार—

लक्ष्मीने चिढ़कर कहा—मैं कहती हूँ कि तुम जाओ! मेरी नाड़ी बहुत अच्छी है—इस नाड़ीके शीघ्र छूटनेकी कुछ भी आशा नहीं है!

डाक्टरने लाचार कमरेसे बाहर जाकर करुणाको बुला भेजा। डाक्टरने रोगका हाल पूछा। करुणाने सब कह दिया। सुनकर गंभीर भावसे डाक्टर फिर कमरेमें गये और बोले—देखिए, कुंज बाबू मुझे विशेष रूपसे यह काम सौंप गये हैं। मुझे अगर आप अपना इलाज अच्छी तरह न करने देंगी तो उनको बड़ा कष्ट होगा!

'कुजको कष्ट होगा' यह बात लक्ष्मीको एक तीव्र उपहास या विद्रूपकी तरह सुनाई पड़ी। उसने कहा—कुजके लिए तुम इतनी चिन्ता न करो! कष्ट तो ससारमें सभीको होता है, इस कष्टसे कुजको उतना अधिक दुःख न होगा। डाक्टर साहब, तुम अब जाओ! मुझे जरा सोने दो!

डाक्टरने समझा—रोगीको अधिक उत्तेजित करना अच्छा न होगा। उन्होंने धीरेसे बाहर निकलकर जो जो करना था सो सब करुणाको समझा दिया और अपने घरका रास्ता लिया।

करुणा जैसे कमरेमें आई वैसे ही लक्ष्मीने कहा—जाओ बहू, तुम जरा जाकर विश्राम करो। दिन-भरसे रोगीके पास बैठी हो। दासीको भेज दो—वह उधर पासके कमरेमें बैठी रहेगी।

करुणा लक्ष्मीको अच्छी तरह जानती थी। यह उसके स्नेहका अनुरोध नहीं था, यह उसकी आज्ञा थी, इसे पालन करनेके सिवा कोई उपाय नहीं है। करुणाने दासीको सासके पास भेज दिया और आप अपने अँधेरे कमरेमे जाकर जाकर ठंडी जमीनपर लेट रही।

दिन-भरके उपवास और कष्टसे उसका शरीर शिथिल और मन खिन्न हो रहा था। महल्लेके एक घरमें उस दिन रह रहकर ब्याहका बाजा बज रहा था। इस

समय फिर सुरीली शहनाई बजने लगी; उस रागिनीकी चोटसे रातका सारा अँधकार जैसे काँप उठा और बारबार करुणाको जैसे चोट पहुँचाने लगा। करुणाके व्याहकी रातकी छोटी-मोटी घटनाएँ भी जैसी सजीव हो उठीं, और उन्होंने रात्रिके अन्धकारमय आकाशको स्वप्नके चित्रोंसे पूर्ण कर डाला। उस दिनकी रोशनी, कोलाहल, भीड़-भाड़—उस दिनके माला-चन्दन, नवीन वस्त्र, होमके धुएँकी गन्ध—नव-वधूके शंकित लज्जित आनन्दित हृदयका निगूढ़ कंपन—सभी बातें जितनी ही स्मृतिके आकारमें उसे चारों तरफसे घेरने लगीं, उतनी ही उसके हृदयकी व्यथा सजीव बनकर जोर करने लगी। दारुण दुर्भिक्षमें भूखा बच्चा जैसे भोजनके लिए माको छोटे छोटे हाथोंसे पीटने लगता है वैसे ही सुखकी जागरित स्मृति भी, अपना आहार माँगती हुई, करुणाकी छातीमें बारबार रुलाईके साथ हाथ दे दे मारने लगी। उसने करुणाको सुस्त न पड़े रहने दिया। करुणा दोनों हाथ जोड़कर देवताके निकट प्रार्थना करने लगी। इसी समय उसकी एक-मात्र प्रत्यक्ष देवता मौसीकी पवित्र स्नेहमयी मूर्ति उसके आँसुओंसे भरे हृदयमें प्रकट हो आई। अब तक करुणाकी यही प्रतिज्ञा थी कि अब वह उस तपस्विनीको संसारके दुःख और झंझटमें न बुलावेगी किन्तु आज उसे मौसीके सिवा और कहीं भी कोई उपाय न सूझ पड़ा। आज उसके चारों तरफ उसे [illegible] गाढ़ दुःखमें जरा-सा भी अवकाश न था। इसीसे आज वह कमरेमें [illegible] [illegible] गादमें एक किताबके ऊपर चिट्ठीका कागज रखकर बार बार आँखोंसे आँसू पोंछती हुई मौसीको पत्र लिखने लगी—

"श्रीचरणकमलेषु—

मौसी, आज तुम्हारे सिवा मेरा और कोई नहीं है। एक बार आकर इस दुखियाको अपनी गोदमें उठा लो—नहीं तो मैं कैसे बचूँगी? और क्या लिखूँ जानती ही नहीं। तुम्हारे चरणोंमें मेरे सैकड़ों हजारों प्रणाम पहुँचें।

तुम्हारी स्नेहकी
चुन्नी।"

★ ★ ★ ★

छयालीसवाँ परिच्छेद

चाहती थी। बहुत दिनोंके बाद, आज लक्ष्मीको दम-भरमें यह स्पष्ट जान पड़ा कि गौरीके न रहनेसे ही मुझे इधर इतना अधिक परिश्रम, क्षोभ और कष्ट हुआ है। उसी दम लक्ष्मीके व्यथित हृदयने अपने बहुत पुराने स्थानपर अधिकार कर लिया। कुजके पैदा होनेके पहले भी इन दोनों देवरानी-जेठानियोंने, बहू होकर, इस परिवारका सारा सुख-दुःख आप अपने ऊपर ले लिया था। पूजामें, उत्सवोंमें, शोकमें, शादीमें, गमीमें दोनोंने एक साथ संसारके रथमें जुतकर जीवनके पथमे यात्रा की थी। उस समयकी उस घनिष्ठ मित्रताने, मेलने, स्नेहने, दम-भरमें लक्ष्मीके हृदयको छा लिया। जिसके साथ, सुदूर अतीत कालमे, एक ही जगह नये जीवनका आरम्भ हुआ था, अनेक बाधा-विघ्नोंके बाद, वही बाल्य सहचरी ही घोर दुःखके दिनोंमें निकट आई,—उस प्राचीन समयके सारे सुख-दुःख और सारी प्रिय घटनाओंका स्मारक अगर कुछ रह गया है, तो यही गौरी। जिसके लिए लक्ष्मीने अपनी इस प्यारी देवरानीको भी निष्ठुर भावसे चोट पहुँचाई थी, वह कुज आज कहाँ है?

गौरीने रोगीके पास बैठकर, उसका दाहिना हाथ अपने हाथमें लेकर कहा—जीजी!

लक्ष्मीने कहा—मँझली बहू!—

इसके आगे लक्ष्मीसे कुछ कहा नहीं गया। उसकी दोनों आँखोंसे आँसू बहने लगे। करुणासे भी यह दृश्य देखकर रहा नहीं गया।—वह पासकी कोठरीमें जमीनपर बैठकर रोने लगी।

गौरीको लक्ष्मी या करुणासे कुंजके बारेमें कुछ पूछनेका साहस नहीं हुआ। उसने दीनानाथको बुलाकर पूछा—कुज कहाँ है?

तब दीनानाथने कुंज और मायाकी सारी कहानी उसको सुना दी। गौरीने पूछा—बिहारीकी क्या खबर है?

दीनानाथने कहा—बहुत दिनसे वे नहीं आये, इसलिए मुझको उनकी खबर ठीक मालूम नहीं है।

गौरीने कहा—जरा बिहारीके घर जाकर उनकी खबर ले आओ।

दीनानाथने बिहारीके यहाँसे लौट आकर कहा—वे घरमें नहीं हैं, गंगाके किनारे रेतीपर अपने बागमें गये हैं।

गौरीने डाक्टरको बुलाकर रोगीकी हालत पूछी। डाक्टरने कहा—एक तो इनका हृत्पिण्ड दुर्बल है और उसपर तिल्ली बढ आई है, कब इनके प्राण निकल जायँगे इसका कुछ ठीक नहीं है।

सन्ध्याके समय जब लक्ष्मीको साँसका कष्ट अधिक हो चला, तब गौरीने पूछा—जीजी, डाक्टर साहबको बुलवाऊँ?

लक्ष्मीने कहा—ना बहू, डाक्टर मेरा कुछ नहीं कर सकेगा।

गौरीने कहा—तो तुम किसे बुलाना चाहती हो बतलाओ ?

लक्ष्मीने कहा—अगर जरा बिहारीको खबर दे दो, तो अच्छा होगा।

गौरीके हृदयमें चोट लगी। उस दिन उसने दूरके प्रवासमें, सन्ध्याके समय, बिहारीको दर्वाजेके बाहरसे ही अपमानके साथ विदा कर दिया था। उस वेदनाको वह आजतक भूल नहीं सकी थी। बिहारी कभी उसके दर्वाजेपर लौटकर न आवेगा। इस जीवनमें फिर कभी उस अनादरका प्रतिकार करनेके लिए अवसर पानेकी उसको आशा नहीं थी।

गौरी एक बार छतके ऊपर कुजके कमरेमें गई। घरमें यही स्थान आनन्द-मग्न था। आज उसी कमरेमें जरा भी रौनक नहीं है।—सब ही चीजे श्री-हीन अस्त-व्यस्त हैं। बिछौने इधर-उधर सिमटे उलटे पड़े हैं, सब सामान अनादरके साथ नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है। छतपर रक्खे हुए बड़े टबमें जलका बूँद नहीं है, गमलोंके पेड़ और टीनपरकी लता सूख गई है।

मौसीको छतपर जाते देखकर करुणा भी धीरे धीरे उसके पीछे चली गई। गौरीने उसे खींचकर छातीसे लगा लिया और उसका माथा चूमा। करुणाने झुककर दोनों हाथोंसे मौसीके पैर पकड़कर बार बार उसे प्रणाम किया और कहा—मौसी, मुझे आशीर्वाद दो, मुझे बल दो। मैं कभी सोच भी नहीं सकी थी कि मनुष्य इतना कष्ट सह सकता है! मैया, इस तरह और कितने दिन सहा जायगा!

गौरी वहीं जमीनपर बैठ गई, करुणा उसके पैरोंपर माथा रखकर लोट गई। गौरीने करुणाका सिर अपनी गोदमें ले लिया और कोई बात न कहकर वह निस्तब्ध भावसे हाथ जोड़ इष्ट-देवताका स्मरण करने लगी।

गौरीके स्नेह-चिह्नित निःशब्द आशीर्वादने करुणाके गम्भीर हृदयके भीतर प्रवेश कर बहुत दिनोंके बाद शान्तिको ला दिया। उसे जान पड़ा जैसे उसका अभीष्ट सिद्ध होनेमें अब अधिक विलम्ब नहीं है। उसे विश्वास है कि देवता उसके ऐसे पर आदमीकी तो अवहेलना कर सकते हैं, किन्तु मौसीकी प्रार्थनापर ध्यान दिये बिना नहीं रह सकते।

चाहती थी। बहुत दिनोंके बाद, आज लक्ष्मीको दम-भरमें यह स्पष्ट जान पड़ा कि गौरीके न रहनेसे ही मुझे इधर इतना अधिक परिश्रम, क्षोभ और कष्ट हुआ है। उसी दम लक्ष्मीके व्यथित हृदयने अपने बहुत पुराने स्थानपर अधिकार कर लिया। कुजके पैदा होनेके पहले भी इन दोनों देवरानी-जेठानियोंने, बहू होकर, इस परिवारका सारा सुख-दुःख आप अपने ऊपर ले लिया था। पूजामें, उत्सवोंमें, शोकमें, शादीमें, गमीमें दोनोंने एक साथ ससारके रथमें जुतकर जीवनके पथमें यात्रा की थी। उस समयकी उस घनिष्ठ मित्रताने, मेलने, स्नेहने, दम-भरमें लक्ष्मीके हृदयको छा लिया। जिसके साथ, सुदूर अतीत कालमें, एक ही जगह नये जीवनका आरम्भ हुआ था, अनेक बाधा-विघ्नोंके बाद, वही बाल्य-सहचरी ही घोर दुःखके दिनोंमें निकट आई,—उस प्राचीन समयके सारे सुख-दु:ख और सारी प्रिय घटनाओंका स्मारक अगर कुछ रह गया है, तो यही गौरी। जिसके लिए लक्ष्मीने अपनी इस प्यारी देवरानीको भी निष्ठुर भावसे चोट पहुँचाई थी, वह कुज आज कहाँ है?

गौरीने रोगीके पास बैठकर, उसका दाहिना हाथ अपने हाथमें लेकर कहा—जीजी!

लक्ष्मीने कहा—मँझली बहू!—

इसके आगे लक्ष्मीसे कुछ कहा नहीं गया। उसकी दोनों आँखोंसे आँसू बहने लगे। करुणासे भी यह दृश्य देखकर रहा नहीं गया।—वह पासकी कोठरीमें जमीनपर बैठकर रोने लगी।

गौरीको लक्ष्मी या करुणासे कुंजके बारेमें कुछ पूछनेका साहस नहीं हुआ। उसने दीनानाथको बुलाकर पूछा—कुज कहाँ है?

तब दीनानाथने कुज और मायाकी सारी कहानी उसको सुना दी। गौरीने पूछा—बिहारीकी क्या खबर है?

दीनानाथने कहा—बहुत दिनसे वे नहीं आये, इसलिए मुझको उनकी खबर ठीक मालूम नहीं है।

गौरीने कहा—जरा बिहारीके घर जाकर उनकी खबर ले आओ।

दीनानाथने बिहारीके यहाँसे लौट आकर कहा—वे घरमें नहीं हैं, गगाके किनारे रेतीपर अपने बागमें गये हैं।

गौरीने डाक्टरको बुलाकर रोगीकी हालत पूछी। डाक्टरने कहा—एक तो इनका हृत्पिण्ड दुर्बल है और उसपर तिल्ली बढ आई है, कब इनके प्राण निकल जायँगे इसका कुछ ठीक नहीं है।

सन्ध्याके समय जब लक्ष्मीको साँसका कष्ट अधिक हो चला, तब गौरीने पूछा—जीजी, डाक्टर साहबको बुलवाऊँ?

लक्ष्मीने कहा—ना बहू, डाक्टर मेरा कुछ नहीं कर सकेगा।

गौरीने कहा—तो तुम किसे बुलाना चाहती हो बतलाओ ?

लक्ष्मीने कहा—अगर जरा बिहारीको खबर दे दो, तो अच्छा होगा ।

गौरीके हृदयमें चोट लगी । उस दिन उसने दूरके प्रवासमें, सन्ध्याके सयय, बिहारीको दर्वाजेके बाहरसे ही अपमानके साथ बिदा कर दिया था । उस वेदनाको वह आजतक भूल नहीं सकी थी । बिहारी कभी उसके दर्वाजेपर लौटकर न आवेगा । इस जीवनमें फिर कभी उस अनादरका प्रतिकार करनेके लिए अवसर पानेकी उसको आशा नहीं थी ।

गौरी एक बार छतके ऊपर कुजके कमरेमें गई । घरमें यही स्थान आनन्द-भवन था । आज उसी कमरेमें जरा भी रौनक नहीं है ।—सब ही चीजें श्री-हीन अस्त-व्यस्त हैं । बिछौने इधर-उधर सिमटे उलटे पड़े हैं, सब सामान अनादरके साथ नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है । छतपर रक्खे हुए बड़े टबमें जलका बूँद नहीं है, गमलोंके पेड़ और टीनपरकी लता सूख गई है ।

मौसीको छतपर जाते देखकर करुणा भी धीरे धीरे उसके पीछे चली गई । गौरीने उसे खींचकर छातीसे लगा लिया और उसका माथा चूमा । करुणाने झुककर दोनों हाथोंसे मौसीके पैर पकड़कर बार बार उसे प्रणाम किया और कहा—मौसी, मुझे आशीर्वाद दो, मुझे बल दो । मैं कभी सोच भी नहीं सकी थी कि मनुष्य इतना कष्ट सह सकता है ! मैया, इस तरह और कितने दिन सहा जायगा !

गौरी वहीं जमीनपर बैठ गई, करुणा उसके पैरोंपर माथा रखकर लोट गई गौरीने करुणाका सिर अपनी गोदमें ले लिया और कोई बात न कहकर वह निस्तब्ध भावसे हाथ जोड़ इष्ट-देवताका स्मरण करने लगी ।

गौरीके स्नेह-चिह्नित निःशब्द आशीर्वादने करुणाके गभीर हृदयके भीतर प्रवेश कर बहुत दिनोंके बाद शान्तिको ला दिया । उसे जान पड़ा जैसे उसका अभीष्ट सिद्ध होनेमें अब अधिक विलम्ब नहीं है । उसे विश्वास है कि देवता उसके ऐसे मूढ आदमीकी तो अवहेलना कर सकते हैं, किन्तु मौसीकी प्रार्थनापर ध्यान दिये बिना नहीं रह सकते ।

हृदयमें आश्वास और बल पाकर, करुणा बहुत देरके बाद एक लम्बी साँस छोड़कर उठ बैठी और बोली—मौसी, विहारी बाबूको चिट्ठी लिखकर बुलाओ न !

गौरीने कहा—नहीं, चिट्ठी लिखनेका कोई काम नहीं है ।

करुणाने कहा—तब उनको खबर कैसे दोगी ?

गौरीने कहा—कल मैं स्वयं विहारीसे मिलनेके लिए जाऊँगी ।

❦ ❦ ❦ ❦

सैंतालीसवाँ परिच्छेद

बिहारी जब पश्चिममें घूम रहा था तब उसे जान पड़ा कि किसी एक काममें अपनेको लगा रक्खे बिना शान्ति नहीं मिलेगी। यही सोचकर उसने कलकत्तेके किरानियोंकी चिकित्सा और सेवाका भार अपने ऊपर लिया है। गर्मीकी ऋतुमे छोटे-से गढ़ेकी मछली, जैसे कीचड़-ऐसे थोड़े पानीमें, किसी तरह सनकर संकोचसे रहा करती है,—गलियोंमें रहनेवाले और एक बार, सो भी आधा पेट, खाकर गुजारा करनेवाले परिवार-भार-ग्रस्त किरानियोंका सब सुखोंसे वञ्चित जीवन भी वैसा ही है। उन्हीं विवर्ण, दुर्बल, दुश्चिन्ताग्रस्त भद्र पुरुषोंके ऊपर बिहारीकी करुणा-दृष्टि बहुत दिनोंसे थी। बिहारीने उनको बागकी सघन स्वास्थ्यकर छाया और गंगा-तटकी खुली हुई स्वच्छ हवा देनेका सकल्प किया है।

रेतीपर बाग लेकर उसमे बिहारीने चीनी मिस्त्रियोंके द्वारा सुन्दर छोटी छोटी झोपड़ियाँ तैयार कराना शुरू कर दिया। लेकिन उसके अशान्त मनको चैन नहीं मिली। काममें प्रवृत्त होनेके दिन जितना ही निकट आने लगे उतना ही उसका चित्त अपने संकल्पसे,—इरादेसे, विमुख हो उठा। उसका मन केवल यही कहने लगा—'इस काममे कोई सुख नहीं है, कोई रस नहीं है, कोई सौन्दर्य नहीं है, यह केवल सूखा बोझा है!' किसी कार्यकी कल्पनाने कभी इससे पहले बिहारीको इस तरह क्लेश नहीं दिया था।

एक दिन था जब बिहारीको विशेष कुछ भी न चाहिए था। उसके सामने जो कुछ उपस्थित होता था उसीमें वह अनायास अपनेको लगा सकता था। इस समय उसके हृदयमे एक प्रकारकी भूख-सी पैदा हुई है, उसे निवृत्त किये बिना और किसी काममें उसका जी नहीं लगता। पहलेके अभ्याससे वह यह-वह हाथमें लेकर देखता है, मगर वैसे ही सब छोड़कर उससे छुटकारा पानेकी इच्छा करता है।

बिहारीके भीतर जो जवानी निश्चल भावसे सोई हुई थी, जिसके बारेमे उसने कभी कुछ भी नहीं सोचा था, वह आज मायाके स्पर्शसे जाग उठी है। वह तुरतके पैदा हुए गरुड़ पक्षीकी तरह अपनी खुराकके लिए सारे जगतमे मड़राती फिरती है। भूखे प्राणीके साथ बिहारीका पहले परिचय नहीं था, इस समय वह इसे लेकर व्यस्त हो उठा है। अब वह कलकत्तेके जीर्ण-शीर्ण स्वल्पायु किरानियोंको लेकर क्या करेगा!

आषाढ़की गंगा सामने बही चली जा रही है। दूसरे किनारेपर रह रहकर नीले मेघोंकी घनी घटा वृक्षोंके ऊपर जैसे भारसे झुकी पड़ती है, सम्पूर्ण नदी तल [illegible]

* ऑफिसोंमे काम करनेवाले और थोड़ी तनख्वाह पाकर मुश्किलसे गुजारा करनेवाले क्लर्क लोग।

तकी तरवारकी तरह कहीं उज्ज्वल कृष्णवर्ण धारण किये है और कहीं आगकी तरह चमक रहा है। नई वर्षाके इस समारोहपर जैसे ही बिहारीकी दृष्टि पड़ती है वैसे ही उसके हृदयका द्वार खोलकर आकाशके इस नील स्निग्ध प्रकाशके बीचमें कोई अकेली कामिनी बाहर आ जाती है, कोई अपने स्नान-सिक्त घने लहराते हुए काले केशोंको खोलकर खड़ी हो जाती है और कोई, फटे हुए मेघोंमे फैली हुई सारी किरणोंको वर्षाके आकाशसे एकत्र कर, केवल उसी (बिहारी) के मुखके ऊपर निर्निमेष दृष्टिकी दीन दीप्ति डाल जाती है।

उसका जो पूर्व जीवन सुख और सन्तोषके साथ बीत गया है, उस जीवनको आज बिहारी परम हानि समझ रहा है। ऐसी कितनी ही वर्षा-कालकी सन्ध्यायें, ऐसी ही कितनी पूर्णिमाकी रातें, आई थीं; वे बिहारीके शून्य हृदयके द्वारके निकट आकर, अमृतका पात्र हाथमे लिये, चुपचाप वहाँसे लौट गई हैं। कौन कह सकता है कि उन दुर्लभ शुभ घड़ियोमें कितने सगीत बिना आरभ हुए ही रह गये—कितने उत्सव बिना सम्पन्न हुए खण्डित ही पड़े रहे! बिहारीके मनमे पहलेकी जो सब स्मृति थी उसे आज माया, उस दिनके उद्यत चुम्बनकी रक्तिम आभाके द्वारा, ऐसा फीका और अकिञ्चित्कर (तुच्छ) बना गई! कुजकी छायाकी तरह रहकर उसने अपने जीवनके अधिकाश दिन कैसे बिताये है? उन दिनोंमें क्या कुछ सफलता थी? बेखबर बिहारी तो पहले इसका अनुमान भी नहीं कर सका था कि प्रेमकी वेदनामें सारे जल-स्थल आकाशके केन्द्र-कुहरसे ऐसी रागिनीमें ऐसी बसी बजती है! जिस मायाने दोनो हाथोंसे पकड़कर—घेरकर, एक घड़ीमें, अकस्मात् इस अनुपम सौन्दर्य-लोकमें बिहारीको पहुँचा दिया है उस मायाको वह कैसा भूलेगा? उस मायाकी दृष्टि, उसकी आकाक्षा, आज सर्वत्र व्याप्त हो पड़ी है, उसकी व्याकुल घनी उसाँसे बिहारीके रक्त-स्रोतको प्रतिदिन चचल,—तरगित, कर दिया करती हैं और उसके सुकोमल स्पर्शकी गर्मीने घेरकर उसके पुलकित हृदयको फूलकी तरह प्रफुल्लित कर रक्खा है।

किन्तु तो भी उसी मायाके पापसे आज बिहारी इतनी दूरपर क्यों है? इसका कारण यही है कि मायाने जिस सौन्दर्यके रससे बिहारीका अभिषेक कर दिया है, मनमें वह मायाके साथ उस सौन्दर्यके उपयुक्त किसी सम्बन्धकी कल्पना नहीं कर सका। कमलको ऊपर निकालनेमें कीचड़ भी साथ चली आती है। क्या करकर वह उसे ऐसी किसी जगह स्थापित कर सकता है जहाँ सुन्दर बीभत्स न हो उठे। इसके सिवा कुजसे अगर लाग-डॉट पड़ जाय तो यह मामला ऐसा कुत्सितरूप धारण करेगा कि उसकी सभावनाको बिहारी अपने हृदयके एक कोनेमें भी स्थान नहीं दे सकता। इसीसे बिहारी एकान्त गगातटपर, विश्व-सगीतके बीचमें, अपनी मानसी प्रतिमा प्रतिष्ठित कर उसके आगे अपने हृदयको

धूपकी तरह जला रहा है। इसी लिए वह चिट्ठी लिखकर भी मायाकी कोई खबर नहीं लेता कि कहीं कोई ऐसी खबर न मिले, जिससे उसके स्वप्नका जाल कट-फट जाय।

एक दिन सवेरे ही बिहारी अपने बागके दक्षिण किनारेपर खूब फले हुए जामुनके पेड़के नीचे चुपचाप पड़ा हुआ था। सामने कोठीकी डोंगियाँ आ-जा-रही थीं। बिहारी अलस भावसे पड़ा हुआ उन्हींको देख रहा था। धीरे धीरे दिन अधिक चढने लगा। नौकरने आकर पूछा—भोजनकी तैयारी करूँ या नहीं? बिहारीने 'अभी रहने दो' कहकर उसे बिदा कर दिया। बड़े मिस्त्रीने कुछ विशेष सलाह करनेके लिए बुलाया। बिहारीने कहा—और जरा देर ठहरकर।

इतनेमें एकाएक बिहारी चौंक पड़ा। उसने देखा, सामने गौरी खड़ी है। बिहारी सादर उठ खडा हुआ। उसने दोनों हाथोंसे गौरीके पैर पकड़कर पृथ्वी-पर मस्तक रख प्रणाम किया। गौरीने बड़े स्नेहके साथ अपना दाहिना हाथ बिहारीके सिर और शरीरपर फेरा, और आँसुओंसे भीगे हुए स्वरमें कहा—बिहारी, तू इस प्रकार रोगी-ऐसा क्यों हो गया है?

बिहारीने कहा—चाचीजी, तुम्हारा स्नेह फिरसे पानेके लिए।

सुनकर गौरीकी आँखोंमें आँसू आ गये। बिहारीने व्यस्त होकर कहा—चाची, तुमने अभी भोजन नहीं किया?

गौरीने कहा—नहीं, अभी मेरे भोजनका समय नहीं हुआ।

बिहारीने कहा—चलो, मैं चलकर रसोईका सामान तैयार कर दूँ। आज बहुत दिनोंके बाद तुम्हारे हाथकी रसोई और तुम्हारी थालीका प्रसाद पाऊँगा।

बिहारीने कुज और करुणाके बारेमें कोई भी बात नहीं उठाई। गौरीने एक दिन अपने हाथसे उस तरफका द्वार बिहारीके लिए बद कर दिया है। इसी लिए उसने अभिमानके साथ उस निष्ठुर निषेधका पालन किया।

भोजनके बाद गौरीने कहा—नाव घाटपर तैयार है बिहारी, अब जरा मेरे साथ कलकत्ते चल।

बिहारीने कहा—कलकत्तेमें मेरा क्या प्रयोजन है?

गौरीने कहा—जीजी बहुत बीमार हैं, वे तुझे देखना चाहती हैं।

यह सुनकर बिहारी चौंक पड़ा। उसने पूछा—कुज दादा कहाँ हैं?

गौरीने कहा—कलकत्तेमें नहीं है। पश्चिमकी तरफ चला गया है।

सुनते ही बिहारीके चेहरेका रग उड़ गया। वह चुप रह गया।

गौरीने पूछा—तू क्या सब बातें नहीं जानता?

बिहारीने कहा—कुछ कुछ जानता हूँ, मगर अन्ततक नहीं जानता।

तब गौरीने मायाको लेकर कुजके पश्चिम भाग जानेकी बात बताई। बिहारीकी दृष्टिमें उसी घड़ी जल-स्थल-आकाशका सारा रग बदल गया। उसने अपनी

कल्पनाके भाण्डारमें जितना रस सचित कर रक्खा था वह सब पल-भरमें तीखा हो उठा।

बिहारी अपने मनमे कहने लगा—तो क्या मायाविनी माया उस दिन सन्ध्याके समय मेरे साथ एक तमाशा ही कर गई थी? उसका प्रेममे आत्म-समर्पण कर देना क्या सब छल, धोखा, जाल-साजी थी? वह अपना गॉव छोड़कर इस तरह निर्लज्ज भावसे कुजके साथ अकेले पश्चिम चली गई! धिक्कार है मुझे! मैं मूढ हूँ जो मैने एक घड़ीके लिए भी उसका विश्वास किया!

हाय, बादलोंसे घिरी हुई आषाढकी सन्ध्या और हाय, बरस जानेपर छिटकी हुई चाँदनीसे परिपूर्ण पूर्णिमा, तुम्हारा वह इन्द्रजाल कहाँ गया?

अड़तालीसवाँ परिच्छेद

बिहारी सोचता था कि मैं दुखिया करुणाकी तरफ किस तरह देख सकूँगा! जब बिहारी ड्योढीमें घुसा तब अनाथ घरके घनीभूत विषादने उसे दम-भरमें दबा लिया। घरके दर्वान और चाकरोंके चेहरेकी तरफ देखकर उन्मत्त और लापता कुजकी लज्जाके मारे बिहारीका सिर झुक गया। वह पहलेके स्नेह-भरे सरस स्वरमें पूर्व-परिचित पुराने नौकरोंसे कुशल-प्रश्न न कर सका। भीतर जनानेकी ड्योढीमें घुसनेके लिए जैसे पैर बढते ही नहीं। कुज सारे संसारके सामने असहाय करुणाको प्रकाश्य-भावसे जिस अपमानमें छोड़कर चला गया है, जो अपमान, स्त्रियोंके चरमतम आवरण (लज्जा) को भी हटाकर, उनको सपूर्ण ससारकी कुतूहलभरी कृपादृष्टि-वर्षाके बीचमें खड़ा कर देता है उसी अपमानकी, अनावृत्त प्रकाश्यतामें, कुण्ठित-व्यथित करुणाको बिहारी, हृदयसे, किस तरह देख सकेगा?

किन्तु इन सब बातोंके सोचने विचारने और सकोच करनेके लिए अवसर नहीं रहा। भीतर घुसते ही करुणाने जल्दीसे आकर कहा—जरा जल्दीसे चलकर माको देखो, उन्हें बड़ा कष्ट हो रहा है!

बिहारीके साथ प्रकाश्य भावसे करुणाकी बातचीतका यह पहला ही अवसर है। दुःखके दुर्दिनकी हवाका एक सामान्य झोंका सारे अन्तरको उड़ा ले जाता है,—जो दूर दूर रहते हैं उनको, अचानककी बढ़ियामें, एक तग डोंगीके ऊपर एकत्र कर देता है।

करुणाकी इस सकोच-हीन व्याकुलतासे बिहारीको चोट लगी। कुज अपने घरको क्या से क्या बना गया है, इस बातको बिहारीने इसी क्षुद्र घटनासे बहुत कुछ जान लिया। दुर्दिनकी मारसे जैसे घरकी सजावट और सौन्दर्य उपेक्षित हो रहा है

वैसे ही गृह-लक्ष्मीको श्री तक रखनेका भी अवसर नहीं रहा है, छोटा मोटा पर्दा, आड़, बातचीत करने न करनेका विचार, सब गिर गया है। उसकी तरफ भ्रूक्षेप करनेका भी समय नहीं है।

बिहारी लक्ष्मीके कमरेमे गया। लक्ष्मीका, कुछ देरके लिए, साँसका कष्ट बढ़ गया था जिससे वह व्याकुल हो उठी थी। साँसका कष्ट बहुत देर तक वैसा ही न रहनेके कारण कुछ देरमें वह फिरसे कुछ स्वस्थ हो गई।

बिहारीने प्रणाम करके उसके पैरोंकी रज मस्तकपर लगाई। लक्ष्मीने उससे पास बैठनेके लिए इशारा किया और उसके बैठ जानेपर धीरे धीरे कहा—कैसा है बिहारी? कितने दिनसे तुझे नहीं देखा!

बिहारीने कहा—मा, तुमने अपनी बीमारीकी खबर मुझको क्यों नहीं दी? तुम्हारी बीमारीकी खबर पाता तो क्या फिर मेरे आनेमें एक घड़ीकी भी देर होती?

लक्ष्मीने कोमल स्वरसे कहा—सो क्या मैं जानती नहीं बेटा? तुझको मैंने अपने गर्भमें नहीं रक्खा है सही, किन्तु जगतमे तुझसे बढकर मेरा सगा और कोई नहीं है!—

यह कहते कहते लक्ष्मीकी आँखोंसे आँसू गिरने लगे।

बिहारीने झट उठकर, आलेमे रक्खी हुई दवाकी शीशियोंको देखने और जाँचनेके मिससे, अपनेको सँभालनेकी चेष्टा की। लौटकर जब वह लक्ष्मीकी नाड़ी देखनेको उद्यत हुआ, तब लक्ष्मीने कहा—मेरी नाड़ी देखना रहने दे, मैं पूछती हूँ कि तू इस तरह रोगी-ऐसा क्यों हो गया है?

इतना कहकर लक्ष्मी अपना दुर्बल हाथ उठाकर बिहारीके सिरपर फेरने लगी।

बिहारीने कहा—तुम्हारे हाथकी कढ़ी खाये बिना मेरे शरीरकी ये हड्डियाँ किसी तरह नहीं भर सकतीं। तुम जल्दी जल्दी चंगी हो जाओ मा, मैं तबतक रसोईकी तैयारी कर रक्खूँ।

लक्ष्मीने बुझी हुई हँसीके साथ कहा—जल्दी जल्दी तैयारी कर बेटा—लेकिन रसोईकी नहीं।

यह कहकर उसने बिहारीका हाथ पकड़कर कहा—बिहारी, अब तू अपने लिए बहू ले आ, घरमें तुझे देखने-सुननेवाला, तेरी सेवा करनेवाला, आदमी कोई नहीं है। (गौरीसे) ओ मँझली बहू, तुम अबकी बिहारीका ब्याह कर डालो—देखो न, लड़केका चेहरा कैसा हो गया है!

गौरीने कहा—तुम जल्दीसे चंगी हो जाओ जीजी, यह तो तुम्हारा ही काम है। करो-धरोगी सब तुम, हम सब तो मिलकर खुशी मनावेंगी।

लक्ष्मीने कहा—मुझे तो अब ऐसा करनेका मौका मिल नहीं सकता मँझली बहू बिहारीको तुम्हें सौंपती हूँ—इसे सुखी बनाना। मैं इसका ऋण चुकाकर न जा सकी—किन्तु भगवान् इसका भला करेंगे।—

यों कहकर लक्ष्मीने अपना दाहिना हाथ बिहारीके सिरपर फेर दिया।

करुणासे उस कमरेमें रहा नहीं गया—वह रोनेके लिए बाहर चली गई।

गौरीने सजल स्नेहकी दृष्टिसे एक बार बिहारीकी तरफ देखा।

लक्ष्मीको एकाएक न जाने क्या याद आया—उसने पुकारा—बहू, ओ बहू!

करुणाके कमरेमें आते ही लक्ष्मीने कहा—बिहारीके खाने-पीनेका तो सब इन्तजाम किया है न?

बिहारीने कहा—मा, तुम्हारे इस पेटू लड़केको सभीने पहचान लिया है। ड्योढ़ीमे घुसते ही मैंने देखा कि महरा बाजारसे तरह तरहकी तर्कारी फल-मेवा वगैरह सामान लिये चला आ रहा है। समझ गया कि इस घरसे अभी तक मेरी' सुख्याति लुप्त नहीं हुई है।

यों कहकर हँसते हुए बिहारीने एक बार करुणाकी तरफ देखा।

आज करुणा शरमाई नहीं। उसने स्नेहके साथ मद मुसकानसे बिहारीकी हँसीका अभिनन्दन किया। करुणा पहले अच्छी तरह नहीं जानती थी कि बिहारी इस घरका कैसा हितू है। अनेक बार उसने बिहारीको अनावश्यक आनेवाला समझकर उसे अवज्ञाकी दृष्टिसे देखा है, अनेक बार बिहारीके प्रति उसका विमुख भाव उसके बर्तावसे,—आचरणोंसे, स्पष्ट प्रकट हो गया है। उसी पश्चात्तापके धिक्कारमें आज उसकी श्रद्धा और करुणा बिहारीके प्रति बहुत बढ गई।

लक्ष्मीने कहा—मँझली बहू, यह काम मिसरानीका नहीं है, आजकी रसोई तुमको खुद खड़े रहकर बनवानी होगी। मेरा यह देहाती लड़का ढेर-भर चरपरी चटीके बिना पेट-भर खाता ही नहीं।

बिहारीने कहा—मा, तुम्हारी मा थीं उन्नाव जिलेके एक गाँवकी लड़की और तुम खास शहरके रहनेवाले भले मानसके लड़केको देहाती कहती हो? यह मुझसे सहा न जायगा।

इसी बातको लेकर बहुत-सी हँसी दिल्लगी हुई और बहुत दिनोंके बाद कुंजके घरकी उदासी मानो हल्की हो गई।

किन्तु इतनी बातचीतमें किसी तरफसे किसीने कुजका नाम नहीं लिया। पहले लक्ष्मी बिहारीसे कुजकी ही बातचीत किया करती थी। इसके लिए खुद कुंजने कई बार माकी हँसी उड़ाई है। आज उसी लक्ष्मीके मुँहसे एक बार भी कुजका नाम न सुनकर बिहारी सन्नाटेमें आ गया।

लक्ष्मीको जरा नींद आते ही बिहारीने बाहर आकर गौरीसे कहा—माकी बीमारी तो सहज नहीं है।

गौरीने कहा—सो तो स्पष्ट ही देख पड़ता है।

इतना कहकर गौरी दर्वाजेके पास ही दालानमें बैठ गई। बहुत देर तक चुप

रहनेके बाद उसने कहा—बिहारी, अब तो तुझे कुजको बुलाकर लाना होगा; अब देर करना उचित नहीं।

बिहारीने कुछ देरतक निरुत्तर रहकर कहा—तुम जो आज्ञा करोगी मैं वही करूँगा। उसका पता-ठिकाना क्या कोई जानता है?

गौरीने कहा—ठीक ठीक कोई नहीं जानता। ढूँढ लेना होगा। बिहारी, और एक बात मैं तुमसे कहती हूँ। चुन्नीके मुँहकी तरफ देख। मायाके हाथसे अगर तू कुजका उद्धार न कर सकेगा तो अब वह बच नहीं सकती। उसका मुँह देखनेसे ही तू समझ सकेगा कि उसके हृदयमें मृत्युका बाण लगा है।

बिहारीने मन-ही-मन तीव्र हँसी हँसकर कहा—औरको तो मैं उबारने जाऊँगा,—मगर भगवान्, मुझे कौन उबारेगा?

बिहारीने कहा—मायाके खिंचावमे कुजको चिरकाल तक रोक रखनेका मन्त्र मैं क्या जानूँ चाचीजी! माकी बीमारीमे वह दो दिनके लिए तो शान्त होकर घरमें रह सकता है; किन्तु यह बात मैं कैसे कह सकता हूँ कि वह फिर उस तरफ नहीं फिरेगा!

इसी समय करुणा मैले कपड़े पहने और आधा घूँघट काढे हुए धीरे धीरे अपनी मौसीके पैरोंके पास आकर बैठ गई। वह जानती थी कि बिहारी लक्ष्मीकी बीमारीके बारेमें गौरीके साथ बातचीत कर रहा है, इसीसे वह उत्सुकताके साथ सुननेके लिए आई। पतिव्रता करुणाके मुँहपर निस्तब्ध दुःखकी नीरव छाया देखकर बिहारीके मनमें एक अपूर्व भक्तिका उदय हुआ। शोकके तपे हुए तीर्थ-जलमें नहाई इस जवान स्त्रीने प्राचीन युगकी देवियोंके समान एक स्थिर मर्यादा पाई है। यह अब साधारण स्त्री नहीं है—दारुण दुःखमें, मानो पुराणोंमें वर्णन की हुई, सती-साध्वी स्त्रियोंके समान हो गई है।

बिहारीने करुणाके साथ लक्ष्मीके पथ्य और औषधके सम्बन्धमें बातचीत करके जब बिदा ली तब एक लबी साँस छोड़कर गौरीसे कहा—कुजको मैं उबारूँगा!

बिहारीने कुजके बैंकमें जाकर खबर पाई कि कुछ दिनोंसे कुजने उस बैंककी इलाहाबादवाली शाखा (ब्राच) से लेन-देन शुरू किया है।

❦ ❦ ❦

उनचासवाँ परिच्छेद

स्टेशनपर आकर माया एकदम ड्योढे दर्जेकी जनानी गाड़ीमें चढकर बैठ गई। कुजने कहा—यह क्या करती हो, मैं तुम्हारे लिए दूसरे दर्जेका टिकट खरीदता हूँ।

मायाने कहा—जरूरत क्या है, यहाँ मैं बड़े आरामसे बैठूँगी।

कुजको आश्चर्य हुआ। माया स्वभावसे ही शौकीन थी। पहले गरीबीका कोई लक्षण उसे अच्छा न लगता था। अपनी गरीबीको वह अपने लिए अपमानकी बात समझती थी। कुजने इतना ही समझा था कि मेरे घरमे रुपये पैसेकी ओर ऐशके साज-सामानकी कमी नहीं है, सब तरहकी शौककी चीजें इच्छा करते ही मँगाई जा सकती हैं, धनी होनेके कारण सर्व साधारणके बीच मेरा गौरव है, मेरी प्रतिष्ठा है,—इन्हीं सब बातोंको देखकर एक समय मायाका मन मेरी ओर आकृष्ट हुआ था। वह अनायास ही इस धन-सम्पत्तिकी, इस सारे आराम और गौरवकी, स्वामिनी हो सकती,—इसी कल्पनाने उसके मनको अत्यन्त उत्तेजित बना दिया था। आज जब कुजके ऊपर प्रभुत्व प्राप्त करनेका समय हुआ, जब विना माँगे भी वह कुजकी सारी सम्पत्तिका उपभोग कर सकती है, तब वह ऐसी असह्य उपेक्षाके साथ अत्यन्त उद्धत भावसे कष्ट और लज्जा देनेवाली दीनताको क्यों स्वीकार किये लेती है? वह कुजके प्रति अपने अवलम्बको,—भरोसेको यथा-सम्भव संकुचित कर रखना चाहती है। जिस उन्मत्त कुजने उसे अपने स्वाभाविक और उचित आश्रयसे चिरजीवनके लिए च्युत कर दिया है,—अलग कर दिया है, उस कुंजके हाथसे वह ऐसा कुछ नहीं चाहती जो उसके इस सर्वनाशका मूल्य गिना जा सके। जब माया कुंजके घरमें थी तब उसकी रहन-सहनमें वैधव्य-व्रतकी कड़ाई कुछ इतनी नहीं देखी जाती थी किन्तु, इतने दिनोंके बाद, अब उसने अपनेको सब प्रकारके भोगोंसे रहित बना लिया है। इस समय वह एक बेला भोजन करती है, मोटा कपड़ा पहनती है। उसकी वह लगातार हँसी दिल्लगी करनेकी बान भी न जाने कहाँ चली गई है। इस समय वह ऐसी चुपचाप रहती है, आपको इस तरह ढँके हुए और दूर दूर रखती है, ऐसी भयानक हो उठी है कि कुजको साधारण-सी बात भी जोर देकर या दबाव डालकर कहनेका साहस नहीं होता। कुज आश्चर्यके साथ अधीर होकर, क्रुद्ध होकर, केवल यही सोचने लगा कि मायाने मुझे इतनी चेष्टा करके दुर्लभ फलकी तरह ऊँची शाखासे तोड़ लिया, किन्तु उसके बाद सूँघा भी नहीं, और आज यह जमीनपर फेंक देनेकी तैयारी की है। यह क्यों?

कुजने पूछा—कहाँका टिकट लूँ?

मायाने कहा—पश्चिमकी तरफ, जहाँ खुशी हो चलो।—आज सवेरे जहाँ गाड़ी ठहरेगी, वहीं उतर पड़ूँगी।

ऐसा भ्रमण करना कुजके लिए कोई लोभकी चीज नहीं। ऐसी सैर और यात्रा उसे पसन्द नहीं। आराममें खलल पहुँचना उसके लिए बड़े ही कष्टकी बात है। बड़े शहरमें जाकर अगर रहनेके लिए अच्छा मकान और सामान न मिले तो उसके लिए बड़ी ही कठिनाई है। वह खोज खाजकर ठीक टाक करनेवाला आदमी नहीं है, इसी कारणसे कुज अत्यन्त क्षोभ और झल्लाहटके साथ गाड़ीपर

सवार हुआ। थोड़ी देरके बाद उसे यह खटका हुआ कि माया उससे बिना कहे ही कहीं किसी स्टेशनपर उतर न पड़े।

माया इसी प्रकार सनीचरकी तरह स्वयं घूमने और साथ ही कुजको घुमाने लगी। उसके मारे कुजको कहीं विश्राम नहीं मिला। मायामें यह शक्ति है कि वह बहुत जल्द आदमीको अपना लेती है। यही कारण था कि वह बहुत ही थोड़े समयमें गाड़ीपर चढने-उतरनेवाली औरतोंसे हेल-मेल पैदा कर लेती थी। जहाँ जानेकी इच्छा होती थी वहाँकी सब खबर पहले ही ले लिया करती थी। धर्मशालाओंमें ठहरती थी और जहाँ जो जो चीजें देखनेके लायक होतीं थीं उन्हें घूम घूमकर देख लेती थी। कुज इस बातसे अपना अपमान समझने लगा कि मायाको उसकी कुछ भी आवश्यकता नहीं पड़ती। टिकट खरीदनेके सिवा उसका और कुछ भी काम न था। बाकी समयमें उसकी प्रवृत्ति उसको डसा करती थी और वह अपनी प्रवृत्तिको डसा करता था। पहले पहल कुछ दिनतक तो वह मायाके साथ साथ रास्ते रास्ते घूमा किन्तु धीरे धीरे यह उसे असह्य हो उठा। तब कुज भोजनके उपरान्त सोनेकी चेष्टा करने लगा और माया दिनभर दूसरी यात्रा करनेवाली स्त्रियोंके संग घूमने लगी। किसीने कल्पना भी न की होगी कि माताका दुलारा स्नेहपालित कुज कभी इस तरह घर छोड़कर बाहर राह-राह मारा मारा फिरेगा।

एक दिन इलाहाबाद स्टेशनपर दोनों आदमी गाड़ीके आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे, किसी आकस्मिक कारणसे गाड़ीके आनेमें विलम्ब हो रहा था। इस बीचमें जितनी गाड़ियाँ आ जा रही थीं उनके यात्रियोंको माया अच्छी तरह देखती भालती जाती थी। जान पड़ता है उसको यही आशा है कि पश्चिममें घूमते घूमते चारों तरफ देखते देखते एकाएक कोई उसे मिल जायगा। कमसे कम, उसका यह खयाल है कि, निरन्तर रुँधी हुई तंग गलीमें, निर्जन घरमें, निश्चल उद्यमसे अपनेको दबा मारनेकी अपेक्षा तो इस नित्यकी अनुसन्धान-परतामें, इस खुली हुई सड़कके जन कोलाहलमें, ही बहुत शान्ति है।

एकाएक स्टेशनके एक शीशेके बाक्सके ऊपर मायाकी दृष्टि पड़ते ही वह चौंक पड़ी। यह बाक्स पोस्ट आफिसका था। इसमें उन आदमियोंके पत्र सजाकर रक्खे रहते हैं जिनका पता नहीं लगता। उसी बाक्समें रखी हुई एक चिट्ठीपर मायाने विहारीका नाम देखा। 'विहारीलाल' नाम कुछ असाधारण नहीं है। यह समझनेका कोई कारण न था कि इस पत्रवाला 'विहारी' ही मायाका विहारी है तो भी, उसका पूरा नाम देखते ही मायाको निश्चय हो गया कि यह उसी विहारीकी चिट्ठी है। चिट्ठीपर लिखे हुए पतेको मायाने याद कर लिया। कुज एक बेंचके ऊपर अत्यन्त उदास भावसे बैठा हुआ था। मायाने वहाँ आकर कहा—कुछ दिन इलाहाबादमें ही रहूँगी।

माया एक तो कुजको अपनी इच्छाके अनुसार चलाती थी और, इसपर, उसके भूखे अतृप्त हृदयको खुराक भी नहीं देती थी, इससे कुजके पौरुषाभिमानको प्रतिदिन चोट पहुँचती थी और उसका हृदय विद्रोही होता जाता था। कुज इलाहाबादमें कुछ दिन रहकर अगर विश्राम करनेका अवसर पा सके तो मानो उसकी जान बच जाय। यह वह चाहता ही था। किन्तु यह बात, उसकी इच्छाके अनुकूल होनेपर भी, जब मायाने, अपनी इच्छाके रूपमें, प्रकट की तब कुजका मन उसके विरुद्ध हो गया।

कुजने चिढकर कहा—जब चलनेके लिए स्टेशनपर आ गये, तब लौटना क्या ? मैं तो जाऊँगा।

मायाने कहा—मैं तो नहीं जाऊँगी, यहीं ठहरूँगी।

कुजने कहा—तो तुम अकेली रहो, मैं जाता हूँ।

मायाने 'बहुत अच्छी बात है' कहकर कुलीको बुलाया और अपना बाक्स और बिछौने उसके सिरपर लदाकर वह स्टेशनसे चल दी।

कुज, पुरुषके कर्तृत्वका अधिकार लिये हुए, बेंचपर बैठा रहा, उसका मुँह जैसे धुआँ हो गया। जब तक माया दिखाई पड़ी तब तक वह स्थिर-भावसे बैठा रहा, किन्तु जब मायाने एक बार भी उसकी तरफ फिरकर नहीं देखा और वह स्टेशनसे बाहर निकल गई तब कुज भी कुलीके सिरपर जल्दीसे सब सामान लदवाकर उसी तरफ चल पड़ा। बाहर आकर देखा, माया एक किरायेकी घोड़ा-गाड़ीपर चढ़ी बैठी है। कुजने कुछ नहीं कहा, चुपचाप गाड़ीके ऊपर असबाब रखवाकर आप कोचमैनके पास बैठ गया। अपने अभिमानको दलित कर गाड़ीके भीतर मायाके सामने बैठने लायक उसका मुँह नहीं रहा।

गाड़ी बराबर चली जा रही है। एक घंटा हो गया, धीरे धीरे शहरकी बस्ती छूट गई, खेतोंके मैदान देख पड़े। गाड़ीवानसे यह पूछनेमें कुजको लज्जा मालूम पड़ने लगी कि गाड़ी कहाँ जा रही है। गाड़ीवान समझेगा कि यह भीतरकी औरत ही मालिक है, इसी लिए उसने इस अनावश्यक आदमीसे यह भी सलाह नहीं की कि कहाँ चलना होगा।

कुज अपने रोषपूर्ण अभिमानको मन-ही-मन पकाता हुआ चुपचाप कोच-बाक्स-पर बैठा रहा।

यमुनाके किनारे, सन्नाटेकी जगहमें, एक सुरक्षित बागके बीचमें जाकर गाड़ी खड़ी हो गई। कुजको बड़ा ही आश्चर्य हुआ। यह किसका बाग है ? इस बागका पता मायाको किस तरह मालूम हुआ ?

बागके भीतरका मकान बंद था। बहुत पुकारनेपर एक बूढ़ा ब्राह्मण बाहर

निकला। उसने कहा—इस बाग और मकानके मालिक बहुत दूरपर नहीं रहते। उनकी मजूरी ले आनेपर आप लोग इस बागमें रह सकते हैं।

मायाने कुजकी तरफ देखा। कुंजको भी इस मनोहर घर और बागको देखकर रहनेकी लालसा हो आई थी। बहुत दिनोंके बाद कुछ समय तक टिककर रहनेकी सभावनासे वह प्रफुल्ल हो उठा और मायासे बोला—तो चलो मालिकके घरपर चलें। तुम बाहर गाडीपर बैठी रहना, मैं भीतर जाकर मालिकसे किराया ठीक करके रहनेकी अनुमति ले आऊँगा।

मायाने कहा—अब मुझसे घूमा-फिरा न जायगा—तुम ही जाओ, मैं तब तक यहाँ विश्राम करती हूँ। यहाँ अकेले रहनेमें मुझे कोई भयका कारण नहीं देख पड़ता।

कुंज गाड़ी लेकर चला गया। मायाने बूढे ब्राह्मणको बुलाकर उसके लड़के बालोंके बारेमें पूछना-ताछना शुरू कर दिया—तुम कौन ब्राह्मण हो, तुम्हारे कितने लड़के हैं, कहाँ नौकर-चाकर हैं, तुम्हारी लड़कियोंका ब्याह कहाँ हुआ है, इत्यादि। बूढ़ेकी स्त्रीके मरनेका हाल सुनकर मायाने करुण स्वरमे कहा—आहा! तुमको तो बड़ा कष्ट है, इस अवस्थामे तुम अकेले रह गये हो, तुमको देखने-सुननेवाला, तुम्हारी सेवा शुश्रूषा करनेवाला कोई नहीं है!

इसके बाद मायाने बातों-बातोंमें पूछा—यहाँ तो बिहारी बाबू रहते थे न!

बूढेने कहा—हाँ, कुछ दिन तो जरूर रहे थे। माजी, आप क्या उनको पहचानती हैं!

मायाने कहा—वे हमारे रिश्तेदार होते हैं।

मायाने बूढेसे बिहारीका ब्योरा और वर्णन जैसा सुन पाया उससे उसे कोई सन्देह नहीं रह गया—निश्चय हो गया कि यह वे ही बिहारी हैं। मायाने बुड्ढेसे घर खुलवाकर और उससे पूछकर यह भी जान लिया कि बिहारी कहाँ सोता था, कहाँ बैठता था। उसके यहाँसे जानेके बादसे सब कमरे वैसे ही बन्द थे। मायाको मालूम पड़ा कि मानो अदृश्य बिहारीका अस्तित्व घर-भरमें भरा हुआ है, हवा उसे उस जगहसे उड़ाकर नहीं ले जा सकी है। मायाने उसे जी भर सूँघकर मानो अपने हृदयमें भर लिया—वहाँकी जमी हुई हवाको अपने अगोंमे लगाया। किन्तु बिहारी कहाँ गया, इसका पता कुछ नहीं लगा। उसका फिर यहाँ लौटकर आना भी सभव है,—स्पष्ट कुछ भी नहीं जाना जाता। ब्राह्मणने मायाको यह भरोसा दिया कि मैं अपने मालिकसे इस बारेमें पूछकर ठीक ठीक खबर दूँगा।

पेशगी किराया देकर और रहनेकी मजूरी लेकर कुंज लौट आया।

पचासवाँ परिच्छेद

हिमालय पहाड़का शिखर यमुनाको जो, बर्फसे गल-गलकर बहनेवाली, जलकी धारा देता है वह अनन्त है। इसी तरह, कितने ही प्राचीन और अर्वाचीन, कवियोंने मिलकर उस यमुनामें जो कवित्वका स्रोत बहा दिया है वह भी अक्षय है। इस कवित्व-स्रोतकी कल-ध्वनिमें कितने ही विचित्र छन्द ध्वनित हैं और इसकी लहरोंकी लीलामें न जाने कितने कालका पुलकित उच्छ्वसित 'भाव' का आवेग उद्वेलित हो उठा करता है।

शामको कुंज उसी यमुनाके किनारे जा बैठा। उस समय घनीभूत प्रेमके आवेशने उसकी दृष्टिमें, उसकी साँसमें, उसकी नसोंमें, उसकी हड्डी हड्डीमें, प्रगाढ मोह-रसका प्रवाह बहा दिया। आकाशमें अस्त होते हुए सूर्यकी किरणोंकी सुवर्ण-वीणा, वेदनाकी 'मूर्च्छना'में, एक अश्रुतपूर्व संगीतके स्वरमें झनक उठी।

दिनकरकी दीप्ति लंबे-चौड़े रेतीके निर्जन कगारमें विचित्र रंगोंकी छटा दिखाकर धीरे धीरे मिट गई। कुंजका मन काव्य-लोकमें पहुँच गया। उसने आँखें बंद किये किये देखा कि गायोंके खुरोंसे धूल उड़ रही है, अँधेरा हो रहा है, गायें वृन्दावनसे अपने थानको रँभाती हुई लौट रही हैं।

बरसातके घने बादलोंसे आकाश छा गया। अपरिचित स्थानका अन्धकार, केवल काले रंगका पर्दा ही नहीं होता वह, विचित्र रहस्यसे परिपूर्ण भी हुआ करता है। उसके भीतरसे जितनी आभा,—जितना आकार, देखनेको मिलता है, वह अज्ञात अनुच्चरित भाषामें बोलता है। दूसरे किनारेकी रेतीका अव्यक्त पीलापन, तरंगहीन जलकी स्याहीके समान कालिमा, बागमें खूब घनी पत्तियोंसे लदे हुए बड़े बड़े नीमके पेड़ोंकी पुंजीभूत निस्तब्धता और वृक्षहीन मटमैले तटकी बाँकी रेखा,—सबने उस आषाढकी सन्ध्याके अन्धकारमें तरह तरहके अनिर्दिष्ट अपरिस्फुट आकारोंमें मिलकर कुंजको चारों तरफसे घेर लिया।

उस समय कुंजको (काव्यमें पढा हुआ) वर्षाऋतुका 'अभिसार' याद आ गया। 'अभिसारिका'* घरसे चल पड़ी है, यमुनाके दूसरे किनारेपर अकेली आकर खड़ी हुई है। पार किस तरह होगी? "पार करौ कोऊ पार करौजी।"—कुंजके हृदयके भीतर यही पुकार पहुँच रही है—"पार करौ कोऊ पार करौ जी।"

नदीके दूसरे तटपर अंधकारमें बहुत दूरपर वह अभिसार करनेवाली है—तो भी कुंजने उसे स्पष्टरूपसे देख लिया। उसका समय नहीं है, उसकी अवस्था नहीं है, वह चिरकालकी गोप-बाला है, किन्तु तो भी उसे कुंजने पहचान लिया कि वह

*अभिसारिका, वह स्त्री कहलाती है, जो किसी नियत स्थानपर स्वयं नायकसे मिलने जाती है अथवा नायकको अपने पास बुलाता है।

उसीकी माया है। वह सारा विरह, सारी वेदना, और संपूर्ण यौवन-भार लिये न जाने किस 'समय' से इस अभिसारकी यात्राके लिए निकली है और अब कितने ही गान, कितने ही छदोंके भीतर होकर इस 'समय' के इस तटपर आकर उतरी है, आजके इस जन-हीन यमुना तटके ऊपरके आकाशमें उसीके कठका स्वर सुनाई पड़ता है 'पार करौ कोऊ पार करौ जी।' पार पहुँचानेवाली नावके लिए वह इस अन्धकारमें और कब तक इस तरह अकेली खड़ी रहेगी?—'पार करौ कोऊ पार पार करौ जी।'

बादलोंका एक छोर हट गया, और कृष्ण-पक्षकी तृतीयाका चद्रमा देख पड़ा। चॉदनीके मायामय मत्रसे वह नदी और नदी तट, वह आकाश और आकाशका किनारा, पृथ्वीसे बाहर बहुत दूर चला गया, उससे और मनुष्यलोकसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं रह गया। समय-प्रवाहका सिलसिला टूट गया—अतीत कालका सारा इतिहास लुप्त हो गया, भविष्यत् कालका फलाफल अतर्हित हो गया। केवल यही रजत-धारा-प्लावित वर्तमान काल मात्र यमुना और यमुना-तटके बीचमें कुज और मायाको लेकर विश्व-विधानके बाहर चिरस्थायी हो रहा।

कुज मतवाला हो उठा। वह यह कल्पना भी न कर सका कि माया उसे अस्वीकार करेगी और चॉदनी रातके इस निर्जन स्वर्ग-खण्डको लक्ष्मीके रूपसे सब तरह सम्पूर्ण न कर देगी। उसी समय उठकर वह मायाकी खोजमें घरकी तरफ चल दिया।

सोनेके घरमें उसने आकर देखा, घर फूलोंकी महकसे भरा हुआ है। खुले हुए दर्वाजेकी राहसे चॉदनीकी आभा सफेद बिछौनेके ऊपर आकर पड़ रही है। मायाने बागसे फूल बीनकर बहुत-सी मालायें गूँथी हैं और उनमेंसे कुछ चोटीमें लपेटी हैं, कुछ गलेमें पहनी हैं और कुछ कमरमें बॉधी हैं। फूलोंसे सजकर वह वसन्त-कालकी फूलोंके बोझसे झुकी हुई लताकी तरह चॉदनीमें बिछौनेके ऊपर पड़ी हुई है।

कुंजका मोह दूना हो उठा। वह रुँधे हुए गद्गद कण्ठसे कह उठा—माया, मैं यमुनाके किनारे बैठा हुआ तुम्हारी राह देख रहा था। आकाशके चद्रमाने मुझको खबर दी कि तुम यहॉ बैठी हुई मेरी राह देख रही हो, इसीसे मैं चला आया।

इतना कहकर कुज बिछौनेपर बैठनेके लिए आगे बढा।

माया झटपट चोंककर उठ बैठी और दाहिना हाथ बढाकर कहने लगी—जाओ, जाओ, तुम इस बिछौनेपर न बैठना।

हवासे भरे हुए 'पाल' के जोरसे तेजीके साथ जाती हुई नाव उथलेमें ठोकर खाकर रुक गई—कुज स्तम्भित-सा होकर खड़ा रह गया। बहुत देरतक उसके मुँहसे कोई बात न निकल सकी। कुज शायद मना कियेसे न माने, इस आशकासे माया उठकर बिछौनेसे अलग खड़ी हो गई।

कुंजने कहा—तो तुमने किसके लिए यह सजावट की है—यह शृंगार किया है? किसके लिए अपेक्षा कर रही हो?

मायाने अपने हृदयपर हाथ रखकर कहा—जिनके लिए शृंगार किया है, वे मेरे हृदयमें हैं।

कुंजने कहा—वह कौन है?—विहारी?

मायाने कहा—उनका नाम तुम अपनी जबानपर न लाना!

कुंजने कहा—उसीके लिए तुम पश्चिममें घूमती फिरती हो?

मायाने कहा—हाँ, उन्हींके लिए।

कुंजने कहा—उसीके लिए तुम यहाँ अपेक्षा किये बैठी हो?

मायाने कहा—उन्हींके लिए।

कुंजने कहा—उसका पता जानती हो?

मायाने कहा—जानती तो नहीं हूँ, मगर जिस तरह होगा पता लगा लूँगी।

कुंजने कहा—मैं किसी तरह पता न लगने दूँगा।

मायाने कहा—अगर पता न लगने दोगे तो न सही। मगर, यह तो निश्चय है कि मेरे हृदयसे उनको किसी तरह निकाल न सकोगे।

इतना कहकर मायाने आँखें बंद करके अपने हृदयमें एक बार विहारीका अनुभव कर लिया।

उस पुष्पाभरणभूषित विरह-विधुर-मूर्ति मायाके द्वारा एक साथ ही प्रबल वेगसे अपनी ओर खींचे जाने और पीछे ढकेल दिये जानेके कारण कुंज एकाएक भयानक हो उठा। उसने दोनों हाथोंकी मुट्ठियाँ बाँधकर कहा—छुरीसे चीरकर तुम्हारे हृदयसे उसको बाहर निकाल डालूँगा!

माया विचलित नहीं हुई। उसने कहा—तुम्हारे प्रेमकी अपेक्षा तुम्हारी छुरी मेरे हृदयमें सहज ही प्रवेश कर जायगी।

कुंजने कहा—तुम मुझको डरती क्यों नहीं, यहाँ तुम्हारी रक्षा करनेवाला कौन है?

मायाने कहा—मेरी रक्षा करनेवाले तुम हो। तुम स्वयं अपनेसे भी मेरी रक्षा करोगे।

कुंजने कहा—इतनी श्रद्धा, इतना विश्वास अब भी बाकी है!

मायाने कहा—यह न होता तो मैं आत्म-हत्या करके मर जाती, तुम्हारे साथ घरसे बाहर न निकलती।

कुंजने कहा—तुम मर क्यों न गईं!—इतनी विश्वासकी फाँसी मेरे गलेमें डालकर और देशदेशान्तरमें घसीटकर मुझे क्यों मारे डालती हो? सोचकर देखो, तुम मर जातीं तो, कितना मंगल होता!

मायाने कहा—यह तो मैं जानती हूँ, मगर जब तक बिहारीकी आशा है तब तक मर न सकूँगी।

कुंजने कहा—जब तक तुम न मरोगी, तब तक मेरी प्रत्याशा भी नहीं मरेगी; मैं छुटकारा भी न पाऊँगा। मैं आजसे भगवानके निकट हृदयसे तुम्हारे मरनेकी कामना करूँगा। तुम मेरी भी न होना और बिहारीकी भी न होना। तुम जाओ, मुझको छुट्टी दो। मेरी मा रो रही है, मेरी स्त्री रो रही है—उनके आँसू दूरसे मुझे जला रहे हैं। तुम न मरोगी, तुम मेरी और सारी पृथ्वीके सब लोगोंकी आशासे अतीत न होओगी, तो मुझे उनकी आँखोंके आँसू पोंछनेका अवसर नहीं मिलेगा।

इतना कहकर कुंज जल्दीसे झपटकर बाहर चला गया और माया अकेली पड़ी हुई उसके चारों तरफ जो मोह-जाल फैला रही थी उसे छिन्न-भिन्न करता गया। माया चुपचाप खड़ी बाहरकी तरफ ताकती रही। आकाशमें छाई हुई चाँदनी सूनी-सी जान पड़ने लगी, उसका सारा अमृत-रस न जाने कहाँ उड़ गया। वह क्यारियोंवाला चमन, उसके बाद रेतीका कगारा, उसके बाद नदीका काला जल, उसके बाद उस पारका अस्फुट दृश्य—सभी जैसे एक बड़े कोरे कागजपर पेंसिलसे अंकित किया हुआ रेखा-चित्र-सा रह गया। सभी नीरस और निरर्थक जान पड़ा।

कुंजको मायाने कैसे प्रबल वेगसे अपनी तरफ खींचा है, किस तरह प्रचंड आँधीकी तरह जड़-मूल-समेत उसे उखाड़ लिया है, इसका अनुभव करके आज उसका हृदय और अशान्त हो उठा। वह सोचने लगी, मुझमें तो यह शक्ति भरपूर है, फिर बिहारी क्यों नहीं पूर्णिमाकी रातको उमड़े हुए सागरकी तरह उसके सामने आकार गिर पड़ता? क्यों एक अनावश्यक प्रेमका प्रबल प्रतिघात प्रतिदिन उसके ध्यानमें आकर रो पड़ता है?—और एक आनेवाली रुलाई बारबार आकर उसके भीतरकी रुलाईको निकालनेके लिए पूरा अवकाश क्यों नहीं देती? यह जो भारी हलचल उसने मचा रक्खी है, इसे लेकर वह जिन्दगी भर क्या करेगी! अब वह इस हलचलको किस उपायसे शान्त करेगी?

आज जिन फूलोंकी मालाओंसे मायाने अपने शरीरको सजाया था उनके ऊपर कुंजकी मोहमयी पाप दृष्टि पड़ी जानकर उन सबको उसने तोड़-तोड़कर नोच नोच-कर फेंक दिया। उसकी सारी शक्ति वृथा है, चेष्टा वृथा है, जीवन वृथा है—यह बाग, यह चाँदनी, यह अपूर्व सुन्दर पृथ्वी, सब वृथा है।

इतनी व्यर्थता है तो भी जो जहाँ है वह वहीं खड़ा है। जगतकी किसी चीजमें कुछ भी रद्दोबदल नहीं हुआ। तो भी कल सूर्यका उदय होगा, संसार अपने छोटेसे छोटे कामको भी नहीं भूलेगा। अविचलित बिहारी जैसे दूरपर था वैसे ही दूरपर रहकर ब्राह्मणके बालक (वसन्त) को 'हिन्दी-शिक्षावली' का नया पाठ पढाता रहेगा।

मायाकी आँखें फाड़कर आँसू बाहर निकल पड़े। वह अपने सारे बल और सारी लालसाके साथ किस पत्थरको ठेल रही है! उसका हृदय रुधिरसे तर हो गया, लेकिन उसका अदृष्ट सुईकी नोक-भर भी न टसका।

卐 卐 卐

इक्यावनवाँ परिच्छेद

कुंज सारी रात सोया नहीं—उसका शरीर और भी शिथिल हो गया। सेवेरेके समय उसे नींद आ गई। आठ-नौ बजे आँख खुलनेपर वह जल्दीसे उठकर बैठ गया। गत रात्रिकी एक कोई असमाप्त वेदना मानो नींदके भीतर-ही-भीतर बह रही थी। जागते ही उसे अपनी उस व्यथाका अनुभव होने लगा। थोड़ी देर बाद ही रातकी सब घटना स्पष्टरूपसे स्मरण हो आई। उसे प्रातःकालके उस घाममें, कच्ची नींदकी खुमारीमें, सारा जगत् और सारा जीवन अत्यन्त नीरस जान पड़ा। अपना घर छोड़नेकी ग्लानि, धर्म या कर्तव्यके त्यागका गभीर सन्ताप और इस उद्भ्रान्त जीवनकी सारी अशान्तिका बोझा वह क्यों अपने सिरपर लादे हुए है? इस मोहके आवेशसे शून्य प्रभात कालके प्रकाशमें कुंजको जान पड़ा कि वह मायाको नहीं चाहता। रास्तेकी तरफ उसने आँख उठाकर देखा, सारी जागी हुई पृथ्वी व्यस्त होकर कार्यकी ओर चली जा रही है। आत्म गौरवको कलुषकी कीचड़में बोरकर, एक स्व-विमुख स्त्रीके पैरोंके पास, अपने अकर्मण्य जीवनको प्रतिदिन जकड़कर रखनेकी विकट मूढता कुंजके निकट अच्छी तरह स्पष्टरूपसे प्रकट हो पडी।

एक प्रबल आवेगके उच्छ्वासके उपरान्त हृदयमें एक प्रकारकी सुस्ती आ जाती है। तब थका हुआ हृदय, अपने अनुभव या विचारके विषयको कुछ समयके लिए दूर हटा देना चाहता है। उस भावमें 'भाटा' आनेके समय तलेकी सारी छिपी और जमी हुई कीचड़ बाहर निकल पड़ती है,—जिससे मोह आया था उसपर अरुचि उत्पन्न होती है। कुंज आज यह समझ न सका कि वह किस लिए इस तरह अपनेको अपमानित कर रहा है। उसने कहा—मैं सब बातोंमें मायासे श्रेष्ठ हूँ तो भी आज सब तरहकी हीनता और लाञ्छना स्वीकार कर, घृणित भिक्षुककी तरह दिनरात उसके पीछे पीछे दौड़ता फिरता हूँ। मेरी खोपड़ीमें ऐसा अद्भुत पागलपन किस शैताननें भर दिया है।

आज माया कुंजके निकट एक साधारण स्त्री मात्र है और कुछ भी नहीं। उस मायाके चारों तरफ, सारी पृथ्वीके सौन्दर्यसे, सारे उपन्यास और नाटकोंमें, जो एक लावण्यकी ज्योति खिंचकर आई थी वह आज माया-मरीचिकाकी तरह अन्त-

र्हित हो गई और माया एक साधारण स्त्री-मात्र अवशिष्ट रह गई—उसमें कोई अपूर्वता, कोई विशेषता नहीं रही।

तब कुज इसलिए व्यग्र हो उठा कि इस धिक्कारयोग्य मोह-चक्रसे अपनेको अलग करके घर लौट जाऊँ। जो शान्ति, प्रेम और स्नेह उसका निजका था, वही उसे इस समय अत्यन्त दुर्लभ अमृत जान पडा। बिहारीका वह बचपनसे बढा हुआ बन्धुत्व और उसका अटल अवलम्ब इस समय कुजको बहुमूल्य मालूम पड़ने लगा। कुजने अपने मनमे कहा—जो यथार्थमे गभीर और स्थायी है उसमें बिना चेष्टाके, बिना बाधाके, अपनेको सम्पूर्ण निमग्न रक्खा जा सकता है,—इसी लिए हम लोग उसका गौरव नहीं समझ सकते। जो चञ्चल छलनामात्र है, जिसकी सम्पूर्ण तृप्तिमें भी रत्ती-भर सुख नहीं है, वह लोगोंको अपने पीछे घुड़दौड़के घोड़ेकी तरह दौड़ाता है,—यही कारण है, कि हम लोग उसीको परम प्रार्थनीय धन समझ लेते हैं।

कुजने दृढ होकर कहा—आज ही घर लौट जाऊँगा और माया जहाँ रहना चाहेगी वहाँ उसके रहनेकी व्यवस्था करके मैं छुट्टी पा जाऊँगा।

'मैं छुट्टी पा जाऊँगा' यह बात दृढ स्वरसे उच्चारण करते ही उसके मनमें एक प्रकारके आनन्दका आविर्भाव हुआ। इतने दिनों तक जिस दुविधाके भारको वह लगातार लादे हुए आ रहा था, वह हल्का हो आया। इतने दिनोंतक इस घड़ी जो उसे परम अप्रीतिकर जान पड़ता था, नापसन्द होता था, वही थोड़ी देरमें लाचार होकर करना पड़ता था। वह जोर करके 'नहीं' या 'हाँ' नहीं कर सकता था,—उसके अन्तःकरणसे जो आज्ञा उठती थी उसको जबर्दस्ती दबाकर वह दूसरे रास्तेपर चलता था। इस समय उसने जोरके साथ जैसे ही कहा 'मैं छुट्टी पा जाऊँगा' वैसे ही उसके हृदयने—उस हृदयने जो इधर उधर होनेके झोकोंसे पीड़ित हो रहा था—उसका अभिनन्दन किया।

कुंज उसी समय पलंगसे उठकर हाथ-मुँह धोकर मायासे मिलनेके लिए गया। जाकर देखा, दर्वाजा बंद था। दर्वाजामे धक्का देकर उसने कहा—सो रही हो क्या?

मायाने कहा—नहीं, तुम इस घड़ी जाओ।

कुंजने कहा—तुमसे कुछ विशेष बातचीत करनी है, मैं बहुत देर तक नहीं ठहरूँगा।

मायाने कहा—मैं कोई बात सुन नहीं सकती। तुम जाओ, मुझे दिक न करो, मुझे अकेले रहने दो।

और कोई समय होता तो मायाके इस बर्तावसे कुजका आवेग और बढ जाता; किन्तु आज उसे अत्यन्त घृणा मालूम हुई। उसने सोचा, इस एक साधारण स्त्रीके निकट मैंने अपनेको इतना हीन कर लिया है कि मुझे जब-तब ऐसे अवज्ञा-अनादरके भावसे दूर कर देनेका, दुरदुरा देनेका, अधिकार इसे मिल गया है। यह

अधिकार इसका स्वाभाविक और उचित अधिकार नहीं है। मैंने ही यह अधिकार देकर इसके गर्वको इस तरह अनुचित रूपसे बढा दिया है।

इस लाञ्छना और अपमानके बाद कुजने अपने हृदयमें अपनी श्रेष्ठताका अनुभव करनेकी चेष्ठा की। उसने कहा—मेरी जीत होगी, मैं इसका बन्धन काटकर चला जाऊँगा।

कुज भोजनके बाद रुपया लेनेके लिए बैंकको चला गया। वहाँसे रुपया लेकर वह करुणाके लिए और माके लिए कुछ अच्छी नई चीजें खरीदनेके इरादेसे इलाहाबादकी दूकानोंमें घूमने लगा।

मायाके दर्वाजेपर फिर किसीने धक्का दिया। पहले उसने खीझकर कुछ जवाब नहीं दिया। उसके बाद बार बार धक्का पड़नेपर वह झला उठी, जोरसे दर्वाजा खोलकर कह उठी—तुम मुझे बार बार दिक करनेके लिए क्यों आ जाते हो?

बात पूरी होनेके पहले ही मायाने देखा, बिहारी खड़ा हुआ है।

घरके भीतर कुज है या नहीं, यह जाननेके लिए बिहारीने एक बार भीतर दृष्टि डाली। देखा, पलगपर और फर्शपर सूखे हुए फूल और टूटी हुई मालाएँ बिखरी पड़ी हैं। उसका मन पल-भरमें प्रबल वेगसे विमुख हो गया। बिहारी जब दूर था तब यह नहीं है कि मायाकी जीवन-यात्राके सम्बन्धमें कोई सन्देह-जनक चित्र उसके हृदय-पटमें प्रतिबिम्बित न हुआ हो, किन्तु कल्पनाकी लीलाने उस चित्रको ढककर उसके स्थानमें एक उज्ज्वल मोहिनी छवि खड़ी कर रक्खी थी। बिहारी जब इस बागमें प्रवेश कर रहा था, उस समय उसका कलेजा धड़क रहा था कि कहीं उस कल्पनामयी छविमें अकस्मात् आघात न लगे, इसी लिए उसका चित्त सकुच रहा था। मायाके दर्वाजेपर आकर खड़े होते ही उसे वही आघात लगा।

दूर रहकर बिहारीने एक समय सोचा था कि वह अपने प्रेमके अभिषेकसे मायाके जीवनकी सारी कीचड़को अनायास धो डालेगा, लेकिन उसने पास आकर देखा कि यह सहज नहीं है। मनमें करुणासे उत्पन्न हुई वेदना या सहानुभूति नहीं रही, एकाएक घृणाकी लहरोंने उठकर उसे (सहानुभूतिको) दबा लिया। बिहारीने मायाको अत्यन्त मलिन देखा।

उसी दम बिहारीने फिरकर खड़े होकर पुकारा—कुंज, कुज।

इस अपमानसे भी विचलित न होकर मायाने नम्र और कोमल स्वरमें कहा—कुज नहीं हैं, शहर गये हैं।

बिहारी जाने लगा, तब मायाने बहुत ही विनयके स्वरमें कहा—बिहारी बाबू, तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, जरा तुमको बठना होगा।

बिहारीने निश्चय कर लिया था कि मैं कुछ भी अनुनय-विनय न सुनूँगा, उसने इस घृणित दृश्यसे अपनेको उसी दम दूर हटा ले जानेका दृढ विचार कर लिया

था। लेकिन मायाका करुण स्वर सुनते ही पल-भरके लिए जैसे उसके पैरोंमें काठ मार गया।

मायाने कहा— तुम अगर आज इस तरह विमुख होकर चले जाओगे तो मैं तुम्हारी ही कसम खाकर कहती हूँ, अपनी जान दे दूँगी।

बिहारी घूमकर खड़ा हो गया और बोला—माया, तुम मुझे अपने जीवनके साथ लपेटनेकी चेष्टा क्यों कर रही हो! मैं तो कभी तुम्हारी राहमें खड़ा नहीं हुआ,—तुम्हारे सुख-दु खमें तो मैंने कभी हाथ नहीं डाला!

मायाने कहा—तुमने मुझपर कितना अधिकार कर लिया है सो मैं एक बार तुमसे कह चुकी हूँ, परन्तु तुमने विश्वास नहीं किया। तो भी, आज फिर, तुम्हारे विमुख होनेपर भी, वही बात कहती हूँ। तुमने तो मुझे कहकर समझानेका, लज्जा करके जतानेका, समय ही नहीं दिया। तुमने मुझको पैरोंसे ठुकराकर दूर कर दिया है, तो भी मैं तुम्हारे पैर पकड़कर कहती हूँ, मैं तुमको—

बिहारीने बीचहीमें बाधा देकर कहा—वह बात अब न कहना, जबानपर मत लाना। उसपर विश्वास करनेका कोई उपाय नहीं है।

मायाने कहा—उस बातपर छोटे आदमी विश्वास नहीं कर सकते, लेकिन तुम करोगे। इसी लिए तुमसे जरा बैठनेके लिए कहती हूँ।

बिहारीने कहा—मैं विश्वास करूँ या न करूँ, इससे क्या आता-जाता है! तुम्हारा जीवन जैसे बीत रहा है, वैसे ही तो बीतेगा!

मायाने कहा—मैं जानती हूँ कि इससे तुम्हारा कुछ भी नहीं आवे-जायगा। मेरा भाग्य ऐसा है कि तुम्हारे सम्मानकी रक्षा करके तुम्हारे पास मेरे खड़े होनेका कोई उपाय नहीं है। चिरकालतक मुझे तुमसे दूर ही रहना होगा। किन्तु मेरा मन तुम्हारे निकट केवल इतने भरका दावा नहीं छोड़ सकता कि मैं चाहे जहाँ रहूँ, तुम मेरा स्नेहके साथ स्मरण करोगे। मैं जानती हूँ कि मेरे ऊपर तुमको कुछ थोड़ी-सी श्रद्धा उत्पन्न हुई थी, मैं उसीको अपना एक मात्र आश्रय बना रक्खूँगी। इसी कारण मेरी सब बातें तुमको सुननी होंगी। मैं हाथ जोड़कर कहती हूँ, तुम जरा बैठ जाओ।

"नहीं, अब मैं जाता हूँ" कहकर बिहारी उस जगहसे हटकर दूसरी जगह जानेके लिए उद्यत हुआ।

मायाने कहा—तुम जो समझ रहे हो, वह बात नहीं है। इस घरको कोई कलंक नहीं लगा। तुम इस घरमें एक दिन सोये थे, इस लिए यह घर मैंने तुम्हारे ही लिए रख छोड़ा है। ये फूल तुम्हारी पूजाके हैं, जो आज सूखे पड़े हैं। इसी कमरेमें तुमको बैठना होगा।

यह सुनकर बिहारीका चित्त पुलकित हो उठा। वह कमरेके भीतर गया। मायाने उसे पलंग दिखा दिया। बिहारी पलँगपर जाकर बैठ गया, माया उसके पैरोंके

पास जमीनपर बैठ गई। बिहारी व्यस्त होकर उठने लगा। मायाने कहा—तुम बैठो, तुम्हें मेरे सिरकी कसम, उठना नहीं। मैं तुम्हारे पैरोंके पास बैठनेके योग्य तो नहीं हूँ; किन्तु तुम्हींने दया करके मुझे वह स्थान दिया है। दूर रहनेपर भी इस अधिकारको मैं रक्खूँगी।

इतना कहकर माया कुछ देर तक चुप रही और फिर एकाएक कह उठी—तुम क्या भोजन कर चुके हो?

बिहारीने कहा—स्टेशनसे ही भोजन कर आया हूँ।

मायाने कहा—मैंने जो चिट्ठी तुमको गाँवपरसे लिखकर भेजी थी उसे खोलकर बिना कुछ जवाब दिये ही तुमने कुजके हाथो क्यों लौटा दी थी?

बिहारीने कहा—वह चिट्ठी तो मैंने पाई ही नहीं।

मायाने कहा—अबकी बार क्या तुमसे कलकत्तेमें कुजकी मुलाकात हुई थी?

बिहारीने कहा— जिस दिन मैं तुमको तुम्हारे गाँव पहुँचा आया हूँ, उसके दूसरे ही दिन मुलाकात हुई थी। उसके बाद ही मैं इधर पश्चिमकी तरफ घूमने चला आया, फिर उससे मुलाकात नहीं हुई।

मायाने कहा—उसके पहले क्या और किसी दिन तुमने मेरी चिट्ठी पढ़कर बिना कुछ उत्तर दिये ही लौटा दी थी?

बिहारीने कहा—नहीं, ऐसा कभी नहीं हुआ।

माया कुछ देर तक चुप रहकर फिर एक लबी साँस छोड़कर बोली—सब समझ गई। अब मैं अपनी कथा कहती हूँ। अगर विश्वास करोगे तो मैं अपना सौभाग्य समझूँगी, और न करोगे तो तुमको दोष न दूँगी। मेरा विश्वास करना कठिन है।

बिहारीका हृदय उस समय दयासे आर्द्र हो गया था। मायाकी इस भक्तिभाव-भरी पूजाका वह, किसी तरह, तिरस्कार न कर सका। उसने कहा—तुमको कुछ भी न कहना होगा, मैं बिना कुछ सुने ही तुम्हारा विश्वास करता हूँ। मैं तुमपर घृणा नहीं करता। तुम अब इस बारेमें एक बात भी न कहना।

सुनकर मायाकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। उसने बिहारीके पैरोंकी धूल अपने मस्तकमें लगाई और कहा—सब बातें बिना कहे मुझे कल न पड़ेगी। जरा धैर्य धारण कर सुनना ही होगा। तुमने मुझको जो आज्ञा दी थी उसको मैंने शिरोधार्य कर लिया। यद्यपि तुमने मुझको एक चिट्ठीतक नहीं लिखी तो भी मैं अपने गाँवके लोगोंकी बोली-ठोली और निन्दा सहकर अपनी जिन्दगी वहीं बिता देती,—तुम्हारे स्नेहके बदले तुम्हारा शासन ही ग्रहण करती, किन्तु विधाताको वह भी स्वीकार न था। मैंने जिस पापको जगा दिया था उसने मुझे निर्वासनमें भी टिकने न दिया। कुजने गाँवमें आकर,—मेरे घरके दर्वाजेपर आकर,—सबके सामने मुझको बदनाम कर दिया। उस गाँवमें मुझे रहनेकी कोई जगह नहीं रह गई। दुबारा

तुम्हारी आशाके लिए मैंने तुमको बहुत खोजा, मगर किसी तरह तुम न मिल सके। इस बीचमें कुजने तुम्हारे घरसे खुली हुई चिट्ठी लाकर मुझे धोखा दिया। मैं समझी, तुमने मुझको एकदम त्याग दिया। इसके बाद मैं बिल्कुल नष्ट हो जा सकती थी; किन्तु तुम्हारा ऐसा प्रभाव है कि तुम दूर रहकर भी अपने जनकी रक्षा कर सकते हो। तुमको मैंने अपने मनमें स्थान दिया था, इसीसे आज तक मैं पवित्र बनी हुई हूँ। एक दिन तुमने मुझे दूर ढकेल कर अपना जो परिचय दिया था, तुम्हारा वह कठिन परिचय, कठिन सोनेकी तरह, दृढ हीरेकी तरह, मेरे हृदयपर अंकित है—उसीने मुझे महामूल्य कर दिया है। देव, तुम्हारे चरण छूकर कहती हूँ, वह मूल्य नष्ट नहीं हुआ।

बिहारी चुपचाप बैठा रहा। मायाने भी और कोई बात नहीं कही। तीसरे पहरका घाम धीरे धीरे मलिन होता चला जा रहा था। इसी समय कुंज दर्वाजेके पास आकर बिहारीको देखते ही चौंक उठा। अभी मायाकी तरफसे जो उदासीनता पैदा हुई थी, वह ईर्षाकी ताड़नासे दूर होने लगी। बिहारीके पैरोंके पास मायाको इस तरह चुपचाप बैठे देखकर तिरस्कृत कुजके गर्वपर चोट पहुँची। कुंजको इस बातमें कुछ भी सन्देह नहीं रहा कि यह सम्मिलन चिट्ठी-पत्रीके द्वारा हुआ है। अभीतक तो बिहारी विमुख था, अब अगर वह आप ही आकर मिला है तो फिर माया किसके रोके रुक सकती है?

आज बिहारीको देखकर कुजको यह बात अच्छी तरह प्रतीत हो गई कि मैं मायाको छोड़ तो सकता हूँ लेकिन और किसीके हाथमें नहीं दे सकता।

कुजने व्यर्थ क्रोधसे तीव्र विद्रूपके स्वरमें मायासे कहा—तो अब रंगभूमिसे कुजका प्रस्थान और बिहारीका प्रवेश है!—दृश्य बड़ा सुन्दर है! तारीफमें ताली पीटनेको जी चाहता है। किन्तु आशा करता हूँ कि इस नाटकका यही अंतिम अंक होगा—इसके बाद और कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा।

मायाका मुँह लाल हो आया। उसे कुजका आश्रय लेनेके लिए लाचार होना पड़ा है, अतएव इस अपमानका उत्तर उसके पास कुछ भी नहीं है,—उसने व्याकुल दृष्टिसे एक बार बिहारीकी तरफ ताका।

बिहारी पलंगसे उठ खड़ा हुआ, और आगे बढ़कर बोला—कुज, तुम नीच कायर मनुष्योंकी तरह मायाका अपमान न करना। तुम्हारी भलमंसी अगर तुमको मना न करे, तो तुमको मना करनेका,—रोकनेका, अधिकार मुझको है।

कुजने हँसकर कहा—इसी बीचमें अधिकार भी ठीक हो गया? अच्छा तो आज तुम्हारा नया नाम रक्खा जाय, 'माया-बिहारी!'

बिहारीने अपमानकी मात्रा बढते देखकर कुजका हाथ पकड़ लिया, और कहा—कुज, मैं मायासे ब्याह करूँगा, तुमको जना दिया, अतएव अबस सँभलकर—सयत होकर बात निकालना!

यह सुनकर कुंज विस्मयके मारे सन्नाटेमें आ गया, तलेकी साँस तले और ऊपरकी साँस ऊपर रह गई। उधर माया चौंक उठी, उसके हृदयका रक्त वेगसे लहराने लगा।

बिहारीने कुंजसे कहा—तुमको एक खबर और देनी है। तुम्हारी माता मृत्यु-शय्यापर पड़ी हुई है, उसके बचनेकी कोई आशा नहीं है। मैं आज रातकी ही गाड़ीसे जाऊँगा और ये (माया) भी मेरे ही साथ जायँगी।

मायाने चौंककर कहा—क्या बुआ बीमार हैं?

बिहारीने कहा—हाँ, अच्छी होनेवाली बीमारी नहीं है। कहा नहीं जा सकता कि कब क्या हो।

कुंज और कोई बात न कहकर चुपचाप चला गया।

तब मायाने बिहारीसे कहा—जो बात तुमने कही, वह तुम्हारे मुँहसे कैसे निकली? यह क्या ठट्ठा है?

बिहारीने कहा—नहीं, मैंने सत्य ही कहा है, तुमसे मैं ब्याह करूँगा।

मायाने कहा—इस पापिनको उबारनेके लिए?

बिहारीने कहा—नहीं, मैं तुमको चाहता हूँ—श्रद्धा करता हूँ, इसलिए।

मायाने कहा—बस, यही मेरा शेष पुरस्कार हो गया। तुमने यह जितना स्वीकार किया है, इससे अधिक मैं और कुछ नहीं चाहती। मिलनेपर भी वह पुरस्कार रहेगा नहीं, क्योंकि धर्म कभी उसे सह नहीं सकता।

बिहारीने कहा—क्यों नहीं सह सकता?

मायाने कहा—छी-छी, ऐसी बात मनमें लानेसे भी लज्जा लगती है। मैं विधवा हूँ, मैं निन्दित हूँ, मैं सारे समाजके निकट तुमको लाञ्छित करूँ—यह कभी हो ही नहीं सकता। छी-छी, यह बात अब तुम जबानपर मत लाना।

बिहारीने कहा—तुम मुझे त्याग करोगी?

मायाने कहा—त्याग करनेका अधिकार मुझे नहीं है। मुझे मालूम है कि तुम छिपा-छिपाकर बहुतोंका बहुत कुछ भला किया करते हो, इस लिए, तुम अपने किसी ऐसे ही सत्कार्यका कुछ काम मुझे सौंप देना। मैं उसीको शिरोधार्य कर अपनेको तुम्हारी दासी समझूँगी। किन्तु छी-छी, विधवासे तुम ब्याह करोगे! तुम्हारी उदारतासे सब सभव हो सकता है, किन्तु मैं अगर यह काम करूँ—तुमको समाजसे नष्ट करूँ, तो इस जीवनमें फिर सिर ऊँचा न कर सकूँगी।

बिहारीने कहा—किन्तु माया, मैं तुमको प्यार करता हूँ।

मायाने कहा—उसी प्यारके अधिकारसे आज मैं साहसके साथ इतना करूँगी—

यह कहकर मायाने जमीनपर झुककर बिहारीके पैरका अँगूठा चूम लिया, और पैरोंके पास बैठकर कहा—दूसरे जन्ममें तुमको पानेके लिए मैं तपस्या करूँगी। इस जन्ममें तो अब, मुझे कोई आशा नहीं है, कुछ भी प्राप्य नहीं है। मैंने अनेक

दुःख दिये हैं, अनेक दुःख पाये हैं, मुझे बहुत शिक्षा मिल चुकी है। उस शिक्षाको अगर मैं भूल जाती तो, तुमको हीन बनाकर, और भी हीन होती। किन्तु तुम उच्च हो, इसीसे आज मैं सिर ऊँचा कर सकी हूँ—इस आश्रयको मैं भूमिसात् नहीं करूँगी।

विहारी गंभीर भावसे चुप बैठा रहा।

मायाने हाथ जोड़कर कहा—देखो, भूल न करना,—मुझसे ब्याह करके तुम सुखी नहीं हो सकते, तुम्हारा गौरव चला जायगा, और मैं भी सब गौरव गवाँ बैठूँगी। तुम सदासे निर्लिप्त, प्रसन्न हो। आज भी तुम वही, वैसे ही, रहो, मैं दूर रहकर तुम्हारा काम करूँगी। तुम प्रसन्न होओ, तुम सुखी होओ!

बावनवाँ परिच्छेद

कुंज अपनी माके कमरेमें घुसने लगा, इतनेमें करुणाने जल्दीसे बाहर निकलकर कहा—अभी वहाँ न जाना!

कुंजने कहा—क्यों?

करुणाने कहा—डाक्टरने कहा है कि अचानक सुखका या दुखका किसी तरहका, धक्का लगनेसे अच्छा नहीं होगा।

कुजने कहा—मैं जरा धीरे धीरे उनके सिरहानेके पास जाकर देख आऊँ, उन्हें खबर न होगी।

करुणाने कहा—वे थोड़ा-सा खटका पाकर भी चौंक उठती हैं, तुम्हारे भीतर घुसते ही वे जान जायँगी।

कुजने कहा—तो तुम इस घड़ी क्या करनेको कहती हो!

करुणाने कहा—पहले विहारी बाबू आकर एक बार देख जायँ, वे जैसी सलाह देंगे, वही करूँगी।—

बात पूरी भी नहीं हुई, इतनेमें विहारी आ गया। उसे करुणाने बुला भेजा था।

विहारीने कहा—बहू, तुमने मुझे बुला भेजा है? मा तो अच्छी तरहसे हैं न?

विहारीको देखकर जैसे करुणाको सहारा मिला। उसने कहा—तुम्हारे जानेके बादसे मा जैसे और भी चंचल हो उठी हैं। पहले दिन तुमको न देखकर उन्होंने पूछा—'विहारी कहाँ गया?' मैंने कहा—'वे एक विशेष और आवश्यक काममें गये हैं। बुध तक लौट आनेके लिए कह गये हैं।' तबसे वे रह-रहकर चौंक उठती हैं। कल तुम्हारा तार पाकर मैंने जता दिया था कि आज तुम आ जाओगे। सुनकर उन्होंने, आज तुम्हारे भोजनके लिए, विशेष रूपसे तैयारी करनेकी कहा

है। तुमको जो जो चीजें अधिक रुचती हैं वे वे सब उन्होंने मँगाई हैं। कमरेके सामनेवाले बरामदेमें रसोईकी तैयारी हुई है, वे सामनेसे बता-बताकर स्वयं भोजन बनवावेंगी। डाक्टरने बहुत मना किया, लेकिन उन्होंने नहीं माना। अभी थोड़ी देर हुई, मुझे बुलाकर कह दिया है कि—बहू, तुम अपने हाथसे सब पकाना, मैं बिहारीको आज सामने बैठकर भोजन कराऊँगी।

सुनकर बिहारीके आँखोंमें आँसू भर आये। उसने पूछा—मा हैं कैसी?

करुणाने कहा—तुम एक बार खुद आकर देख लो। मुझे तो जान पड़ता है कि उनकी बीमारी और भी बढ गई है।

बिहारीने कमरेमें प्रवेश किया। कुंज बाहर आश्चर्यमें डूबा हुआ खड़ा रहा। करुणाने अनायास घरका कर्तृत्व ग्रहण कर लिया है, उसने कुंजको कैसे सहजमें कमरेके भीतर जानेसे रोक दिया! न तो किया संकोच, और न किया अभिमान। कुंजका बल आज कितना कम हो गया है! वह अपराधी है, बाहर चुपचाप खड़ा रहा,—माके कमरेमें भी घुसने न पाया।

इसके ऊपर यह भी आश्चर्य है,—बिहारीके साथ करुणाने कैसे अकुंठित-भावसे बातचीत की! सब सलाह उसीके साथ की! वही आज संसारका एकमात्र रक्षक है, सबका हितू मित्र है। उसका आना-जाना सब जगह है, उसके उपदेशपर सब चलते हैं। कुंज कुछ दिनके लिए जो जगह छोड़ गया था उसे उसने लौटकर देखा, ठीक वैसी ही नहीं है।

बिहारीके भीतर घुसते ही लक्ष्मीने उसे अपने करुण नेत्रोंसे देखा और कहा—बिहारी, लौट आया?

बिहारीने कहा—हाँ मा, लौट आया।

लक्ष्मीने कहा—तेरा काम पूरा हो गया?—

इतना कहकर उसने बिहारीकी तरफ एकाग्र उत्सुक दृष्टिसे देखा।

बिहारीने प्रसन्न भावसे कहा—हाँ, मा, काम अच्छी तरह हो गया, अब मुझको कुछ चिन्ता नहीं है।

इतना कहकर बिहारीने एक बार बाहरकी तरफ देखा।

लक्ष्मीने कहा—आज बहू तुम्हारे लिए, अपने हाथसे, रसोई बनावेगी, मैं यहाँसे बताती जाऊँगी। डाक्टर मना करते थे—लेकिन अब काहेके लिए मना करना है? मैं क्या मरनेसे पहले एक बार तुम लोगोंको अपने आगे बिठलाकर खिलाऊँ भी नहीं?

बिहारीने कहा—डाक्टरके मना करनेका तो कोई कारण मुझे देख नहीं पड़ता मा,—तुम अपने आगे रसोई न बनवाओगी, तो काम कैसे चलेगा? लड़कपनसे तो हम लोगोंको तुम्हारी ही बनाई रसोई अच्छी लगती है। कुंज दादाको तो बाजारकी पूरी खाते खाते अरुचि हो गई है। आज तुम्हारी बनवाई रसोई पाकर

उनका चित्त भी प्रसन्न हो जायगा। आज हम दोनों भाई पहलेकी तरह होड़ लगाकर भोजन करेंगे। देखना चाहिए, तुम्हारी बहू परोस सकती है या नहीं।

यद्यपि लक्ष्मी समझ गई थी कि बिहारी कुंजको अपने साथ लेता आया है तो भी कुंजका उल्लेख होते ही दम-भरके लिए जैसे उसके हृदयकी गति रुक गई, साँस लेना कठिन हो गया।

यह भाव हो जानेपर बिहारीने कहा—पश्चिमकी यात्रा कर आनेसे कुंज दादाका स्वास्थ्य अब अच्छा हो गया है। आज जरा रास्तेके अनियम और थकावटसे सुस्त-से हो रहे हैं, नहाने धोनेके बाद तबियत ठीक हो जायगी।

तो भी लक्ष्मीने कुंजके बारेमें कुछ नहीं कहा। तब बिहारीने कहा—मा, कुंज दादा बाहर ही खड़े हुए हैं, तुम्हारे बुलाये बिना उनसे आया न जायगा। लक्ष्मीने कुछ न कहकर दर्वाजेकी तरफ देखा। इतनेहीमें बिहारीने पुकारा—कुंज दादा, आओ।

कुंज धीरे धीरे भीतर गया। इस डरसे कि कहीं हृदयकी गति एकदम बंद न हो जाय, लक्ष्मीसे तत्क्षण अच्छी तरह कुंजकी तरफ देखा नहीं गया, उसने निगाह कुछ नीची कर ली। बिछौनेपर दृष्टि पड़ते ही कुंज जैसे चौंक पड़ा, उसको किसीने जैसे जोरसे मार दिया।

कुंज माके पैरोंपर सिर रख दोनों हाथोंसे पैर पकड़े पड़ा रहा। दुर्बल हृदय-पिण्डकी तेज चालसे लक्ष्मीका सारा शरीर जैसे काँप उठा।

कुछ देरके बाद गौरीने कहा—जीजी, कुंजसे तुम उठनेके लिए कहो—नहीं तो वह उठेगा नहीं।

लक्ष्मीने कष्टसे वाक्य निकालकर कहा—कुंज, उठ।

कुंजका नाम लेते ही बहुत दिनोंके बाद उसकी आँखोंसे झर झर आँसू बरसने लगे। उन आँसुओंके गिर जानेसे उसके हृदयकी व्यथा हलकी हो गई। तब कुंज उठकर, जमीनपर घुटने टेककर, पलंगकी पट्टीपर छातीका बोझा देकर, अपनी माके पास बैठ गया। लक्ष्मीने कष्टसे करवट बदलकर दोनों हाथोंमें कुंजका सिर लेकर उसके मस्तकको सूँघा और चूम लिया।

कुंजने रुँधे हुए कण्ठसे कहा—मा, मैंने तुमको बहुत कष्ट दिये, मुझे माफ करो।

हृदय शांत होनेपर लक्ष्मीने कहा—यह न कह कुंज, तुझे माफ किये बिना मुझसे कब रहा जायगा? बहू, बहू कहाँ गई?

करुणा पासकी कोठरीमें पथ्य तैयार कर रही थी। गौरी उसे बुला लाई।

तब लक्ष्मीने कुंजसे पलंगपर बैठनेके लिए इशारा किया। कुंजके बैठनेपर लक्ष्मीने उसीके पास स्थान दिखाकर करुणासे कहा—बहू, यहाँपर तुम बैठो—आज मैं एक बार तुम दोनोंको मिलाकर,—पास बिठाकर, देखूँगी तो मेरा सब दुःख-कष्ट

मिट जायगा। वहू, तुम मुझसे लज्जा न करो और कुजके ऊपर भी कोई कलुषित भाव न रखकर यहाँपर बैठ आओ, मैं देखकर आँखें ठडी कर लूँ।

तब करुणा घूँघट काढे हुए लज्जासे धीरे धीरे पास पहुँची और धड़कते हुए हृदयसे कुजके पास बैठ गई। लक्ष्मीने अपने हाथमें करुणाका दाहिना हाथ लेकर कुजको पकड़ा दिया, और कहा—मैं इस अपनी बहूको तेरे हाथमें सौंपे जाती हूँ, कुज, तू ऐसी देवी और कहीं न पावेगा। मॅझली बहू, आओ, इनको आशीर्वाद करो—तुम्हारे पुण्यसे इनका मगल हो!

गौरीके सामने आकर खड़े होते ही दोनोंने आँखोंमे आँसू भर कर उनके चरणोंमें प्रणाम किया। गौरीने दोनोंका माथा चूमकर कहा—भगवान् तुम्हारा कल्याण करें।

लक्ष्मीने कहा—विहारी, आओ बेटा, तुम भी मेरे सामने कुजको क्षमा करो।

विहारी उठकर कुजके सामने आया, कुजने जल्दीसे उठकर विहारीको गलेसे लगा लिया।

लक्ष्मीने कहा—कुज, मैं तुझे यही आशीर्वाद देती हूँ कि विहारी बचपनसे जैसा तेरा बन्धु रहा है वैसा ही बना रहे—इससे बढकर तेरा और सौभाग्य हो नहीं सकता।

बोलनेके परिश्रमसे लक्ष्मी शिथिल हो गई। विहारी एक उत्तेजक औषध उसके मुँहके पास ले आया। लक्ष्मीने उसका हाथ हटाकर कहा—अब दवा नहीं बेटा, इस समय मैं भगवानको स्मरण करूँगी, वे मुझे सारे ससारकी जलन मिटानेवाली दवा देंगे। कुज, जाओ, तुम लोग तनिक आराम करो। बहू, तुम रसोई चढाओ।

शामको विहारी और कुज दोनों लक्ष्मीके पलगके पास ही चौका लगवाकर भोजन करने बैठे। लक्ष्मीने करुणाको परोसनेका काम सौंपा था, वह परोसने लगी।

कुजके आँसू उमड़ रहे थे, उसके मुँहमें कौर नहीं धँसता था। लक्ष्मी उससे बार बार कहने लगी—कुज, तू कुछ भी खाता क्यों नहीं? अच्छी तरह खा, मैं देखूँ।

विहारीने कहा—जानती तो हो मा, कुज दादा हमेशासे ऐसे ही हैं, इनसे कुछ भी नहीं खाया जाता। बहू, यह मूँगकी दाल जरा मुझे और देना—बहुत अच्छी बनी है।

लक्ष्मीने खुश होकर कुछ हँसकर कहा—मैं जानती हूँ, विहारीको यह मसालेदार मूँगकी दाल बहुत रुचती है। बहू, इतनेसे क्या होगा, और जरा ज्यादा दे।

विहारीने कहा—मा, तुम्हारी यह बहू बड़ी कृपण है, इसके हाथसे कुछ निकलता ही नहीं।

लक्ष्मीने हँसकर कहा—देखो तो बहू, विहारी तुम्हारा ही नोन खाकर तुम्हारी बुराई कर रहा है।

करुणा बिहारीकी थालीमें बहुत-सी दाल परोस गई।

बिहारीने कहा—हाय हाय! देख पड़ता है दालसे ही मेरा पेट भर दिया जायगा, और सारी अच्छी चीजें कुज दादाकी थालीमें परोसी जायँगी।

करुणा धीरेसे कहती गई—जिसकी निन्दा करनेकी आदत होती है, उसका मुँह किसी तरह बंद नहीं होता।

बिहारीने भी धीरेसे कहा—मिठाई देकर देख लो न, बंद होता है कि नहीं!

दोनों बन्धुओंका भोजन हो जानेके उपरान्त लक्ष्मीको परम तृप्ति हुई। उसने कहा—बहू, तुम भी जल्द भोजन कर आओ।

जब करुणा भोजन करने चली गई, तब लक्ष्मीने कुजसे कहा—कुज, तू सोने जा।

कुजने कहा—मा, अभी सोनेका समय नहीं हुआ।

कुजने रातको माकी सेवा करनेका निश्चय किया था, लेकिन लक्ष्मीने किसी तरह यह न होने दिया। कहा—थका हुआ है, कुज, सोने जा।

करुणा भोजन करके पंखा हाथमें ले लक्ष्मीके सिरहाने आकर बैठने लगी। लक्ष्मीने चुपके चुपके उससे कहा—बहू, कुंजका बिछौना ठीक हुआ या नहीं जाकर देखो, वह अकेला है।

करुणा लज्जासे जैसे मर गई, किसी तरह कमरेसे निकलकर गई। लक्ष्मीके पास केवल गौरी और बिहारी रह गये।

तब लक्ष्मीने कहा—बिहारी, तुझसे एक बात पूछती हूँ। तू बता सकता है कि मायाका क्या हुआ? वह इस समय कहाँ है?

बिहारीने कहा—माया कलकत्तेमें ही है।

लक्ष्मीने चुपचाप बिहारीकी तरफ देखकर एक प्रकारका प्रश्न किया। बिहारी समझ गया, उसने कहा—मायाके लिए मा, तुम कुछ भी भय मत करो।

लक्ष्मीने कहा—उसने मुझे बहुत दुःख दिया है बिहारी, तो भी मैं उसे मन-ही-मन चाहती हूँ।

बिहारीने कहा—वह भी तुमको मन-ही-मन चाहती है मा।

लक्ष्मीने कहा—मुझे भी यही जान पड़ता है बिहारी। दोष-गुण सभीमें हैं, किन्तु वह मुझे चाहती थी। जैसी सेवा वह करती थी वैसी सेवा कोई छल करके नहीं कर सकता।

बिहारीने कहा—तुम्हारी सेवा करनेके लिए वह अब भी व्याकुल हो रही है।

लक्ष्मीने एक लंबी साँस लेकर कहा—कुज वगैरह तो सब सोने गये हैं, रातको उसे एक बार ले आनेमें क्या कोई हानि है?

बिहारीने कहा—मा, वह तो इसी घरमें बाहर छिपी हुई बैठी है। मैंने बहुत कहा, लेकिन आज दिन-भर हुआ, उसने एक बूँद पानी तक नहीं पिया। उसने

प्रतिज्ञा की है कि जबतक तुम बुलाकर उसे माफ न करोगी, तब तक वह जल भी न पियेगी।

लक्ष्मीने व्यस्त होकर कहा—दिनभरसे निर्जल व्रत किये बैठी है! आहा, उसे बुलाओ, बुलाओ।

माया धीरे धीरे कमरेमें आई। उसे देखते ही लक्ष्मी बोली—छी-छी, बहू तुमने यह क्या किया! आज दिन-भरसे निर्जल व्रत किये बैठी हो! जाओ जाओ, पहले भोजन कर लो, फिर बातचीत होगी।

मायाने लक्ष्मीके पैरोंकी रज मस्तकमें लगाकर प्रणाम किया और कहा—पहले तुम पापिनको माफ कर दो बुआजी, तब मैं खाऊँ पीऊँगी।

लक्ष्मीने कहा—माफ किया बेटी, माफ किया, मुझको अब किसीपर रोष नहीं है।

फिर मायाका दाहिना हाथ पकड़कर कहा—बहू, तुझसे किसीका बुरा न हो, और तू भी अच्छी तरह रह।

मायाने कहा—तुम्हारा आशीर्वाद झूठा न होगा बुआजी। मैं तुम्हारे पैर छूकर कहती हूँ, मुझसे इस घरकी कुछ भी बुराई न होगी।

मायाने गौरीको भी साष्टाङ्ग प्रणाम किया और फिर वह भोजन करने गई। खाकर आनेके बाद लक्ष्मीने उसकी तरफ देखकर कहा—बहू, अब तुम जाओगी?

मायाने कहा—बुआजी, मैं तुम्हारी सेवा करूँगी। ईश्वर साक्षी है, मुझसे तुम किसी अनिष्टकी आशंका न करना।

लक्ष्मीने बिहारीकी तरफ देखा। बिहारीने कुछ सोचकर कहा—यहीं बहूको रहने दो मा, कोई हानि न होगी।

रातको गौरी, बिहारी और माया, तीनों जनोंने मिलकर लक्ष्मीकी सेवा की।

इधर करुणा, रात-भर लक्ष्मीके कमरेमें नहीं आ सकी इस लज्जासे, बहुत तड़के उठी। कुंजको पलंगपर सोया हुआ ही छोड़कर, जल्दीसे हाथ-मुँह धो कपड़े बदलकर, तैयार हो आई। उस समय भी कुछ कुछ अँधेरा था। लक्ष्मीके कमरेके दर्वाजेपर आकर उसने जो देखा, उससे वह अवाक् हो गई। उसने सोचा, यह क्या स्वप्न देख रही हूँ!

माया एक स्पिरिट-लैंपपर जल गर्म कर रही थी। बिहारी रातको सोने नहीं पाया है, उसके लिए चाय बनेगी।

करुणाको देख माया उठ खड़ी हुई, बोली—आज मैं अपने सारे अपराध लेकर तुम्हारे आश्रयमें आई हूँ, मुझे और तो कोई यहाँसे दूर नहीं कर सकता, लेकिन अगर तुम कहोगी कि 'जाओ' तो मुझे अभी चला जाना पड़ेगा।

करुणा कुछ उत्तर न दे सकी। उसका मन क्या कहता है, यह भी जैसे वह अच्छी तरह न समझ सकी—अभिभूत-सी हो रही।

मायाने कहा—तुम मुझे किसी दिन माफ नहीं कर सकोगी—और यह चेष्टा भी तुम न करना। किन्तु अब मुझे डरना नहीं। जब तक बुआजी बीमार हैं तबतक मुझे उनकी सेवा करने दो, पीछे मैं चली जाऊँगी।

कल लक्ष्मीने जब करुणाका हाथ लेकर कुंजके हाथमें दिया था तब उसने अपने मनसे सब मान अभिमान और मैल धोकर सम्पूर्ण रूपमें कुंजको आत्म-समर्पण कर दिया था। आज मायाको सामने देखकर उसके खण्डित प्रेमकी जलनने शान्ति नहीं मानी। इसे कुंजने एक दिन चाहा था और शायद इस समय भी वे इसे मन-ही-मन चाहते हों—यह बात उसके हृदयके भीतर तरंगकी तरह लहराने लगी। कुछ देरके बाद वे उठेंगे, मायाको देखेंगे—क्या जाने, किस दृष्टिसे देखेंगे! कल रातको करुणाने अपने घरको निष्कण्टक देखा था—किन्तु आज सवेरे, उठते ही, उसने देखा, काँटेका पेड़ उसके घरके आँगनमें ही है। संसारमें सुखका स्थान सबसे अधिक संकीर्ण है—उसे पूर्णतया निर्विघ्न रूपसे रखनेका कहीं अवकाश नहीं है।

करुणा अपने हृदयके बोझेसे दबी हुई लक्ष्मीके कमरेमें गई और अत्यन्त लज्जाके साथ बोली—मौसी, तुम रात-भरसे बैठी हो, जाओ, सोने जाओ।

गौरीने करुणाके मुखकी तरफ एक बार अच्छी तरह देखा। उसके बाद वह सोने न जाकर करुणाको अपने घरमें ले गई। वहाँ ले जाकर बोली—चुन्नी, अगर सुखी होना चाहती हैं तो अब, तू इन सब बातोंको अपने मनमें न रखना। अन्यको दोषी ठहरानेमें जितना सुख है, उससे कहीं अधिक दुःख उस दोषको मनमें बनाये रखनेमें है।

करुणाने कहा—मौसी, मैं मनमें कुछ नहीं रखना चाहती, मैं तो भूल जाना ही चाहती हूँ, लेकिन मेरा मन नहीं भूलता।

गौरीने कहा—बेटी, तूने ठीक कहा—उपदेश देना सहज है, उपाय बता देना ही कठिन है। तो भी मैं तुझे एक उपाय बताये देती हूँ। तुझे कमसे कम बाहरी बर्तावसे यह दिखाना होगा कि जैसे तू सब भूल गई। पहले बाहर भूलनेका अभ्यास कर, तो फिर भीतरसे भी भूल जायगी। यह बात याद रखना चुन्नी, तू अगर न भूलेगी, तो दूसरेको भी स्मरण करा रक्खेगी। तू अपनी इच्छासे ऐसा न कर सके तो मैं तुझे आज्ञा देती हूँ कि तू मायाके साथ ऐसा व्यवहार कर जिससे मालूम हो कि मानो उसने कभी कुछ तेरा अनिष्ट ही नहीं किया और उसके द्वारा तेरे अनिष्टकी कोई आशंका ही नहीं है।

करुणाने नम्रताके साथ सिर झुकाये हुए कहा—क्या करना होगा, बताओ?

गौरीने कहा—माया इस समय बिहारीके लिए चाय तैयार कर रही है। तू दूध-चीनी-प्याला सब लेकर जा और उसके साथ मिलकर काम कर।

करुणा आज्ञा पालन करनेके लिए उठी। गौरीने कहा—यह तो सहज है, किन्तु मैं और एक बात बताती हूँ, वह और भी कठिन है—वही तुझे करनी होगी। बीच बीचमें कुजके साथ मायाका साक्षात् अवश्य होगा, उस समय तेरे मनमें क्या होगा, सो मैं जानती हूँ। उस समय तू कनखियोंसे भी कुजका भाव या मायाका भाव देखनेकी चेष्टा न करना। चाहे हृदय फट जाय, तो भी तुझे अविचलित रहना होगा। कुजको यह मालूम होना चाहिए कि तू सन्देह नहीं करती, शोक नहीं करती,—तेरे मनमें भय नहीं है, चिन्ता नहीं है,—जोड़ टूटनेके पहले जैसा था, जोड़ लगकर फिर ठीक वैसा ही हो गया है—टूटका चिह्न तक उसीमें मिल गया है। कुज या और कोई तेरा मुँह देखकर अपनेको अपराधी नहीं समझेगा। चुन्नी, यह मेरा अनुरोध या उपदेश नहीं है, यह तेरी मौसीकी आज्ञा है। मैं जब काशी चली जाऊँगी, तब तू एक दिन, एक घड़ीके लिए, भी मेरी इस बातको न भूलना।

करुणा चायके प्याले वगैरह लेकर मायाके पास उपस्थित हुई। कहा—जल क्या गरम हो गया? मैं चायके लिए दूध लाई हूँ।

मायाने विस्मित होकर करुणाके मुखकी तरफ देखा और कहा—बिहारी बाबू बरामदेमें बैठे हैं. तुम चाय उनके पास भेज दो, मैं तब तक बुआजीके मुँह धोनेका बन्दोबस्त कर रक्खूँ। जान पड़ता है, वे अभी उठेंगी।

माया खुद चाय लेकर बिहारीके पास नहीं गई। बिहारीने उसका प्रेम स्वीकार करके उसे जो अधिकार दिया है, उस अधिकारसे अपनी इच्छाके अनुसार जब देखो तब काम लेनेमें मायाको सकोच मालूम पड़ने लगा। अधिकार पानेकी जो मर्यादा है उस मर्यादाकी रक्षा करनेके लिए संयमके साथ अधिकारका प्रयोग करना होता है। जितना मिले उतनेको लेकर खींच-तान करना कगालको ही सोहता है। भोगको कम करनेसे ही सपत्तिका यथार्थ गौरव होता है। इस समय, बिहारीके स्वय बिना बुलाये, उसके पास कोई मिस करके मायासे जाया नहीं जाता।

बात पूरी नहीं होने पाई थी, इतनेमें कुज आ गया। करुणाके हृदयके भीतर जैसे किसीने जोरसे धक्का मारा तो भी उसने, अपनेको सँभालकर, स्वाभाविक स्वरसे ही कुजसे कहा—तुम इतने तड़के उठ आये? रोशनी आनेसे तुम्हारी नींद उचट जाय, इसलिए मैं सब दर्वाजे और खिड़कियाँ बंद कर आई थी।

मायाके सामने ही करुणाको इस तरह निस्सकोच होकर अपनेसे बातचीत करते देखकर कुजके हृदयके ऊपरसे जैसे एक बड़ा भारी बोझा उतर गया। उसने प्रसन्न चित्तसे कहा—मासी तबियत कैसी है, यही देखने आया हूँ, सो क्या अभी सो रही हैं?

करुणाने कहा—हाँ वे सो रही हैं. अभी तुम न जाना। बिहारी बाबूने कहा

है कि वे आज और दिनसे अच्छी हैं। बहुत दिनोंके बाद कल वे अच्छी तरह सोई हैं।

कुजने निश्चिन्त होकर पूछा—चाची कहाँ है?

करुणाने गौरीका कमरा दिखा दिया।

करुणाकी दृढता और सयम देखकर माया सन्नाटेमे आ गई।

कुंजने पुकारा—चाची।

गौरीने यद्यपि सवेरे नहाकर इस समय पूजापर बैठनेका विचार किया था, तो भी उसने कहा—आ कुंज, आ।

कुजने प्रणाम करके कहा—चाची, मैं पापी हूँ, तुम्हारे पास आनेमें मुझे लज्जा लगती है।

गौरीने कहा—छी-छी, यों न कह कुंज, सारे अगमे धूल भरकर भी लडके माकी गोदमें आकर बैठते हैं।

कुजने कहा—लेकिन मेरी यह धूल किसी तरह झड़ नहीं सकती।

गौरीने कहा—नहीं बेटा, तेरे एक बार झाड़नेसे ही झड जायगी। कुज एक तरहसे यह अच्छा ही हुआ। तुझे अपने अच्छेपनका अहकार था। और अपने ऊपर बहुत अधिक विश्वास था। इस पापकी आँधीमें तेरा वह अहकार ही चूर हो गया है, और कोई अनिष्ट नहीं हुआ।

कुंजने कहा—चाची, अब तुमको न छोडूँगा, तुम्हारे जानेसे ही मेरी यह दुर्गति हुई है।

गौरीने कहा—मेरे रहनेसे जो दुर्गति रुक रहती, उस दुर्गतिका एक बार हो जाना ही अच्छा हुआ। अब तुझे मेरी जरूरत नहीं पड़ेगी।

दर्वाजेपर फिर पुकार पड़ी—चाची, पूजा करने बैठी हो क्या?

गौरीने कहा—नहीं, तू आ।

विहारी भीतर आया। इतने सवेरे कुजको जागा हुआ देखकर उसने कहा—कुंज दादा, तुमने अपने जीवनमें शायद यही प्रथम सूर्योदय देखा!

कुंजने कहा—हाँ विहारी, आज मेरे जीवनका यह प्रथम सूर्योदय है। जान पड़ता है तुम्हें चाचीसे कुछ सलाह करनी है—अच्छा तो मैं जाता हूँ।

विहारीने हँसकर कहा—न हो तुम भी कैबिनेटके मिनिस्टर बना लिये गये। तुमसे तो मैंने कभी कुछ छिपाया नहीं। यदि तुमको कुछ आपत्ति न हो, तो आज भी मैं नहीं छिपाऊँगा।

कुंजने कहा—मुझे आपत्ति होगी! तो शायद अब मैं तुमपर कुछ दावा नहीं रख सकता। तुम अगर मुझसे कुछ नहीं छिपाओगे तो मैं भी अपने ऊपर फिर श्रद्धा कर सकूँगा।

आजकल कुंजके आगे निस्सकोच होकर सब बातें कहना कठिन है। विहारीका

मुँह जैसे किसीने पकड़ लिया। तो भी उसने जोर करके कहा—'मायासे ब्याह करूँगा' इस तरहकी एक बात उठी थी, उसीके सम्बन्धमे चाचीसे बातचीत और निश्चय करने आया हूँ।

कुंजको बहुत ही सकोच हो आया। गौरीने चकित होकर कहा—यह कैसी बात है बिहारी?

कुंजने प्रबल शक्तिका प्रयोग करके संकोचको दूर किया। कहा—बिहारी, इस ब्याहकी कोई जरूरत नहीं है।

गौरीने कहा—इस प्रस्तावमें क्या माया भी शामिल है?

बिहारीने कहा—बिल्कुल नहीं।

गौरीने कहा—वह क्या ऐसा करनेके लिए राजी है?

कुंज कह उठा—माया क्यों नहीं राजी होगी चाची! मै जानता हूँ, वह बिहारीपर पूर्ण श्रद्धा और भक्ति रखती है, अनन्य भावसे भजती है—ऐसे आश्रयको वह क्या इच्छा करके छोड़ दे सकती है!

बिहारीने कहा—कुंज दादा, मैने मायासे विवाहका प्रस्ताव किया था—किन्तु उसने लज्जाके साथ अस्वीकार कर दिया।

यह सुनकर कुंज चुप रह गया।

❦ ❦ ❦

तिरपनवाँ परिच्छेद

भले-बुरे करके किसी तरह दो-तीन दिन लक्ष्मीके गुजर गये। एक दिन प्रातःकाल उसके मुखपर खूब प्रसन्नता झलकने लगी—उसका सारा कष्ट थम हो गया। उसी दिन उसने कुंजको बुलाकर कहा—अब मुझे अधिक अवसर नहीं है—लेकिन मैं बड़े सुखसे मरी कुंज, मुझे कोई दुःख नहीं है। तू जब छोटा था, उस समय तेरे कारण मुझे जो आनन्द होता था, उसी आनन्दसे आज मेरा हृदय भर उठा है। तू मेरी गोदका बच्चा है मेरी छातीका धन है। तेरी अलाय-बलाय लेकर मै चली जाती हूँ यही मेरे लिए बड़ा सुख है।

यो कहते कहते लक्ष्मी कुंजके चेहरेपर और बदनपर हाथ फेरने लगी। कुंजका रोना बाधा न मानकर उमड़ने लगा।

लक्ष्मीने कहा—रोना नहीं कुंज, लक्ष्मी ऐसी बहूको मै तेरे पास छोड़े जाती हूँ। बहूको मेरी चाबी देना। मैने गिरिस्तीका सब सामान जुटा रक्खा है, तुम्हें किसी चीजके लिए भटकना नहीं पड़ेगा। और एक बात मैं कहे जाती हूँ कुंज—मेरे मरनेसे पहले किसीको न बताना मेरे बाक्समें दो हजार रुपयेके नोट हैं, उन्हें मै

मायाको देती हूँ। वह विधवा है, अकेली है, इस रुपयेके ब्याजसे उसका अच्छी तरह निर्वाह हो जायगा। किन्तु कुंज, उसको तू अपने घरमें मत रखना, तुझसे मैं यह अनुरोध किये जाती हूँ।

इसके बाद लक्ष्मीने बिहारीको बुलाकर कहा—बेटा बिहारी, कल कुंज कहता था कि तूने गरीब भद्र पुरुषोंकी चिकित्साके लिए एक बाग लिया है। भगवान् तुझे चिरजीवी बनाकर गरीबोंका कल्याण करें। मेरे ब्याहके समय ससुरजीने एक गाँव नेगमें दिया था, वह गाँव मैं तुझको देती हूँ। उसकी आमदनी तू अपने सत्कार्यमें लगाना। उससे मेरे ससुरजीको पुण्य होगा और आत्माको शान्ति होगी।

लक्ष्मीके मरनेके उपरान्त उनका क्रिया-कर्म हो जानेपर कुंजने कहा—भाई बिहारी, मैं डाक्टरी जानता हूँ—तुमने जो काम शुरू किया है, उसमें मुझे भी ले लो और चुन्नी जैसी सुचतुर गृहिणी हो गई है उसे देखकर मुझे आशा होती है कि वह भी तुम्हारी बहुत कुछ सहायता कर सकेगी। हम सब उसी जगह रहेंगे।

बिहारीने कहा—दादा, अच्छी तरह सोचकर देख लो, यह काम क्या तुम्हें हमेशा अच्छा लगेगा? वैराग्यकी क्षणिक उमगमें एक स्थायी भार अपने ऊपर न ले बैठना।

कुंजने कहा—बिहारी, तुम भी सोचकर देखो, मैंने अपने जीवनको जिस साँचेमें ढाला है उसे आलस्यके साथ उपभोग करनेका कोई उपाय नहीं है। काम-काजकी रस्सीसे अगर उसे घसीटता न ले चलूँगा, तो अन्तको वही किसी दिन मुझे घसीटकर सुस्ती और आफतके गढ़ेमें गिरा देगा। तुमको अपने काममें मुझे भी जगह देनी होगी।

अन्तमें यह बात ठीक हो गई।

गौरी और बिहारी बैठे हुए शान्त विषादके साथ पहलेकी बातें कर रहे थे। उन दोनोंके परस्पर एक दूसरेसे बिदा होनेका समय निकट आ गया है। इतनेमें मायाने दर्वाजेके पास आकर कहा—चाची, क्या मैं यहाँ जरा बैठ सकती हूँ?

गौरीने कहा—आओ, आओ बेटी, बैठो।

गौरी मायासे दो-चार बातें करके बिछौना उठानेके बहानेसे बरामदेमें चली गई।

मायाने बिहारीसे कहा—इस समय मुझसे तुम क्या करनेके लिए कहते हो—बतलाओ।

बिहारीने कहा—तुम्हीं बोलो, तुम क्या करना चाहती हो?

मायाने कहा—सुना है कि तुमने गरीबोंकी चिकित्साके लिए गंगाके किनारे एक बाग लिया है,—मैं वहाँ तुम्हारा कोई न कोई काम करूँगी। कुछ न होगा, तो रसोईका प्रबन्ध ही मैं करूँगी।

बिहारीने कहा—मैंने बहुत सोचा है। तरह तरहके हंगामोंसे हमारे जीवनके जालमें बहुत-सी गुत्थियाँ पड़ गई हैं। अब एकान्तमें बैठे बैठे उन्हींमेंसे एक-